अनिल मोहन

बबूसा का चक्रव्यूह

देवराज चौहान सीरीज

नया उपन्यास
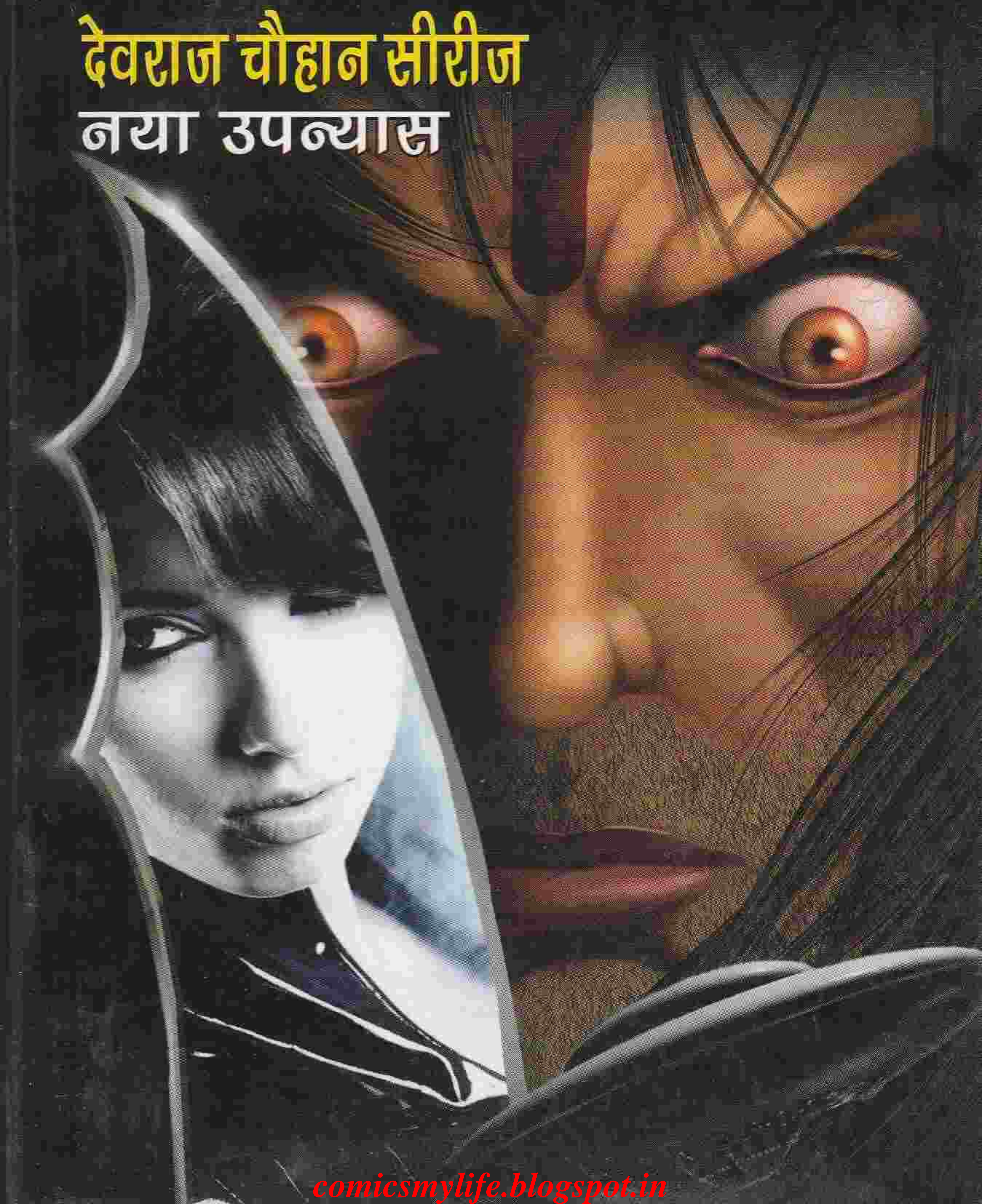
बबूसा का चक्रव्यूह

ISBN : 978-93-802-7898-8

लेखक से बातचीत के लिए ई-मेल

anilmohan012@yahoo.co.in

Now, Join me on Facebook:

facebook.com/anilmohan012

Join my page on Facebook:

facebook.com/anilmohanofficial

•

प्रकाशक

राजा पॉकेट बुक्स

330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611410, 27612036, 27612039

•

वितरक

राजा पॉकेट बुक्स

112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,

दिल्ली-110006

फोन : 23251092, 23251109

•

मुद्रक

राजा ऑफसेट

1/51, ललिता पार्क

लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

BABOOSA KA CHAKRAVYUHA : DEVRAJ CHOUHAN SERIES

ANIL MOHAN

मूल्य : साठ रुपए

राजा देव (देवराज चौहान) रानी ताशा का ऐसा दीवाना हो चुका था कि न तो उसे नगीना का खयाल था और न ही जगमोहन का। अब देवराज चौहान और रानी ताशा अन्य सबके साथ सदूर ग्रह पर रवाना होने वाले थे उधर बबूसा को हर तरफ समस्या नजर आ रही थी हालात बेकाबू होते जा रहे थे। वो सोमाथ को मार देना चाहता था, ये मसला हल नहीं हो रहा था कि धरा एक नई मुसीबत बनकर खड़ी हो गई थी, उसे पता लगा कि धरा पृथ्वी ग्रह की नहीं है वो सदूर ग्रह की है और अब वापस सदूर ग्रह पर जा रही है और उसका कहना था कि सदूर ग्रह पर उसकी ताकतें उसकी वापसी का इंतजार कर रही हैं। सदूर ग्रह कभी उसका था और अब फिर उसका हो जाएगा।

बबूसा का चक्रव्यूह

शृंखला–4

अनिल मोहन

देवराज चौहान सीरीज का नया उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज का आगामी नया उपन्यास...

बबूसा और सोमाथ

अनिल मोहन के

राजा पॉकेट बुक्स में उपलब्ध उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज

- ● बबूसा का चक्रव्यूह
- ● बबूसा और राजा देव
- ● बबूसा
- ● मिस्ड कॉल
- ● मुखबिर
- ● जुआघर
- ● सावधान हिन्दुस्तान
- ❖ मैं पाकिस्तानी
- ☼ **डॉन जी**
- ☼ **शिकारी**
- ☼ **100 माइल्स**
- ❖ **भूखा शेर**
- ❖ **आदमखोर**
- ☼ **गोला-बारूद**
- ☼ **निशानेबाज**
- ☼ **जिंदा या मुर्दा**
- ❖ **डैथ वारंट**
- ☼ **रॉबरी किंग**
- ❖ **खाकी से गद्दारी**
- ☼ ज्वालामुखी
- ☼ जांबाज
- ☼ खूंखार
- ☼ **डॉलर मामा**
- ☼ हाई जैकर
- ❖ माई का लाल
- ☼ गिरोह
- ☼ भगोड़ा
- ❖ हैवान
- ☼ गुर्गा
- ☼ मुखिया
- ❖ जिन्न
- ☼ आतंक का पहाड़
- ☼ अण्डरवर्ल्ड
- ☼ गैंगवार
- ☼ डंके की चोट
- ☼ मिस्टर हीरो
- ☼ दिल्ली का दादा
- ☼ जैक पॉट
- ☼ बारूद का ढेर
- ❖ पौ बारह
- ❖ दरिंदा
- ☼ दौलत का ताज
- ☼ गनमैन
- ☼ एक रुपए की डकैती
- ☼ डकैती के बाद
- ☼ डकैती
- ☼ टक्कर
- ☼ घर का शेर
- ☼ पहरेदार

देवराज चौहान और मोना चौधरी सीरीज

- ● **वांटिड अली**
- ● **सबसे बड़ा हमला**
- ● **बंधक**
- ☼ **पोतेबाबा**
- ☼ **जथूरा**
- ☼ मंत्र
- ❖ सरगना
- ● गुड्डी
- ☼ मास्टर
- ☼ हमला
- ☼ जालिम

मोना चौधरी सीरीज

- ☼ खबरी
- ☼ गिरगिट
- ☼ सुरंग
- ❖ नागिन मेरे पीछे
- ☼ दौलत बुरी बला
- ☼ एक तीर दो शिकार
- ☼ तू चल मैं आई
- ☼ मोना चौधरी खतरे में
- ☼ आ बैल मुझे मार
- ☼ बुरे फंसे
- ☼ एक म्यान दो तलवारें
- ☼ जान बची लाखों पाए

अर्जुन भारद्वाज (प्राइवेट जासूस)

- ☼ हिंसा का तांडव
- ☼ खतरनाक आदमी
- ☼ गैंगस्टर
- ☼ खतरे का हथौड़ा

जुगलकिशोर सीरीज

- ☼ दस नम्बरी
- ☼ दहशत का दौर

थ्रिलर सीरीज

- ☼ जुर्म का जहाज
- ☼ सीक्रेट एजेंट

आर.डी.एक्स. सीरीज

- ☼ आर.डी.एक्स.
- ☼ डॉन का मंत्री
- ☼ गुरु का गुरु

☼ इस निशान के उपन्यास का मूल्य 50/-
● इस निशान के उपन्यास का मूल्य 60/-
❖ इस निशान के उपन्यास का मूल्य 80/-

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, रोडवेज बुक स्टाल, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी व सभी रेलवे बुक स्टालों से खरीदें, न मिलने पर कोई भी दस उपन्यासों के मूल्य का मनीऑर्डर **राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084** के पते पर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ। कृपया M.O. पर अपना फोन नम्बर अवश्य लिखें।

दो शब्द——लेखक की कलम से

पाठकों को,

अनिल मोहन का नमस्कार!

अब आपके हाथों में है **'बबूसा, बबूसा और राजादेव, बबूसा खतरे में'** के बाद **'बबूसा का चक्रव्यूह'** मैं जानता हूं कि इस उपन्यास का आप सबको इंतजार है, ये बात ई-मेल और फेसबुक पर आए आपके कमेंट्स से पता चल चुकी है। **'बबूसा शृंखला'** को आप लोग बहुत ज्यादा पसंद कर रहे हैं, इससे मुझे बहुत खुशी हुई है। पार्ट्स के उपन्यासों को लिखना आसान नहीं होता क्योंकि एक कहानी की कड़ी अगले उपन्यासों से जुड़ी होती है, अगर एक उपन्यास भी लापरवाही से लिखा जाए तो सब कुछ वहीं का वहीं खत्म हो जाएगा ये जिम्मेदारी का काम है और मुझे खुशी है कि मैं ठीक से काम कर रहा हूं। प्रस्तुत उपन्यास **'बबूसा का चक्रव्यूह'** में आप धरा को बहुत ही बेहतरीन अंदाज में पाएंगे। बाकी देवराज चौहान, जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी सोमारा तो ठीक-ठाक चल ही रहे हैं। इस उपन्यास में धरा के पात्र में शानदार बदलाव आया है, कहानी में भी कई नए टर्न सामने आए हैं, ऐसा भी कहा जा सकता है कि कहानी जवान होने लगी है। बबूसा हर कदम पर मुसीबतों से घिरा पड़ा है। उसे राजा देव के सदूर ग्रह पर जाने की खुशी है तो सोमाथ की वजह से परेशान है और धरा की वजह से व्याकुल है कि वो क्या 'शय' है? अब मैं आपके ई-मेल और फेसबुक पर आए कमेंट्स का जिक्र करना चाहता हूं।

रिषू भाई, जगह नहीं लिखी पूछते हैं कि——**'बबूसा खतरे में'** कब आएगा। **'बबूसा खतरे में'** अब तक तो आप सबको मिल चुका होगा। रविकांत दूबे, मथुरा से लिखते हैं——**बबूसा और राजा देव** में मजा आ गया इस पर फिल्म बननी चाहिए। अगर ऐसे उपन्यास किसी अंग्रेजी लेखक ने लिखे होते तो हल्ला मच जाता। मैंने इंगलिश के बहुत उपन्यास पढ़े हैं परंतु उनमें ऐसा मजा होता ही नहीं। आदित्य शर्मा, दिल्ली से कहते हैं——पुराने उपन्यासों को रीप्रिंट कराऊं, और नहीं तो देवराज चौहान सीरीज के ही करा दूं। **पुराने उपन्यास राजा पॉकेट बुक्स से रीप्रिंट होते रहते हैं। इसके लिए राजा पॉकेट बुक्स में फोन करके बात करें।** शैलेंद्र सिंह, कानपुर से लिखते हैं——पुराने उपन्यासों को भी रीप्रिंट कराऊं। राजन शर्मा, हापुड़ से कहते हैं कि **'ज्वालामुखी'** पढ़ा मजा आ गया परंतु उसका अगला भाग **'खूंखार'** मेरे पास नहीं है। इसके लिए **राजा पॉकेट बुक्स** को फोन करें। अभिषेक, अभिलाश मिश्रा ने लिखा——**'बबूसा और राजा देव'** में मजा आ गया। बहुत ही तेज रफ्तार उपन्यास था। उसमें विजय बेदी, अर्जुन भारद्वाज को तो आपने लिया परंतु अपने ही एक पुराने पात्र श्याम शिंदे को लेना भूल गए। राकेश कुमार गुप्ता,

पूना से कहते हैं—**'मिस्ड कॉल'** मिला है, हाथ में है। नवीन अग्रवाल, रायपुर से कहते हैं—**'बबूसा और राजा देव'** आज तक नहीं मिला। नागेश खिड़वाडकर, इंदौर से कहते हैं—मैं अभी भी **'बबूसा और राजा देव'** खोज रहा हूं। विश्वास आनंद, पटना से कहते हैं—मैं आपका रेगुलर रीडर हूं। आप अच्छा लिखते हैं। **'मुखबिर'** उपन्यास से आपकी फेसबुक के बारे में पता चला। कृष्णा राठौर, रांची से—**'बबूसा खतरे में'** कब आएगा, मैं इंतजार कर रहा हूं। आकाश देव यादव, आगरा से पूछते हैं—**'बबूसा खतरे में'** के लिए कितना वेट करना पड़ेगा। गौरव सोनी, जयपुर से कहते हैं—मुझे आपके उपन्यास पसंद हैं देवराज चौहान को मैं बहुत पसंद करता हूं। आनंद नायडू, नागपुर से लिखते हैं—इन्हें मेरे उपन्यासों की लिस्ट चाहिए। पृथ्वी सिंह, भिवानी से कहते हैं—आप अच्छे लेखक हैं। मैं रेगुलर रीडर हूं आपका। मेरी पर्सनल लाइब्रेरी में आपके 100 से ऊपर उपन्यास मौजूद हैं। अक्षय राना, फरीदकोट से लिखते हैं—बबूसा सीरीज अमेजिंग सीरीज है किसी खजाने पर देवराज चौहान को लेकर लिखें (खजाने के लेकर, लिखा गया देवराज चौहान सीरीज का उपन्यास **'वर्दी का नशा'** कुछ पहले ही छपा है।) अभिषेक पाठक, मुम्बई से कहते हैं—मैंने आपके सभी नॉवल पढ़े हैं परंतु बबूसा सीरीज अच्छी नहीं लगी। विकास जैन दिल्ली से कहते हैं—इस वक्त मैं **'बबूसा और राजा देव'** पढ़ रहा हूं इसमें आपने नगीना के साथ अन्याय किया है। वो क्यों देवराज चौहान की हर बात खामोशी से मान लेती है (कहानी की डिमांड, हालात पर सब कुछ निर्भर होता है, कभी-कभी पात्र को अपनी आदतों से जुदा भी चलना पड़ता है) विक्की शर्मा, दिल्ली से कहते हैं—मुझे सब सीरीज पसंद हैं देवराज चौहान भी बहुत पसंद है परंतु **'बबूसा और राजादेव'** में इस बात की रीपिटेशन है कि बबूसा बार-बार देवराज चौहान से उनके राजा देव होने की बात कहता है। मैं अंग्रेजी नॉवल भी पढ़ता हूं लेकिन वो आपके उपन्यासों से ज्यादा मजेदार नहीं होते (रीपिटेशन के बारे में मैं इतना कहूंगा कि वो जरूरी था। एक-दो बार कहने से तो देवराज चौहान, बबूसा की बात पर यकीन करने से रहा और पाठक दोस्त भी यकीन नहीं करेंगे कि देवराज चौहान कभी सदूर ग्रह का राजा था। यानी कि बबूसा का बार-बार कहना जरूरी था।) मनीष पंत कहते हैं—**'बबूसा खतरे में'** का इंतजार कर रहा हूं मुझे आपके सब उपन्यास चाहिए (अन्य उपन्यास पाने के लिए आप **राजा पॉकेट बुक्स** में फोन करे, जो उपन्यास उपलब्ध होंगे, वो आपको मिल सकते हैं) पकंज कुमार श्री गंगा नगर से अपनी राय देते हैं—अगर उपन्यासों में एड शुरू की जाए तो कैसा रहे? (मेरे खयाल में ये चलने वाला आईडिया नहीं है) मणि भूषण, पूर्णिया, बिहार से लिखते हैं—मैं आपकी अधिकतर किताबें पढ़ चुका हूं देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाले उपन्यास तो बहुत अच्छे लगते हैं।

वो जरूर मिलते रहें। सुमित महतो, रांची से कहते हैं—**राजा पॉकेट बुक्स** की वेबसाईट पर अपने सारे उपन्यास अपलोड कराइए। मुकेश कुमार कहते हैं—दुबई में रहता हूं यहां मुझे किस तरह से आपके उपन्यास मिल सकते हैं (मुझे याद है कि पहले भी एक बंधु तनुज सूर्यवंशी ने दुबई से ही ये बात पूछी थी, इसके लिए मैंने पहले भी कहा था कि पुरानों उपन्यासों को पाने के लिए **राजा पॉकेट बुक्स** में फोन करें, फोन नम्बर हर उपन्यास में लिखा होता है) अमित श्रीवास्तव, काठमांडू से कहते हैं—यहां आपका उपन्यास नहीं मिल पाता। कोई इंतजाम कराइए। मनोज अगवानिया, जगह का नाम नहीं—मैं देवराज चौहान और आपका पुराना फैन हूं। अंकित कुमार गुप्ता, कानपुर से पूछते हैं—**'बबूसा खतरे में'** कब आएगा? तेजपाल दलाल, जगह का नाम नहीं लिखा, पूछते हैं—**'महल'** उपन्यास कब आएगा? (**'महल'** बबूसा शृंखला के समाप्त होने के बाद आएगा। बबूसा शृंखला के कुछ उपन्यास आने अभी बाकी हैं) मनीष कुमार, बेगूसराय से कहते हैं—मैं आपका पुराना फैन हूं। बहुत देर से गजाला पर कोई उपन्यास नहीं आया। मैं गजाला को पढ़ना चाहता हूं (गजाला को लेकर लिखे मुझे काफी वक्त बीत चुका है। कुछ और पाठक भी गजाला को पढ़ना चाहते हैं। गजाला के लिए दिमाग में कुछ जमा तो जल्दी उपन्यास लिखूंगा) वीर वरूण सिंह, मेरठ से लिखते हैं—कुछ वक्त पहले की बात है मेरा एक्सीडैंट हो गया और मैं हॉस्पिटल में था, काफी वक्त वहां रहना पड़ा कि पापा ने मुझे **सावधान हिंदुस्तान** और **गोरिल्ला** लाकर दिए। मैंने वो उपन्यास पढ़े, अच्छे लगे और उसके बाद से मैं आपका पक्का रीडर बन गया। कुमार नंदन, दिल्ली से लिखते हैं—1997 से आपके उपन्यास पढ़ रहा हूं। पहला **'घर का शेर'** पढ़ा था (और आगे इन्होंने मंगोलिया की बातें लिखी, जो कि ज्वालामुखी, खूंखार में था, ऐसा हो जाता है कभी-कभी पुरानी यादें गुड़मुड़ हो जाती हैं। मुझे खुशी है कि 15 सालों से नंदन जी मेरे उपन्यास पढ़ रहे हैं) प्रिया खोसला, उड़ीसा से कहती हैं—मैंने आपके बहुत सारे उपन्यास पढ़े हैं। देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाले पूर्व जन्म के उपन्यास बहुत अच्छे लगते हैं। कहती हैं अब हालात ये है कि तीन-तीन के भागों में लिखे उपन्यासों में से कइयों का एक-एक भाग मेरे पास नहीं है (इन्हें मैं इतना ही कहूंगा कि फोन पर **राजा पॉकेट बुक्स** से बात करें। शायद वहां से जरूरत के भाग हासिल हो जाएं) अमित मूलचंदानी, अमृतसर से लिखते हैं—मैंने आपके उपन्यास 'बबूसा' से पढ़ने शुरू किए हैं मुझे आपके और उपन्यास कैसे मिल सकते हैं। (अमित जी आप **राजा पॉकेट बुक्स** फोन करके बात करें, वो आपको उपन्यास अवश्य भेज देंगे।) सुधीर कश्यप, यू.पी. गोंडा से लिखते हैं—यहां पर मैं बैंक की नौकरी करता हूं जबकि रहने वाला गाजियाबाद का हूं। गोंडा में किराए का कमरा लेकर रहता हूं पहले मैंने उपन्यास नहीं पढ़ा था। एक बार

वक्त बिताने के लिए आपका उपन्यास **'आर.डी.एक्स.'** ले आया। उसके बाद तो जैसे मैंने आपके उपन्यास पढ़ने की रेल ही चला दी। ढूंढ़-ढूंढ़ के आपके उपन्यास लाता और पढ़ता। हालत ये हो गई कि हर रात एक उपन्यास पढ़कर ही सोता। बेशक उपन्यास रात तीन बजे ही क्यों न खत्म हो। मैं अन्य लेखकों के उपन्यास भी लाया, परंतु उनमें मजा नहीं आया। आपकी कहानी में जो मजा है, वो कहीं नहीं (धन्यवाद सुधीर जी, मुझे यकीन है कि आप इसी तरह मेरे साथ जुड़े रहेंगे।) दीपक शाह, मुम्बई से लिखते हैं—मैं पिछले तीन सालों से आप के उपन्यास पढ़ रहा हूं। आपका जो भी उपन्यास दिखता है, खरीद कर ले आता हूं। आपके उपन्यासों की डकैतियां मुझे बहुत अच्छी लगती हैं, खासतौर से देवराज चौहान मुझे बहुत अच्छा लगता है। चंडीगढ़ से जगमीत सिंह कहते हैं—मैं और मेरे पापा आपके उपन्यास पढ़ते हैं। कई बार तो नया उपन्यास लाने के बाद पापा से झगड़ा हो जाता है कि पहले उपन्यास कौन पढ़ेगा। मेरी चंडीगढ़ में मोटर पार्ट्स की दुकान है, जब आपका नया उपन्यास हाथ में होता है तो उस दिन नौकर दुकान को देखते हैं और मैं पीछे बने केबिन में बैठकर आपका उपन्यास पढ़ता रहता हूं। मुझे आपसे शिकायत ये है कि पार्ट्स में जो उपन्यास हों, वो जल्दी प्रकाशित किया करें। नहीं तो पिछली कहानी भूलने लगती है। श्री गंगानगर, राजस्थान से प्रवीण अरोड़ा लिखते हैं—अभी-अभी **सावधान हिंदुस्तान** पढ़कर हटा हूं। उपन्यास अच्छा लगा। बाबू नाथ मांडेरकर, मनमाड, महाराष्ट्र से कहते हैं—**'बबूसा'** पढ़ा मजा आ गया।

मेरे दोस्तो! हम बातें करते जा रहे हैं और जगह अब कम ही बची है, ज्यादा बातें नहीं हो सकती। मेरी कोशिश हमेशा ही यही रहती है कि मैं आपको ऐसी कहानी पढ़ने को दे सकूं कि आप सब कुछ भूलकर, एक नई दुनिया में खो जाएं। **बबूसा शृंखला** के सारे उपन्यासों की कहानी को और भी बढ़िया बनाने की पूरी चेष्टा में हूं। मुझे पूरा भरोसा है कि मेरा कोई भी उपन्यास आपको निराश नहीं करेगा। देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाले उपन्यासों में भी मैं इसी तरह मेहनत से लगा रहता हूं। मेरा एक ही टारगेट होता है कि आपको पढ़ने में मजा आए। **'बबूसा का चक्रव्यूह'** के बाद मेरा अगला उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'** है, जो कि और भी मजेदार रहेगा, कहानी जबर्दस्त टर्न के साथ आपके हाथों में आ रही है। ध्यान से पढ़िएगा, क्योंकि बबूसा शृंखला की कहानियों के साथ एक लाख रुपये की ईनामी योजना भी जुड़ी है, कहानियों से वास्ता रखते सवालों में प्रकाशक साहब यानी की श्री राजकुमार गुप्ता जी जाने क्या पूछ लें। ये एक मजेदार योजना है। बबूसा में जैसे मजा आ रहा है, उतना ही मजा ईनामी प्रतियोगिता में आएगा। तो अब मिलते हैं आगामी नए उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'** में।

—अनिल मोहन

बबूसा का चक्रव्यूह

सुनसान और गहरे पहाड़ी जंगल में घोड़ों की टॉपों की आवाजें गूंज रही थीं। जंगल के कहीं तंग और कहीं खुले रास्ते में वो तेरह घुड़सवार थे, जो कि रफ्तार के साथ घोड़ों को भगाए जा रहे थे। देवदार और चीड़ के ऊंचे पेड़ तेज हवा से हिल रहे थे। उनके पत्ते खड़खड़ा रहे थे, तालियां बजाते से महसूस हो रहे थे। उन बारह घोड़ों पर देवराज चौहान, रानी ताशा, जगमोहन, नगीना, सोमारा, मोना चौधरी, धरा, सोमाथ, बबूसा के अलावा रानी ताशा के तीन आदमी थे और तेरहवां घोड़े वाला था, जिसने कि बाद में घोड़े वापस ले जाने थे। पहाड़ के बड़े-बड़े टुकड़े, बड़े पत्थरों के रूप में टूटे रास्तों में दिख रहे थे। जंगल के पेड़ों के बीच में कुछ दूर खड़े पहाड़ों की झलक मिल रही थी जो कि बर्फ से ढके हुए थे। (पाठकों के लिए ये रास्ता अंजान नहीं है, पाठक **'बबूसा'** उपन्यास में जोगाराम और धरा के साथ इस रास्ते पर आ चुके हैं, जब धरा, जोगाराम के साथ डोबू जति के ठिकाने पर गई थी और वापसी पर जोगाराम की जान, डोबू जाति के योद्धा, लेने में कामयाब रहे थे) तेज सर्द हवा चल रही थी। सबसे बड़ी मुसीबत वाली बात तो ये हुई थी कि दो घंटे लगातार बरसात होती रही थी जिसमें सब भीग गए थे परंतु उस वक्त भी सफर जारी रखा था उन्होंने। रुके नहीं थे। इस समय वे ठिठुर-से रहे थे। बाकी सबके लिए तो ये सफर साधारण था परंतु धरा के लिए ये सफर आसान नहीं था। वो डोबू जाति हो आई थी और वहां से बच निकली थी। डोबू जाति वाले उसे मार देने के लिए उसके पीछे थे, बबूसा उसे बचाता रहा था उनसे और अब फिर वो इन सबके साथ डोबू जाति जा रही थी। धरा का दिल सामान्य से ज्यादा तेज रफ्तार से दौड़ रहा था। वो चिंतित, व्याकुल दिख रही थी। वो डोबू जाति की तरफ नहीं आना चाहती थी दोबारा, पिछली बार जब आई थी तो मन में ये विचार पक्का कर लिया था कि अगर बच निकली तो दोबारा इधर कभी नहीं आएगी। उसने इंकार करने का बहुत बार मन बनाया, परंतु जाने क्या बात थी कि वो डोबू जाति जाने के लिए सख्ती से इंकार नहीं कर पाई और साथ चल पड़ी। अब उसे एक ही डर सता रहा था कि डोबू जाति वाले उसे देखते ही उसकी जान न ले लें।

वे सब मुम्बई से टाकलिंग लॉ सुबह पांच बजे आ पहुंचे थे। देवराज चौहान और रानी ताशा ने साढ़े चार दिन ये सफर लग्जरी वैन में किया था, जिसमें बाथरूम के अलावा पांच बाई छः का बेड भी था। सोमाथ उस वैन में ड्राइवर के साथ बैठा आया था। दूसरी वैन में जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी और धरा थे। तीसरी वैन में बबूसा, सोमारा और रानी ताशा के तीन आदमी थे। टाकलिंग लॉ तक के रास्ते का मार्गदर्शन बबूसा ने किया था और टाकलिंग लॉ के गांव से घोड़ों का इंतजाम भी बबूसा ही करके लाया था। घोड़े वाले को पैसे पहले दे दिए थे। अब वो इसलिए साथ था कि जब ये लोग घोड़े छोड़ें तो घोड़ों को वापस ले जा सके।

इस वक्त भी बबूसा ही मार्गदर्शन कर रहा था, वो घोड़े पर सबसे आगे था। देवराज चौहान और रानी ताशा की दुनिया तो जैसे एक-दूसरे में ही बसी हुई थी। वे एक-दूसरे के प्यार में पूरी तरह डूबे हुए थे। घोड़ों पर यात्रा करते रह-रहकर वे एक-दूसरे को प्यार भरी निगाहों से मुस्कराकर देख लेते थे। उनके ये नजरे-तीर दूसरों से छिपे नहीं थे। जगमोहन बेहद गम्भीर नजर आ रहा था। कभी-कभार वो नगीना पर भी नजर मार लेता था। रानी ताशा उन्हें डोबू जाति के पास पहाड़ों के बीच खड़े पोपा की तरफ ले जा रही थी। वो, राजा देव (देवराज चौहान) के साथ सदूर ग्रह की तरफ रवाना हो जाना चाहती थी। देवराज चौहान पूरी तरह रानी ताशा का दीवाना हुआ पड़ा था। अगर देवराज चौहान के सिर पर दीवानगी न छाई होती तो, वो कुछ करने का सोचते भी, परंतु इस वक्त कुछ करने का मतलब था, देवराज चौहान का ही उनके सामने आ खड़ा होना। वो नहीं समझ पा रहे थे कि देवराज चौहान कैसे ठीक होगा, जबकि बबूसा का कहना था कि अभी राजा देव को सदूर ग्रह के जन्म की पूरी तरह याद नहीं आई है। राजा देव की वक्त से पहले ही रानी ताशा से मुलाकात हो गई और राजा देव, रानी ताशा की खूबसूरती में जा डूबे हैं। अब जाने कब राजा देव को सदूर ग्रह के जन्म की, रानी ताशा के धोखे वाली बात याद आएगी, क्योंकि रानी ताशा के सामने होते हुए राजा देव, रानी ताशा में ही व्यस्त रहेंगे। ऐसे में उन्हें सदूर ग्रह के जन्म की बातें याद आने वाली नहीं। जब राजा देव फुर्सत में, शांत अवस्था में होंगे, तभी सदूर ग्रह के जन्म के याद आने की संभावना है।

नगीना पूरे रास्ते गम्भीर रही थी, परंतु मोना चौधरी का चेहरा कठोरता से भरा रहा कि नगीना के लिए देवराज चौहान को रानी ताशा के चंगुल से छुड़ाना है, लेकिन इस काम के लिए न तो मौका था और न ही अभी वक्त। चिंता की बात तो ये थी वे डोबू जाति की तरफ बढ़ रहे थे और वहां पोपा (अंतरिक्ष यान) खड़ा था। जिस पर सवार होकर सबने सदूर ग्रह की तरफ

रवाना हो जाना था। मोना चौधरी मन-ही-मन सोच रही थी कि अंतरिक्ष यान के रवाना होने से पहले ही कुछ करना होगा।

उन्हें घोड़ों पर सफर करते कई घंटे हो चुके थे।

दोपहर के तीन बज रहे थे। सूर्य का कहीं नामोनिशान नहीं था। सर्दी बढ़ जाने का एहसास होने लगा था। कहीं-कहीं तो पेड़ों के बीच हल्का कोहरा भी ठहरा नजर आ रहा था। हवाओं का रुख तेज हो रहा था। तभी जगमोहन ऊंचे स्वर में बोला।

"बबूसा। रुक कर कुछ खा लेना चाहिए।"

"मुझे भी भूख लग रही है।" बबूसा ने घोड़ा दौड़ाते कहा—"खाने को कुछ है क्या?"

"हां, है।"

उसी पल बबूसा ने अपने घोड़ों की लगाम खींच ली।

बबूसा रुका तो सब घोड़े रुकते चले गए। बबूसा घोड़े से उतरकर देवराज चौहान के पास पहुंचा।

"राज देव।" बबूसा मुस्कराकर बोला—"कुछ खा लिया जाए। जगमोहन को भूख लगी है।"

"क्यों नहीं बबूसा।" देवराज चौहान ने मुस्कराकर कहा।

बबूसा ने रानी ताशा को देखा, जो कि मुस्कराकर उसे ही देख रही थी।

"राजा देव को वापस पाकर आप खुश हैं न रानी ताशा?" बबूसा बोला।

"तुमने तो भरपूर कोशिश की थी कि राजा देव मुझे न मिल सकें।" रानी ताशा ने तीखे स्वर में कहा।

"कैसी बातें करती हैं रानी ताशा। मैं तो आपके लिए राजा देव के संभाले हुए था।"

"मैं तुम्हें अच्छी तरह से समझती हूं बबूसा।"

"मेरे लिए आपने मन में गलतफहमी रख ली है।"

सब घोड़ों से उतर आए थे।

सोमाथ रह-रहकर बबूसा के देख लेता था। सफर के लिए सोमाथ को घोड़ों की जरूरत नहीं थी परंतु सफर ज्यादा लम्बा होने की वजह से सोमाथ घोड़े पर बैठ गया था। वो रानी ताशा के पास पहुंचा।

"मुझे बबूसा पर यकीन नहीं रानी ताशा।" सोमाथ ने कहा।

"मुझे भी यकीन नहीं।" रानी ताशा ने स्पष्ट कहा।

"मैं बबूसा पर नजर रखे हूं।" सोमाथ बोला।

"ज्यादा चिंता की बात नहीं सोमाथ।" रानी ताशा सोच भरे स्वर में बोली—"राजा देव अब मेरे पास हैं। ऐसे में बबूसा कुछ भी गलत करने

की नहीं सोच सकता। जब हम पोपा में सवार हो जाएंगे तो बबूसा हमारा ही साथ देने लगेगा। फिर बबूसा को संभालने के लिए सोमारा तो है ही, वो बबूसा को काबू में रखेगी।" कहने के साथ ही रानी ताशा, देवराज चौहान की तरफ बढ़ गई।

देवराज चौहान ने प्यार भरी निगाहों से रानी ताशा को देखा।

"मैंने तुम्हें फिर से पा लिया देव।" पास पहुंचकर रानी ताशा मधुर स्वर में कहते, देवराज चौहान का हाथ थामकर बोली—"मेरा देव अब मेरे पास रहेगा। अब मैं तुम्हें कोई शिकायत नहीं होने दूंगी।"

"मुझे तो तुमसे पहले भी शिकायत नहीं थी ताशा।" देवराज चौहान की आवाज भावुक हो उठी।

"अब मैं अपने देव को पहले से भी ज्यादा प्यार करूंगी। आप फिर से राजा बनकर सदूर को संभालेंगे और मैं आपकी छाया की तरह आपके साथ रहूंगी।" रानी ताशा की आंखों में पानी चमक उठा—"आप कितने अच्छे हैं देव।"

देवराज चौहान प्यार से रानी ताशा का चेहरा निहारने लगा।

"आप फिर मुझे टकटकी बांधकर देखने लगे।"

"तुम कितनी खूबसूरत हो ताशा। तुम्हारे बिना मैं जीवन गुजारने की सोच भी नहीं सकता। सदूर पर हम कितने प्यार से जीवन बिताया करते थे। कितने खुश थे हम। मुझे मेरा सदूर ग्रह बहुत याद आ रहा है।"

"हम वहीं जाने वाले हैं। अब तो आप अपने सदूर को पहचान ही नहीं पाएंगे।"

"क्यों?" देवराज चौहान ने रानी ताशा का हाथ थाम लिया।

"सदूर अब पहले से बहुत बदल गया है। जम्बरा ने रोशनी देने वाले बक्से बना लिए हैं। अब सदूर पर मशालों की रोशनी नहीं, दूसरी तरह की रोशनी होती है। घर-घर में रोशनी है। हमारे किले में भरपूर रोशनी है। सदूर में सड़कें बन गई हैं। ऊंचे-ऊंचे मकान बन गए हैं। पैसे की जगह धातु नहीं, सिक्के चलने लगे हैं। धातु अब भी सदूर की कीमती चीज मानी जाती है लोग उसे संभालकर रखते हैं। अब वहां बग्गी नहीं, छोटे-छोटे वाहन चलते हैं। गरीब लोग बग्गी भी चलाते हैं। सब कुछ नया होगा तुम्हारे लिए देव। जम्बरा ने सदूर को सजाने में बहुत मेहनत की है। महापंडित ने अपनी जगह को नए तरीके से बना लिया है। हमारे किले को छोड़कर सदूर का सब कुछ बदल चुका है देव। परंतु तुम और मैं अब भी वही हैं देव और ताशा।" रानी ताशा का स्वर प्यार में डूब गया—"वो दिन कितने अच्छे होते थे देव।"

"वो वक्त फिर लौट आएगा।" देवराज चौहान ने खुशी से कहा—"वो जंगल वही है न, जहां हम मिला करते थे ताशा?"

"हां। वो जंगल, वो जगह, वो पेड़ आज भी हम दोनों की वापसी का इंतजार कर रहे हैं। जानते हो देव, जब तुम मेरे पास नहीं थे तो मैं उसी जंगल में जाकर, उसी पेड़ के नीचे बैठकर तुम्हें याद किया करती थी, बोला करती थी कि मेरे देव तुम मुझे कब मिलोगे।" रानी ताशा की आंखें डबडबा गई—"मैं तुम्हारे बिना कितना तड़पी हूं देव।"

"अब मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा ताशा।" देवराज चौहान ने रानी ताशा को सीने से लगा लिया।

"आपने मुझे माफ कर दिया देव, उस गलती के लिए, जो मुझसे सदूर पर हुई थी।"

"मैं नहीं जानता, वो गलती क्या थी और जानना भी नहीं चाहता। मैं तुमसे कभी भी नाराज नहीं हो सकता ताशा। तुम मेरा जीवन हो। तुम्हारे बिना जीने की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। ताशा—मेरी प्यारी ताशा...।"

"देव।"

दोनों ने एक-दूसरे को बांहों में जकड़ रखा था।

"ये खा लीजिए।" तभी नगीना की आवाज उनके कानों में पड़ी।

दोनों अपनी दुनिया से बाहर निकले। देखा, पास में नगीना खड़ी थी। दोनों हाथों में बर्गर और पैटीज थाम रखे थे। नगीना की निगाह देवराज चौहान पर थी।

"ओह नगीना, लाओ।" देवराज चौहान पैटीज-बर्गर थामता बोला—"ताशा तुम भी ले लो।"

रानी ताशा ने मुस्कराकर नगीना से बर्गर, पैटीज लिए और बोली।

"तुम्हें हमारी कितनी चिंता है, मैं तुम्हें सदूर पर अपनी खास बनाऊंगी।"

"मुझे तुम्हारी नहीं, देवराज चौहान की चिंता है।" नगीना ने शांत स्वर में कहा।

"अब तुम हम दोनों की चिंता किया करो। देव सिर्फ मेरे हैं। क्यों देव?"

"हां ताशा। अब हम कभी भी जुदा नहीं होंगे।" देवराज चौहान, ताशा को देखता कह उठा।

नगीना ने देवराज चौहान पर निगाह मारी और पलटकर वापस चली गई।

"आओ देव, हम उस बड़े पत्थर पर बैठकर खाते हैं।" रानी ताशा ने कहा।

"चलो ताशा।"

बबूसा और सोमारा एक पेड़ के पास खड़े खा रहे थे। दोनों के चेहरों पर गम्भीरता थी।

"अब क्या होगा बबूसा?" सोमारा धीमे स्वर में कह उठी—"हम पोपा के पास जा रहे हैं।"

"मैं सोच रहा हूं कि इन हालातों में मुझे क्या करना चाहिए।" बबूसा गम्भीर था। उसने कुछ दूर पत्थर पर बैठे रानी ताशा और देवराज चौहान को खाते और हंस-हंसकर बातें करते देखा—"रानी ताशा का व्यवहार तो देखो, जैसे पूरी तरह बेगुनाह हो। अपने द्वारा दिए गए धोखे को भूल गई हो जैसे। मुझे रानी ताशा अच्छी नहीं लगती।"

"राजा देव को सदूर का जन्म पूरी तरह याद क्यों नहीं आया?" सोमारा ने पूछा।

"मैं नहीं जानता। वैसे काफी कुछ याद आ चुका है। परंतु रानी ताशा के दिए धोखे की बात याद नहीं आई। राजा देव को अभी सब कुछ याद आ जाए तो रानी ताशा उन्हें जरा भी अच्छी नहीं लगेगी।" बबूसा बोला।

"तुमने राजा देव को रानी ताशा तक पहुंचने ही क्यों दिया—सब कुछ याद आने देते।"

"मैं तुम्हें बता चुका हूं सोमारा। उस रात मैं राजा देव पर नजर रखे हुए था। परंतु सुबह होते-होते मेरी आंख लग गई और इस बात का फायदा उठाया राजा देव ने। रानी ताशा के बारे में उन्हें याद आ चुका था। राजा देव, रानी ताशा के पास चले जाना चाहते थे। परंतु मैं ही उन्हें रोके हुए था। मेरी आंख लगते ही, मौका पाकर राजा देव वहां से निकले और रानी ताशा के पास आ पहुंचे।" (ये बात पाठक पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा खतरे में'** में विस्तार से पढ़ चुके हैं।)

"अब राजा देव को सदूर की बाकी की बातें कब याद आएंगी?" सोमारा ने पूछा।

"राजा देव दिन रात रानी ताशा में व्यस्त हैं। रानी ताशा राजा देव को चैन नहीं लेने दे रही। अकेला नहीं छोड़ती जबकि सदूर की बातें, मेरे खयाल में तभी राजा देव को याद आएंगी, जब वे फुर्सत में होंगे।"

"फिर तो अभी राजा देव से कुछ आशा रखना बेकार है।"

"ये ही तो मुझे चिंता हो रही है कि अभी राजा देव को कुछ याद आने वाला नहीं और रानी ताशा उन्हें पोपा में बिठाकर सदूर ग्रह पर ले जाने की तैयारी कर रही है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"सदूर पर पहुंचकर रानी ताशा ने महापंडित से कहकर, राजा देव के दिमाग के उस हिस्से को साफ करा देना है, जहां सुदूर की यादें दबी हैं फिर राजा देव को कुछ याद नहीं आएगा और रानी ताशा, राजा देव की सजा से हमेशा-हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाएगी।"

"रानी ताशा का ऐसा ही करने का इरादा है। वो मुझे बता चुकी है।" सोमारा ने कहा।

"मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।" बबूसा ने होंठ भींचकर कहा—"मुझे कुछ करना होगा। रानी ताशा और राजा देव को अलग करना होगा।"

"गलती मत कर बैठना बबूसा।" सोमारा ने चिंतित स्वर में कहा—"राजा देव को पाने के लिए रानी ताशा कुछ भी कर सकती है। जोबिना वाले आदमी भी साथ हैं। सोमाथ भी है। कहीं तुम मुसीबत में न पड़ जाओ।"

"राजा देव के लिए मैं कैसी भी मुसीबत सह लूंगा।"

"ऐसा कुछ करने का क्या फायदा कि काम पूरा न कर सको और फंस जाओ।"

बबूसा ने सिर हिलाकर सोमारा को देखा।

"तुम्हारी बात मैं समझ गया। चिंता न करो। मैं जो करूंगा, सोच समझकर करूंगा। मुझे अभी वहां जाकर डोबू जाति के हालात देखने हैं कि उधर रानी ताशा ने किस तरह कब्जा कर रखा है। मैं बहुत कुछ सोच रहा हूं सोमारा।"

"मैं तुम्हारे साथ हूं बबूसा।" सोमारा ने बबूसा की बांह थाम ली।

बबूसा के होंठों पर मुस्कान उभरी।

"तेरी उससे तो कोई बातचीत नहीं है न?" सोमारा बोली।

"किससे?"

"वो—धरा से।" सोमारा ने धरा पर निगाह मारी—"तू उसे डोबू जाति के योद्धाओं से बचाता रहा है।"

"कैसी बात करती हो सोमारा! धरा मेरी पहचान की है। उसी की सहायता से मैं राजा देव की तलाश में लगा रहा था।"

"और तो कुछ नहीं न?"

"नहीं-नहीं। ऐसी बात करके तुम मुझे परेशान मत करो।" बबूसा नाराजगी से कह उठा।

तभी सोमाथ पास आता कह उठा।

"तुम्हें रानी ताशा बुला रही है सोमारा।"

सोमारा उसी पल रानी ताशा की तरफ बढ़ गई।

बबूसा और सोमाथ की नजरें मिलीं।

कुछ पल दोनों एक-दूसरे को देखते रहे, फिर सोमाथ उसके पास से चला गया।

'तेरे से तो किसी तरह निबटूंगा सोमाथ।' बबूसा बड़बड़ा उठा।

सोमारा पास पहुंची, खाते हुए रानी ताशा ने पूछा।

"बबूसा अब क्या विचार रखता है सोमारा?"

"बबूसा खुश है कि आप और राजा देव मिल गए।" सोमारा मुस्कराकर बोली।

"अब उसके मन में क्या है?"

"वो खुश है ताशा। उसके मन में कोई भी गलत बात नहीं। वो तो कहता है कि आपके लिए ही राजा देव को तलाशा था।"

"बबूसा मुझे सदूर ग्रह के जन्म की बातें याद दिलाना चाहता था।" देवराज चौहान बोला—"बबूसा का कहना था कि तुमसे मैं तब मिलूं जब मुझे मेरे सदूर ग्रह के जन्म की बातें याद आ जाएं। इसके लिए बबूसा ने कोशिश भी बहुत की। तभी तो मुझे अपने उस जन्म के बारे में याद आई और मैं तुम्हारे पास पहुंच गया, ताशा।"

"मेरा प्यारा देव।" रानी ताशा ने प्यार भरे स्वर में कहा।

"बबूसा की तुम फिक्र मत करो ताशा। वो मेरा सबसे बढ़िया दोस्त है। जो मैं कहूंगा, वो—वो ही करेगा।"

"आपके होते मुझे बबूसा की फिक्र करने की क्या जरूरत है देव।" ताशा ने कहा—"परंतु बबूसा अब पहले से बहुत बदल गया है। वो मनमानी भी करने लगा है। इस बार महापंडित ने उसका जन्म आपकी ताकत से कराया है। मुझे लगता है कि बबूसा हम दोनों के मिलन को पसंद नहीं कर रहा।"

"नहीं ताशा।" सोमारा कह उठी—"आप दोनों के मिलने पर बबूसा बहुत खुश है।"

रानी ताशा ने गम्भीर निगाहों से, सोमारा के देखते हुए कहा।

"मैं जानती हूं बबूसा के मन में क्या है।"

"क्या है ताशा?" सोमारा ने पूछा।

"यही कि राजा देव को उस जन्म में की गई मेरी गलती की याद आ जाए और...।"

"ऐसी कोई भी बात बबूसा ने मुझसे नहीं कही।" सोमारा कह उठी।

"बबूसा से कह देना कि राजा देव मुझे मेरी हर गलती के लिए माफ कर चुके हैं।"

"सच में।" देवराज चौहान मुस्कराकर बोला—"ताशा से मैं नाराज क्यों होऊंगा। ये मेरी जिंदगी है।"

"आप दोनों का प्यार देखकर हमेशा ही मुझे खुशी होती रही है।" सोमारा मुस्कराई।

"बबूसा को संभालना तेरा काम है सोमारा। अगर उसने कुछ किया तो सोमाथ उसे सजा देगा।" रानी ताशा बोली।

"आप नाहक ही संदेह कर रही हैं। बबूसा तो मुझे पाकर बहुत खुश है।"
सोमारा वापस बबूसा के पास आकर बोली।
"रानी ताशा को तुम पर पूरी तरह संदेह है कि तुम कोई चालाकी कर सकते हो।" सोमारा गम्भीर थी।
"मैं सतर्क रहूंगा, सोमारा।"
"मुझे डर है कि सोमाथ से कहीं तुम्हारा दोबारा टकराव न हो जाए।" सोमारा बोली।
"सोमाथ ही तो मेरे रास्ते की सबसे बड़ी अड़चन है।" बबूसा का स्वर कठोर हो गया—"टकराव तो होगा ही।"
"सोमाथ तुमसे ज्यादा ताकतवर है बबूसा।" सोमारा गम्भीर थी—"कुछ करने से पहले मुझे जरूर बता देना।"
तभी धरा पास आती दिखी।
"वो तुम्हारे पास क्यों आ रही है?" धरा पर निगाह पड़ते ही, सोमारा कह उठी।
"जलो मत।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा—"देख लेना वो क्या कहती है।"
धरा पास आकर ठिठकी और कह उठी।
"बबूसा। मुझे डर लग रहा है।"
"क्यों?"
"डोबू जाति वाले मुझे देखते ही मार देंगे। वो मेरी मां को, प्रकाश को और चतुर्वेदी साहब को भी मार चुके हैं।"
"मेरे होते तुम चिंता न करो।" बबूसा बोला—"कोई तुम्हें कुछ नहीं कहेगा।"
"वो तुम्हारे भी तो दुश्मन हैं।" धरा ने बबूसा की कलाई पकड़ी—"तुमने उनके कई लोगों को मारा।"
"बांह छोड़ बबूसा की।" सोमारा ने धरा का हाथ, बबूसा की कलाई से हटा दिया—"बांह क्यों पकड़ती है।"
"धरा। तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैं डोबू जाति से विद्रोह करके ही उनसे बाहर आया था और डोबू जाति में ऐसा कोई नहीं, जो मेरा मुकाबला कर सके। मेरी तरह वो भी मुझे दुश्मन नहीं मानते। वहां पहुंचने पर तुम समझ जाओगी।"
"बस मुझे ये ही डर है कि वो मुझे मार न दें। क्योंकि एक बार (**बबूसा** पढ़ें) मैं वहां पहुंचकर किसी तरह वहां से बच आई थी परंतु मेरे तब के मार्गदर्शक जोगाराम को उन्होंने मार दिया...।"

"तुम्हें कुछ नहीं होगा। डोबू जाति के योद्धाओं के हथियार इन दिनों उनके पास नहीं होते। हथियारों के बिना वो बेकार हैं।" बबूसा का चेहरा सख्त हो गया—"इस बारे में मुझे रानी ताशा से बात करनी होगी।"

"बबूसा तुम।" सोमारा ने कहना चाहा।

परंतु बबूसा रानी ताशा और देवराज चौहान की तरफ बढ़ गया। एक तरफ खड़े सोमाथ ने बबूसा को रानी ताशा की तरफ जाते देखा तो वो भी उसी तरफ बढ़ गया।

रानी ताशा और देवराज चौहान की निगाह पहले ही पास आते बबूसा पर टिक गई थी।

"आओ बबूसा।" उसके पास आने पर देवराज चौहान ने मुस्कराकर कहा—"तुम्हें देखकर तो मुझे सदूर की और भी याद आने लगती है।"

"कुछ ही दिनों में हम सदूर पर होंगे राजा देव।" बबूसा भी मुस्कराया।

तब तक सोमाथ भी पास आ पहुंचा था।

"तुम्हारे साथ बीते मुझे वो दिन बहुत याद आते हैं।"

"मुझे भी याद आते हैं। अब फिर सदूर ग्रह आपके रंग में रंग जाएगा।"

"हां बबूसा, पर रानी ताशा ने बताया कि वहां बहुत कुछ बदल गया है, पहले जैसा सदूर नहीं रहा।"

"मैं जानता हूं। मैंने देखा है सदूर को बदलते।" बबूसा बोला—"सिर्फ तीस साल पहले तो सदूर से पोपा में बैठाकर मुझे डोबू जाति में छोड़ दिया गया था। तब से पहले तो मैं सदूर पर ही था। मैं डोबू जाति के बारे में रानी ताशा से कुछ कहना चाहता हूं।"

"कहो—कहो।"

बबूसा ने रानी ताशा को देखकर कहा।

"रानी ताशा ये ठीक है कि मैं सदूर का वासी हूं पर मैंने अपना आधा जीवन डोबू जाति में बिताया है। मैं उन्हें दिल से अपना मानता हूं और ये बात मैं कभी भी पसंद नहीं करूंगा कि कोई डोबू जाति का मुखिया बन जाए। उन पर अधिकार कर ले।"

"तो?"

"मैं चाहता हूं आप उन्हें पहले की तरह आजाद कर दें।"

"मुझे डोबू जाति से कोई मतलब नहीं है।" रानी ताशा ने शांत स्वर में कहा—"परंतु मुझे उनका ठिकाना पसंद आया जो कि पहाड़ों के भीतर ही भीतर दूर तक जाता है। हमें पृथ्वी ग्रह पर ऐसा ही कोई ठिकाना चाहिए था कि जब हम पृथ्वी पर आएं तो किसी को हमारी खबर न हो सके। पोपा भी किसी की नजर में न आए। डोबू जाति का ठिकाना सदूर को चाहिए।"

"बेशक। आपका आना-जाना लगा रहे। डोबू जाति वाले आपका स्वागत करेंगे। परंतु मैं उन्हें गुलाम के रूप में नहीं देख सकता।"

"तो तुम चाहते हो कि मैं उन्हें आजाद कर दूं।"

"हां रानी ताशा।" बबूसा ने सामान्य स्वर में कहा।

"ये सम्भव नहीं।" रानी ताशा ने इंकार में गर्दन हिलाई—"हम पोपा में बैठकर सदूर पर चले जाएंगे परंतु हमारे कुछ लोग डोबू जाति में रहकर डोबू जाति और ठिकाने पर अपना नियंत्रण रखेंगे। हम लोग पृथ्वी पर आया करेंगे।"

"मैं डोबू जाति को आजाद देखना चाहता हूं रानी ताशा।"

"ये नहीं होगा।"

बबूसा ने देवराज चौहान को देखकर कहा।

"राजा देव। आप तो जानते ही हैं कि बबूसा कभी गलत बात नहीं कहता। मैं डोबू जाति की आजादी चाहता हूं। आपकी बात रानी ताशा अवश्य मान लेगी। डोबू जाति को पहले की तरह आजाद कर दीजिए।"

देवराज चौहान ने रानी ताशा के देखा।

"मेरे देव, अब आप मुझे बबूसा की बात मानने को मत कहिएगा।" रानी ताशा कह उठी।

"हम दोनों मिल गए हैं ताशा।" देवराज चौहान ने प्यार से कहा।

"हां देव, मैंने तुम्हें वापस पा लिया।"

"तो हमें किसी चीज की जरूरत नहीं। सदूर पर जाकर हम इतने व्यस्त हो जाएंगे कि पृथ्वी पर आने का वक्त ही कहां मिलेगा। हमें डोबू जाति और उनके ठिकाने की जरूरत ही नहीं है। बबूसा जो कहता है, मान लो।"

रानी ताशा ने कुछ नहीं कहा। देवराज चौहान और बबूसा को देखा।

"हमारे लिए सदूर ही काफी है। तुम-मैं, हमारा प्यार, सदूर के लोग, वहां की समस्याएं, इन्हीं में हमारा जीवन व्यतीत हो जायेगा ताशा। पृथ्वी और डोबू जाति को तो हमने भूल ही जाना है।"

"तुम ठीक कहते हो देव। सदूर पर जाते ही हमने एक-दूसरे में खो जाना है।" रानी ताशा मुस्करा पड़ी—"देव की बात को तो मैं इंकार कर ही नहीं सकती। जब हम सदूर रवाना होंगे तो डोबू जाति को आजाद कर देंगे देव।"

देवराज चौहान मुस्कराया और बबूसा से बोला।

"कोई और बात हो तो कहो बबूसा। तुम्हारी ये बात पूरी हो गई।"

"शुक्रिया राजा देव। मैं जानता हूं कि आपके होते मुझे कभी निराशा नहीं होगी।" बबूसा कह उठा—"मेरे लिए कोई हुक्म हो तो कहिए। बबूसा आपके हुक्म पर जान देने को भी तैयार है।"

देवराज चौहान ने मुस्कराकर सिर हिलाया।

"तुम मेरे देव के हमेशा ही खास रहे हो बबूसा।" रानी ताशा ने कहा।

"और आगे भी रहूंगा। आप मुझे कभी भी आजमा सकती हैं रानी ताशा।"

"मेरे देव की सेवा करते हुए कभी भी अपनी हद से बाहर जाने की चेष्टा मत करना।" रानी ताशा का स्वर शांत था।

"कभी नहीं रानी ताशा। बबूसा को अपनी हद का हमेशा ध्यान रहता है।"

इसके बाद बबूसा जाने के लिए पलटा कि सोमाथ से नजरें मिलीं।

"कैसे हो सोमाथ।" बबूसा मुस्कराया—"अब तो तुम्हें मेरा दोस्त बन जाना चाहिए।"

सोमाथ, एकटक बबूसा को देखता रहा।

बबूसा वहां से चला गया तो सोमाथ भी दूर हो गया।

बबूसा ने सोमारा को जगमोहन, मोना चौधरी और नगीना से बातें करते पाया।

बबूसा पास जा पहुंचा। धरा भी वहीं थी।

"अब तुम हालातों के बारे में क्या विचार रखते हो बबूसा?" जगमोहन ने धीमे स्वर में पूछा।

"मैंने तुम्हें बताया तो है कि...।" सोमारा ने कहना चाहा।

"मुझे बबूसा से बात कर लेने दो।" जगमोहन गम्भीर था।

"मेरे विचार वो ही हैं जो कि पहले थे।" बबूसा ने कहा—"मैं राजा देव को वो वक्त याद दिला के रहूंगा, जब रानी ताशा ने उनके साथ धोखा करके सेनापति धोमरा के साथ मिलकर, उन्हें सदूर ग्रह से बाहर फेंक दिया था।"

"हम देवराज चौहान को वापस पाना चाहते हैं।" मोना चौधरी बोली।

"मुझसे जो बन पड़ेगा, मैं जरूर करूंगा। हम लोग एक ही हैं।" बबूसा ने कहा।

"परंतु जब तक सोमाथ है, तब तक हम कुछ नहीं कर सकते।" मोना चौधरी ने कहा।

"ये बात सच है कि सोमाथ हमारे लिए समस्या है।" बबूसा ने मोना चौधरी को देखा—"सोमाथ से निबट पाना आसान नहीं है।" बबूसा की निगाह रानी ताशा के आदमियों की तरफ गई—"उनके पास सदूर का हथियार जोबिना है। अगर मुझे जोबिना मिल जाए तो मैं सोमाथ को पलों में राख कर सकता हूं।"

जगमोहन, मोना चौधरी और नगीना की निगाह उन तीनों की तरफ गई।

"मैं उनसे जोबिना हासिल करने की कोशिश करती हूं।" मोना चौधरी बोली।

"गलती मत कर देना। जोबिना सिर्फ उन्हीं लोगों के पास होती है जो खतरनाक लोग होते हैं। अगर तुमने ऐसी कोई कोशिश की तो वो पलों में तुम्हें राख बना देंगे। तुम जोबिना हासिल कर पाने में कभी सफल नहीं हो सकोगी।"

"तो तुम ये काम कैसे कर पाओगे?"

"मौका लगा तो जरूर करूंगा। क्योंकि सोमाथ को खत्म किए बिना, रानी ताशा को सबक नहीं सिखाया जा सकता। मेरे खयाल में सोमाथ जान चुका है कि मैं कुछ करूंगा। वो मुझे संदेह भरी निगाहों से देखता रहता है।" बबूसा ने कहा।

"ये पक्का है कि जोबिना नाम के हथियार से सोमाथ खत्म हो जाएगा?" जगमोहन ने पूछा।

"हां, पक्का है।" बबूसा ने सख्ती से कहा—"जोबिना सोमाथ को राख में बदल देगा।"

जगमोहन ने मोना चौधरी को देखकर कहा।

"हमें जोबिना हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए।"

"मैं भी ये ही सोच रही हूं।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ऐसा कर पाना इतना आसान होता तो मैं ये काम कब का कर चुका होता।" बबूसा बोला—"उलटी हरकत करके अपनी जान मत गंवा देना। मुझे मौके और सही वक्त का इंतजार करने दो। आनेवाले वक्त में न जाने कैसे हालात पैदा होने वाले हैं। अपने को उस वक्त के लिए बचाकर रखो। हो सकता है डोबू जाति पहुंचकर, अच्छा मौका हाथ लग जाए। वहां सब मेरे लोग हैं और रानी ताशा के लोग हकूमत चला रहे हैं। वो भी जरूर मौके का इंतजार कर रहे होंगे।"

"तुम्हारा मतलब कि डोबू जाति पहुंचने पर, कुछ हो सकता है?" जगमोहन ने पूछा।

"हो भी सकता है। क्या पता आने वाला वक्त कैसे करवट लेता है।"

अब तक खामोश खड़ी नगीना कह उठी।

"आखिर तुम करना क्या चाहते हो। तुम्हारी मंजिल क्या है?"

"मैं राजा देव को रानी ताशा से अलग करके, राजा देव को एकांत में बैठाना चाहता हूं कि सदूर जन्म की बाकी बची यादें भी राजा देव को याद आ जाएं कि रानी ताशा ने उन्हें किस तरह का धोखा दिया था।" बबूसा ने कहा।

"परंतु रानी ताशा को तो देवराज चौहान हर गलती के लिए माफ कर चुका है।" धरा बोली।

"उन बातों पर मत जाओ। ये समझो कि राजा देव उस धोखे के प्रति अभी तक अंजान हैं। राजा देव को मैं आप सब से बेहतर जानता हूं। वो जितने नर्म है, उससे ज्यादा कठोर है। उस धोखे के बारे में जानने के बाद राजा देव, रानी ताशा को क्षमा नहीं करेंगे। तब राजा देव, रानी ताशा की सुंदरता की भी परवाह नहीं करेंगे।

"इस वक्त देवराज चौहान अपनी इच्छा से, होशो-हवास में रानी ताशा के साथ है?" नगीना ने गम्भीर स्वर में पूछा।

बबूसा ने नगीना को देखा और कह उठा।

"ये बात तुम क्यों पूछ रही हो?"

"देवराज चौहान मेरा पति है। उसकी खुशी में ही मेरी खुशी है। अगर वो अपनी मर्जी से रानी ताशा के साथ जा रहा है तो मैं यहीं से वापस लौट जाना पसंद करूंगी। जब से सफर शुरू किया है, मैं इसी उलझन में फंसी हूं।"

"ये तुम कैसी बातें कर रही हो बेला।" मोना चौधरी कह उठी।

"अभी तुम...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

"मुझे इस बात का जवाब दे लेने दो।" बबूसा ने सामान्य स्वर में नगीना को देखते हुए कहा—"तुमने अच्छी बात पूछी, और मैं तुम्हें बता देना चाहता हूं कि कहने को तो राजा देव अपनी मर्जी से रानी ताशा के साथ हैं। तुम देख ही रही हो कि रानी ताशा, राजा देव के साथ कोई जबर्दस्ती नहीं कर रही। परंतु हकीकत ये है कि राजा देव इस वक्त बहुत जबर्दस्त गलतफहमी के शिकार हुए पड़े हैं कि रानी ताशा में उनकी जिंदगी बसती है। ऐसा कुछ नहीं है। तुम रानी ताशा द्वारा दिए गए धोखे के बारे में कुछ नहीं जानती, परंतु मैं और सोमारा जानते हैं।" बबूसा ने सोमारा को देखा—"जिस वक्त राजा देव को उस धोखे के बारे में याद आ गई तो उसी वक्त उन्हें अपनी भूल का एहसास हो जाएगा। रानी ताशा उन्हें जहर की तरह लगने लगेगी और बेहद कड़ी सजा दे देंगे रानी ताशा को।"

"अगर ऐसा न हुआ तो? देवराज चौहान ने सब कुछ जान लेने के बाद भी रानी ताशा को सजा नहीं...।"

"मैं राजा देव को आप सबसे बेहतर जानता हूं। उस धोखे की सजा तो राजा देव, रानी ताशा को जरूर देंगे। जैसे भी हो राजा देव को रानी ताशा से अलग करना है कि अकेले में उन्हें सदूर के जीवन की यादें ठीक से याद आ सकें।"

"इसमें कितना वक्त लगेगा?"

"कह नहीं सकता।" बबूसा के चेहरे पर बेचैनी की लकीरें उभरीं।

"तुमने कहा था कि सदूर पर पहुंचने के बाद रानी ताशा महापंडित से

कहकर देवराज चौहान के दिमाग के उस हिस्से को साफ करा देगी, जहां सदूर के जन्म की यादें दर्ज हैं।" नगीना ने सोच भरे स्वर में कहा।

"ऐसी ही बात है। परंतु मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। ऐसा वक्त आने से पहले ही मुझे कुछ करना होगा। तुम सब भी मेरे साथ हो तो ये और भी अच्छी बात है। हम रानी ताशा को सफल नहीं होने देंगे। उन्हें राजा देव धोखे की सजा जरूर देंगे। सोमाथ के लिए मुझे जल्दी ही कुछ सोचना होगा। शायद डोबू जाति जाकर कोई रास्ता दिखे सोमाथ को खत्म करने का।"

"इस मामले में तुम हमसे ज्यादा सहायता की उम्मीद मत रखना।" जगमोहन बोला—"सोमाथ हमारे बस के बाहर की 'चीज' है।"

"जानता हूं।" बबूसा के होंठ भिंच गए—"परंतु सोमाथ मेरे बस से बाहर की चीज नहीं है। मैं ही देखूंगा उसे।"

"मैं तेरे साथ हूं।" सोमारा गम्भीर स्वर में कह उठी।

सब थोड़ा-बहुत खा चुके थे। आराम भी हो गया था। सर्दी का जोर और भी बढ़ गया था। दिन की रोशनी सर्दी और कोहरे की वजह से मध्यम होने लगी थी। रास्ता अभी लम्बा सफर था। बबूसा चाहता था कि दिन भर का सफर करके, वो उस पहाड़ी खोह तक जा पहुंचे (जहां 'बबूसा' उपन्यास में धरा और जोगाराम रुके थे) ताकि रात की सर्दी से कुछ राहत मिले और थोड़ा-बहुत सोया भी जा सके।

सफर पुनः शुरू हो गया।

पहले की तरह बबूसा आगे अपना घोड़ा दौड़ा रहा था। घोड़ों की टॉपों की आवाजें उस वीरान और सुनसान जंगल में पुनः गूंजने लगी थी। धरा अपने घोड़े पर मौजूद थी और किसी का ध्यान उस पर नहीं था। इस वक्त अगर कोई धरा के चेहरे को देख लेता तो चौंक जरूर जाता। क्योंकि धरा की आंखों और चेहरे पर खतरनाक चमक लहरा रही थी। वो मुस्करा रही थी जिसकी वजह से उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया था और वो खतरनाक जैसी दिखने लगी थी फिर अजीब से वहशी अंदाज में बड़बड़ा उठी।

"तू तो बहुत समझदार निकली खुंबरी। तेरी ताकतों ने तुझे पहले ही एहसास दिला दिया था कि वापस सदूर पर डोबू जाति और बबूसा की सहायता के बिना नहीं पहुंच सकेगी। वो ही बात सच निकली। अब सदूर ग्रह पर जाने का मेरा रास्ता साफ हो चुका है। पांच सौ सालों के बाद तू वापस सदूर ग्रह पर जा रही है। अपने सदूर पर। पांच सौ साल पहले ही मुझे पता लग गया था अपनी ताकतों से कि पांच सौ साल बाद मुझे सदूर पर जाने का मौका मिलेगा, तभी तो वक्त बिताने मैं पृथ्वी पर आ गई थी और यहां जन्म लेने लगी। जब मैंने धरा के रूप में पृथ्वी पर जन्म लिया तो

तभी मुझे एहसास हो गया था कि इस जन्म में पांच सौ साल पूरे होने वाले हैं और मैं वापस सदूर पर जाऊंगी। सदूर मेरा है, सिर्फ मेरा है। पहले तो मैं धोखे से फंस गई थी, परंतु अब खुंबरी नहीं फंसने वाली। सबको तिगनी का नाच न नचा दिया तो मेरा नाम खुंबरी नहीं। पांच सौ साल पूरे होते ही मेरी ताकतें जिंदा हो जाएंगी। फिर खुंबरी का मुकाबला कोई नहीं कर सकेगा।"

घोड़े डोबू जाति की दिशा में दौड़े जा रहे थे। हर तरफ घोड़ों के टॉपों की 'थापों' की आवाज गूंज रही थी।

▭ ▭

डोबू जाति के दांई तरफ, तीन दिन के रास्ते पर टाकलिंग ला पड़ता था तो बांई तरफ चार दिन के रास्ते पर 'सूमा' नाम का गांव पड़ता था, जहां की आबादी सिर्फ हजार लोगों के आसपास थी। टाकलिंग लॉ की तरफ से डोबू जाति में आया जाये तो रास्ते में जंगल पड़ते हैं, पहाड़ आते हैं, ये सब आप 'बबूसा' उपन्यास में पढ़ चुके हैं परंतु 'सूमा' की तरफ से डोबू जाति की तरफ आया जाए तो चार दिन के सफर का बर्फीला रेगिस्तान पार करना पड़ता था और रास्ते में पनाह लेने के लिए, रात गुजारने के लिए, या बर्फ गिरने की स्थिति में, ठहरने की कोई जगह नहीं थी। चारों तरफ बर्फ का रेगिस्तान ही दिखता था। ये ही वजह थी कि 'सूमा' की तरफ से डोबू जाति तक का रास्ता कोई तय नहीं करता था, न ही डोबू जाति वाले 'सूमा' की तरफ जाते थे, क्योंकि रास्ता लम्बा और जटिल था।

अब हम 'सूमा' की तरफ चलते हैं। 'सूमा' गांव का हाल देखते हैं।

'सूमा' गांव के लोगों के पास रोजगार के नाम पर खास कुछ नहीं था। इन बर्फीले पहाड़ों के पास मैदानी जगहों पर अपने कच्चे-पक्के घर बनाकर जाने कब से यहां बसे हुए थे। सर्दियां शुरू होते ही जब बर्फ गिरने का वक्त करीब आता तो गांव के अधिकतर लोग जरूरी सामान लेकर पहाड़ों से नीचे, वहां चले जाते जहां बर्फ नहीं गिरती थी और वहीं रहते बर्फ गिरने तक। वहां कमाते, मेहनत करते, पैसा इकट्ठा करते और जब गर्मियां शुरू होतीं तो ये सब वापस 'सूमा' आ जाते। इस दौरान सर्दियों में, बर्फ गिरने के समय में कुछ लोग 'सूमा' में ही रुकते और वहां के घरों की देखभाल करते तो कुछ ऐसे भी होते जो सेहत से लाचार होते और लम्बा सफर करके, दूर कहीं जाने के काबिल नहीं होते। ये लोग उन भेड़ों का खयाल रखते जिन्हें साथ नहीं ले जाया गया होता या उन गायें-भैसों की देखभाल करते जिनके दूध से इनका काम चलता था। ऐसे वक्त में 'सूमा' में पांच-सात जवान लोग जरूर रह जाते थे, जो कि 'सूमा' के लोगों के लिए, खाने का इंतजाम करते। ऐसी बर्फ भरी कड़ाके की सर्दी में, गर्मी पाने के लिए, जानवरों का

मांस खाना बहुत जरूरी हो जाता और ये जवान लोग जानवरों का शिकार करके लाते, जिन्हें खाने के लिए पकाया जाता।

'सूमा' गांव से आधा किलोमीटर दूर एकमात्र होटल 'आइस हिल्स' था।

'आइस हिल्स' सूमा गांव की रौनक था। उस इलाके की रौनक था। बर्फबारी के समय में ये होटल पूरी तरह वीरान हो जाता था। यहां तक कि चौकीदार भी नहीं होता था। क्योंकि बर्फ गिरते रहने की वजह से रास्ते बंद हो जाते थे और 'सूमा' की तरफ किसी के आ पहुंचने के सवाल ही नहीं उठता था। इस तरफ आने वाला एकमात्र कच्चा रास्ता, जो कि महज पंद्रह फुट चौड़ा था, जो कि कहीं आठ-दस फुट चौड़ा भी रह जाता था, बर्फ गिरने की वजह से वो भी बंद हो जाता था। परंतु गर्मियां शुरू होते ही 'आइस हिल्स' का मालिक ढेर सारे कर्मचारियों के साथ आ पहुंचता और साफ-सफाई के बाद होटल खुल जाता, क्योंकि गर्मियों में इधर आइस-स्कीइंग करने वाले लोगों के आने का तांता लग जाता था। सूमा के हर तरफ दूर-दूर तक बर्फ ही थी। आइस-स्कीइंग करने के लिए बेहतरीन जगह थी। आइस हिल्स नाम का ये होटल, आइस स्कीइंग के लिए काफी मशहूर था और लोग दूर-दूर से यहां आते थे। कई लोग तो जैसे हर साल ही आया करते थे। होटल में कुल बाईस कमरे थे और हालात ये हो जाती कि हर सीजन में कमरे कम पड़ जाते। अक्सर आने वालों को एक बड़े हॉल में इकट्ठे रहना पड़ता। चूंकि ये जगह पहाड़ों के बहुत ऊपर थी, ऐसे में खाना-पीना काफी महंगा था और पसंदीदा चीजें भी कम ही मिलती थीं। होटल वालों का जो 'मेन्यू' होता, वो ही होटल में ठहरे लोगों को खाना पड़ता। लेकिन इस बात से कम लोगों को ही शिकायत होती, क्योंकि ये उनकी पसंदीदी जगह थी आइस-स्कीइंग के लिए। आइस स्कीइंग का सामान होटल की तरफ से ग्राहकों के लिए मुफ्त उपलब्ध होता, या यूं भी कह सकते हैं कि किराए और खाने का पैसा ही इतना ठोक बजाकर लिया जाता कि आइस स्कीइंग के सामान का पैसा न लेकर दिखावे के तौर पर मलहम लगाई जाती होटल की तरफ से। जो भी हो आइस हिल्स होटल के खुलने पर गर्मियों में सूमा में बहार आ जाती, क्योंकि तीन महीनों के लिए सूमा गांव के लोगों को भरपूर रोजगार मिल जाता। आइस-स्कीइंग के लिए आए लोगों को साथ में ऐसे व्यक्ति की भी जरूरत होती जो यहां के बर्फीले पहाड़ों के रास्ते जानता हो, ताकि वे भटक न जाएं और ये काम सूमा गांव के युवक और युवतियां करते, जो कि इसी रोजगार के लिए आइस-स्कीइंग सीखे हुए हैं। इन पर्यटकों का साथी बनकर, इन्हें काफी अच्छा पैसा मिल जाता, जिनमें सूमा गांव वालों का खाना-पीना बेहतर रहता। हालांकि खाना-पीना यहां नहीं मिलता था। जरूरत का सामान

लाने के लिए सात मील नीचे 'ख्वारो' नाम की जगह पर जाना पड़ता जो कि भरपूर पहाड़ी गांव था और वहां पर सामान मिलने की दुकानें थीं। गर्मियों में सूमो गांव वाले, आइस हिल्स होटल की गाड़ियों में बैठकर 'ख्वारो' चले जाते थे होटल की गाड़ियां अक्सर दिन में कई बार आती-जाती रहती थीं। इसी तरह वापस भी आ जाते सामान लेकर।

सर्दियों में वीरान, खामोशी थी और गर्मियों में चहल-पहल, ठहाके और मस्ती थी यहां। जैसे गर्मियां आते ही यहां के पहाड़ जीवित हो उठते हों। होटल की छोटी-सी इमारत, बर्फ से ढंके पहाड़ों के बीच रात को रोशनियों में जगमगाती बहुत मनमोहक लगती। एक अलग ही दुनिया का एहसास होता और कुछ दूरी 'सूमा' गांव की रात की लाइटें चमकतीं। कई जगह आग के अलाव दिखते, जहां इकट्ठे बैठे लोग, कड़कती सर्दी में आग सेंकते। रात को अक्सर कोहरा जमीन को छूने लगता और हाल ये हो जाता कि तीन कदम दूर भी कुछ भी नहीं दिखता। सब कुछ कोहरे की ओट में छिप जाता और जब कोहरा वहां से सरक जाता तो जीवन फिर उजागर हो उठता। रोशनी चमकती दिखाई देने लगती।

गर्मियों का मौसम शुरू हो चुका था।

होटल आइस हिल्स सज चुका था। उसमें फिर जीवन जवान हो उठा था।

'सूमा' गांव के लोग वापस आना शुरू हो चुके थे।

हर तरफ चहल-पहल और रौनक का दौर इन गर्मियों में भी शुरू हो गया था। हर तरफ बर्फ की सफेदी नजर आ रही थी, परंतु रास्तों पर से बर्फ साफ कर दी गई थी कि टूरिस्ट को होटल तक पहुंचने में परेशानी न हो। उधर सूमा गांव से भी गांव वालों ने बर्फ साफ कर दी थी। इसकी वजह ये थी कि जब टूरिस्टों को होटल में जगह नहीं मिलती तो वे जगह पाने के लिए गांव का रुख करते थे और उन्हें रहने की जगह देकर, वे अच्छी कमाई कर लेते थे। होटल के आसपास लोग बर्फ के गोले बनाकर एक-दूसरे पर फेंक रहे थे। खेल रहे थे। हंसी-ठठा के साथ वे मनोरंजन कर रहे थे। इस खेल में कई तो बूढ़े लोग भी शामिल थे। दोपहर हो रही थी। मध्यम-सा सूर्य निकला हुआ था। कोहरे की वजह से यहां सूर्य देर से निकलता और जल्दी गायब हो जाता। कभी-कभी तो सूर्य देव के दर्शन ही नहीं होते। हर समय वातावरण में तीव्र ठंडक फैली रहती बर्फ की वजह से, ऐसे में जब तेज हवा चलती तो शरीर में कंपकंपी-सी दौड़ जाती थी। मोटे गर्म कपड़े पहने रहना जरूरी था यहां। सप्ताह में तीन दिन ही मौसम बेहतर रहता आइस स्कीइंग के लिए। परंतु कुछ लोग तो मौसम की परवाह नहीं करके, खराब मौसम में भी आइस स्कीइंग के लिए निकल जाते थे। सूमा गांव के आइस स्कीइंग

सीखे हुए युवक-युवतियां सुबह से ही होटल के बाहर आकर जम जाते थे कि आइस स्कीइंग के लिए टूरिस्टों को गाइड की जरूरत हो तो वे अपनी सेवा दें। टूरिस्ट के साथ वे मोल-भाव करते। आमतौर पर गाइड टूरिस्ट से दिन भर के लिए तीन सौ से पांच सौ रुपया लेते थे। गांव के लोगों के लिए ये रकम बहुत बढ़िया होती थी। होटल में टूरिस्ट आते रहते, एक-दो दिन बाद चले जाते, तो तब तक और आ जाते। गर्मियां खत्म होने तक वे नौजवान युवक-युवतियां अच्छी रकम इकट्ठी कर लेते थे जिन्हें वे बाद में, रोजगार न होने पर बैठकर खाते। जिसके सहारे उनके परिवार चलते। जरूरतें पूरी होतीं।

तभी मारुति की ईको, टूरिस्ट गाड़ी होटल के सामने आकर रुकी।

ड्राइवर बाहर निकला।

भीतर बैठे लोग भी बाहर निकलने लगे। वे तीन बहनें थीं और तीनों के पति उनके साथ थे। बेहतर है पहले परिचय हो जाए। बड़ी बहन को अक्सर बेबी कहकर पुकारा जाता है और वो दिल्ली के प्राइवेट बैंक में नौकरी करती है, उसका पति राजीव मल्होत्रा, छब्बीस साल का है और साफ्टवेयर इंजीनियर है। बेबी की उम्र 24 है। उससे छोटी जोगना है, जो कि घरेलू औरत है। 22 साल की है, उसकी पति संदीप शर्मा उम्र 24 साल है वो इंडियन ऑयल में मैनेजर है, पढ़ाई की बहुत आदत है उसे। नौकरी करते हुए भी वो और पढ़ना चाहता है। वो चुप रहने वाला, गम्भीर किस्म का आदमी है। बातों में कम हिस्सा लेता है। सबसे छोटी बहन सुधा है, उम्र 21 साल, जिंदगी को मस्ती से बिता देने का इरादा रखती है उसका पति पुनीत सेठी है, जो कि दिल्ली पुलिस में सब-इंस्पेक्टर है। सबसे खास बात तो ये है कि तीनों बहनों में बहुत बनती है और तीनों के पति यानी कि साढू भाइयों में गहरी जमती है। ये लोग पिछले साल भी यहां आए थे। तीनों बहनों में से कोई भी आइस-स्कीइंग नहीं जानती, परंतु इन्हें यहां का मौसम बहुत बढ़िया लगता है जबकि तीनों साढू भाइयों को बढ़िया स्कीइंग आती है। संदीप शर्मा को बीते साल स्कीइंग नहीं आती थी परंतु राजीव मल्होत्रा और पुनीत सेठी ने उसे बेहतर ढंग से सिखा दी थी कि वो भी उनके साथ रह सके। वैसे वो कभी-कभी मजाक में संदीप शर्मा को भौंदू भी कहते थे। जिससे संदीप चिढ़ जाता था।

राजीव मल्होत्रा ईको से छलांग लगाकर बाहर निकला और वहां का नजारा देखते ही बांहें फैलाकर नाच-सा उठा फिर खुशी से चिल्लाया।

"अब आएगा स्कीइंग का मजा।" कहने के साथ ही उसने खुशी भरे अंदाज में पास आ पहुंची जोगना के कंधे पर हाथ रखा।

तभी संदीप शर्मा ईको से बाहर निकलता कह उठा।
"ये क्या कर रहा है। मेरी बीवी के कंधे पर क्यों हाथ रखता है।"
"ओह।" राजीव मल्होत्रा हाथ हटाकर बोला—"मैंने समझा मेरी है।"
"तुमने एक बार पहले भी जोगना के कंधे पर हाथ रखा था।" संदीप ने करीब आकर बुरा-सा मुंह बनाया।
जोगना मुस्करा रही थी।
बेबी और सुधा हंस पड़ी थीं।
"तेरे को याद है?" राजीव मल्होत्रा ने आंखें फैलाकर कहा।
"पुलिस में रिपोर्ट करो।" सुधा हंसी रोकती, अपने पति पुनीत सेठी की तरफ इशारा कर बोली—"रिपोर्ट लिखो।"
"जब जुर्म होगा, तभी रिपोर्ट लिखूंगा।" पुनीत सेठी मुस्कराया—"पुलिस जुर्म होने के बाद अपना काम करती है।"
"अब जोगना के कंधे पर हाथ मत रखना।" संदीप ने कहा और जोगना का हाथ पकड़े आगे बढ़ गया।
"भौंदू।" राजीव मल्होत्रा कड़वा-सा मुंह बनाकर कह उठा—"आधा पागल है साला।"
तभी बेबी पास पहुंचकर आंखें नचाती बोली।
"मेरे जीजू को ऐसा मत बोलो। तुम मेरे कंधे पर हाथ रखो। हम सटकर चलेंगे और जीजू को दिखाएंगे।"
"सामान बाहर निकालना उस्ताद जी।" पुनीत सेठी ने ड्राइवर से कहा, फिर बाकी सब भी ईको से अपना सामान निकालने लगे। ड्राइवर ने दो सूटकेस और दो बैग निकालकर बाहर रखे।
राजीव मल्होत्रा ने टैक्सी वाले को पेमेंट दी।
बीस मिनट बाद जब वे होटल के भीतर पहुंचे तो संदीप और जोगना को रिसैप्शन पर खड़े पाया। उन्होंने तीन कमरे ले लिए थे। अभी आसानी से उन्हें कमरे मिल गए थे।

▭ ▭

चार बजे सूर्य गायब हो गया था और मौसम ठंडा होने लगा। पांच-सवा पांच बजे अंधेरा घिर आया था और सर्दी में बढ़ोतरी हो गई थी। अधिकतर टूरिस्ट होटल में जा सिमटे थे। इक्का-दुक्का लोग ही बाहर रहकर तीखी सर्दी का मजा ले रहे थे। होटल के बाहर खड़े वाहनों पर ओस की मोटी परत दिख रही थी। लकीरों के रूप में ओस की बूंदें, पानी बनकर कार की बॉडी पर खिंची नजर आने लगी थीं। शीशे धुंधले पड़ गए थे।
होटल के भीतर, रिसैप्शन के पास बड़े हॉल में अलाव जला रखा था।

वहां पर सीमेंट की पहाड़ी अंगीठी बना रखी थी, जिसके ऊपर चिमनी लगी थी और धुआं चिमनी से होकर, छत के ऊपर चिमनी के आखिरी सिरे से निकल रहा था। उसी हाल में छोटी-मोटी अंगीठियां भी थीं, जो कि कुर्सी पर बैठे आराम फरमाते लोगों के पास भी रखी हुई थीं। होटल का स्टाफ हर तरह की सेवा करने को मौजूद था। किसी को ज्यादा सर्दी लग रही थी तो होटल स्टाफ से कहकर अपने लिए कम्बल मंगवा लेता। होटल में ठहरे लोग एक-दूसरे से अंजान थे, परंतु इस सर्दी भरे वातावरण में आग के सामने इकट्ठे बैठे तो बातचीत का माहौल गर्म हो गया। एक तरफ इकट्ठे बैठे पांच लोग, व्हिस्की का मजा ले रहे थे। इस वक्त ये जगह होटल कम और घर जैसा ज्यादा लग रहा था। होटल का मालिक जिसे कि मिस्टर खोपा कहकर लोग बुला रहे थे, वो लोगों से हाल-चाल पूछता फिर रहा था और हिदायत दे रहा था कि नंगे सिर इस मौसम में होटल से बाहर न निकलें। पीने वाले तो इस बात का खास ध्यान रखें वरना सर्दी बीमार कर देगी।

पहली मंजिल के एक कमरे में संदीप शर्मा मौजूद था। वो रजाई में दुबका हुआ था और सिर पर गर्म टोपी के अलावा हाथों में गर्म दस्ताने भी पहन रखे थे। वो कुक्कड़ बना लग रहा था कि तभी दरवाजा खोलकर जोगना ने भीतर प्रवेश किया। संदीप को इस प्रकार रजाई में दुबके देखकर वो मुस्कराई। जोगना ने सूट और उसके ऊपर काले रंग का गर्म स्वेटर पहन रख था। वो खुश लग रही थी।

"तुम्हें क्या हो गया?" जोगना आगे बढ़ती कह उठी।

"सर्दी लग रही है।"

"सर्दी?" जोगना उसके पास बेड के किनारे पर आ बैठी—"होटल के भीतर सर्दी कहां है। हर कमरे में रूम हीटर चल रहा है। गर्म कपड़े हैं। नीचे हॉल में जाकर देखो, कैसे लोग बैठे गप्पें मार रहे हैं।"

"वो जो भी करें, मुझे सर्दी लग रही है।" संदीप कह उठा।

"तुम भी वो हो।"

"क्या वो?" संदीप ने जोगना को देखा।

"वो ही।"

"क्या वो ही...?" संदीप का हाथ रजाई से बाहर निकाला और जोगना की कलाई थाम ली।

जोगना ने आंखें नचाई।

"क्या बात है भोले बलम?"

"मुझे सर्दी लग रही है, तुम भी रजाई में आ जाओ।"

"पागल हो। ये कोई वक्त है जो...।"

"वक्त को क्या हुआ है, छः बज गये हैं। बाहर अंधेरा है और मुझे सर्दी...।"

"साथ वाले कमरे में सब बैठे बातें कर रहे हैं हंस खेल रहे हैं और तुम्हें इन बातों की...।"

"उन्हें सर्दी नहीं लग रही होगी। मुझे लग रही है। अब तुम ही मुझे गर्मी दे सकती हो।" कहते हुए संदीप ने जोगना को रजाई में खींचना चाहा कि जोगना झल्ला कर बोली।

"क्या करते हो, कोई आ जायेगा।"

"तो दरवाजा बंद कर दो।" संदीप मचल उठा।

"अभी कुछ नहीं होगा। कोई भी आ सकता है, हमें कमरे में बंद पाकर क्या सोचेगा कि...।"

"कुछ नहीं सोचेगा।" संदीप उखड़ गया—"वो नहीं करते क्या?"

"ये बात नहीं है, समझा करो। हम लोग ग्रुप में यहां आये हैं, सब कुछ देखभाल के करना...।"

"पर मुझे सर्दी लग रही है।" संदीप ने उसकी कलाई सख्ती से पकड़ ली।"

"अब तुम्हारा क्या करूं।" जोगना ने मुंह बनाया—"तुम तो बच्चों की तरह जिद्द कर रहे हो।"

"आ जाओ ना। मुझे गर्मी मिल जाएगी।" संदीप मुंह लटकाकर प्यार से कह उठा।

"अच्छा छोड़ो।" एकाएक जोगना उठी।

"कहां जा रही हो?"

"कलाई तो छोड़ो।" जोगना ने आंख दबाई—"दरवाजा तो बंद कर लूं।"

संदीप ने शराफत से जोगना की कलाई छोड़ दी।

जोगना दरवाजे के पास पहुंची और बंद करने की अपेक्षा उसे खोलते हुए बोली।

"इतनी भी सर्दी नहीं है कि तुम्हें गर्मी की जरूरत हो।"

"क्या मतलब?"

"उठ जाओ। रजाई से बाहर निकलो। राजीव और पुनीत की तरह स्मार्ट दिखो मुझे।" जोगना ने हंसकर कहा।

"उन्हें सर्दी नहीं लग रही होगी, पर मुझे तो लग रही है। बाद में मैं भी रजाई से बाहर...।"

"सॉरी पतिदेव, ये वक्त इन बातों का नहीं है।"

"तो तुम मुझे धोखा देकर भाग रही हो।"

"मैं राजीव और पुनीत को तुम्हारे पास भेजती...।"

"उनका मैं क्या करूंगा। मुझे तो तुम्हारी जरूरत...।"

जोगना बाहर निकल गई और जाते-जाते दरवाजा बंद कर गई।

"समझ में नहीं आता कि शाम को छः बजे औरतों को सर्दी क्यों नहीं लगती।" संदीप बड़बड़ा उठा।

दस मिनट बीते कि पुनीत और राजीव ने भीतर प्रवेश किया।

"क्यों भौंदू, पता चला तेरे को सर्दी लग रही है।" राजीव ने कहा।

"तेरे को कई बार कहा है कि मुझे भौंदू मत कहा कर।" संदीप ने बुरा सा मुंह बनाया।

"वो तो यार तेरे को प्यार से कहता हूं।"

दोनों कुर्सियों पर आ बैठे।

"अब तो तूने जोगना के कंधे पर हाथ नहीं रखा?" संदीप ने आंखें तरेर कर कहा।

"बिल्कुल नहीं, पुनीत से पूछ ले।" राजीव ने पुनीत की तरफ इशारा किया—"पर मैं तेरे को इजाजत देता हूं कि तू बेबी के कंधे पर हाथ रख सकता है। उसके साथ डांस कर सकता है।"

"अच्छा।" संदीप ने व्यंग से कहा—"तेरा क्या खयाल है कि तेरी ये बात सुनकर मैं तुझे जोगना के कंधे पर हाथ रखने की छूट दे दूंगा। भूल जा मैं तेरी बातों में फंसने वाला नहीं। जोगना के कंधे पर हाथ मत रखना।"

पुनीत दोनों को देखता मुस्करा पड़ा।

"तू इसे समझाता क्यों नहीं पुलिस वाले?" राजीव ने पुनीत से कहा।

"जोगना, संदीप की है। कंधे पर हाथ रखने के मामले में, मैं संदीप की तरफ हूं।"

"ये सच्चा पुलिस वाला है।" संदीप मुस्करा कर बोला।

"इतना भी सच्चा नहीं। मेरे एक दोस्त का केस ठीक कराने के लिए इसने पचास हजार...।"

"वो मामला मालूम है मुझे।" संदीप कह उठा—"वो इसने नहीं, इसने साथी पुलिस वालों को दिए हैं। पुनीत की वजह से तुम्हारा दोस्त बच गया, वरना छेड़खानी के मामले में इस वक्त जेल की हवा खा रहा होता।"

"इन बातों को छोड़ो।" पुनीत बोला—"तू रजाई में क्यों घुसा हुआ है?"

"सर्दी बहुत है यार।" संदीप बोला—"एक बात तो बता कि औरतों को ठंड क्यों नहीं लगती?"

पुनीत और राजीव की नजरें मिलीं।

"तो ये मामला है।" पुनीत बोला—"औरतों को वक्त पर ठंड लगती है। बे-वक्त नहीं। आदमी खुले घोड़े की तरह होता है और औरतें कपड़े पहनकर रखती हैं।" पुनीत मुस्करा पड़ा।

"मैंने रजाई में बैठने को कहा तो कहती है राजीव और पुनीत को भेजती हूं।" संदीप ने मुंह बनाया—"मैं तो...।"

तभी दरवाजा खुला और सुधा, बेबी, जोगना ने भीतर प्रवेश किया। सुधा ने हाथ में पकड़े लिफाफे से दो बोतल निकालकर बेड पर रख दी और बोली।

"गिलास, पानी और खाने का सामान वेटर लेकर आ रहा है। ज्यादा मत पीना तुम लोग। हम साथ वाले कमरे में हैं। जब तुम लोगों की बोतल बंद हो जाए तो हमें बता देना।"

संदीप ने शिकायती नजरों से जोगना को देखा।

जोगना ने ऐसी शरारती निगाहों से बेड पर पड़ी बोतलों की तरफ इशारा किया जैसे कह रही हो, ये बोतलें देंगी 'सर्दी में भी, गर्मी का एहसास'।

जोगना, बेबी, सुधा बाहर निकल गईं।

'इससे तो वो बढ़िया थी।' संदीप बड़बड़ा उठा।

"कौन?" राजीव ने उसकी बड़बड़ाहट सुन ली थी।

"तुझे क्यों बताऊं, ये प्राइवेट बात है।"

तभी पुनीत उठा और टेबल उठाकर कुर्सियों के सामने रखने लगा। फिर दोनों बोतलें उठाकर टेबल पर रखीं। उसके बाद कुर्सी पर बैठता कह उठा।

"मेरे खयाल में कल सुबह हमें आइस-स्कीइंग के लिए चलना चाहिए। इस बार कुछ लम्बा चक्कर लेंगे। पिछले साल तो सारा समय इसे आइस-स्कीइंग ही सिखाने में निकल गया था।

"अब तो मैं तुमसे बढ़िया आइस-स्कीइंग कर लेता हूं।"

"भूले तो नहीं?" राजीव बोला।

"ऐसी चीजें भूली नहीं जातीं।" संदीप मुस्कराया।

तभी वेटर आ गया।

पानी का जग और तीन गिलास रख गया।

पुनीत ने बोतल खोली और गिलासों को तैयार करने लगा।

"कल का मौसम देखेंगे।" राजीव ने कहा—"मौसम साफ हुआ तो आइस स्कीइंग के लिए निकल चलेंगे।"

"मेरे खयाल में हमें गाइड भी साथ रखना चाहिए। रास्ता न भटक जाएं। बर्फ के सब रास्ते एक से लगते हैं।"

"गाइड मैं ढूंढ़ लूंगा।" संदीप बोला—"पर आइस स्कीइंग के वक्त मुझे सर्दी लगी तो, मैं क्या करूंगा।"

"मेरे से लिपट जाना।" राजीव बोला।

"तुमसे?" संदीप भड़क कर कुछ कहने लगा कि चुप हो गया।

पुनीत ने मुस्कराकर दोनों को गिलास थमाए।

"कहते-कहते चुप क्यों हो गए?"

"कह देता तो तुम जल-भुन उठते। मैं ट्रिप का मजा खराब नहीं करना चाहता।"

"समझदारी की बात कर रहा है।" पुनीत ने अपना गिलास थाम लिया।

"समझदार तो मैं तुमसे बहुत हूं पर जब ठंड लगती है तो दिमाग खराब हो जाता है।"

तीनों ने गिलास टकराए।

"चियर्स। हमारे यहां पहुंचने के नाम और हमारा ये दौर शुरू होने की खुशी में।"

तीनों ने गिलासों से घूंट भरे।

तभी वेटर ड्रिंक के साथ का खाने-पीने का सामान ले आया।

"रात के खाने आर्डर ले जाना।" संदीप बोला।

"सर। होटल में खाना एक-सा ही बनता है क्योंकि खाने का सामान नीचे से आता है।" वेटर ने कहा—"किसी के लिए भी कुछ खास नहीं बनाया जाता। होटल का एक ही मेन्यू होता है।"

"आज के मेन्यू में क्या है"

"आलू पालक और दाल।" बेटर ने बताया।

"ये मेन्यू कोई मेन्यू हुआ। ये चीजें तो हम घर में खाते हैं। बाहर भी यही खाना है तो आने का क्या फायदा?"

पुनीत के इशारे पर वेटर चला गया तो पुनीत ने कहा।

"ये पहाड़ों की काफी ऊंची जगह है। यहां खाने को जो मिल जाए, खा लो। यहां आलू-पालक और दाल भी खाने में मजा आएगा। दिल्ली में तो हमें मिलने का भी वक्त नहीं मिलता, यहां एक साथ खाएंगे तो मजा डबल हो जाएगा।"

संदीप सिर हिलाकर रह गया।

दौर जारी रहा। पीना चलता रहा। बीच-बीच में कभी सुधा तो कभी बेबी तो कभी जोगना चक्कर लगाती और उन्हें कम पीने को कहकर चली जाती। परंतु पीने का दौर जब रुका तो रात के ग्यारह बज रहे थे। दोनों बोतलें खाली हो चुकी थीं। मजे ही मजे थे तीनों के।

अगला दिन निकला।

कोहरे और धुंध से भरा वातावरण था। हर तरफ ओस का गीलापन दिखाई दे रहा था। सर्दी इतनी कि हड्डियां ठिठुर रही थीं। पौने सात बजे दिन का उजाला फैलना शुरू हुआ था और सवा सात बजे तक दिन की पूरी रोशनी फैल चुकी थी। ठहरा-ठहरा सा कोहरा, बेहद धीमे-धीमे सरक रहा था। हवा का नामो-निशान नहीं था। होटल के बाहर खड़ी कारें और टैक्सियों का ओस से बुरा हाल था। होटल में ड्राईवरों के लिए एक कमरा मुफ्त में रखा गया था कि ड्राईवर वहां रह सकें। ऐसी कड़ाके की ठंड में होटल के भीतर खामोशी थी। हर कोई कमरे में, रजाई में दुबका हुआ था। परंतु अब जाग होनी शुरू हो गई थी। वेटर 'बैड टी' लेकर आते-जाते दिखने लगे थे। चहल-पहल का आरम्भ होता जा रहा था। कुछ लोग ऐसे भी थे जो अपनी आदत से मजबूर थे और सुबह उठकर सैर के लिए जाकर, वापस भी आ चुके थे। परंतु अब वो फिर रजाई में जा घुसे थे। पुनीत की आंख खुल गई। बगल में सोई सुधा को देखा। वो रजाई में छिपी नींद में थी। वो जानता था कि सबको सोते-सोते रात के तीन बज गए थे। फिर वो मुस्करा पड़ा कि रात खूब पी। दोनों बोतलें, तीनों ने खत्म कर दी थीं। रात की कुछ बातें याद थीं तो कुछ नहीं, तभी उसे ध्यान आया कि आज आइस स्कीइंग करने जाने का प्रोग्राम है। पुनीत बैड से उतरा और खिड़की पर लगे पर्दे को जरा-सा हटाकर बाहर देखा। कोहरा दिखा बाहर। ऐसे मौसम में आइस स्कीइंग के लिए जाना ठीक नहीं था। सामने कुछ दिखेगा ही नहीं तो स्कीइंग कैसे की जा सकेगी। सूर्य बेशक ना निकले परंतु मौसम तो साफ होना ही चाहिए। वो वापस बैड पर पहुंचा और रजाई लेकर लेटने जा रहा था कि सुधा ने कहा।

"उठने के बाद क्यों सो रहे हो इंस्पेक्टर साहब?"

पुनीत ने देखा कि रजाई में से सुधा की खुली आंखों से उसे देख रही है।

"तुम जाग रही हो?" पुनीत मुस्कराया।

"तुम उठ जाओ तो मैं सोई कैसे रह सकती हूं।" सुधा ने उसी मुद्रा में कहा।

"अभी नींद पूरी नहीं हुई। सोने जा रहा हूं।" पुनीत बोला।

"उठ जाने के बाद सोने का क्या मतलब?"

"बाहर बहुत सर्दी है।"

"आज तो तुम लोगों का आइस स्कीइंग का प्रोग्राम है।"

"मौसम बहुत खराब दिख रहा है बाहर। कोहरा है।" पुनीत ने रजाई ओढ़ ली।

"आज हम बहनों का भी प्रोग्राम है।"

"कहां का?" पुनीत ने चेहरे से रजाई हटाई।

"तुम लोग आइस स्कीइंग के लिए जाओगे और हम तीनों पास के गांव में। पिछले साल जब आए थे तो गांव की एक औरत के घर हमने मजेदार खाना खाया था। उसे खाने के पैसे दिए थे। इस बार भी ऐसा करेंगे।"

"तुम तीनो गांव में हो आना। आइस स्कीइंग के लिए मौसम ठीक नहीं लग रहा।"

"क्या पता मौसम साफ हो जाए।"

"पता चल जाएगा।"

"रात तुम तीनों ने काफी पी ली थी। दोनों बोतलें खत्म कर दीं।"

"संदीप ने ज्यादा पी थी।" पुनीत मुस्कराया।

"हां। संदीप को सम्भालना पड़ा। वो नशे में उल्टी-सीधी हरकतें कर रहा था। उसे शराब हजम नहीं होती।"

"सब हजम होती है।" पुनीत हंसा—"ज्यादा पी लेगा तो आऊट होगा ही।"

"वो नशे में जोगना के साथ लिपटे जा रहा था।" सुधा हंस पड़ी।

"उसे हर समय ये ही काम नजर आता है।" पुनीत मुस्कराया।

"रूम सर्विस में चाय-कॉफी के लिए कहो।" सुधा बोली।

"और सोना नहीं चाहती?"

"मैं यहां सोने नहीं, घूमने आई हूं। सोना तो वापस दिल्ली जाकर भी हो जाएगा।"

▭ ▭

बेबी और राजीव एक ही रजाई में, गहरी नींद में डूबे हुए थे। तभी राजीव ने करवट ली तो बेबी के ऊपर से रजाई सरक गई। कुछ पलों बाद उसे सर्दी लगी तो उसने बंद आंखों से ही रजाई टटोलकर उसे अपने ऊपर ले लिया। तो राजीव के ऊपर से रजाई हट गई। राजीव की नींद टूटी और झल्लाकर बोला।

"क्या करती हो। मेरी रजाई...।"

"पतिदेव।" नींद में बेबी ने कहा—"ये मेरी रजाई है। तुम मेरी रजाई में घुस आए थे।"

राजीव मल्होत्रा ने आंखें खोलीं। गहरी सांस ली।

"रात तो तुमने सारा नशा उतार दिया था।" राजीव के होंठों पर मुस्कान थी।

"अच्छा।" बेबी मुस्कराई। उसकी आंखें बंद थीं—"याद है तुम्हें?"

"याद क्यों न होगा।"
"ये भी याद होगा कि मैंने कैसे तुम्हारा नशा उतारा।" बेबी ने आंखें खोलीं।
"वैसे ही जैसे, हर बार उतारती हो। पीना वसूल हो जाता है, जब तुम्हारे पास आ जाता हूं।"
"मक्खन मत लगाओ। मैं तो भोली-भाली थी। सब कुछ तुमने ही सिखाया है मुझे।"
"कुछ गलत तो नहीं सिखाया। हम पति-पत्नी हैं।"
बेबी ने बांह आगे करके राजीव पर रख दी।
"तुम बहुत बढ़िया हो राजीव।"
"मेरे खयाल में तो तुम ज्यादा बढ़िया हो।"
"बेबी हौले से हंसी और कह उठी।
"मेरे खयाल में हम दोनों ही अपना काम करना जानते हैं माई डियर। मुझे पता है तुम्हारा नशा कैसे उतरेगा।"
राजीव ने झुककर बेबी का गाल चूमा।
"तुम्हारे मुंह से अभी भी व्हिस्की की स्मैल आ रही है।" बेबी बोली।
"रात ज्यादा हो गई थी।"
"इतनी क्यों पी?"
"बातों-बातों में पता ही नहीं चला।"
"और मुझे तुम्हारा नशा उतारने में मेहनत करनी पड़ी।" बेबी ने शरारती स्वर में कहा।
"उस मेहनत में तुम्हें मजा आया कि नहीं?" राजीव ने मुस्कराकर कहा।
"बहुत मजा आया। पूछो मत। बहुत देर बाद ऐसा मजा आया। संदीप तो होश खो बैठा था।"
"क्या किया उसने?"
"वो सबके सामने ही जोगना से चिपके जा रहा था। तुमने और पुनीत ने उसे काफी पीछे किया, परंतु वो माना ही नहीं।"
"मुझे याद नहीं कि मैंने ऐसा किया था।"
"तुम भी कहां होश में थे।"
"पर मैं तुम्हारे साथ चिपका तो नहीं।" राजीव हंस पड़ा।
"नहीं। इस बात का बचाव रहा।" बेबी भी हंसी।
"आज हमारा स्कीइंग पर जाने का प्रोग्राम है।" राजीव ने कहा।
"रात बताया था तम्हें हम बहनें आज गांव में जाएंगी, वहां हम किसी के यहां खाना खाएंगी। इन पहाड़ी लोगों के खाने का मजा ही अलग होता है। पिछले साल भी हमने इसी तरह मजा उठाया था।"

"इस बार स्कीइंग करते हम ज्यादा दूरी तक पहाड़ों को जाएंगे।"

"खो मत जाना।"

"हमारे साथ गाइड होगा। खाने-पीने का कुछ सामान भी ले चलेंगे। पूरी मस्ती करेंगे।"

"वक्त पर लौट आना।" बेबी ने कहा।

"डोंट वरी डियर।" राजीव ने कहा और बैड से उतरकर खिड़की से बाहर देखा—"मौसम खराब लग रहा है।"

"क्या खराबी है?"

"कोहरा है। आगे तक दिखाई नहीं दे रहा।" राजीव बाहर देख रहा था।

"पिछली बार भी ऐसा होता था, परंतु बाद में मौसम साफ हो जाता था।" बेबी ने कहा और उठ बैठी।

"आज नहीं तो स्कीइंग के लिए कल चले जाएंगे। मजे करने के और भी रास्ते हैं।" पुनीत ने खिड़की से हटते हुए कहा और इंटरकॉम पर कॉफी लाने को कहा। फिर बेबी से बोला—"अगर हम आज नहीं जा सके स्कीइंग पर तो मैं तुम्हें स्कीइंग सिखाऊंगा।"

"ना बाबा। मुझे नहीं सीखनी स्कीइंग। मैं ऐसे ही ठीक हूं। मैं हाथ-पांव तुड़वाना नहीं चाहती।"

▭ ▭

संदीप शर्मा घोड़े बेचकर सोया हुआ था। सुबह के साढ़े आठ बज रहे थे। जोगना की कुछ देर पहले ही आंख खुली थी। सुबह के चार बज गए थे सोते-सोते।

संदीप ने खासा तंग किया था पीकर। जब तक अपनी मनमानी दो बार पूरी ना कर ली, तब तक उसे सोने नहीं दिया था, जबकि जोगना चाहती थी कि संदीप ने ज्यादा पी रखी है, वो सो जाए। रात संदीप ने खूब हो-हल्ला मचाया था कमरे में। बरबस ही जोगना मुस्करा उठी कि संदीप बच्चों की तरह उसके पीछे पड़ जाता है कि प्यार करे। ये आदत उसकी शुरू से ही थी कि जब वो पास होती तो संदीप उसे पकड़ लेता था।

"बेवकूफ।" जोगना बड़बड़ा उठी और करवट लेकर संदीप को उठाया—"उठो, नौ बजने वाले हैं।"

परंतु संदीप सोया रहा।

"उठो।" जोगना ने उसके सिर पर हाथ मारा—"ऑफिस नहीं जाना क्या?"

उसी पल संदीप हिला और बोला।

"ऑफिस फोन कर दो कि शर्मा जी की तबीयत ठीक नहीं है।"

"तुम्हारा इंडियन ऑयल का ऑफिस शिफ्ट हो गया है।" जोगना मुस्कराकर बोली।

"कहां?"

"सूमा गांव में।"

संदीप ने तुरंत आंखें खोल दी। दो पल चुप रहकर, जोगना की तरफ करवट लेते कहा।

"तुम मजाक करने से बाज नहीं आओगी।"

"होश आ गया तुम्हें।"

"मैं नींद में था, बेहोश नहीं।"

"रात तुमने खूब हंगामा किया।"

संदीप कुछ चुप रहा। रात के बारे में सोच रहा था शायद।

"तब मेरा दिल तो कर रहा था कि डंडा पकड़कर तुम्हें मारने लगूं।" जोगना ने मुस्कराकर कहा।

"शायद ज्यादा पी ली थी। राजीव, पुनीत ने मुझे ज्यादा पिला दी थी।" संदीप बोला।

"वो हर बार ही तुम्हें ज्यादा पिला देते हैं।" जोगना का स्वर तीखा हो गया।

संदीप ने जोगना को देखा।

"ये शराब तुम्हें ले डूबेगी। छोड़ दो पीनी।"

"ऐसा मत कहो। सच में उन दोनों ने मुझे ज्यादा पिला दी थी।"

"ठीक है। आगे से मैं तुम लोगों के पास बैठा करूंगी, जब पीओगे।"

"तुम—पास—? नहीं। ये मुझे अच्छा नहीं लगेगा। राजीव तुम्हारे कंधे पर हाथ रख देगा।" संदीप कह उठा।

"तो क्या हो गया। मैं घिस जाऊंगी क्या। तुम बेबी के कंधे पर दोनों हाथ रख लेना।"

"ये बात नहीं है।" संदीप ने प्यार से कहा—"तुम्हें कोई छुए तो मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"याद है रात तुमने पीने के बाद क्या किया?"

"क्या किया?"

"सबके सामने मुझसे लिपटने लगे...।"

"शुक्र है।"

"क्या मतलब?"

"तुमसे ही लिपटा। किसी और से नहीं। इसका मतलब मैं होश में था कि तुम मेरी पत्नी हो।"

"बकवास मत करो। रात तुमने अपना और मेरा तमाशा बना दिया था। सब हंस रहे थे। राजीव और पुनीत तुम्हें समझा रहे थे।"

"अच्छा। मुझे तो याद नहीं।"

"ऐसी हरकतें करोगे तो मैं तुम्हारे साथ बाहर जाना बंद कर दूंगी।" जोगना ने नाराजगी से कहा।

"इसमें कौन-सी आफत आ गई। यहां कौन-से बाहर के लोग हैं जो...।"

"दोबारा तुमने ऐसा किया तो मैं वापस चली जाऊंगी।"

"नराज मत होवो। मैंने जो भी किया, होश में नहीं किया...।"

"तभी तो कहती हूं कि कम पिया करो। होश में रहा करो।"

"कल शाम को जब मुझे सर्दी लग रही थी तब तुम मेरे पास आ जाती तो रात को ये सब ना होता।" संदीप बोला।

"ओह, तो इसमें भी मेरी गलती हो गई।" जोगना झल्ला उठी।

"मेरा वो मतलब नहीं था, मैं तो...।"

"तुम सुधर जाओ!" जोगना ने गुस्से से कहा—"नहीं तो मुझे तुम्हारी शिकायत लगानी पड़ेगी।"

"किससे?"

"घर जाकर मम्मा-पापा से।"

"उन्हें बीच में क्यों लाती...।"

"अपने को सुधारने की सोचो। कम पिओ और हर वक्त मेरे साथ प्यार करने की बात मत सोचते रहा करो।"

"ठीक है। लेकिन मुझे तुमसे शिकायत है।"

"क्या?"

"रात तुम मेरे पास क्यों नहीं आईं?"

"नहीं आई?" जोगना के चेहरे पर हैरानी उभरी।

"कितनी बार मैंने कहा, पर तुम...।"

"हे भगवान। तुम सच में पागल होना शुरू हो गए हो। रात तुम दो बार, दो बार तुमने...तुम्हें जरा भी याद नहीं।"

संदीप ने अपने सिर पर हाथ फेरा। आंखें मलीं फिर सोच भरे स्वर में कह उठा।

"लगता है रात मैंने सच में ज्यादा पी ली थी।"

"बहुत ज्यादा। क्योंकि तुम्हें ये भी याद नहीं कि तुमने रात दो बार मेरे साथ...।"

"हां। याद आया। याद आ गया।" संदीप सिर हिलाकर बोला—"तुम सही कह रही हो।"

"शुक्र है। याद तो आया। याद आने के बाद तो 'ठंड' पड़ गई होगी कि तुम्हारा पेट भर कर ही मैं सोई थी।"

"ऐसा न कहो। वो तो प्यार था।"

"पर तुम्हारा पेट तकलीफ में रहती है, जब तक कि तुम्हें 'ठंड' न पड़ जाए। हद है तुम्हारी तो...।"

संदीप ने मुस्कराकर जोगना का हाथ थाम लिया।

"नाराज हो।"

"आगे से कम पिया करो।"

"प्रॉमिस। बहुत कम।"

"इतना कम कि सुबह उठने पर तुम्हें ये याद रहे कि रात 'ठंड' पड़ी तुम्हारे पेट को कि नहीं।"

"प्रॉमिस कर लिया है। तुम देखना आज रात मैं एक पैग से ज्यादा नहीं लूंगा।"

"हांको मत। वो तो मैं रात को देखूंगी। लगता है तुम्हें सुधारना पड़ेगा नहीं तो मैं बीमार हो जाऊंगी।"

तभी दरवाजे पर थपथपाहट हुई।

"देखो, कौन है।" रजाई में लिपटी जोगना ने कहा।

संदीप ने उठकर दरवाजा खोला।

पुनीत भीतर आ गया।

"सोए हुए हो अभी तक?" पुनीत ने मुस्कराकर कहा।

"मुझे तुमसे बड़ी शिकायत है पुनीत।" संदीप बोला।

"क्या?"

"रात तमने मुझे ज्यादा पिला दी थी।"

"मैंने पिलाई?" पुनीत के माथे पर बल पड़े फिर मुस्करा पड़ा—"तुम्हें याद होगा कि मैं तुम्हें हर बार और पीने को रोक रहा था। तुमसे दो बार तो मैंने बोतल छीन ली थी पर तुम माने ही नहीं और...।"

"चुप कर।" संदीप दबे स्वर में बोला और फिर ऊंचे स्वर में कह उठा—"राजीव ने कई बार मेरे गिलास को भरा। मेरे मना करने पर भी भरा और तुम कहते हो कि...।"

"राजीव जब भी बोतल उठाता तो तुम तुरंत अपना गिलास आगे कर...।"

"अबे चुप कर।" संदीप ने धीमे स्वर में कहा—"क्यों ऐसा कहकर मुसीबत खड़ी करता...।"

"जोगना।" पुनीत ने जोगना को देखा—"ये जब पीने बैठता है तो जरूरत से ज्यादा पी लेता है और...।"

"जानती हूं।" जोगना ने गम्भीर स्वर में कहा—"अब से मैं पास बैठा करूंगी कि पता चले ये कैसे पीता है।"

"बात बढ़ाओ मत जोगना।" संदीप ने कहा—"मेरा प्रॉमिस है कि रात को मैं एक ही पैग...।"

"इसकी बातों पर मत जाना।" पुनीत बोला—"एक पैग से तो इसके होंठ भी गीले नहीं होंगे।"

"पुनीत तुम—।"

"ये तुम्हारा आपस का मामला है। तुम लोग निपटो। मैं तो कहने आया था कि तैयार हो जाओ। हम स्कीइंग के लिए जाने वाले हैं। सुबह मौसम बहुत खराब था। परंतु अब कोहरा कम होता जा रहा है। वेटर ने बताया कि यहां हर सुबह ऐसा ही होता और दस बजे के बाद सूर्य निकल आता है। जुम जल्दी से तैयार हो जाओ।"

"मैं घंटे भर में नहा-धोकर आता हूं।" संदीप बोला।

"नाश्ता हम इकट्ठे ही करेंगे, नीचे होटल के रेस्टोरैंट में और गाइड की क्या पोजिशन है?"

"गाइड?"

"साथ में एक गाइड भी तो चाहिए जो बर्फ के रास्ते जानता हो। आज हम दूर तक जाएंगे। तुमने कल कहा था कि गाइड का इंतजाम तुम करोगे। या मैं कर लूं?" पुनीत ने पूछा।

"मैं कर लूंगा। इतनी जल्दी मत मचाओ। मुझे नहा-धो तो लेने दो।"

"जल्दी करो।" पुनीत ने कहा और बाहर निकल गया।

संदीप ने दरवाजा बंद किया और मुस्कराकर जोगना से कहा।

"डार्लिंग। पुनीत की बातों पर मत जाना। ये झूठ बोलता है रात के बारे में। इसने और राजीव ने शरारत की थी कि मुझे ज्यादा पिला दे। आज रात मैं इन्हें ज्यादा पिला के रहूंगा और मैं सिर्फ एक ही पैग लूंगा।"

"बहुत अच्छी तरह जानती हूं तुम्हें।" जोगना ने संदीप को घूरा—"रात मैं तुम्हारी पहरेदारी करूंगी, जब तुम पीओगे।"

▭ ▭

संदीप सवा दस होटल से बाहर निकला। नहा-धोकर, सबके साथ बैठकर जल्दी-जल्दी नाश्ता करके, ये कहकर बाहर आया था कि वो होटल के बाहर से गाइड (मार्गदशक) को सैट करके आता है। बाहर का वातावरण ठंडा था, परंतु कोहरा छंट चुका था। बाहर खड़ी गाड़ियों पर अभी भी ओस नजर आ रही थी। संदीप ने नीली जीन्स की पैंट के ऊपर कमीज और पूरी बांह के स्वैटर के साथ सिर पर गर्म टोपी ले रखी थी। रात पी व्हिस्की की

मस्ती अभी भी उसके सिर पर सवार थी। उसने नजरें घुमाई तो एक तरफ 'सूमा' गांव के बारह-पंद्रह लड़के-लड़कियां खड़े दिखे जिनमें से कुछ तेजी से लपक कर उसके पास आ पहुंचे और सब लगभग एक ही स्वर में बोले।

"सर, गाइड की जरूरत है।"

"मैं सब रास्तों को जानता हूं।"

"मैं बढ़िया आइस स्कीइंग का मजा करा दूंगी सर।"

संदीप ने उन्हें देखकर सिर हिलाया और अन्य लड़के-लड़कियों की तरफ बढ़ गया। उसकी निगाह बेहद खूबसूरत लड़की पर टिक चुकी थी। जो कि पहाड़ी लड़की थी। उसके गाल बेहद लाल और आकर्षक थे। वो बाईस की लगती थीं भरी-भरी छातियां थी, मोटी आंखें, रसभरे होंठ, गोरा रंग, नुकीला और शानदार नाक कुल मिलाकर वो बाकी सब से अलग दिख रही थी। मोटी आंखों में उसने काजल लगा रखा था। माल्टा कलर का स्वैटर था उसके शरीर पर। आगे से जिप बंद थी। टांगो पर गर्म पायजामी लिपटी हुई थी। पांवों में स्पोॅटस शूज थे। कानों में छोटी-छोटी बालियों के अलावा नाक में भी छोटी-सी सोने की बाली पहन रखी थी जिसने उसकी खूबसूरती को और भी चांद लगा दिए थे।

पास पहुंचकर संदीप मुस्कराया और उससे बोला।

"तुम गाइड हो?"

"यस सर।" वो फौरन मुस्कराई—"मेरे लिए कोई सेवा सर?"

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"मोनी।"

"मोनी?" संदीप ने मुस्कराकर सिर हिलाया—"मैं और मेरे साथ दो लोग आइस स्कीइंग पर जाने वाले हैं और मुझे तुम जैसी गाइड की जरूरत है।"

"मैं साथ चलने को तैयार हूं सर।" मोनी खुशी से बोली।

"आओ।" संदीप बोला—"तुमसे इन पहाड़ों के बारे में पूछना है।"

संदीप, मोनी को लेकर एक तरफ बढ़ गया। दोनों धीरे-धीरे चलने लगे। आसपास खूबसूरत वादियां नजर आ रही थीं। सामने बर्फ से लदे पहाड़ कोहरे के बीच में से नजर आ रहे थे।

"तुम्हें सब रास्तों की जानकारी है मोनी? इन पहाड़ों के रास्तों की पहचान है?"

"मैं सब रास्ते जानती हूं सर।"

"सूमा गांव में रहती हो?"

"हां सर। सर्दियों में हम सात मील नीचे ख्वारो चले जाते हैं।" मोनी ने मुस्कराकर कहा।

संदीप ने मोनी के खूबसूरत चेहरे को देखा।

"तुम बहुत खूबसूरत हो।"

मोनी के चेहरे पर शर्म भरी मुस्कान दौड़ गई।

"तुम्हारी शादी हो गई?"

"नहीं सर। बूढ़े मां-बाप हैं। उनकी देखभाल करनी पड़ती है। मैं उनकी अकेली औलाद हूं।"

"तुम मुझे पहले मिली होतीं तो मैं तुमसे शादी कर लेता।" संदीप ने गहरी सांस लेकर कहा।

"क्या?" मोनी हड़बड़ा उठी।

"तुम हो ही इतनी खूबसूरत कि हर कोई तुमसे शादी करना चाहेगा। पर मेरी शादी हो चुकी है।"

"आप मजाक कर रहे हैं सर।" मोनी ने खुद को संभालते, मुस्कराकर कहा।

"अब तो मजाक ही समझो। अगर मेरी शादी न हुई होती तो मैं जरूर गम्भीर होता।" संदीप ने मुस्कराकर कहा—"तो तुम गाइड बनने का एक दिन का क्या लेती हो?"

"पांच सौ रुपए।"

"पांच सौ?"

"सब पांच सौ लेते हैं सर। बेशक आप पूछ लीजिए।"

"मैं तुम्हारे को हजार दूंगा।"

"क्या?" मोनी का मुंह खुला का खुला रह गया।

"हजार। परंतु मेरी शर्त है कि तुम मुझे अकेले में संदीप कहोगी और सबके सामने 'सर'।"

"ठीक है सर।" मोनी ने फौरन सिर हिलाया।

"मुझे संदीप कहो।"

"ज-जी—संदीप।" मोनी बोली।

"तुम्हारे होंठों से संदीप सुनना कितना अच्छा लगता है। तुम आने वाले साल में भी यहां मिलोगी?"

"मैं हर सीजन में, गाइड का काम करती हूं सर—ओह—संदीप।"

"मैं तुमसे आने वाले साल भी मिलूंगा मोनी।" संदीप ने मुस्कराकर उसे देखा।

मोनी ने सिर हिला दिया।

"जब तुम गाइड बनकर बर्फ के पहाड़ों पर जाती हो तो तुम्हें सर्दी लगती है?"

"बहुत लगती है संदीप।"

"तो सर्दी दूर भगाने के लिए तुम क्या करती हो?"

"कुछ नहीं। सर्दी है तो लगेगी ही।"

"मुझे भी बहुत सर्दी लगती है।" संदीप ने मुस्कराकर उसे देखा—"इस बार तुम्हारे साथ रहूंगा तो शायद सर्दी से बच जाऊं। तुम्हारे पास होने पर मुझे सर्दी नहीं लगेगी, मैं तुम्हें भी नहीं लगने दूंगा।"

"मैं आपका मतलब नहीं समझी सर।"

संदीप ने जेब से पर्स निकाला और पांच सौ का नोट निकाल कर मोनी की तरफ बढ़ाया।

"ये रख लो।"

"ये क्या?" मोनी ने तुरंत नोट थाम लिया।

"ये एडवांस है। पांच सौ तब दूंगा जब शाम को आइस स्किइंग से हम वापस लौटेंगे।"

"ठीक है।" मोनी ने नोट जेब में रख लिया।

"तुम्हें याद है न कि अकेले में मुझे संदीप कहकर बुलाना है।" संदीप ने जैसे याद दिलाया।

"हां सर—मेरा मतलब है संदीप।" मोनी ने जल्दी से कहा।

"बर्फ के पहाड़ों पर जब मुझे सर्दी लगे तो मुझे गर्मी देने की कोशिश करना। ऐसा किया तो वापसी पर हजार रुपया दूंगा।"

"पर बर्फ के पहाड़ों पर आग कैसे जलेगी संदीप?" मोनी ने कहा।

"वो मैं बता दूंगा। तुम मुझे नहीं जानती कि बर्फ के पहाड़ों पर भी आग का इंतजाम कर देता हूं। बस तुम्हारे साथ की जरूरत होगी।" संदीप ने सामान्य स्वर में कहा—"मेरे साथ दो लड़के और भी हैं। हम रिश्तेदार हैं और अपनी पत्नियों के साथ आए हैं। पत्नियां नहीं जाएंगी आइस स्कीइंग पर। तुम मुझे शादी से पहले मिल गई होती तो मैं तुम्हें जरूर अपनी पत्नी बना लेता। ये बात किसी से कहना नहीं। हम दोनों के बीच ही रहे...।"

"आप बहुत शरारती हैं संदीप।"

"अकेले में मुझे आप नहीं, तुम कहो। मैं तुम्हें सारे अधिकार देता हूं क्योंकि मुझे सर्दी बहुत लगती है।"

"तुम बहुत मजेदार इंसान लगते हो।"

"जब मुझे सर्दी लगेगी, तब मजा आएगा। अभी तो कुछ भी नहीं।" संदीप ने मुस्कराकर कहा—"तुम गाइड नहीं मेरी दोस्त हो। मैं तुम्हारे मां-बाप के लिए भी पांच सौ रुपया दूंगा।"

"तुम कितने अच्छे हो संदीप।"

"हां, अब ठीक है। मेरे से ऐसे ही बात किया करो। मैं बहुत अच्छा इंसान हूं। समस्या तब खड़ी होती है, जब मुझे सर्दी लगती है। तुम मेरा ध्यान रखना, मैं तुम्हारा ध्यान रखूंगा। अब मैं होटल में जा रहा हूं। कुछ ही देर में अपने साथियों के साथ, आइस स्कीइंग का सामान लेकर बाहर आता हूं। तुम्हारे लिए भी ले आऊंगा।"

"उसकी आप फिक्र न करें। आप तीन लोगों ने स्कीइंग के लिए जाना है न?"

"हां तो...?"

"तो मैं अपना मिलाकर चार लोगों का सामान होटल के स्टोर से ले लेती हूं। वो मुझे जानते हैं और दे देंगे। मैं सामान के साथ यहीं मिलूंगी।" मोनी ने मुस्कराकर संदीप को देखा।

"तुम कितनी अच्छी हो।"

"तुम भी तो अच्छे हो। मुझे पांच सौ पहले दे दिया। पांच सौ मेरे मां-बाप के लिए दोगे और वापस आने पर मुझे हजार रुपया भी दोगे। तुम मेरा कितना ध्यान रख रहे हो।" मोनी ने मुस्कराकर कहा।

"तुमने भी तब मेरा ध्यान रखना है, जब मुझे सर्दी लगे। ये सब कुछ तभी के लिए कर रहा हूं।"

▭ ▭

आधे घंटे बाद तीनों बाहर निकले, साथ में, बेबी-सुधा और जोगना भी थीं। सूर्य अभी तक नहीं निकला था परंतु कोहरा काफी हद तक छंट चुका था, आसमान साफ होने लगा था। रास्ते, जमीन, गीली नजर आ रही थी। खड़े वाहन अभी भी ओस से भीगे हुए थे। मौसम में जबर्दस्त नमी थी। हवा नहीं चल रही थी लेकिन सर्दी बहुत तीखी थी। सामने मौजूद बर्फ के पहाड़ों से आती तीखी सर्दी, शरीर को बराबर महसूस हो रही थी। एक तरफ सूमा गांव के युवक-युवतियां मौजूद थे और वे दो-तीन टूरिस्ट लोगों से बात कर रहे थे। वो लोग भी आइस स्कीइंग पर जाने के लिए बातचीत कर रहे थे। दूसरी तरफ एक परिवार खड़ा बातचीत कर रहा था। ये सुबह का वक्त था, कुछ देर बाद होटल के लोगों ने बाहर निकल आना था और हंसी-खेल, मौज-मस्ती ठहाकों का माहौल गर्म हो जाना था।

मोनी एक तरफ मौजूद दिखी। पास में उसने स्की पोल (छड़ी जो दोनों हाथों में लेकर, स्कीइंग करते वक्त बर्फ पर मारते जाते हैं कि वे तेजी से आगे सरक सकें) और स्की (पैरों में फंसाई जाने वाली वो फट्टियों के आकार वाली होती है, जिसके सहारे बर्फ पर स्लिप होते हुए आगे जाया जाता है) को पास में रखे हुए थी। उसके पास आठ स्की पोल थीं और आठ ही स्की

थे। यानी कि कुल चार लोगों के लिए सैट हुए। वो उन सबको ही देखने लगी थी। क्योंकि उनमें संदीप भी था। मोनी सच में बहुत खूबसूरत लग रही थी।

बेबी ठिठकते हुए बोली।

"गाइड कहां है संदीप?"

"वो रही।" संदीप ने कुछ दूर मौजूद मोनी की तरफ इशारा किया।

सबकी निगाह मोनी पर गई।

"लड़की?" पुनीत बोला।

"खूबसूरत है।" राजीव हंस पड़ा।

बेबी, सुधा और जोगना की नजरें मिलीं।

"इस गाइड को तुमने पसंद किया है संदीप?" बेबी ने संदीप को देखा।

"हां।" संदीप मुस्कराया।

"तुम्हें किसी लड़के को चुनना चाहिए था।" बेबी ने पुनः कहा।

"ये सबसे बढ़िया गाइड है।" संदीप ने फौरन कहा—"मैंने कई गाइडों की इंटरव्यू लेने के बाद इसे चुना है। ये बहुत अच्छी स्कीइंग जानती है और बर्फ के पहाड़ों के रास्ते भी अच्छी तरह जानती है।" संदीप ने जैसे सफाई दी कि लड़की को क्यों गाइड रखा।

"मुझे कोई एतराज नहीं।" राजीव मुस्कराकर बोली।

"चलेगी।" पुनीत ने संदीप को देखा।

"लड़की का नाम मोनी है और मोनी ने मुझे साफ कह दिया है कि उसके साथ कोई बदतमीजी नहीं होनी चाहिए। खासतौर से कोई उसके कंधे पर हाथ नहीं रखेगा। वो हमारी गाइड है और सिर्फ गाइड है।" संदीप ने राजीव को देखा।

तभी जोगना आगे बढ़ी और संदीप की कलाई पकड़कर एक तरफ ले जाते बोली।

"जरा इधर तो आओ।"

जोगना संदीप को एक तरफ ले जाकर नाराजगी से बोली।

"तुमने लड़की ही क्यों चुनी?"

"बताया तो वो बहुत अच्छी गाइड...।"

"तो क्या वहां जो लड़के मौजूद हैं, उनमें से कोई भी पहाड़ों के रास्तों को अच्छी तरह नहीं जानता।"

संदीप ने दूर खड़े लड़कों पर निगाह मारी।

"उनमें कई बढ़िया गाइड हैं, लेकिन वो मुझे जंचे नहीं।"

"और वो लड़की जंच गई।" जोगना ने गुस्से से कहा।

"तुम तो बेकार में नाराज हो रही हो, मैंने ऐसा क्या कर डाला जो...।"

"कान खोल कर सुन लो, उस लड़की के साथ पहाड़ों पर 'लग' मत जाना।" जोगना ने बल खाकर कहा।

"क्या? लग मत जाना। ये तुम कैसी बातें कर रही...।"

"मैं ठीक कह रही हूं। तुम्हें जानती नहीं क्या? वैसे भी तुम्हें सर्दी बहुत लगती...।"

"सर्दी तो तब लगती है जब तुम पास में होती हो जोगना—मैं तो...।"

"अपनी सर्दी को संभाल के रखना। उस लड़की के साथ तुम्हें सर्दी लगी तो मैं तुम्हें तलाक दे दूंगी।"

"तलाक दे दोगी।" संदीप गुस्से से भर उठा—"अभी कुछ भी नहीं हुआ और तुम तलाक देने की बात करने लगी। तुम मेरी ईमानदारी पर उंगली उठा रही हो। तुम—तुम मेरे करैक्टर की तरफ उंगली उठा रही हो। तुम क्या मुझे तलाक दोगी, दिल्ली चलो, मैं तुम्हें तलाक दे दूंगा। ऐसी शंकालू और परेशान करने वाली पत्नी नहीं चाहिए मुझे। गाइड लड़की को क्या चुन लिया, तुम तो सोचने लगी, मैं उसके साथ फेरे लेने जा रहा...।"

"ओह संदीप।" जोगना ने संदीप का हाथ पकड़ा—"मैं तो मजाक कर रही थी। तुम नाराज हो गए।"

"मैं जानता हूं कि तुमने मजाक नहीं किया। राजीव अक्सर तुम्हारे कंधे पर हाथ रखता है, पर मैंने तुम्हें कभी कुछ नहीं कहा। मैं तुम्हारी तरह घटिया सोच रखता तो, मैं भी बहुत कुछ कह सकता था।"

तभी सुधा पास आते कह उठी।

"क्यों जीजू क्या हो गया, बहुत गुस्से में नजर आ रहे हो।"

"ये मुझे तलाक देने की बात कर रही है।" संदीप गुस्से में था।

"क्यों?" सुधा पास आ पहुंची।

"क्योंकि मैंने गाइड के तौर पर लड़की चुन ली है।"

जोगना ने गहरी सांस ली।

"ये तो गलत बात है जोगना।" सुधा बोली।

"मैंने ये कहा कि अगर तुम्हें पहाड़ों पर सर्दी लगी और वो लड़की पास में हुई तो...।"

"जैसे कि मैं अकेला लड़की के साथ जा रहा हूं। पुनीत और राजीव तो मेरे साथ हैं ही नहीं। अकेला भी जाऊंगा तो क्या आफत आ जाएगी। मैं क्या बुरे करैक्टर का आदमी हूं जो ये मुझे ऐसा कह रही है।" संदीप गुस्से में था।

"गुस्सा मत करो जीजू। तुम लोग आइस स्कीइंग के लिए जाओ। जोगना को मैं समझा दूंगी।"

"सारा मूड खराब कर...।"

"जीजू।" सुधा ने संदीप का गाल थपथपाया—"आप जाओ और अपने मूड को ठीक करो। जल्दी वापस आना। जोगना तुम्हारा इंतजार करेगी। हम यहां मजे लेने आए हैं, झगड़ा करने नहीं।"

संदीप बड़बड़ाता हुआ पुनीत और राजीव की तरफ बढ़ गया।

"क्या हो गया?" पुनीत ने पूछा।

"सुधा से पूछ लेना।"

बेबी, सुधा और जोगना की तरफ बढ़ गई।

"चलो, हम निकलें।" राजीव ने कहा।

तीनों मोनी की तरफ बढ़ गए।

मोनी की तरफ बढ़ते संदीप के होंठों पर मधुर मुस्कान फैल गई।

उनके पास पहुंचने पर मोनी ने उन्हें हाथ जोड़कर नमस्ते की।

"ये मोनी है। सबसे बढ़िया गाइड।" संदीप उनका परिचय कराता कह उठा—"और मोनी ये पुनीत, ये राजीव है। उन तीनों को देख रही हो न, वो तीनों बहने हैं और हम उन तीनों के पति।"

इतने में सुधा, जोगना और बेबी भी पास आ पहुंची।

"मैं स्कीइंग का सामान ले आई हूं।" मोनी ने उन तीनों को नमस्ते करने के बाद कहा—"लेकिन आप लोग होटल में जाकर अपने साईज की स्की शूज ले आएं। मैं वो भी ले आती, परंतु मुझे साईज नहीं पता था।"

पुनीत स्कीइंग के सामान को चैक करने लगा। सब ठीक था, फिर बोला।

"हम स्की शूज लेकर आते हैं।"

"मेरे लिए आठ नम्बर के ले आना।"

पुनीत और राजीव होटल की तरफ बढ़ गए।

संदीप ने बेबी और सुधा पर नजर मारी।

"तुम इधर तो आओ।" जोगना, संदीप को खींचकर एक तरफ ले गई और बोली—"तुम इतने नाराज क्यों हो गए थे।"

"तुम बात ही ऐसी करती हो।" संदीप ने मुंह फुलाकर कहा—"तुम मेरे करैक्टर पर उंगली...।"

"मैं तो मजाक कर रही थी डियर।"

"मजाक?" संदीप ने जोगना को घूरा।

"कसम से।" जोगना ने प्यार से संदीप का हाथ पकड़ा।

संदीप कुछ शांत होता दिखा।

"एक बात कहूं।" जोगना मुस्कराई।

"क्या?"

"मुझे सर्दी लग रही है।"

"सर्दी?" संदीप ने मुंह बनाया—"मैं आइस स्कीइंग के लिए जाने वाला हूं और तुम्हें सर्दी लगने लगी।"

"होटल में चलें?" जोगना ने अर्थपूर्ण स्वर में कहा।

"पागल हो। इस वक्त कैसे सब कुछ हो सकेगा।"

"जब तक तुम वापस नहीं आओगे, मुझे सर्दी लगती रहेगी।" जोगना खुलकर मुस्कराई।

"वापस आकर मैं सर्दी को भगा दूंगा। तब तक अपने पर कंट्रोल रखो और रात को मैं एक पैग नहीं, तीन पैग लूंगा। मुझे रोकना मत। बर्फ पर बैठकर न पी, तो क्या पी।"

"ठीक है, ठीक है, ले लेना।"

संदीप, मोनी, बेबी और सुधा की तरफ बढ़ गया। जोगना भी पीछे-पीछे आई।

"सुलह हो गई तुम्हारी?" सुधा मुस्कराकर बोली।

"सुलह?" संदीप मुस्कराया—"झगड़ा ही कब हुआ था।"

"फिर ठीक है।" सुधा ने गहरी सांस ली।

पुनीत और राजीव स्की शूज लेकर आ गए।

तीनों ने शूज पहने। उतारे शूज तीनों बहनों को थमा दिए।

मोनी स्की और स्की पोल का ढेर उठाने लगी तो संदीप कह उठा।

"तुम सिर्फ अपने उठाओ। हम अपने-अपने उठा लेंगे। सारा बोझ तुम पर डालना ठीक नहीं।"

"जल्दी आना राजीव।" बेबी बोली।

"आज हम स्कीइंग करते हुए दूर तक जाएंगे।" राजीव बोला।

"बेशक दूर तक जाओ, पर जल्दी आना।"

"चार-पांच घंटे बाद लौटेंगे।" पुनीत बोला।

"अंधेरा होने तक तो लौट ही आएंगे।" संदीप कह उठा।

तभी सूर्य की पहली किरण चमक उठी।

"सूर्य निकल आया।" मोनी ने खुशी से कहा—"मौसम साफ है आप लोगों को स्कीइंग का मजा आएगा।"

फिर वे सब अपना-अपना सामान उठाए, सामने नजर आ रहे बर्फ के पहाड़ की तरफ चल पड़े। तीनों के कंधों पर एक-एक छोटा बैग भी लटका था जिसमें खाने-पीने का सामान और पानी था। पुनीत अपनी पीठ पर लादे बैग में व्हिस्की की दो बोतलें भी डाल लाया था, जिसके बारे में किसी को बताया नहीं था।

"मोनी।" राजीव बोला—"एक दिन में हम कितना लम्बा रास्ता स्कीइंग के सहारे तय कर सकते हैं।"

मोनी के चेहरे पर सोच के भाव उभरे, फिर कह उठी।

"सर। बर्फ पर एक आदमी पैदल चलकर, दिन भर में जितना रास्ता तय करता है स्कीइंग के सहारे उतना रास्ता एक सवा घंटे में तय कर लिया जाता है। अगर बिना रुके स्की से आगे बढ़ते रहे तो।"

"फिर तो हम काफी दूर तक जा सकते हैं।" पुनीत बोला।

"वापस भी लौटना है।" राजीव बोला उसने घड़ी में वक्त देखा—"ग्यारह बज रहे हैं। दिन कितने बजे छिपता है?"

"पांच बजते ही दिन छिपने लगता है।" मोनी ने कहा।

"तो हमारे पास छः घंटे हैं। पुनीत बोला—"तीन घंटे हम स्कीइंग करते दूर तक जाएंगे और फिर वापस लौटेंगे। शाम हो जाएगी तब तक। आज तो मजा ही आ जाएगा।"

"बड़ा मजा आएगा।"

इन बातों में संदीप ने हिस्सा नहीं लिया था। वो चुप था। परंतु मौका मिलते ही धीमे से मोनी से बोला।

"तुम्हें सर्दी तो नहीं लग रही मोनी?"

"नहीं सर, मैं तो... ।"

"धीमे बोलो और मुझे सर मत कहो।" संदीप ने जल्दी से कहा।

"मुझे सर्दी नहीं लग रही संदीप। धूप से तो मुझे और भी अच्छा लग रहा है।" मोनी बोली।

"जब सर्दी लगे तो मुझे इशारा कर देना।"

"ठीक है संदीप। पर मैं समझी नहीं कि क्यों इशारा कर दूं?" मोनी ने संदीप को देखा।

"ये बात इशारे के बाद समझ जाओगी। मुझे भी सर्दी बहुत लगती है। खासतौर से इन पहाड़ों पर और मैं जानता हूं कि सर्दी को कैसे भगाया जाता है। इंसान ही इंसान के काम आता है, सर्दी लगते ही मुझे फौरन बता देना।"

▭ ▭

राजीव और पुनीत आइस स्कीइंग करते, तेज रफ्तार से बर्फ पर फिसल रहे थे और साथ ही साथ खुशी से चीखे चिल्लाए जा रहे थे। हर तरफ बर्फ की मोटी चादर बिछी थी। सूर्य स्पष्ट तौर पर आसमान पर चमक रहा था और उसकी रोशनी में कहीं-कहीं बर्फ चमकती, आंखों को चौंधिया देती थी। दोनों कभी-कभी आपस में रेस लगाने लगते। पहाड़ों के ऊंचे नीचे रास्ते थे जिन्हें स्कीइंग से पार करते बहुत मजा आ रहा था उन्हें। एक घंटे से

ऊपर का वक्त हो गया था उन्हें इसी प्रकार एक ही दिशा में बढ़ते। संदीप भी स्कीइंग कर रहा था परंतु जानबूझ कर उनसे पीछे रह रहा था कि मोनी के करीब ज्यादा रह सके। इस समय राजीव-पुनीत और मोनी संदीप के बीच काफी फासला था। राजीव-पुनीत रेस लगाते काफी आगे निकल गए थे फिर एक पहाड़ की ओट में हो जाने के कारण दिखने बंद हो गए।

ऐसे में संदीप फौरन स्कीइंग करके आगे जाती मोनी के पास जा पहुंचा।

"हैलो।" संदीप उत्साह से बोला।

मोनी उसे देखकर मुस्कराई।

"कैसा लग रहा है मोनी बर्फ पर?"

"मैंने बर्फ बहुत देखी है। मुझे सब एक-सा लगता है।"

"दिल्ली में रहने वालों को यहां बहुत मजा आता है।" संदीप उसके साथ आगे बढ़ता कह उठा।

"हम तो बर्फ देखने आने वालों को बेवकूफ मानते हैं। बर्फ में क्या खास है जो इतना पैसा खर्च करके लोग...।"

"तुम नहीं समझोगी। दिल्ली में रहती होती तो यहां आने का मजा समझती। मुझे नाम से बुलाओ।"

"क्या?"

"संदीप कहो न।"

"संदीप।" साथ ही मोनी हंस पड़ी—"मैं तुम्हें नाम से बुलाती हूं तो तुम्हें अच्छा लगता है।"

"बहुत अच्छा लगता है। तुमसे बातें करके तो और भी अच्छा लगता है। तुम बहुत खूबसूरत हो।"

मोनी के चेहरे पर गहरी मुस्कान दिखने लगी।

"तुम मुझे मेरी शादी होने से पहले मिलती तो मैं तुमसे जरूर शादी कर लेता।"

"मैंने आपकी पत्नी देखी है। वो भी तो अच्छी है।"

"पर तुम मुझे ज्यादा अच्छी लगती हो।"

"आपकी पत्नी ने सुन लिया तो आपको पीट देगी।" मोनी खिलखिलाकर हंसी।

"जोगना की बात मत करो। इस वक्त अपनी और मेरी बात करो।"

"तुम्हारी पत्नी का नाम जोगना है? अच्छा नाम है।" मोनी ने ऊंचे स्वर में कहा।

दोनों स्कीइंग करते आगे बढ़े जा रहे थे।

"यहां पहाड़ों पर तो हमेशा ही सर्दी रहती है। तुम्हें ठंड लगती रहती होगी।" संदीप बोला।

"अब तो आदत-सी हो गई है इस सर्दी की।"

"तो तुम्हें सर्दी नहीं लगती?"

"लगती है, कभी-कभी।"

"आज लग रही है?" संदीप ने जल्दी से पूछा।

"आज तो खुला मौसम है। धूप निकली है। सर्दी कहां से लगेगी?" मोनी ने कहा।

"पर इस बर्फ से तो मुझे तीखी ठंड लगने लगी है। देखो, मेरी नाक भी लाल हो गई है।"

"इतना तो होता ही है।"

"संदीप कहो न।"

"संदीप।" मोनी हंस पड़ी—"तुमने गाइड के तौर पर मुझे इसलिए चुना कि मैं सुंदर हूं।"

"हां। तुम्हें देखते ही मैंने सोचा कि तुम मुझे शादी से पहले क्यों नहीं मिली?"

"मान लो, मैं मिल जाती। तुम मुझसे शादी कर लेते।"

"ओह, ऐसा हो गया होता तो कितना मजा आ रहा होता।" संदीप ने गहरी सांस ली।

"उसके बाद तुम्हें मेरे से खूबसूरत युवती दिखती तो तुम उसे भी ये कहते कि वो पहले क्यों न मिली?"

"क्या?" संदीप पल भर के लिए सकपका उठा—"ये तुम क्या कह रही हो। मैं तुम्हें ऐसा दिखता हूं?"

"इंसान जो दिखता है, असल में वो होता नहीं।"

"ये तुमसे किसने कहा?" संदीप हड़बड़ा उठा था।

"मेरी मां ने।"

"कितनी उम्र है तुम्हारी मां की?"

"सत्तर।"

"सत्तर? तो क्या तुम्हारी मां ने तुम्हें अड़तालीस-पचास की उम्र में पैदा किया।"

"उससे क्या फर्क पड़ता है?" स्कीइंग करते मोनी ने संदीप को देखा—"पहले उसे बच्चा नहीं हुआ था।"

"तुम्हारी मां ठीक कहती है कि इंसान जो दिखता है, असल में वो होता नहीं, तुम्हारी मां के पुराने वक्त में लोग ऐसे ही होते थे। तब लोगों को सर्दी

लगती थी तो वो किसी को कहते नहीं थे, अपना काम चला लेते थे। पर आजकल तो दुनिया बहुत तेज हो गई है। ठंड लगी नहीं कि तुरंत गर्मी का इंतजाम कर लिया...।"

"तुम बार-बार ठंड की बात क्यों करने लगते हो?"

"क्योंकि जब मुझे ठंड लगती है तो फिर कुछ भी होश नहीं रहता और गर्मी को ढूंढ़ने लगता हूं। अब तो...।"

"तब तो तुम्हें होटल में ही रहना चाहिए था। वहां कमरे में रूम हीटर होता है।"

"मुझे यहां रूम हीटर की क्या जरूरत है। उससे होगा भी क्या। मैं तो जलती अंगीठी अपने साथ लाया हूं। बस इंतजार तो इस बात का है कि जबर्दस्त ठंड लगनी शुरू हो जाए।" संदीप ने दांत फाड़कर कहा।

"कहां है आग की अंगीठी?" मोनी ने पूछा।

"तुम। तुम हो आग की अंगीठी। जो गर्मी तुम में, मुझे नजर आती है वो कहीं नहीं दिखती, खासतौर से बर्फ के इन पहाड़ों पर तो तुम मेरे लिए डायमंड जैसा महत्त्व रखती हो।" संदीप ने बहुत खुशी से कहा।

दोनों स्कीइंग करते आगे बढ़े जा रहे थे।

मोनी ने संदीप को आंखें सिकोड़कर देखा।

"तुम मुझे आग की अंगीठी क्यों कह रहे हो?"

"अभी वक्त नहीं आया। पता चल जाएगा। मेरे सर्दी लगने पर, जब तुम अंगीठी बनकर मुझे गर्म से ठंडा कर दोगी तो मैं तुम्हारे मां-बाप के लिए तुम्हें पांच हजार रुपए दूंगा। शाम को होटल लौटने पर हजार रुपया अलग से। पांच सौ मैं तुम्हें दे ही चुका हूं। कुल मिलाकर साढ़े छः हजार हो गया, चलो सात पूरा कर दूंगा। बस तुम मेरी सर्दी को ठंडा कर देना।"

"मैं नहीं समझ रही तुम क्या अजीब-अजीब बातें कर रहे हो।"

"बोला तो वक्त आने पर समझ जाओगी।"

"तुम सच में मुझे सात हजार रुपए दोगे?"

"कसम से सच। अगर तुमने मेरी सर्दी को दूर भगा दिया।"

"सर्दी को कैसे दूर भगाऊंगी। मुझे क्या करना होगा?"

"तुम्हें कुछ नहीं करना होगा। करना तो मुझे होगा। बहुत आसान काम है। तुम्हें अभी से इसी बारे में सोचने की जरूरत नहीं। मैं नहीं चाहता कि खामखाह ही तुम पहले ही तनाव महसूस करने लगो। तनाव वाली बात ही नहीं है। तुम सात हजार के नोट गिनती रहना और मैं सर्दी भगाता रहूंगा तुम्हारी आग की अंगीठी से। तुम सच में बहुत खूबसूरत हो।"

"तुम्हारे पास बहुत पैसे हैं?"

"बहुत। मैं तो तुम्हें दस हजार भी दे देता, पर जोगना को कैसे समझाऊंगा कि इतने पैसे कहां गए। सात हजार ठीक है। सुनो।"

"हां।"

"संदीप कहो न।"

"संदीप।" कहने के साथ ही मोनी मुस्करा पड़ी।

"तुम कितनी अच्छी हो मोनी।" संदीप ने प्यार से कहा—"कुछ और भी कहो न।"

"और क्या?"

"जो भी तुम्हारे मन में है मेरे लिए।"

"मेरे मन में—तुम्हारे लिए?"

"कुछ तो आया ही होगा, मेरी बातें सुनकर, कह दो, मुझे अच्छा लगेगा। शायद कुछ गर्मी का एहसास भी मुझे मिल जाए। बर्फ की इस ठंड ने तो मेरे नाक को सुन्न कर दिया है। कुछ कहो न गर्मा-गर्म।"

"समोसा।" मोनी कह उठी—"मुझे गर्म समोसा खाना बहुत पसंद है।"

संदीप का मुंह लटक गया और बड़बड़ा उठा।

"मुझे संदेह है कि ये मेरी सर्दी को दूर भगा सकेगी।" फिर ऊंचे स्वर में बोला—"कुल मिलाकर सात हजार तुम्हें तभी दूंगा, जब तुम मेरी सर्दी को भगा चुकी होगी। नहीं तो मैं तुम्हें कुछ नहीं दूंगा।"

"तुम बताते भी तो नहीं कि तुम्हारी सर्दी मैं कैसे भगाऊंगी?"

"गर्म समोसे से काम नहीं चलेगा। कुछ और गर्म खाने की सोचो। कल्पना करो कि और क्या गर्म हो सकता है। पैसे पेड़ पर नहीं लगते। हासिल करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। सात हजार बहुत बड़ी रकम होती है।"

तभी सूर्य के सामने बादलों का झुंड आ गया।

एकाएक छाया हो गई और सर्दी का तीव्र एहसास हुआ।

"ओह, कहीं मौसम न बिगड़ रहा हो।" मोनी आसमान को देखती कह उठी।

"ऐसे मौसम में ही मुझे सर्दी लगती है, अब मेरा क्या होगा।" संदीप ने खराब मन से कहा।

"मैं तुम्हारी सर्दी भगा दूंगी।" मोनी ने सामान्य स्वर में कहा—"सात हजार पाने की मैं पूरी कोशिश करूंगी।"

"वो तो ठीक है, पर राजीव और पुनीत भी तो साथ में है। काम कैसे होगा?"

"क्या उनकी सर्दी भी भगानी है?"

"नहीं-नहीं। तुम उनके बारे में कुछ मत सोचो। ये सिर्फ मेरा और तुम्हारा मामला है।"

मोनी ने स्की पोल के सहारे, अपनी रफ्तार कम की और रुक गई। आसमान को देखा।

संदीप भी रुका और बोला।

"रुकी क्यों मोनी?"

"मुझे लगता है मौसम खराब होने वाला है। आसमान में जाने कहां से आकर बादल घिरते जा रहे हैं। मौसम ज्यादा न बिगड़ जाए, इससे पहले ही हमें वापस चल देना चाहिए।" मोनी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये तुम क्या कह रही हो। अभी तो मुझे सर्दी भी नहीं लगी।"

एकाएक सर्द हवा का एहसास होने लगा।

"हमें उन दोनों को आगे बढ़ने से रोकना होगा।" मोनी बोली।

"अभी तो वक्त कुछ भी नहीं हुआ, तुम चिंता न करो मोनी। मौसम नहीं बिगड़ेगा।"

"तुम यहां के मौसम को नहीं जानते कि पल-पल कैसे करवट लेता है। ये पहाड़ों का मौसम है। अभी धूप, अभी बरसात और बर्फ गिरने लगती है। मौसम बिगड़ा तो हम बर्फ में बुरी तरह फंस जाएंगे।"

स्की पोल के सहारे, संदीप मोनी के करीब आ पहुंचा।

"जरा अपना हाथ देना मोनी।"

"क्यों?"

"दो तो।"

मोनी ने अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ाया।

संदीप ने मोनी का हाथ पकड़ा और चूम लिया।

मोनी ने हड़बड़ा कर हाथ पीछे खींचते कहा।

"ये क्या कर रहे हो?"

संदीप ने प्यार से मोनी को देखा और मुस्कराकर बोला।

"तुम्हें बुरा लगा मोनी?"

"न-नहीं।" पर ये बात ठीक नहीं है।" मोनी के चेहरे पर शर्म की लाली दौड़ पड़ी—"तुम बड़े शरारती हो।"

"क्या करूं, तुम बहुत खूबसूरत हो। अपने दिल को रोक नहीं सका प्यारी मोनी।"

"अब चलो भी, मैं तुमसे फंसने वाली नहीं। तुम शहरी लोग बहुत चालू होते हो। कैसे मेरा हाथ चूम लिया।"

"मेरी एक बात मानोगी?"

"क्या?" मोनी के चेहरे पर अभी भी शर्म की लाली थी। वो और भी हसीन दिखने लगी थी।

"एक बार अपना हाथ फिर दो...।" संदीप ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"हट।" मोनी ने शर्म भरे स्वर में कहा और दोनों हाथों में स्की पोल को बर्फ में मारते, आगे बढ़ गई।

'ये जरूर, मेरी सर्दी को दूर तक भगा देगी।' संदीप खुशी से बड़बड़ाया और स्की पोल के सहारे, पुनः अपने को आगे बढ़ाया और जूते में फंसी स्की (SKI) के सहारे बर्फ पर फिसलते हुए आगे बढ़ता चला गया।

सामने के पहाड़ का लम्बा चक्कर काटकर मोनी और संदीप उस पार पहुंचे तो पुनीत और राजीव को बर्फ पर बैठे पाया। वो उन्हीं के आ जाने के इंतजार में रुक गए थे।

दोनों उनके पास पहुंचकर थम गए।

"तू तो बहुत पीछे रह गया था।" राजीव ने संदीप से कहा।

"तुम दोनों रेस लगा रहे थे। मैं मोनी के साथ आराम से आ रहा था।" संदीप बोला।

"ज्यादा आराम अच्छा नहीं होता।" पुनीत ने मोनी पर निगाह मारी। मुस्कराया।

जवाब में संदीप ने दांत दिखा दिए।

वातावरण में ठंडक आ चुकी थी। सूर्य बादलों के पीछे गायब होने के बाद फिर नहीं दिखा था और आसमान में बादल घिरते जा रहे थे। मध्यम-सी, बेहद ठंडी हवा चलने लगी थी। इस तरह बर्फ का वीराना हर तरफ दिख रहा था। वो सब गर्म कपड़े पहने हुए थे, जिस कारण वे सर्दी से कुछ बचे हुए थे।

"मौसम खराब हो रहा...।" मोनी ने कहना चाहा कि पुनीत बोला।

"हम कितनी आगे आ चुके हैं?"

"काफी आगे निकल आए हैं।" मोनी ने कहा—"एक घंटे से ऊपर का वक्त हो गया, तेज रफ्तार स्किंग करते हुए। जैसा कि मैंने पहले ही कहा था कि बर्फ पर एक आदमी, दिन भर में जितना पैदल आगे बढ़ सकता है, उससे कुछ ज्यादा सफर हम स्कीइंग द्वारा एक घंटे में तय कर लेते हैं।" मोनी ने आसमान पर नजर मारी—"मौसम बिगड़ रहा है। हमें वापस जाना चाहिए।"

पुनीत ने आसमान को देखा।

"मौसम ठीक है।" पुनीत बोला।

"मुझे भी मौसम ठीक लग रहा है। जरा से बादल आ गए तो क्या हो गया।" संदीप फौरन बोला और मोनी को देखकर मुस्कराया—"कितना सुहावना मौसम हो रहा है मोनी।"

पुनीत ने राजीव को देखकर कहा।

"क्या मौसम बिगड़ रहा है?"

"बादल आ गए हैं। ये मामूली बात है।" राजीव बोला—"थोड़ी ठंडक बढ़ गई है—बस...।"

"आप समझ नहीं रहे। पहाड़ों पर इसी तरह मौसम बिगड़ना शुरू होता है।" मोनी कह उठी।

"वक्त क्या हुआ है?" पुनीत ने राजीव से पूछा।

राजीव ने बताया।

"इसका मतलब एक घंटा दस मिनट हमने बिना रुके स्कीइंग की।" पुनीत खड़ा हुआ—"शाम के पांच बजने में काफी वक्त है। अभी हम डेढ़ घंटा और स्की कर सकते हैं।"

"मैंने कहा है मौसम बिगड़ने लगा है।" मोनी ने कहा—"मैं गाइड हूं, आप लोगों को मेरी बात माननी चाहिए। यहां के मौसम को मैं आप लोगों से बेहतर जानती हूं।" मोनी ने आसमान पर फैले गहरे बादलों को देखा—"बरसात कभी भी शुरू हो सकती है। नहीं तो सर्दी इतनी बढ़ जाएगी कि...।"

"सर्दी?" संदीप ने मुस्कराकर मोनी को देखा—"सच में सर्दी बढ़ने वाली है।"

"हां। अगर मौसम ज्यादा बिगड़ा तो बर्फ भी गिर सकती है।"

"बर्फ गिर जाए तो मजा आ जाएगा।" राजीव खड़ा होते मुस्कराकर बोला—"अभी सब ठीक है। मुझे स्कीइंग में बहुत मजा आ रहा है और अभी वापस लौटने का तो कोई मतलब ही नहीं है, क्यों पुनीत?"

"मैं भी तो ये ही कह रहा हूं।" संदीप जल्दी से कह उठा—"ऐसा मौका कभी-कभी आता है, क्यों मोनी?"

"तू मेरी बात का जवाब दे रहा है या मोनी से बात कर रहा है?" राजीव कह उठा।

"इस वक्त तो हम सब एक ही हैं।" संदीप मुस्कराया—"मैं सबकी बातों का जवाब दे रहा हूं।"

राजीव ने सिर हिलाकर संदीप और मोनी को गहरी निगाहों से देखा।

"तुम दोनों पीछे रह गए थे।" राजीव बोला—"पीछे क्या कर रहे थे?"

"क्या कर रहे थे?" संदीप ने अजीब-से स्वर में कहा—"क्या कर सकते हैं हम?"

"वो ही तो पूछ रहा हूं।"

"समझा।" संदीप उखड़ा—"तू क्या सोच रहा है, जरा कपड़े उतारकर बर्फ पर लेट।"

"क्यों?"

"ताकि तेरे को पता चले कि, तू जो कहना चाहता है, वो नहीं हो सकता यहां...।"

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"चुप कर।" संदीप ने तीखे स्वर में कहा—"मैं सब समझता हूं कि तेरी सोच क्या है।"

"क्या कह रहे हैं सर?" मोनी ने संदीप से पूछा।

"वो मेरे काम की बात है, तुम्हारे सुनने वाली बात नहीं है।" संदीप, मोनी को देखकर मुस्कराया।

तभी पुनीत कह उठा।

"इस तरह बातों में हमें वक्त खराब नहीं करना है। हम स्कीइंग करने आए हैं, चलो आगे बढ़ते हैं।"

"हम तीनों रेस लगाएंगे कि...।"

"मैं सलाह नहीं दूंगी कि आगे जाया जाए।" मोनी गम्भीर स्वर में बोली—"मौसम बिगड़ गया तो हम फंस सकते हैं।"

"ये तो बहुत शानदार मौसम है मोनी। इस मौसम में जब सर्दी लगती है तो बड़ा मजा आता है।"

"हम आगे बढ़ेंगे।"

मोनी की बात किसी ने नहीं मानी।

राजीव और पुनीत ने जूतों को स्की में फिट कर लिया। स्की पोल पुनः थाम ली।

"संदीप।" राजीव बोला—"अब हम तीनों एक साथ रेस लगाएंगे और...।"

"तुम दोनों ही रेस लगाओ।" संदीप कह उठा।

"क्या मतलब?"

"मैं और मोनी तुम दोनों के पीछे आते रहेंगे। मैं भी तुम दोनों की तरह तेज भागा तो, मोनी पीछे रह जाएगी।"

राजीव ने पुनः पुनीत पर नजर मारी जैसे कह रहा हो, इसे तो मोनी ही की चिंता है।

"तू यहां मोनी का ध्यान रखने आया है।" राजीव मुस्कराकर बोला।

"मैं मजे लेने आया हूं स्कीइंग को एंज्वाय करने आया हूं। मुझे जैसे मजे मिल रहे हैं, ले रहा हूं।"

"ज्यादा मजे मत लेना।"

"मोनी इस वक्त हम सबके लिए जरूरी है।" संदीप ने कहा—"हम स्की

करते, पहाड़ों पर काफी आगे आ चुके हैं और वापसी का रास्ता सिर्फ मोनी ही जानती है। मोनी पास में न हो तो हमें वापस पहुंचने में...।"

"मोनी हमारे साथ ही है। तू हमारे साथ रेस...।"

"नहीं। मैं और मोनी पीछे-पीछे आ रहे हैं।" संदीप ने मोनी से कहा—"ठीक है न मोनी।"

"मुझे क्या पता। ये आप लोगों का मामला है।" मोनी बोली—"आप लोग अगर तेजी से आगे बढ़ेंगे तो मैं आप लोगों के साथ ही रहूंगी, इस बात की चिंता न करें।"

"सुन लिया।" राजीव बोला—"अब आ, हम तीनों रेस लगाएंगे।"

संदीप को राजीव की बात माननी पड़ी।

तीनों रेस लगाने को तैयार हो गए। संदीप बार-बार मोनी को देख रहा था।

"क्या बात है?" पुनीत संदीप के कान में मुस्कराकर बोला।

"क्या बात है?" संदीप ने पुनीत को देखा।

"तू मोनी को बहुत देख रहा है।"

"मैं—नहीं तो, मैं तो उधर वाले पहाड़ को देख रहा हूं।" संदीप कह उठा।

"पहाड़ पर क्या है?"

"जो भी हो, मैं तो उधर के पहाड़ को देख रहा था।"

"मुझे पता है पहाड़ पर क्या है।"

"क्या है?"

"वहां मोनी बैठी है।" पुनीत हंस पड़ा।

"मजाक मत कर।"

"ये मजाक नहीं है। सच बात कह रहा हूं। तूने बढ़िया लड़की चुनी गाइड के लिए। काफी खूबसूरत है।"

"मैंने उसकी खूबसूरती नहीं देखी, काबिलियत देखी। वो अच्छी गाइड है।" संदीप ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तूने एक ही नजर में पहचान लिया कि वो अच्छी गाइड है।"

"यार तुम मुझे खींचने पे क्यों लगे हो।" संदीप झल्ला उठा।

उसके बाद उन तीनों ने अपना आगे का सफर शुरू कर दिया। जबकि मोनी ने कई बार आगे आने पर एतराज दिखाया और वापस चलने को कहा था। परंतु किसी ने उसकी बात नहीं मानी थी।

संदीप पंद्रह-बीस मिनट तक तो उनके साथ रेस लगाता रहा। तीनों तेजी से बर्फ पर फिसलते आगे बढ़ते रहे। संदीप और पुनीत ऊंची जगहों से जम्प लगाते रहे थे। उनके ठहाके, आवाजें सुनाई दे रही थीं। मोनी फासला

रखे, बराबर उनके पीछे आ रही थी। तभी संदीप ने उन दोनों का साथ छोड़ा और रफ्तार कम कर दी। पीछे से आती मोनी उसके साथ आ मिली तो वो मोनी के साथ आगे बढ़ने लगा।

"तुम पीछे क्यों आ गए?" मोनी ने पूछा।

"तुम्हारे लिए।" संदीप ने मुस्कराकर कहा।

"मेरे लिए?" मोनी मुस्कराई—"वो क्यों?"

"मैंने सोचा तुम अकेली हो। बोर हो रही होगी। इसलिए मैं तुम्हारे पास...।"

"मैं कहां बोर हो रही हूं।"

"मेरे पास कम्बल है, बर्फ पर बिछाने के लिए। पीठ पर लदे बैग में रखा है।" संदीप ने कहा।

"कम्बल? वो किसलिए?"

"जब मुझे सर्दी लगेगी तो, हमें नीचे बिछाने के लिए भी तो कुछ चाहिए होगा। बर्फ पर कैसे लेटेंगे।"

"तुम अपनी बात कर रहे हो या मेरी?"

"हम दोनों की।"

"मेरी हालत ऐसी नहीं होने वाली कि मुझे बर्फ पर कम्बल बिछाकर लेटना पड़े।"

"मेरे लिए तो तुम्हें ऐसा करना होगा। तभी तो मेरी सर्दी भागेगी।"

"मैं नहीं समझी तुम क्या कह रहे हो।"

"जब मुझे सर्दी लगेगी और मैं तुमसे कहूंगा कि मेरी सर्दी को भगाओ तो तुम क्या करोगी?"

"मैं तुम्हारे हाथ-पैर रगड़ दूंगी।"

"हाथ-पैर रगड़ने से मेरी सर्दी नहीं भागेगी।"

"तो कैसे भागेगी?"

"बहुत कुछ रगड़ना पड़ेगा।" संदीप ने मुस्कराकर कहा—"उससे तुम्हारी सर्दी भी भाग जाएगी।"

मोनी ने गर्दन घुमाकर संदीप को देखा।

संदीप खुलकर मुस्कराया।

"मुझे अभी तक नहीं समझ आया कि तुम मुझे सर्दी-सर्दी क्यों सुना रहे हो?"

"समझ आ जाएगा। तुम कहो तो मैं कम्बल बिछाऊं।" संदीप ने बहुत आगे जा चुके पुनीत और राजीव को देखा—"बर्फ पर कम्बल बिछाकर लेटने का बहुत मजा आएगा।"

"अपने साथियों के पास पहुंचो। वो काफी आगे जा चुके हैं। रास्ता भटक गए तो मुश्किल खड़ी हो जाएगी। तब उन्हें ढूंढ़ पाना आसान नहीं होगा।" मोनी ने कहा—"तेज चलो। कम्बल पर लेटना है तो ये काम अपने साथियों की मौजूदगी में करो कि वो भी आराम कर सकें।" मोनी ने सिर उठाकर आसमान को देखा जहां काले बादल फैलते जा रहे थे—"मौसम खराब होने वाला है। शायद बरसात आ जाए। हमें वापस जाना चाहिए। हम लोग काफी आगे निकल आए हैं। बरसात में स्की करना खतरनाक हो जाता है। स्लिप हो जाने का खतरा रहता है।"

"तुम सात हजार को भूल रही हो मोनी।" संदीप ने नाराजगी भरे भाव में कहा।

"मुझे याद है। तुम दोगे न?"

"मैं तो तुम्हें पहले भी कह चुका हूं कि पैसा कमाने के लिए कुछ तो करना होगा। मैंने भी मेहनत करके पैसा कमाया है, तुम भी मेहनत करके मेरी सर्दी दूर करना और सात हजार ले लेना।"

"तुम्हें सर्दी लगी कि नहीं?"

"तुम एक इशारा करो, सर्दी तो मुझे फौरन लग जाएगी।" संदीप मुस्कराया।

"तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती।"

"अच्छा जरा रुको। एक मिनट के लिए रुको।"

मोनी ने स्की पोल के सहारे अपनी गति कम की और रुक गई।

संदीप उसके करीब आकर रुका और प्यार से मुस्करा पड़ा।

मोनी भी मुस्कराई।

"मुझे प्यार से संदीप कहो।"

"संदीप।"

"ओह, कितना अच्छा लगता है जब तुम मेरा नाम लेती हो। अब अपना हाथ तो दो...।"

"नहीं—तुम...।"

"मना मत करो। इस तरह मुझे सर्दी लगनी शुरू हो जाएगी।"

"मेरा हाथ थामकर तुम्हें सर्दी लगेगी?" मोनी ने अजीब से स्वर में कहा।

"मेरी सर्दी ऐसी ही है। हाथ तो दो।"

मोनी ने हाथ बढ़ाया। संदीप ने हाथ थामा।

"चूमना मत, मैं...।"

परंतु संदीप ने कसकर हाथ पकड़ा और बार-बार चूमने लगा।

"ऐ ये क्या कर रहे हो शरारती।" मोनी घबराकर कह उठी। हाथ छुड़ा लिया। चेहरे पर शर्म आ गई थी।

"तुम बहुत अच्छी हो। अब मुझे सर्दी लगनी शुरू हो गई है। कम्बल बिछा लूं?" संदीप ने प्यार से कहा—"हम दोनों कम्बल पर लेटेंगे। तुम मेरे साथ सट जाना। मुझे गर्मी मिलने लगेगी। बाकी सब मैं देख लूंगा। तुम्हें तो सिर्फ मेरे से सटके रहना है। बाकी सब कुछ मैं ही...।"

"ये तुम कैसी बातें कर रहे हो...।" मोनी हड़बड़ा कर बोली।

"तुम बहुत अच्छी हो मोनी। मेरी सर्दी भगाकर तुम सात हजार ले लोगी मुझसे।"

मोनी, संदीप को देखने लगी।

"तुम नाराज तो नहीं हो गई मेरी बात सुनकर।" संदीप ने मुंह लटका लिया।

एकाएक मोनी मुस्कराई और स्टिक पोल बर्फ पर ठोकती आगे बढ़ गई।

संदीप उसके पीछे बढ़ गया और बड़बड़ाया।

'इसका कुछ समझ में नहीं आता कि ये सात हजार कमाना चाहती है या नहीं।'

राजीव और पुनीत कहीं भी नजर नहीं आ रहे थे। वो काफी आगे निकल गए थे।

"जल्दी चलो।" मोनी आसमान में देखते चिल्लाकर बोली—"बरसात शुरू होने वाली है। मैंने पहले ही कहा था कि मौसम खराब होने वाला है। हमें वापस चलना चाहिए। हम बहुत ज्यादा आगे आ चुके हैं। बरसात हो गई तो हम वापस कैसे जाएंगे। यहां पर तो ओट लेने के लिए भी कोई जगह नहीं है।"

▭ ▭

मौसम बहुत बिगड़ गया था। आसमान में काले बादलों की वजह से अंधेरा छा गया था। जानलेवा तीखी हवा बहने लगी थी। कोहरा-सा फैलने लगा था। एकाएक सर्दी बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। ऐसे खराब मौसम में तो कमरे में रजाई लेकर बैठे होना चाहिए, परंतु ये लोग स्कीइंग में व्यस्त थे।

राजीव और पुनीत स्कीइंग करने में इतने व्यस्त थे कि जैसे मौसम बिगड़ने का एहसास ही न हो। जैसे उन्हें सर्दी लग ही नहीं रही हो। वो तो उस आजाद पंछी की तरह लग रहे थे जो बरसों बाद पिंजरे से छूट निकले हों। दोनों में होड़ लगी थी कि वे एक-दूसरे से आगे निकल जाएं। इस बार डेढ़ घंटा हो गया था उन्हें आगे बढ़ते हुए। जाने कितना लम्बा रास्ता वो पार कर आए थे। हर तरफ बर्फ फैली थी। अब तो वहां इतनी रोशनी भी

नहीं थी कि दूर तक स्पष्ट देखा जा सके। कोहरे के बादल बर्फ को छूते मंडरा रहे थे। वो नहीं जानते थे कि मोनी और संदीप पीछे तेजी से आ रहे हैं कि उन्हें वापस चलने को कह सकें परंतु उनकी रफ्तार ही इतनी तेज थी आगे बढ़ने की कि उन्हें पकड़ पाना सम्भव नहीं हो पा रहा था। दोनों के रह-रहकर ठहाके और एक-दूसरे को पुकारने की आवाजें सुनसान बर्फ के जंगल में, गूंज रही थीं। मौसम की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। लेकिन तभी उनके साथ हादसा पेश आ गया। उनकी खुशी हवा हो गई। वक्त जैसे एकाएक ही ठहर गया हो।

उस वक्त पुनीत, राजीव से पचास कदम आगे के फासले पर स्की पर तेजी से फिसला जा रहा था। एकाएक पुनीत की चीख गूंजी और खामोशी छा गई। फिर उसकी कोई आवाज नहीं उभरी।

"पुनीत।"—राजीव गला फाड़कर चिल्ला उठा। साथ ही फुर्ती से उसने खुद को वहां रोका, जहां पुनीत की चीख गूंजी थी।

परंतु पुनीत कहीं भी नहीं दिखा।

राजीव का दिल धड़क उठा।

"पुनीत-ऽ-ऽ-ऽ...।" राजीव गला फाड़कर चिल्ला उठा।

परंतु पुनीत की तरफ से कोई जवाब नहीं आया।

राजीव की निगाहें हर तरफ जा रही थीं, परंतु पुनीत कहीं भी नहीं था।

राजीव का डर से दिल धड़कने लगा कि पुनीत कहां चला गया। वो चीखा क्यों था?

"पुनीत-पुनीत।" राजीव जैसे दहशत में डूबा चीखा—"तुम कहां हो?"

लेकिन जवाब में सन्नाटा छाया रहा।

राजीव की हालत बुरी हो रही थी। उसकी आंखों के सामने तो पुनीत स्की पर फिसलता जा रहा था कि अचानक ही वो चीख के साथ गायब हो गया। वो कहां गया? एकाएक राजीव को बर्फ के उस वीराने से डर लगने लगा। अब पहली बार उसे मौसम का एहसास हुआ कि वो बिगड़ गया है। सर्दी बढ़ गई है। वातावरण में नमी आ गई है। कोहरा बर्फ को छूता, लहरा रहा है। आसमान काले बादलों की ओट में छिप चुका है और अंधेरे जैसा माहौल हर तरफ फैल चुका है। ये मौसम तो स्कीइंग करने के लिए ठीक नहीं था। एकाएक कोहरे के बादल ने उसे घेर लिया और उसे धुंध के अलावा कुछ भी नजर नहीं आया। मस्तिष्क में हथौड़ों की तरह एक ही सवाल घूम रहा था कि पुनीत कहां है? वो अचानक ही गायब कहां हो गया? वो चीखा क्यों था?

कोहरे का बादल, उसके गिर्द से छंट गया।

राजीव की नजर हर तरफ घूमी। स्की के सहारे वो धीरे-धीरे पुनीत की

तलाश में आगे बढ़ने लगा। आस-पास घूमने लगा। परंतु पुनीत कहीं भी नहीं दिख रहा था। बुरी आशंका से उसका दिल धड़क उठा।

"पुनीत—ऽ-ऽ-ऽ...।" राजीव गला फाड़कर चिल्ला उठा। उसकी आवाज में तड़प थी। भय था।

राजीव की आवाज जैसे उस खराब मौसम में दबकर खत्म हो गई।

कड़कती सर्दी में, राजीव के चेहरे पर पसीना छूटने लगा। हाथों और चेहरे पर जैसे पसीने की गर्मी महसूस होने लगी। सर्दी का नामोनिशान भी उसे महसूस नहीं हो रहा था। चेहरा फक्क पड़ चुका था। अपनी जगह ठगा-सा खड़ा नजरें हर तरफ घुमा रहा था, पुनीत कहीं भी दिख नहीं रहा था। हर तरफ बर्फ की सफेद चादर थी, जो कि इस नमी वाले मौसम में धुंधली हो चुकी थी। सामने सिर उठाए पहाड़ खड़ा था। राजीव को समझ नहीं आ रहा था कि पुनीत अचानक ही कहां गायब हो गया? गायब होने से पहले चीखा क्यों था? राजीव ने स्की पोल को बर्फ में मारा और आहिस्ता-आहिस्ता पुनीत की तलाश में इधर-उधर घूमने लगा। दस मिनट इसी कोशिश में बीत गए।

परंतु पुनीत कहीं नहीं मिला।

राजीव की हिम्मत जवाब देने लगी। उसका मन किया, रो पड़े। अंजाना-सा डर उनके सिर पर सवार होता जा रहा था कि पुनीत कहां गया? देखते ही देखते आंखों के सामने कहां गायब हो गया।

उसी पल बरसात की मोटी-सी बूंद उसके चेहरे पर पड़ी।

तभी संदीप की मध्यम-सी आवाज उसके कानों में पड़ी।

राजीव चौंका। पुनीत के गुम होने पर ऐसा खोया था वो कि संदीप और मोनी को तो भूल ही गया था। उसने फौरन गर्दन घुमाकर देखा, काफी दूर बर्फ पर हिलते दो लोग दिखे। राजीव एकाएक उत्साह से भर उठा। डर कुछ कम हुआ। उन दोनों का उसे बहुत सहारा मिला।

दो मिनट लगे कि स्की करते वे दोनों पास आ पहुंचे।

"मौसम खराब हो रहा है।" मोनी गुस्से से कह उठी—"बरसात की बूंदें पड़ने लगी हैं। हम लोग इतनी दूर आ चुके हैं कि खराब मौसम में वापस पहुंचने में डबल वक्त लगेगा और कई मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।"

राजीव, मोनी को देखता रहा।

"पुनीत कहां है?" संदीप ने पूछा।

"व—वो पता नहीं।" राजीव ने कांपते स्वर में कहा—"हम दोनों स्की करते आगे बढ़ रहे थे कि एकाएक चीख के साथ गायब हो गया। तब वो मेरे से कुछ आगे था। उसकी चीख सुनकर मैंने उसे देखा तो वो कहीं नहीं

दिखा। मैं तब से उसे ढूंढ़ रहा हूं। आवाजें दे रहा हूं परंतु कोई फायदा नहीं हो रहा है, वो...नहीं मिल रहा।"

ये सुनते ही संदीप स्तब्ध-सा रह गया।

बरसात की बूंदें कुछ तेज हुईं।

बर्फ का सुंदर नजारा, अब उन्हें नर्क की तरह महसूस होने लगा था। उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें स्की करते इतनी दूर नहीं आना चाहिए था। मुसीबत में यहां उन्हें किसी की मदद भी नहीं मिल सकती थी। वे दुनिया से कट चुके हैं।

"कहां पर गायब हुआ वो?" मोनी के होंठों से निकला।

"यहीं-कहीं।" राजीव ने फीके स्वर में कहा—"जहां हम खड़े हैं। हैरानी है कि पुनीत कहां चला गया?"

मोनी ने सिर उठाकर सामने खड़े पहाड़ की तरफ देखा।

टप-टप बरसात की बूंदें बर्फ में गिर रही थीं।

"यहां कहीं खोह होगी।" मोनी ने कहा।

"खोह?" संदीप ने उसे देखा।

"हां। पहाड़ के नीचे की खाली जगह। जब बर्फ पड़ती है तो वो जगह बर्फ से समतल हो जाती है। परंतु जब इंसान उसके ऊपर पहुंचता है तो बर्फ की परत नीचे दब जाती है और इंसान भीतर जा गिरता है। बर्फ के पहाड़ों पर ऐसी जगहें साधारणतया पाई जाती हैं।" मोनी ने गम्भीर स्वर में कहा—"हमें खोह को ढूंढ़ना होगा। ऐसी खोह दूर से नजर नहीं आती, क्योंकि वो बर्फ से घिरी होती है। हमें बर्फ पर चलकर उस जगह को ढूंढ़ना है। स्की को पैरों से अलग करो। बरसात शुरू हो चुकी है। हम बुरे मौसम में फंस गए हैं।"

उसके बाद तीनों ने पैरों से स्की को अलग किया और मोनी के कहे मुताबिक खोह ढूंढ़ने लगे। बरसात की बूंदें पड़ रही थीं। वो गीले हो रहे थे। सर्दी तीखी होती जा रही थी। वो ठिठुरने लगे थे। ऐसे में बर्फ पर चलना भी आसान नहीं था। बीस मिनट बाद संदीप ने वो खोह ढूंढ़ ली।

"ये देखो, ये क्या है।" संदीप जोरों से बोला।

मोनी और राजीव वहां पहुंचे।

सामने बर्फ से घिरा दस फुट व्यास का गड्ढा-सा नजर आ रहा था। जहां बर्फ नहीं थी। उन्होंने भीतर झांका। परंतु कुछ दिखाई नहीं दिया। संदीप और राजीव ने, पुनीत को आवाजें लगाई, लेकिन कोई भी फायदा नहीं हुआ। मोनी गड्ढे के आस-पास की बर्फ को देखने लगी तो उसे स्की के निशान मिले, जो कि गड्ढे पर जाकर खत्म हो रहे थे। मोनी ने आसपास देखा तो दस फुट के फासले पर बड़ा-सा पहाड़ी पत्थर, बर्फ से ढंका देखा तो उसने

अपने कंधे से बैग निकाला और नीचे रखकर उसे खोलकर मोटा-सा रस्सा भीतर से निकाला।

"ये तुम क्या कर रही हो?" संदीप कह उठा।

"आपका साथी इसी खोह के भीतर है।" मोनी बोली—"ये रस्सा उस पत्थर से बांधो। मैं रस्सा पकड़कर नीचे जाऊंगी। वो बेहोश है, तभी उसकी आवाज नहीं आ रही।"

"तुम भीतर जाओगी।" संदीप के होंठों से निकला।

"चिंता की कोई बात नहीं, ऐसी खोह, दस से बीस फुट गहरी होती है।" मोनी ने कहा—"रस्सा पत्थर से बांधो।"

संदीप और राजीव ने मिलकर रस्सा उस भारी पहाड़ी पत्थर से बांधा।

मोनी रस्सा थामे गड्ढे में उतरती चली गई।

"भीतर तो अंधेरा है मोनी।"

"हां। लेकिन मैं देख लूंगी।" मोनी की, नीचे से आवाज आई।

"मेरे पास माचिस है।" राजीव ने कहा और पीठ पर लदे बैग से माचिस निकाली—"फेंकूं क्या?"

"अभी नहीं।" मोनी की आवाज आई—"मेरे पांव जमीन पर लग गए हैं। दस-बारह फुट गहरी है खोह। लाओ फेंक दो माचिस। सीधी नीचे फेंकना मैं गड्ढे के ठीक नीचे खड़ी हूं।"

राजीव ने माचिस को सीधी नीचे गिरा दिया।

कुछ पलों बाद नीचे माचिस की मध्यम-सी रोशनी चमकी।

"पुनीत नीचे है?" राजीव का व्याकुल स्वर, परेशानी से भरा था।

"हां।" मोनी की आवाज आई—"वो मुझे दिख गया है। ठहरो मैं चैक करती हूं...ये बेहोश है, पर ठीक लग रहा है। मैं रस्सा इसकी कमर से बांधती हूं तुम लोग इसे ऊपर खींचना।"

"ऊपर बरसात तेज होती जा रही है।" संदीप बोला—"और ये बेहोश है।"

चंद पल रुककर मोनी की आवाज आई।

"तुम दोनों रस्सा पकड़कर मेरी तरह खोह में उतर आओ। इस तरह हम बरसात और सर्दी से काफी हद तक बच सकते हैं जब बरसात थम जाएगी तो हम रस्सा पकड़कर बाहर आ जाएंगे। तब तक इसे भी होश आ जाएगा। मैं इसकी स्की पांवों से अलग कर देती हूं। बैग भी इसकी पीठ से निकालती हूं तुम दोनों नीचे आ जाओ।"

बाहर बरसात में अब तेजी आ गई थी। दोनों ने नीचे उतर जाना ही बेहतर समझा।

रस्सा थामे किसी प्रकार वे गड्ढे में उतर आए, खोह में गुप्प अंधेरा था और वो एक तरफ को कुछ गहरी थी। बरसात तो क्या सर्दी से भी बहुत बचाव हो रहा था खोह में आकर।

संदीप के कहने पर मोनी ने माचिस की तीली जलाई। उस रोशनी में पुनीत को चैक किया। वो बेहोश था। हाथ-पांव सलामत थे। मोनी ने पुनीत की स्की और पीठ का बैग उतार दिया था। उन्होंने भी अपने बैग पीठ से हटा दिए थे।

"तुमने अपने बैग में रस्सा क्यों रखा हुआ था?" संदीप बोला।

"क्योंकि बर्फ की इन जगहों पर इस तरह के खतरे आते हैं। हर गाइड के पास ऐसा ही, तीस फुट लम्बा रस्सा जरूर होता है कि टूरिस्ट, ऐसी मुसीबत में फंसे तो उसे बचाया जा सके।"

"शुक्रिया।" संदीप ने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम हमारे साथ न होती तो पता नहीं हमारा क्या होता। तुम्हें चुनकर मैंने गलत काम नहीं किया। तुम सच में काबिल हो।"

"पर इसे कब तक होश आएगा?" राजीव चिंता भरे स्वर में कह उठा।

बाहर बरसात की तेज बूंदें गिरने की आवाजें आ रही थीं।

"सिर में चोट न लगी हो।" मोनी ने कहा।

राजीव ने अंधेरे में बेहोश पुनीत के चेहरे पर हाथ फेरा। अच्छी तरह चैक किया।

"सिर में चोट लगी तो, नहीं लग रही।" राजीव बोला।

वहां अंधेरा था। वे एक-दूसरे को ठीक से देख नहीं पा रहे थे। खोह के गड्ढे में जहां रस्सा लटक रहा था, वहां से अब तेजी से बूंदें गिरनी शुरू गई थीं।

"शुक्र है कि इस बुरे मौसम में हमें ये जगह मिल गई।" संदीप बोला।

"वक्त क्या हुआ है?" राजीव बोला।

मोनी ने माचिस जलाकर, अपनी कलाई में बंधी घड़ी पर निगाह मारकर कहा।

"दोपहर के तीन बजे हैं।"

"यहां तो रात जैसा मौसम लग रहा है।" गड्ढे के मुंह से आती मध्यम रोशनी को देखते राजीव ने कहा—"ये बरसात रुके तो हम वापस चलें। हमने गलती की इतनी दूर आकर, मोनी।"

"हां।"

"हम कितनी दूर आ गए हैं?"

"बहुत दूर। मेरे खयाल से करीब ढाई घंटे कुल स्किंग की गई है। वो भी

तेजी से। ऐसे में हम इस तरह समझ सकते हैं कि चार-पांच दिन में इंसान जितना पैदल चल सकता है, हम उतना दूर आ पहुंचे हैं।"

"ओह, फिर तो हमें वापस पहुंचते-पहुंचते रात हो जाएगी।"

"पहले पुनीत को तो होश आए। इसका हाल-चाल पता चले। ये घायल हुआ तो वापस कैसे जा सकेंगे।"

"कोई हड्डी वगैरहा न टूट गई हो।" मोनी बोली।

"हड्डी नहीं टूटी।" संदीप गम्भीर स्वर में बोला—"टूटी होती तो बेहोशी में भी इसकी आवाजें निकल रही होतीं।"

"यहां अगर रोशनी का इंतजाम हो जाए तो हमें आसानी हो जाए, रुकने में।" राजीव ने कहा।

"रोशनी का इंतजाम नहीं हो सकता।" संदीप बोला—"सिर्फ माचिस ही...।"

तभी पुनीत के होंठों से कराह की आवाज आई।

"इसे होश आ रहा है।" मोनी के होंठों से निकला।

"पुनीत।" राजीव बेचैनी से कह उठा।

पुनीत के होंठों से कुछ पल कराह निकलती रही फिर उसे होश आ गया।

"तुम ठीक तो हो?" संदीप ने जल्दी से कहा।

"आह, क्या हुआ था मुझे?" पुनीत ने धीमे स्वर में पूछा।

"तुम स्कीइंग करते-करते पहाड़ी खोह में गिर गए थे। वो जगह ऊपर से बर्फ से ढंकी थी, तुम समझ नहीं सके थे कि नीचे खाली जगह है।" राजीव ने कहा—"ऐसी जगह को कोई नहीं भांप सकता था।"

"मुझे इतना पता है कि अचानक मैं नीचे गिरने लगा फिर जाने क्या चीज मेरे सिर से टकराई और मेरे होश गुम हो गए। ये-ये कौन-सी जगह है।" पुनीत ने उठ बैठने की चेष्टा की।

राजीव ने उसे सहारा देकर बिठाया।

"ये वो ही पहाड़ी खोह है जहां तुम गिरे थे। मोनी ने हमारी बहुत सहायता की, वरना जाने क्या हो जाता।" संदीप बोला।

"शुक्रिया मोनी। आह...।"

"क्या हुआ?"

"मेरी टांग में दर्द हो रहा है।"

"मुड़ गई लगती है।" संदीप ने कहा और उसकी टांग की तरफ पहुंच कर बोला—"कौन-सी वाली?"

"बांई वाली।"

संदीप उसकी बांई टांग को धीमे-धीमे दबाने लगा।

"स्कीइंग के काबिल हो या नहीं?" राजीव ने पूछा—"हम बहुत दूर आ गए हैं, वापस भी जाना है।"

"काबिल हूं। कर लूंगा। बाहर बरसात आ रही है?"

"हां। मौसम बिगड़ चुका है।"

"आप लोगों ने भरपूर अपनी मर्जी की।" मोनी ने उखड़े स्वर में कहा—"मैंने तो बहुत पहले ही कह दिया था कि मौसम खराब हो रहा है, हमें वापस चल देना चाहिए। तब वापस चलते तो अब तक 'सूमा' में होते।"

"तुम ठीक कहती हो।" संदीप गम्भीर स्वर में बोला—"तुम्हारी बात न मानकर हमने गलती की।"

"गाइड की बात जरूर माननी चाहिए।" मोनी बोली—"मुझे यहां के पहाड़ी मौसम का बहुत अनुभव है।" कहने के साथ ही मोनी उठी और खोह के उस रास्ते के पास पहुंची जहां रस्सा लटक रहा था अगले ही पल वापस आकर बोली—"अभी हम वापस नहीं चल सकते। बरसात बहुत तेज है।"

"हम बरसात में भी स्कीइंग कर लेंगे।" राजीव बोला।

"बरसात में रास्ता ही नहीं दिखेगा तो आगे कैसे बढ़ेंगे। भटक जाएंगे।" मोनी बोली।

"इंतजार कर लेते हैं, बरसात थम जाएगी।" पुनीत बोला।

"बरसात में बर्फ गीली होकर आपस में चिपक-सी जाती है, ऐसे में स्कीइंग करते वक्त स्लिप हो जाने का खतरा रहता है।" मोनी ने कहा—"हमें वापसी पर बहुत ध्यान से स्कीइंग करनी होगी।"

"संदीप।" पुनीत बोला—"मुझे उठाओ। हाथ लगाओ।"

पुनीत, को संदीप ने सहारा देकर खड़ा किया।

पुनीत अंधेरे में दो-चार कदम चला। बांई टांग में हल्का-सा दर्द अभी भी था, परंतु ऐसा नहीं कि स्कीइंग करने में रुकावट बने। वो मुस्कराकर कह उठा।

"मैं ठीक हूं। चिंता की कोई बात नहीं। मोनी जब कहेगी हम वापस चल पड़ेंगे।"

"बरसात रुकने पर ही हम वापस चलेंगे।" मोनी ने चिंता भरे स्वर में कहा—"परंतु रास्ते में अंधेरा हो जाएगा। अंधेरे में स्कीइंग करने में परेशानी आएगी। तब रफ्तार धीमी रखनी होगी।"

"तुम्हें वापसी का रास्ता तो याद है न?"

"मैं यहां, इतनी दूर तक कभी नहीं आई। टूरिस्ट सूमा के पास के पहाड़ों पर दो-चार किलोमीटर तक ही जाते हैं। परंतु तुम लोग तो बहुत ज्यादा दूर आ चुके हो। इतनी दूर तो हमें आना ही नहीं चाहिए था।"

"तुम वापसी का रास्ता जानती हो कि नहीं?" राजीव ने पुनः परेशान स्वर में पूछा।

"चिंता मत करो।" मोनी ने गम्भीर स्वर में कहा—"सूमा तक ले चलूंगी तुम लोगों को।"

"ये बरसात भी तो रुक नहीं रही।" संदीप बोला।

"मुझे भूख लगी है।" पुनीत बोला—"कुछ खाने को दो।"

राजीव ने अपने बैग से बर्गर निकालकर सबको दिए और कहा।

"खाने को काफी सामान है हम लोगों के पास। उसकी कोई चिंता नहीं।"

"बोतलें भी हैं।" पुनीत बोला—"मैं अपने बैग में दो बोतलें भी लाया हूं।"

"आप लोग पीने मत लग जाना।" मोनी ने तुरंत कहा—"बरसात रुकते ही हमने वापस चलना है।"

▭ ▭

शाम घिर आई। अंधेरा होना शुरू हो गया। परंतु बरसात अभी तक नहीं रुकी थी। बल्कि अब तो तेज, तीखी, सर्द हवा भी चलने लगी थी और उस हवा के झोंके खोह के भीतर आकर उन्हें कांपने पर मजबूर कर रहे थे। खोह में गहरा अंधेरा मौजूद था। वे एक-दूसरे को देख नहीं पा रहे थे, परंतु दूसरे की मौजूदगी का एहसास अवश्य हो रहा था। सन्नाटा-सा छाया हुआ था खोह में। उनके हिलने-सरकने की आवाजें उठ रही थीं।

"हम फंस गए लगते हैं।" संदीप बोला।

"ये बरसात तो रुकने का नाम नहीं ले रही।" पुनीत कह उठा।

"हमें रात को यहीं रुकना होगा।" मोनी ने कहा।

"रात यहां...?" संदीप के होंठों से निकला—"ये क्या कह रही हो?"

"मौसम खराब है। रात का अंधेरा फैला है। पहाड़ों पर पड़ी बर्फ गीली हो चुकी है और ऐसे में बर्फ के धंसने का खतरा बना रहता है। इस मौसम में स्कीइंग करने का खतरा मोल नहीं लिया जा सकता। रास्ते में कोई भी हादसा पेश आ सकता है।" मोनी गम्भीर स्वर में कह रही थी—"अगर रात के वक्त चंद्रमा निकला होता तो हम आसानी से स्कीइंग करके वापस जा सकते थे। तब रास्तों को आसानी से देखा जा सकता था। परंतु बरसात और कोहरे में बर्फ पर स्किंग करना खतरे से भरा है।"

"हम वापस न पहुंचे तो हमारी पत्नियों का बुरा हाल हो जाएगा।" राजीव बोला।

"वो तो सारे होटल को सिर पर उठा लेंगी कि हम वापस नहीं आए।" संदीप ने कहा।

"हमें वापस चलने की कोशिश करनी चाहिए।" पुनीत ने गम्भीर स्वर में कहा।

वहां खामोशी छा गई।

मोनी खोह की दीवार से टेक लगाए बैठी थी।

"तुम कुछ कहो मोनी?" संदीप बोला।

"मैंने जो कहना था कह दिया।" मोनी ने शांत स्वर में कहा—"आप लोगों ने पहले मेरी बात नहीं मानी। वापस नहीं लौटे तो इस मुसीबत में फंस गए। अब चलने की जबर्दस्ती की तो फिर कोई मुसीबत में पड़ सकते हैं। बरसात जोरों की लगी है। ऐसे में बर्फ पर स्कीइंग करना खतरे से खाली नहीं। बरसात में कई जगह बर्फ धंसने का खतरा होता है।"

"ये हम किस मुसीबत में फंस गए।" पुनीत कह उठा।

तभी आसमान में बिजली चमकी। बादलों की दिल दहला देने वाली गर्जना उभरी और आसमानी बिजली की चमक दो पल के लिए, खोह के भीतर तक आई और लुप्त हो गई।

"इन सब बातों में सबसे अच्छी बात तो ये रही कि हमें पहाड़ की ये खोह मिल गई है।" मोनी बोली—"नहीं तो कड़ाके की सर्दी में कुछ ही घंटों में जान गंवा बैठते। इस इलाके में कहीं भी रुकने-ठहरने की जगह नहीं है।"

"हम सच में अभी वापस नहीं लौट सकेंगे?" राजीव कह उठा।

"आप देख ही रहे हैं कि मौसम हद से ज्यादा खराब है।" मोनी बोली।

"मुझे वापस आया न पाकर तो बेबी परेशान हो जाएगी।" राजीव परेशानी से कह उठा।

"तो क्या जोगना परेशान नहीं होगी?" संदीप बोला।

"उन तीनों बहनें की नींद उड़ जाएगी। होटल में हंगामा खड़ा कर देंगी।" पुनीत कह उठा।

बरसात की बूंदें पड़ने की आवाजें, उनके कानों में पड़ रही थी।

"मोनी जो कह रही है, हमें उसकी बात माननी होगी।" पुनीत गम्भीर स्वर में बोला—"इस हलाके को ये हमसे बेहतर जानती है। हमें पहले ही इसकी बात मानकर वापस चल देना चाहिए था।"

"तब तो तुम लोगों पर स्कीइंग करने का भूत सवार था।" संदीप झल्लाया।

"वो भूत तुम पर भी तो था।" राजीव कह उठा।

"मैं कहां स्कीइंग कर रहा था, मैं तो मोनी के साथ था, क्यों मोनी?" संदीप ने कहा।

"मोनी के साथ क्या कर रहे थे?"

"करना क्या है, इस बात से तुम्हारा क्या मतलब कि मैं मोनी के साथ क्या कर रहा था?"

जवाब में राजीव हंसा।

"इन बेकार की बातों को छोड़ो।" पुनीत बोला—"तो क्या अब हमें रात यहीं बितानी है।"

"मोनी तो ये ही कहती है।" संदीप बोला।

"रात यहीं बिताना ठीक होगा। इस मौसम में हम वापस नहीं जा सकते।" मोनी कह उठी।

"ठीक है। रात यहीं रहेंगे।" पुनीत ने कहा—"हमारे पास खाने-पीने का इतना सामान तो है कि पेट भर सके। मेरा बैग कहां है, देखो तो, बोतल खोलते हैं, कुछ सर्दी तो कम होगी।"

"तुमने अच्छा किया जो बोतलें साथ ले आए।" राजीव के स्वर में मुस्कराहट थी।

"यूं ही मन में आया तो उठा ली बोतलें। बैग देखो, क़हां है।"

"यहां रोशनी का इंतजाम होता तो मजा आ जाता।"

"माचिस तो है, पर उससे क्या होगा।" संदीप बोला—"बोतलों के साथ गिलास भी है कि नहीं?"

"पेपर गिलास है।"

"फिर तो काम चल जाएगा।"

"तुम्हारा बैग मिल गया पुनीत।" राजीव बोला—"बोतलें और गिलास भीतर हैं।"

"पानी भी है।" संदीप ने कहा—"बढ़िया काम चल जाएगा।"

"पानी रहने दो।" पुनीत बोला—"पीने के काम आएगा। अभी वक्त का कुछ पता नहीं। बिना पानी के ही व्हिस्की लेनी होगी।"

"मैं तो थोड़ा पानी जरूर डालूंगा।" राजीव ने कहा—"नीट से मेरा गला खराब हो जाता है।"

तीनों अपनी तैयारी में जुट गए।

"हमारे वापस न पहुंचने पर तीनों बहनों का क्या हाल होगा रात भर।" राजीव परेशान हो उठा।

"हम क्या कर सकते हैं।" पुनीत ने कहा—"मौसम खराब होने की वजह से हम फंस गए हैं।"

"मोनी।" संदीप बोला—"तुम्हारे मां-बाप भी तो चिंता करेंगे न लौटने पर।"

"हां, पर वो समझ जाएंगे कि मौसम खराब होने की वजह से मुझे कहीं रुक जाना पड़ा होगा।" मोनी बोली।

तभी पुनीत ने कहा।

"ध्यान से गिलासों में डाल, नीचे मत गिरा।"

"क्या करूं अंधेरा है।" राजीव बोला।

तभी मोनी ने कहा।

"मुझे सर्दी लग रही है।"

"सर्दी लग रही है।" संदीप कह उठा—"शुक्र है तुम्हें सर्दी तो लगी। मैं तुम्हें कम्बल देता हूं। मुझे भी सर्दी लगनी शुरू हो रही है। तुम चिंता मत करो मोनी, मैं सब ठीक कर दूंगा। ये रहा मेरा बैग।" फिर संदीप ने बैग में से कम्बल निकाला और मोनी के पास पहुंच गया—"कम्बल ले लो मोनी मैं ओढ़ा देता हूं...।"

"मैं ले लूंगी।" मोनी ने कम्बल थामा।

संदीप ने मोनी के शरीर को टटोला।

मोनी ने संदीप का हाथ पीछे धकेल दिया।

"मैं तुम्हारी सर्दी भगा दूंगा। इस तरह मेरी सर्दी भी भाग जाएगी।" संदीप ने धीमे स्वर में कहा और हाथ फिर मोनी के शरीर पर पहुंच गया कि तभी मोनी ने उसका हाथ पीछे करते हुए कहा।

"ये क्या कर रहे हो?"

"तुम्हें कम्बल दे रहा हूं। ठीक है, तुम खुद ले लो। मैं बाद में तुम्हारा हाल पूछने आऊंगा।"

"वो बच्ची नहीं है, कम्बल ले लेगी।" राजीव ने कहा—"तू इधर आ-जा।"

"आ गया भाई, आ गया।" संदीप वापस सरकता हुआ उनके पास पहुंच गया।

"ये ले गिलास पकड़...।"

संदीप ने गिलास पकड़ा और कहा।

"खाने को भी कुछ निकाल लो। बिना पानी के विहस्की पीना, मुसीबत जैसा होता है।"

तभी पुनीत ने मोनी से कहा।

"तुम भी थोड़ी सी पी लो, सर्दी नहीं लगेगी।"

"मैं नहीं पीती।" मोनी ने कहा।

"इस वक्त दवा समझ कर पी लो। ऐसी सर्दी मे पीना जरूरी हो जाता है।"

"मुझे नहीं चाहिए।"

"क्यों उसे बुरी आदत डाल रहे हो। उसकी सर्दी की तुम चिंता न करो। सब ठीक कर दूंगा।" संदीप ने कहा।

तीनों का पीना शुरू हो चुका था।

मोनी छः-सात कदम दूर दीवार के पास, कम्बल ओढ़ कर लेट गई थी।

गिलास खाली होता तो फिर तैयार कर लिया जाता।

"तुम्हें भूख लगी होगी।" राजीव ने मोनी से कहा—"कुछ खा लो। खाने से भी गर्मी आती है।"

"अभी भूख नहीं है।" मोनी ने जवाब दिया।

▭ ▭

दोनों बोतलें खत्म हो चुकी थीं। उन्हें इस वक्त जरा भी सर्दी नहीं लग रही थी। रात का जाने कौन-सा वक्त चल रहा था। बरसात थम चुकी थी परंतु बादलों की गर्जना यदा-कदा सुनाई दे जाती थी। राजीव के खर्राटे गूंज रहे थे। पुनीत भी सो चुका था। संदीप भी एक तरफ लुढ़का पड़ा था कि एकाएक वो उठ बैठे जैसे भूली बात याद आ गई हो। वो तगड़े नशे में था। कुछ पल तो बैठा झूमता रहा। फिर उधर सरकने लगा जिधर मोनी सो रही थी। वो मोनी के पास जा पहुंचा। हाथ से उसे हिलाता नशे से भरे धीमे स्वर में पुकारा।

"मोनी।"

"हूं-हां।" मोनी की आवाज नींद से भरी थी।

"सो गई?"

"हां—क्या बात...।"

"मुझे सर्दी लग रही है। कम्बल की जरूरत है।"

"आ जाओ।" मोनी ने कहा—"कम्बल में घुस जाओ।"

"ओह थैंक्यू मोनी। थैंक्यू।" नशे से भरे स्वर में कहता संदीप किसी तरह कम्बल में घुस गया और मोनी के शरीर से सट गया—"आह—तुम कितनी गर्म हो मोनी, तुम कितनी अच्छी हो।" संदीप के हाथ मोनी के शरीर पर पहुंच गए।

"ये क्या कर रहे हो?"

"मुझे सर्दी लग रही है और गर्मी के एहसास को ढूंढ़ रहा हूं। तुम मेरी सर्दी भगाओ, मैं तुम्हारी सर्दी दूर कर दूंगा।" संदीप के हाथ तेजी से चलने लगे—"आह, मोनी तुम तो कमाल की हो। बाई गॉड तुम तो मुझे पागल कर दोगी।"

उसी पल मोनी ने अपनी बांह संदीप के शरीर पर डाली और उसे अपने से भींच लिया।

रात जैसे-तैसे वे सोये, जब तक नशा कायम रहा, सोते रहे, नशा उतरा, सर्दी का एहसास हुआ तो वे उठ बैठे, सबसे खास बात तो ये रही कि पुनीत और राजीव ने उठने पर, संदीप को अपने पास ही सोया पाया था। मोनी अपनी जगह पर कम्बल ओढ़े गहरी नींद में थी। खोह के रास्ते से, बाहर से मध्यम-सा उजाला भीतर आ रहा था कि दिन निकल आया है। दिन निकला पाकर उन्होंने राहत की सांस ली, परंतु ठंड से वे ठिठुर रहे थे।

"व्हिस्की ने इतनी सर्दी में रात निकाल दी।" पुनीत बोला—"नहीं तो बुरा हाल हो जाता।"

"बरासात रुक चुकी है।"

"अब हम वापस जा सकते हैं।" पुनीत बोला।

"तीनों बहनों का क्या हाल हो रहा होगा कि हम वापस लौटे नहीं। वो क्या-क्या सोच रही होंगी कि...।"

"सब ठीक हो जाएगा।" पुनीत मुस्कराया—"कम-से-कम अब वे फिर दोबारा सूमा गांव नहीं आने वाली।"

"हमें जल्दी निकल चलना चाहिए।"

"सर्दी से मेरी हालत खराब हो रही है।" पुनीत बोला।

"संदीप को देखा, कैसे घोड़े बेच कर सो रहा है।"

तभी संदीप ने आंखें खोलते हुए कहा।

"घोड़े बेचकर नहीं, सर्दी बेचकर सो रहा हूं।"

"सर्दी बेचकर, क्या मतलब?" राजीव उलझन में पड़ा।

"रात पीने से सर्दी भाग गई। बहुत मजा आया रात पीने के बाद।" संदीप मुस्कराया।

"पीने के बाद मजा आया। मैं समझा नहीं।"

"तुम्हें समझने की जरूरत भी क्या है।" संदीप ने कहा—"फिर भी बता देता हूं कि रात हर तरफ यहां अंधेरा था। ऐसे अंधेरे से भरी जगह पर रात मैंने पहली रात बिताई। पहली बार पी, पहली बार मुझे असली गर्मी का एहसास हुआ। मजा आ गया।"

"तुझे सर्दी नहीं लग रही?" पुनीत बोला

"सर्दी, कैसी सर्दी, मेरे अंदर तो कुदरती गर्मी भर चुकी है। काश हर रात ऐसी होती।" संदीप ने आह भरी।

"यहां से चलने की सोचो। मोनी को जगाओ।" राजीव बोला।

"सोने दो बेचारी को...।" संदीप ने छः कदम दूर कम्बल में लिपटी मोनी को देखा।

"तुम्हें जोगना के पास पहुंचने की जल्दी नहीं है कि उसका क्या हाल हो रहा होगा।" राजीव ने कहा।

"तुम्हें मेरी पत्नी की चिंता क्यों होने लगी?" संदीप ने मुंह बनाया।

"जोगना से मेरा मतलब, तीनों बहनों से है।"

"अब वापस ही चलना है।" संदीप ने मोनी को देखा—"पर ये रात मेरी जिंदगी की खास रात बन गई है। इस रात को कभी भूल नहीं सकूंगा। दिल से लगाकर रखूंगा।"

"ऐसी खास रात तो नहीं है ये।"

"बहुत खास रात थी। हम खराब मौसम की वजह से फंस गए। पहाड़ी खोह में रहकर रात बिताई। दो बोतलें हमने खाली कीं और...और...क्या रात थी। जो मेरे दिल पर बीती, मैं ही जानता हूं। तुम लोग तो बेवकूफ हो।"

"पागल हो गया है ये।" पुनीत कह उठा—"मोनी को उठा राजीव।"

राजीव उठा और मोनी की तरफ बढ़ गया।

"हाथ मत लगाना उसे।" संदीप कह उठा—"आवाज लगाकर जगाना।"

"तेरे को क्या तकलीफ है अगर हाथ से हिलाऊं?" राजीव चिढ़कर बोला।

"पराई औरतों को नहीं छूना चाहिए। आगे तू समझदार है ही।"

राजीव ने मोनी को कंधे से हिलाकर उठाया।

मोनी गहरी नींद में थी कि हिलाने पर फौरन उठ बैठी।

"क्या है?" मोनी के होंठों से निकला।

"दिन निकल आया है।" राजीव ने कहा।

"ओह।" मोनी की निगाह उस रास्ते पर गई, जहां से रस्सा लटक रहा था। वहां से रोशनी भीतर आ रही थी।

"अब हमें वापस चल देना चाहिए।" राजीव ने कहा।

"मैं बाहर जाकर देखती हूं कि मौसम कैसा है।" मोनी ने कहते हुए कम्बल हटाया और खड़ा होते संदीप को देखा।

आंखें मिलीं कि संदीप मुस्कराया।

मोनी भी रहस्य भरे अंदाज में मुस्करा पड़ी।

संदीप का चेहरा खिल उठा।

राजीव ने दोनों की मुस्कान देखी तो उसकी आंखें सिकुड़ीं।

मोनी आगे बढ़ गई थी और गड्ढे के मुंह से लटकते रस्से को पकड़कर, ऊपर जाने लगी।

"वो तेरे को देखकर मुस्करा क्यों रही थी?" राजीव ने संदीप से पूछा।

"तू जल रहा है कि मोनी तेरे को देखकर क्यों नहीं मुस्कराई?" संदीप मुस्कराया।

"वो ही तो बात है कि वो मेरे को और पुनीत को देखकर क्यों नहीं मुस्कराई। तेरे को ही देखकर क्यों मुस्कराई?"

"मैं तुम दोनों से बढ़िया दिखता हूं, वो मेरे से प्रभावित हो गई होगी।" संदीप हंसा।

राजीव ने कुछ नहीं कहा और मोनी की तरफ देखा।

मोनी वहां से बाहर निकल चुकी थी। वो नहीं दिखी।

"उसकी मुस्कान में ऐसा कुछ था जैसे वो तुम्हें कुछ कह रही हो।" राजीव पुनः बोला।

"वो मुझे धन्यवाद दे रही होगी कि रात मैंने उसे सर्दी नहीं लगने दी। मैंने उसे कम्बल दिया था।" संदीप ने कहा।

राजीव ने कुछ नहीं कहा।

"हमारी स्की और पोल बाहर ही है। संदीप बोला—"कल पुनीत को तलाश करते हमने स्की को जूतों से निकाल दिया था और अंधेरा हो जाने की वजह से, वो वहीं रह गए।"

"वो बाहर ही होंगे। मिल जाएंगे।" राजीव ने कहा।

तभी मोनी रस्सा थामे नीचे आती दिखी। वो नीचे आ गई। बोली।

"अभी हमारा निकलना ठीक नहीं। बाहर धुंध और कोहरा बहुत है। आठ-दस फुट से ज्यादा दूर नहीं दिख रहा।"

"हम धीरे चलेंगे।" पुनीत ने कहा—"कुछ तो रास्ता तय होगा।"

"परंतु मैं रास्तों को कैसे पहचान पाऊंगी, जब मुझे ही सामने कुछ नहीं दिखेगा।" मोनी ने कहा।

पुनीत सिर हिलाकर रह गया।

"मौसम कब तक साफ होगा?" राजीव ने पूछा।

"यहां के मौसम का कुछ पता नहीं चलता।" मोनी ने संदीप पर निगाह मारी—"पहाड़ी मौसम में कभी भी, कुछ भी हो जाता है।"

संदीप मुस्कराया।

राजीव ने संदीप को देखा फिर मोनी को।

"कुछ इंतजार कर लेते हैं।" पुनीत ने कहा।

मोनी अपनी जगह पर जा बैठी और कम्बल ओढ़ते हुए कहा।

"बाहर कड़ाके की ठंड है।"

"ऐसे मौसम में चाय मिल जाती तो मजा आ जाता।" पुनीत कह उठा।

संदीप उठा और मोनी के पास जा बैठा।

दोनों की आंखें मिलीं। अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराए।

"तू कैसी है मोनी?" संदीप ने प्यार से पूछा।

मोनी के चेहरे पर शर्म की लाली उभरी।

"ठीक है न?"

"तुम बहुत शरारती हो।" मोनी दबे स्वर में बोली—"रात तुमने क्या किया?"

"तुम्हारी भी तो सहमति थी उसमें।"

मोनी उसी अंदाज में मुस्कराती रही।

"अच्छा लगा था?"

"हां। पहली बार ऐसा हुआ मेरे साथ।" मोनी ने दबे स्वर में कहा।

"ओह सच मोनी। मुझे भी बहुत अच्छा लगा। इस रात को मैं कभी नहीं भूलूंगा।"

मोनी शर्म भरी मुस्कान के साथ संदीप को देखती कह उठी।

"इन लोगों को तो कुछ पता नहीं चला?"

"नहीं, नहीं। इन्हें कुछ भी पता नहीं है। ये हम दोनों की बात है।" संदीप ने जल्दी-से कहा।

"अब मैं शादी कर लूंगी।"

"शादी? किससे?"

"जिससे भी मेरे मां-बाप कहेंगे। मुझे नहीं पता था कि शादी के बाद इतना अच्छा लगता है।"

"तुम शादी कर लोगी।" संदीप परेशान हुआ—"मैं तो सोच रहा था कि आने वाले साल फिर तुमसे मिलूंगा।"

मोनी उसी मीठी मुस्कान के साथ संदीप को देखती रही।

"तुम शादी करो या न करो। अगले साल मुझसे मिलोगी न?"

"शादी कर ली तो फिर कैसे मिल सकूंगी।"

"मैंने भी तो शादी कर रखी है, लेकिन मैं तुमसे—तुमसे, रात को...।"

तभी पीछे से राजीव की आवाज आई।

"ऐसी घुट-घुट के क्या बातें हो रही हैं, हमें भी तो पता चले।"

"मैं तुमसे फिर बात करूंगा मोनी।" संदीप ने कहा और उठकर राजीव-पुनीत के पास आ बैठा—"मैं मोनी से बाहर के मौसम का हाल पूछ रहा था। सच में बाहर का मौसम बहुत खराब है। अभी हमारा चलना ठीक नहीं होगा।"

□ □

दिन के साढ़े ग्यारह बजे थे, जब उनका वापसी का सफर शुरू हुआ। परंतु मौसम तब भी साफ नहीं था। कोहरा हर तरफ फैला, ठहरा हुआ था। हवा नहीं चल रही थी। हवा चल रही होती तो वो कोहरे को अपने साथ उड़ा ले जाती, लेकिन गुम-सा मौसम था। कल हुई मूसलाधार बरसात का असर अभी भी दिख रहा था। बर्फ गीली थी। ऐसे में स्कीइंग करने में फिसलने का खतरा था। उन्हें सावधानी से स्कीइंग करनी पड़ रही थी। कोहरे की वजह से चालीस-पचास फुट के आगे देख पाना सम्भव नहीं हो पा रहा था। ऐसे में सबसे बड़ी समस्या तो मोनी को, रास्ता पहचानने-समझने में आ रही थी। थकान और कड़कती सर्दी की वजह से उनके शरीर ढीले पड़ रहे थे और ठिठुर रहे थे। कम-से-कम इस वक्त तो वो मन-ही-मन स्कीइंग करने से तौबा कर रहे थे और वे जल्द-से-जल्द होटल पहुंचकर गर्म कमरे में, रजाई में दुबक जाना चाहते थे।

आगे मोनी स्कीइंग करती जा रही थी कुछ पीछे वे तीनों थे। उनकी रफ्तार धीमी थी।

"मेरा तो शरीर कांप रहा है।" राजीव कह उठा।

"ठंड तो मुझे भी लग रही है, परंतु होटल पहुंचना जरूरी है।" पुनीत ने कहा—"सुधा रात भर सोई नहीं होगी।"

"तुम लोग तो ऐसे बात कर रहे हो जैसे मुझे ठंड न लग रही हो और जोगना की परवाह न हो।" संदीप ने कहा—"जोगना जानती है कि ऐसे मौसम में मुझे सर्दी बहुत लगती है। वो मेरी बहुत चिंता कर रही होगी।" कहने के साथ ही संदीप ने स्की पोल के सहारे अपनी रफ्तार तेज की और मोनी के पास जा पहुंचा—"हैलो मोनी।" वो प्यार से बोला।

मोनी ने मुस्कराकर उसे देखा।

"मुझे रात की बहुत याद आ रही है। सच में तुम बहुत अच्छी हो।" संदीप ने मुस्कराकर कहा।

"तुम भी तो बहुत अच्छे हो।"

"संदीप कहो न।"

"संदीप।" मोनी ने प्यार से कहा।

"कितना अच्छा लगता है जब तुम मेरा नाम लेती हो। वो तुमने सच कहा था कि रात पहली बार तुमने...।"

"झूठ क्यों कहूंगी।"

"बहुत अच्छा लगा?" संदीप सपनों में गुम होता कह उठा।

"हां, बहुत अच्छा।" मोनी के चेहरे पर शर्म की लाली दौड़ गई।

"मैं—मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं मोनी।"

"क्या?"

"अभी तुम शादी करने में जल्दबाजी मत करो। हो सकता है मेरी-तुम्हारी ही शादी हो जाए।"

"तुम्हारी शादी तो हो चुकी है।"

"हो तो चुकी है पर क्या पता जोगना को कोई गम्भीर बीमारी लग जाए और वो न रहे। वो पहाड़ से भी गिर सकती हैं दिल्ली में एक्सीडेंट भी हो सकता है, कुछ भी हो सकता है। मेरी मानो तो साल भर का इंतजार कर लो। मुझे पूरा भरोसा है कि साल भर में जोगना को ऐसा कुछ अवश्य हो जाएगा कि हम दोनों शादी कर सकें।" संदीप ने सोच भरे स्वर में कहा।

"क्या तुम अपनी पत्नी को, मेरे लिए, मारने की सोच रहे हो?" मोनी ने तेज स्वर में कहा।

"ये तुम क्या कह रही हो। मैंने ये बात कब कही?"

"परंतु तुम्हारी बात से तो मुझे ऐसा ही लगता है।"

"गलत मत कहो मोनी। ऐसी बुरी बात मैं सोच भी नहीं सकता। मैं तो सोच रहा हूं कि तुम मुझे प्यार करने लगी हो। मैं तुम्हें पसंद कर रहा हूं तो ऐसे में भगवान भी हमारी सहायता करेगा, हमारे मिलने में।"

"भगवान ने तुम्हारी पत्नी का भी तो खयाल रखना है। वो हमें क्यों मिलने देगा। फिर तुम कैसे कह सकते हो कि मुझे तुमसे प्यार हो गया है। तुम तो शादीशुदा हो। ठीक है, रात को जो हुआ, वो मुझे अच्छा लगा। उसी के कारण, मेरे मन में ये विचार आया है कि मैं शादी कर लूंगी। तुम अपनी पत्नी के साथ खुश रहो, मैं अपने घर खुश...।"

"पर मोनी मैं तुम्हारे साथ खुश रहूंगा।"

"तुम्हारी पत्नी है।"

"साल भर का इंतजार करो, शायद जोगना को कोई गम्भीर बीमारी हो जाए और...।"

"तुम।" मोनी ने गम्भीर निगाहों से संदीप को देखा—"अपने मन में अपनी पत्नी के लिए गलत विचार रखते हो, ये मुझे पसंद नहीं।"

"मुझे समझने की कोशिश करो मोनी। मैं तुम्हें पाना चाहता हूं। तुम मेरे दिल में उतर चुकी...।"

इस वक्त वे ऊंचे पहाड़ों के बीच में से निकल रहे थे। दोनों तरफ पहाड़ थे। बीच में बर्फ से भरा रास्ता था। आगे कोहरा था। उनकी गति मध्यम थी कि तभी मोनी ने स्की पोल के सहारे खुद को फिसलने से रोक लिया।

संदीप भी रुकता चला गया।

"तुम रुक क्यों गईं?"
मोनी आस-पास देखती। गम्भीर स्वर में कह उठी।
"मुझे लगता है, गहरे कोहरे की वजह से हम रास्ता भटक गए हैं।"
"क्या?" संदीप चिंता में पड़ गया।
तब तक राजीव और पुनीत भी पास आ पहुंचे।
"रुके क्यों?" पुनीत ने पूछा।
"मोनी को लगता है कि हम रास्ता भटक गए हैं।" संदीप बोला—"कोहरा बहुत फैला है।"
"रास्ते का पता नहीं चल रहा?" राजीव ने मोनी को देखा।
"शायद हम गलत जा रहे हैं।" मोनी गम्भीर थी—"जब हम आए थे तो पहाड़ों के बीच इस तरह का रास्ता नहीं था।"
"क्या पता दिशा सही हो, रास्ता हमने दूसरा पकड़ लिया हो।" पुनीत ने कहा।
"ये हो सकता है।" संदीप ने कहा—"आगे जाकर देखते हैं।"
मोनी ने सोच भरे अंदाज में सिर हिला दिया।
"आओ चलें।"
वे पुनः आगे बढ़ने लगे।
"मौसम बहुत ठंडा हो रहा है।" राजीव बोला।
"बुरे हाल हो रहे हैं।" पुनीत ने कहा।
'मुझे तो सर्दी नहीं लग रही।' संदीप बड़बड़ाया और मुस्कराकर आगे जाती मोनी को देखा—'मोनी सच में कमाल की लड़की है। गर्मी से भरी हुई, इससे मेरी शादी हो जाए तो मुझे कभी भी सर्दी न लगे।'
"तुम क्या कह रहे हो?" दो कदम पीछे राजीव ने पूछा।
"कुछ नहीं।"
"तो क्या तुम्हें बड़बड़ाने की बीमारी पड़ गई है बूढ़ों की तरह।" राजीव ने मुंह बनाया—"एक बात तो बता दो।"
"क्या?"
"सोए उठने पर मोनी खासतौर से तुम्हें ही देखकर क्यों मुस्कराई थी?"
"तुम्हें धोखा हुआ है, वो मुझे देखकर नहीं मुस्कराई थी।"
"मुस्कराई थी। सुबह तुमने ये बात मानी थी।"
"अच्छा।" संदीप ने भोलेपन से कहा—"मोनी से पूछकर बताऊंगा कि वो क्यों मुस्कराई थी।"
"बात को गोल कर रहा...।" राजीव अपनी बात पूरी न कर सका।
मोनी उसी पल रुक गई थी।

वे सब भी रुके।

अगले ही पल उन्होंने जो देखा, वो उन्हें हैरान कर देने के लिए काफी था।

सामने, पचास कदम दूर बहुत बड़ा-सा कुछ दिखा। कोहरे ने उस चीज को घेर रखा था। नीचे जमीन पर धातु के बड़े-बड़े डंडों से, स्टैंड जैसा कुछ था, जिस पर वो चीज टिकी हुई थी। वो ऊंची चीज थी। करीब पच्चीस-तीस फुट ऊंची, गुब्बारे की तरह फुली और फैली हुई। स्टील कलर, हल्के नीले रंग जैसी चीज थी वो।

पाठकों को बता दें कि वो पोपा (अंतरिक्ष यान) है।

"ये क्या है?" मोनी का हैरानी से मुंह खुला रह गया।

"बाई गॉड मोनी, ये तो हवाई जहाज जैसा दिखता है।" संदीप बोल पड़ा।

"पास जाकर देखते हैं।" पुनीत ने कहा और आगे बढ़ा। परंतु उसी पल थम गया।

उसे सामने से किसी की आवाज आती सुनाई दी।

यहां लोग भी हैं? पुनीत के मस्तिष्क में कौंधा।

"यहां लोग भी हैं।" राजीव कह उठा।

"मुझे कुछ गड़बड़ लग रही है।" पुनीत बोला उसकी आंखें अभी भी पोपा पर टिकी थीं। ये पोपा का पीछे वाला हिस्सा था और कोहरे में लिपटा पोपा, आधा-अधूरा ही नजर आ रहा था। अभी इन्होंने पूरा आकार-प्रकार नहीं देखा था।

"इंस्पेक्टर साहब।" संदीप बोला—"अपना ज्यादा दिमाग मत दौड़ाओ, सब ठीक है। यहां कोई सरकारी काम चल रहा होगा।"

"बेकार की बात मत करो। ये बर्फ की वीरान जगह है। यहां हवाई जहाज जैसी बड़ी-सी चीज खड़ी होने का क्या मतलब है। ऐसी जगह पर लोगों का होना, क्या मतलब रखता...।"

"एक मिनट।" मोनी उसी पल कह उठी—"य-यहां—इस तरफ डोबू जाति रहती है कहीं।"

"डोबू जाति?" पुनीत ने उसे देखा।

"पुरानी जातियों में से एक डोबू जाति है। मैंने उन्हें कभी देखा तो नहीं, परंतु सुना है कि इस तरफ डोबू जाति के लोग रहते हैं और वो खतरनाक योद्धा हैं। वो लोगों से दूर, अलग-थलग रहते हैं।" मोनी ने बताया।

"तुम्हारा मतलब कि ये डोबू जाति के लोग हो सकते हैं।" संदीप बोला।

"पता नहीं, अचानक ये बात मेरे दिमाग में आई तो मैंने बता दी।"

"ऐसी डोबू जाति के पास ये हवाई जहाज जैसी चीज नहीं हो सकती।" पुनीत ने कहा।

"मुझे तो ये कुछ और ही लगता है।" पोपा को घूरता संदीप कह उठा।
"और क्या?" राजीव बोला।
"पता नहीं, क्या?"
चारों पोपा को देखकर हैरानी में थे कि बर्फ के ऐसे वीराने में, ऐसी चीज क्यों मौजूद है।
"हमें आगे जाकर देखना चाहिए।" पुनीत कह उठा।
"वहां लोग हैं।" राजीव बोला—"कहीं हमें खतरा न आ जाए किसी प्रकार का।"
"खतरा कैसा।" संदीप ने कहा—"हम रास्ता भटक गए और इस तरफ आ गए। पता तो चले कि यहां क्या हो रहा है, चल पुनीत।"
वो चारों स्की पर सरकते आगे बढ़ने लगे। पोपा के पास पहुंचे। पुनीत ने उचककर पोपा की बॉडी को हाथ लगाया। संदीप ने भी ऐसा किया। मोनी की निगाह आगे की तरफ थी, वहां उसने कोहरे में किसी की टांगें देखी थीं। राजीव के चेहरे पर परेशानी दिखाई दे रही थी। वो उलझन भरी नजरों से पोपा को देखता कह उठा।
"ये हवाई जहाज नहीं हो सकता। ये तो गोल सी, बहुत बड़ी चीज है। अजीब-सी, ऐसा कुछ मैंने पहले कभी नहीं देखा।"

▭ ▭

किलोरा।
पोपा पर मौजूद रहकर सब कामों को ठीक से संभाले हुए था। उसके हवाले कई काम थे। पोपा का ध्यान रखना। अपने आदमियों को काम बांटते रहना। डोबू जाति पर हो चुके कंट्रोल को सलामत रखना। रानी ताशा से यंत्र पर बात करना और रानी ताशा कुछ कहती है तो वो ही काम करना। जरूरत पड़ने पर महापंडित को रानी ताशा का मैसेज देना और उससे जवाब लेकर, रानी ताशा को बताना।
किलोरा हर समय सतर्क रहता था और अपनी जिम्मेवारियां पूरी तरह निभा रहा था। उसके पंद्रह आदमी पहाड़ों के भीतर डोबू जाति के बीच मौजूद थे और सब कुछ संभाले हुए थे। अगोमा जो कि डोबू जाति का ही था, परंतु रानी ताशा के लोगों का पूरा साथ दे रहा था लेकिन ये लोग नहीं जानते थे कि अगोमा सोलाम और बबूसा से भी तारों वाले कमरे में, बातें करता रहता है, जो कि डोबू जाति को रानी ताशा के अधिकार से मुक्त करा लेना चाहते थे। बबूसा से तो कई दिन से अगोमा की बात नहीं हुई थी परंतु सोलाम यंत्र पर दिन में एक बार अगोमा से अवश्य बात कर लेता था। डोबू जाति के सारे हथियार उसी दिन से एक कमरे में बंद कर रखे थे, जब रानी ताशा ने

डोबू जाति के खास लोगों की जोबिना से हत्या करवा दी थी और डोबू जाति को अपने अधिकार में ले लिया था। हथियारों वाले कमरे के बाहर हर वक्त दो आदमी जोबिना के साथ पहरा देते थे। डोबू जाति वालों को स्पष्ट तौर पर कह रखा था कि कोई भी उस कमरे की तरफ न जाए, वरना मार दिया जाएगा। हथियारों के बिना डोबू जाति के योद्धा बेकार थे। अगर कुछ लोग, मन-ही-मन रानी ताशा के लोगों पर उबाल खा रहे थे तो वो हथियार न होने की वजह से चुप थे। डोबू जाति के लोगों के लिए अगोमा के निर्देशन में काम होता था। दिन निकलते ही डोबू जाति के शिकारी लोग, दो दलों में शिकार के लिए निकल जाते थे और शाम ढलने तक शिकारों के साथ जंगलों से वापस लौट आते थे। इसी प्रकार अगोमा कुछ लोगों को दूर-दराज ऐसी जगहों पर भेजता, जहां से वो खाने का सामान लेकर आ जाते। जब से रानी ताशा ने डोबू जाति पर अपना कब्जा किया था, तब से होम्बी (जादूगरनी) अपने कमरे से बाहर नहीं निकली थी। अगोमा एक-दो बार उससे मिलने गया था परंतु होम्बी ने बात नहीं की और इशारे से कहा कि उसे चुप रहने दे। होम्बी के बूढ़े और झुर्रियों भरे चेहरे पर गम्भीरता टपक रही थी। आंखों में चमक दिखाई देती थी। वो तब से चुप और शांत थी।

डोबू जाति और अपने आदमियों पर किलोरा पूरी तरह नजर रखे हुए था। वो बहुत कम पोपा से बाहर आता था। अपना सारा वक्त वो पोपा में व्यस्त रहकर ही बिताता था और ज्यादातर उस कमरे में बैठा रहता, जहां छोटी-बड़ी स्क्रीनें लगी थीं और वहां से पोपा के बाहर के दृश्य देख सकता था। हर तरफ नजर रख सकता था। डोबू जाति के लोग उसे पहाड़ के बाहर दिख जाते थे। अपने लोग भी यदा-कदा नजर आ जाते थे। कुछ साथी हर वक्त पोपा में रहते, जो कि आराम करते, या नींद लेते थे। जब डोबू जाति में मौजूद उसके लोग थक जाते तो वो आराम करने आते और ये बाहर जाकर उनकी जगह ले लेते।

किलोरा इस वक्त स्क्रीनों वाले कमरे में मौजूद था। पांच स्क्रीनें थीं सामने, सब रोशन थीं और पोपा के बाहर का हर तरफ का दृश्य उन पर नजर आ रहा था।

आज मौसम खराब था। बीती शाम तेज बरसात होती रही थी। जिसकी वजह से सर्दी भी बढ़ गई थी और आज दिन निकलने पर कोहरा ही हर तरफ दिखा था।

स्क्रीनों पर भी अधिकतर कोहरा ही दिख रहा था। ठहरा हुआ कोहरा। जो कि बेहद धीमी गति से जरा-जरा करके आगे सरक रहा था। सर्दी काफी बढ़ चुकी थी। तभी उसका साथी, एक गिलास में खोनम लिए भीतर आया।

"खोनम लो किलोरा।"

किलोरा ने मुस्कराकर खोनम का गिलास थामते हुए कहा।

"मैं खोनम की जरूरत महसूस कर रहा था। सब ठीक चल रहा है न?"

"सब ठीक है आज का मौसम खराब है, सर्दी और कोहरा बहुत बढ़ गया है।" वो बोला।

"हम्बस।" किलोरा ने खोनम का घूंट भर कर उसे देखा—"सदूर पर ऐसा मौसम नहीं होता।"

"हां। वहां बहुत कम सर्दी होती है। कोहरा तो शायद मैंने कभी नहीं देखा।"

"पृथ्वी ग्रह काफी अच्छा है।"

"अभी हमने पृथ्वी ग्रह देखा ही नहीं है। जब से आए हैं, यहीं पर रुके हुए हैं।"

"रानी ताशा। सोमारा, सोमाथ और हमारे तीन साथी पृथ्वी ग्रह की जगहों पर गए हैं। वो बताएंगे कि पृथ्वी कैसी है।"

"अब तो रानी ताशा वापस आ रही है। राजा देव उन्हें मिल गए हैं।" हम्बस ने मुस्कराकर कहा।

"हां। कितनी खुशी की बात है कि राजा देव मिल गए और वो सदूर पर जाने को तैयार हैं।" किलोरा भी मुस्कराया—"मैंने कभी राजा देव को नहीं देखा। बहुत इच्छा है उन्हें देखने की।"

"मैंने भी राजा देव को नहीं देखा है। उनके आ पहुंचने का मुझे बेसब्री से इंतजार है।"

"वो सब यहां से कुछ दूर टाकलिंग ला पहुंच चुके हैं। वहां से आने में तीन-चार दिन का वक्त लगता है।" किलोरा ने खोनम का घूंट भरते हुए कहा—"उनके साथ राजा देव के साथी भी हैं।"

"साथी?"

"हां, जो पृथ्वी पर उनके साथी हैं। उनके बारे में मुझे ज्यादा नहीं पता। रानी ताशा ने इतना ही कहा था।"

"क्या राजा देव के साथी भी हमारे साथ सदूर पर जाएंगे?"

"मुझे पता नहीं।"

"और बबूसा?"

"वो भी आ रहा है।"

"रानी ताशा ने बबूसा को विद्रोह की सजा नहीं दी क्या?"

कुछ चुप रहकर किलोरा बोला।

"रानी ताशा ने बबूसा के साथ आने की बात मुझसे कही थी। उसे सजा क्यों नहीं दी, मैं नहीं जानता। रानी ताशा ने मुझे ये भी कहा था कि राजा देव को सदूर ग्रह के जन्म की बातें याद आ गई हैं। ऐसे में राजा देव को बबूसा भी याद आया होगा और बबूसा तब राजा देव का सबसे खास व्यक्ति होता था। ऐसे में राजा देव उसे कोई तकलीफ नहीं होने देंगे।"

"तुमने सही कहा।" हम्बस ने सिर हिलाया—"राजा देव ने बबूसा को सजा से बचा लिया होगा।"

"मुझे खुशी है कि अब हम वापस सदूर पर जाएंगे। रानी ताशा अब यहां रुकना नहीं चाहेंगी।" किलोरा बोला।

"तो डोबू जाति का क्या होगा?"

"रानी ताशा का कहना है कि डोबू जाति का ये ठिकाना, हमारे लिए सुरक्षित जगह है कि हम सदूर से आकर यहां टिक सकें और पोपा भी किसी की निगाह में नहीं आता, पहाड़ों के भीतर छिप जाता है। हम पोपा पर पृथ्वी पर आया करेंगे और डोबू जाति के ठिकाने को इस्तेमाल करते रहेंगे। शायद यहां हमें कुछ आदमियों को छोड़कर जाना पड़े।"

"मैं तो वापस सदूर पर जाऊंगा।" हम्बस ने कहा।

"ये फैसला तो रानी ताशा ही करेगी कि यहां कौन रहेगा। मेरे खयाल में रानी ताशा तुम्हें यहां रहने को जरूर कहेगी।"

"मुझे क्यों?"

"क्योंकि तुम जिम्मेवार इंसान हो और यहां सब कुछ संभाले रख सकते...।"

"वो देखो।" हम्बस के होंठों से निकला—"बीच वाली स्क्रीन पर।"

किलोरा की निगाह घूमी और बीच वाली स्क्रीन पर टिक गई।

"वहां मुझे बाहरी लोग दिखे हैं।" हम्बस ने कहा।

"बाहरी लोग?"

"मुझे दिखे हैं, उसके साथ ही कोहरा सामने आ...वो रहे।"

बीच वाली स्क्रीन पर कोहरे के भीतर से पुनीत और संदीप निकलते दिखे, जो कि रुक गए थे। फिर देखते-ही-देखते राजीव और मोनी उनके पास आ पहुंचे थे। वो बातें कर रहे थे।

"ये तो बाहरी लोग हैं।" किलोरा के माथे पर बल पड़े—"यहां कैसे आ गए?"

"इनकी संख्या चार है या ये ज्यादा हैं।" हम्बल ने तेज स्वर में कहा।

"देखते रहो।" कहने के साथ ही किलोरा ने एक यंत्र उठाया और पहाड़

के भीतर बिजली की तारों वाले कमरे से अगोमा से सम्पर्क बनाया—तुरंत ही बात हो गई। उधर से अगोमा का स्वर आया।

"कौन बात कर रहा है?"

"अगोमा, मैं किलोरा बोला रहा हूं। मैं चार ऐसे लोगों को देख रहा हूं जो कि हम में से नहीं है।"

"ओह।" अगोमा की आवाज आई।

"कौन हैं ये?"

"ये लोग घूमने-फिरने वाले होंगे। बर्फ पर घूमने आते हैं। कभी-कभार कोई इस तरफ भी आ जाता है।"

"तो ऐसे लोगों का क्या किया जाता है?"

"मार देते हैं ऐसे लोगों को।"

"इन्हें मार देना ही ठीक होगा।" किलोरा का स्वर कठोर हो गया—"इन्होंने हमारा पोपा देख लिया है। ये पृथ्वी के लोगों को पोपा के बारे में बता देंगे तो पृथ्वी के लोग यहां आ पहुंचेंगे। इन्हें मार दो अगोमा।"

"हमारे हथियार तो कमरे में बंद कर रखे हैं।"

किलोरा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे फिर कहा।

"ठीक है। इन लोगों को हम मार देते हैं।" किलोरा ने सम्पर्क खत्म किया और हम्बस से बोला—"तुम जोबिना लेकर जाओ और इन सब को खत्म कर दो। साथ में दो और लोगों को ले लेना।"

"वो आगे बढ़कर फिर रुक गए हैं। ये पोपा के पीछे की तरफ है और हाथ लगाकर पोपा को देख रहे हैं।" हम्बस ने गम्भीर स्वर में कहा—"मेरे खयाल में समझने की चेष्टा कर रहे होंगे कि ये क्या चीज है।"

"उन्हें खत्म करो हम्बस।" किलोरा ने सख्त स्वर में कहा।

"अगर पूछताछ करनी हो तो पकड़ लेता हूं।" हम्बस बोला।

"कोई पूछताछ नहीं करनी। ये यहां से निकल गए तो हमारे लिए खतरा बन सकते हैं। मार दो इन्हें।"

हम्बस तुरंत बाहर निकल गया।

किलोरा की निगाह पुनः स्क्रीन पर जा टिकी। वो गम्भीर नजर आ रहा था।

बाहरी लोगों का यहां आना खतरनाक था। ये वापस जाकर लोगों को पोपा की मौजूदगी के बारे में बता सकते थे। तब पोपा को देखने के लिए पृथ्वी के लोगों का यहां आना शुरू हो जाएगा, जो कि उनके लिए ठीक नहीं होगा। किलोरा ने खोनम का घूंट भरा। नजरें चारों पर टिकी थीं।

"तुम ठीक कहते हो। ये हवाई जहाज नहीं है। कुछ और ही है।" पुनीत कह उठा।

संदीप ने पलटकर मोनी से पूछा।

"ये क्या है?"

"मुझे—क्या पता।" मोनी के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"क्या ये तुमने पहले कभी नहीं देखा?"

"नहीं। मैं तो खुद हैरान हूं कि ये क्या चीज है इतनी बड़ी सी...।" मोनी ने कहा।

"हमें पता करना होगा ये क्या है।" पुनीत बोला।

"उधर कोई है।" मोनी बोली—"मैंने कोहरे में किसी की टांगों को देखा था।"

"उस तरफ चलते हैं।" संदीप कह उठा।

"पर वहां हमें खतरा भी हो सकता है। जाने कौन लोग हैं यहां।" राजीव ने कहा।

पुनीत ने मोनी से कहा।

"तुम यहां डोबू जाति के होने के बारे में बता रही थी?"

"अंदाजा है मेरा। मैंने सुन रखा है कि यहां, इन्हीं बर्फ के पहाड़ों में कहीं पर डोबू जाति रहती है। परंतु यहां डोबू जाति के लोग नहीं हो सकते। ये चीज डोबू जाति के पास नहीं हो सकती। वो तो कहीं, पहाड़ों के भीतर रहते हैं—सुना है।"

"आओ।" पुनीत ने कहा और दोनों हाथों में दबे स्की पोल को बर्फ पर, मारते स्की के सहारे फिसलता आगे बढ़ा।

बाकी सब भी उसके साथ हो गए।

चंद पलों में ही वो आगे जा पहुंचे और ठिठक गए।

चारों के चेहरों पर हैरानी आ ठहरी।

सामने डोबू जाति के कई लोग आते-जाते दिखाई दे रहे थे। वो भी इन्हें देखकर थम से गए थे। पोपा अब और भी स्पष्ट हो चुका था। उसकी बनावट उनके सामने थी।

"ये तो कोई उड़ने वाली चीज लगती है।" पुनीत के होंठों से निकला।

"उड़ने वाली?" राजीव बोला—"पर ये प्लेन नहीं है। बर्फ पर प्लेन का क्या काम?"

"बाई गॉड।" संदीप आंखें फैलाए बोला—"ये तो बहुत बड़ी है—मोनी, देखा तुमने।"

"मैं तो हैरान हो रही हूं ये सब देखकर।" मोनी कह उठी।
तभी पुनीत ने चिल्लाकर कुछ दूर खड़े डोबू जाति के लोगों से कहा।
"यहां आओ—मेरे पास।"
वो लोग वहीं खड़े रहे। कुछ कहा भी नहीं।
"हमें इनके पास जाना होगा।" कहते हुए पुनीत ने आगे बढ़ना चाहा कि तभी पहाड़ के भीतर से अगोमा बाहर आ पहुंचा।
"ये तो डोबू जाति ही है।" मोनी के होंठों से निकला—"ये पहाड़ों के भीतर रहते हैं।"
अगोमा को उन्होंने अपनी तरफ बढ़ते पाया। अगोमा ने इतनी सर्दी में भी कमीज-पैंट पहन रखी थी और पांवों में पुरानी-सी हवाई चप्पल थी। वो बर्फ पर चलता उनके करीब आ पहुंचा।
"कौन हो तुम लोग?" अगोमा ने सख्त स्वर में पूछा।
"मैं इंस्पेक्टर पुनीत हूं।" पुनीत ने कहा—"तुम लोग डोबू जाति वाले हो?"
"हां, परंतु...।"
"ये क्या है?" पुनीत ने पास खड़े पोपा (अंतरिक्ष यान) की तरफ देखा।
"ये पोपा है।" अगोमा ने कठोर स्वर में कहा—"हम लोग बाहरी लोगों का यहां आना पसंद नहीं करते और उन्हें मार देते हैं। तुम लोग अब बचोगे नहीं, मेरे लोगों के पास हथियार होते तो अब तक तुम लोग...।"
"बकवास मत करो। मैं पुलिस वाला हूं।"
तभी उन सबकी निगाह पोपा की तरफ उठ गई। उन्हें हैरानी का झटका लगा, क्योंकि उनके देखते-ही-देखते पोपा का हिस्सा खुला और सीढ़ी के रूप में नीचे आता, जमीन से आ टिका।
"ये क्या?" संदीप हक्का-बक्का कह उठा।
"ये आखिर है क्या चीज?"
"मेरे खयाल में ये आसमान से आने वाली कोई चीज है।" मोनी अजीब से स्वर में बोली।
"आसमान से आने वाली?" राजीव ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी—"तुम्हारा मतलब कि अंतरिक्ष यान? नहीं मैं नहीं मान सकता। कोई अंतरिक्ष यान कहां से आएगा और यहां क्यों उतरेगा?"
"अंदर से लोग बाहर आ रहे हैं।" संदीप के होंठों से निकला।
तभी हम्बस और दो अन्य लोग भीतर से निकलकर सीढ़ियों पर आ पहुंचे। तीनों के हाथों से जोबिना थमी थी। ये देखकर अगोमा उल्टे पांव ही पीछे को हटता चला गया। उन तीनों के जिस्म पर चमकीले वस्त्र नजर आ रहे थे।

"ये—ये लोग कौन हैं?"

"डोबू जाति के तो नहीं हैं।" मोनी जल्दी से बोली—"डोबू जाति के लोग तो इस जैसे होते हैं।"

"कहीं ये सच में अंतरिक्ष यान तो नहीं?" पुनीत कह उठा।

हम्बस और दोनों लोग सीढ़ियों से नीचे आ गए।

"इन्हें मार दें अगोमा?" हम्बस ने होंठ भींचकर पूछा।

"हां, नहीं तो ये पोपा के बारे में सबको बता देंगे। वैसे भी जो बाहरी लोग यहां आते हैं, हम उन्हें मार देते हैं।" अगोमा ने कहा।

उनकी बात चारों ने सुनी।

पुनीत उसी पल चिल्लाकर बोला।

"मैं पुलिस वाला हूं। तुम मुझे नहीं मार सकते। ये सब क्या है, यहां क्या हो रहा है?"

तभी हम्बस ने जोबिना वाला हाथ सीधा किया और 'टक' से बटन दबा दिया।

एक चमक-सी निकली और सीधे पुनीत की छाती से जा टकराई।

दो पल तो पुनीत स्थिर-सा खड़ा रह गया और अगले ही पल चीख उठा। दोनों हाथों में थमे स्की पोल दूर जा गिरे। उसने अपनी छाती पकड़ ली। अगले ही क्षण छाती पर काला-सा धब्बा प्रकट होने लगा। पुनीत को कोई दर्द नहीं हो रहा था। उसका सीना सूराख की भांति नजर आने लगा। फिर वो नीचे जा गिरा। देखते-ही-देखते उसका शरीर राख होने लगा।

संदीप, राजीव और मोनी फटी-फटी आंखों से ये नजारा देख रहे थे।

पुनीत का तड़पना-हिलना रुक चुका था। उसकी आंखें फट चुकी थीं। उसका शरीर राख होता जा रहा था और यहां तक कि जूतों में फंसी स्की भी राख हो गई। हड्डियां भी राख हो गईं। अब वहां मामूली-सी राख ही पड़ी दिखी। अगोमा उस राख को देखते सोच रहा था कि इन लोगों ने ओमारू और अन्य लोगों को भी इसी प्रकार राख किया था। उसके दिल में नफरत थी रानी ताशा और उसके लोगों के लिए।

"पुनीत...।" संदीप पागलों की तरह चीख उठा।

जहां पुनीत था अब वहां पर पड़ी थोड़ी-सी राख को सब देख रहे थे।

राजीव गुस्से से कांप उठा और हम्बस को देखकर चीखा।

"ये तुमने क्या किया।"

"दुश्मनों के साथ हम ये ही व्यवहार करते हैं।" हम्बस दांत भींचे, सख्त स्वर में बोला।

"हम—हम दुश्मन नहीं हैं, हम तो...।"

"यहां आने वाले बाहरी लोग हमारे दुश्मन ही हैं।" कहने के साथ ही हम्बस ने हाथ ऊपर उठाया जोबिना वाला।

"नहीं।" संदीप चीखा।

उसी पल हम्बस के हाथ में थमी जोबिना से चमक निकली और राजीव के शरीर से जा टकराई।

राजीव खौफ से चीख उठा।

"मोनी।" संदीप फौरन पलटता हुआ चीखा—"भागो।"

मोनी तो पहले ही दहशत में डूब चुकी थी। वो तेजी से पलटी और बदहवासों की तरह स्की पोल बर्फ की जमीन पर मारती, स्की के सहारे फिसलती चली गई।

संदीप भी तब तक तेजी से आगे बढ़ चुका था।

हम्बस और उसके दोनों साथियों ने जोबिना से निशाना लिया उनका।

परंतु किस्मत उनके साथ थी और वो बच गए। तभी वो फैले कोहरे में गुम हो गए।

"वो बच गए हम्बस।" हम्बस के साथी ने कहा।

"हमें उनके पीछे जाना होगा।" हम्बस चीखा।

"लेकिन उन्होंने पांवों में कुछ पहन रखा है (स्की) वो बर्फ पर बहुत तेजी से गए हैं।

"उन्हें खत्म करना बहुत जरूरी है।"

राजीव नीचे गिर चुका था और उसका शरीर राख होता जा रहा था। वो मर चुका था।

तभी पोपा की सीढ़ियों पर किलोरा दिखा।

"तुम लोग उन्हें मार नहीं सके।" सीढ़ियां उतरते किलोरा ने नाराजगी से कहा।

"वो बच नहीं सकते किलोरा।"

"वे बर्फ पर तेजी से फिसलते गए हैं। उन्हें पकड़ना आसान नहीं।" फिर किलोरा ने अगोमा को देखा—"तुम कुछ करो अगोमा।"

"डोबू जाति के योद्धा उन्हें पकड़ सकते हैं। ढूंढ़ लेंगे। वो ज्यादा दूर नहीं जा सकेंगे।"

"तो जल्दी करो—सोच क्या रहे हो?"

"योद्धाओं को उनके हथियार चाहिए होंगे। हथियारों के बिना वो काम नहीं कर सकेंगे।" अगोमा ने कहा।

"चलो भीतर।" किलोरा पहाड़ के प्रवेश द्वार की तरफ बढ़ता कह उठा—"मैं तुम्हें हथियार दिलाता हूं।"

अगोमा उसके साथ चलता कह उठा।

"अगर मेरे योद्धाओं के पास हथियार होते तो अब तक वो जिंदा नहीं होते।"

"अपने योद्धाओं से कहना कि वो जिंदा न छोड़ें उन दोनों को। परंतु ये कैसे पता चलेगा कि वो किस तरफ गए हैं।"

"मेरे तीस योद्धा हथियारों के साथ बर्फ की हर दिशा में जाएंगे। उन्हें ढूंढ़ लेंगे।"

दोनों पहाड़ के भीतर प्रवेश कर चुके थे और भीतर के रास्तों पर तेजी से जा रहे थे। इन सब रास्तों और सारी जगहों को आप पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'बबूसा' में पढ़ चुके हैं।

"तीस लोग जाएंगे उनके पीछे, फिर तो तुम्हें ज्यादा हथियार चाहिए होंगे। ठीक है, परंतु वो तो बर्फ पर तेजी से फिसल रहे थे। कोहरा भी फैला हुआ है। ऐसे में तुम्हारे योद्धा उन्हें कैसे पकड़ेंगे।" किलोरा ने तेज-तेज कदम उठाते हुए कहा।

"वो जानते हैं कि उन्हें कैसे काम करना है।" अगोमा बोला—"योद्धा बर्फ पर भी ऐसे चलते हैं, जैसे सूखी जमीन पर हों। इन बातों के लिए वो बहुत अनुभवी हैं। उनके पास हथियार हों तो, फिर वो कभी हारते नहीं। काम पूरा करके लौटते हैं।"

▭ ▭

मोनी और संदीप के चेहरे जर्द पड़े हुए थे। दिल तेज रफ्तार से धड़क रहे थे। मौत आंखों के सामने नाच रही थी। वे बर्फ पर स्कीइंग करते रफ्तार से, आगे को जाते जा रहे थे। हर तरफ कोहरा फैला था। एक-एक पल में उन्हें इस बात की आशंका हो रही थी कि पीछे से वे लोग आएंगे और उस अजीब-से हथियार से उन्हें मार देंगे। पुनीत-राजीव के साथ जो हुआ था उस पर उन्हें यकीन नहीं आ रहा था। कैसे वे देखते ही देखते राख में बदल गए थे। हड्डियां तक नहीं दिखीं, वे भी राख हो गईं।

'हे भगवान।' संदीप दहशत से बड़बड़ा उठा—'ये क्या हो रहा है।'

कोहरे में रास्ता देखना कठिन हो रहा था। तब भी संदीप, तेजी से मोनी के आगे जा रहा था। मौत का डर सिर पर सवार था। पुनीत और राजीव का जो हाल हुआ था देखा था, उस पर उन्हें विश्वास ही नहीं आ रहा था। संदीप काफी आगे निकलकर कोहरे में गुम होने जा रहा था तो मोनी ने अपनी रफ्तार बढ़ाते, संदीप को आवाज लगाई।

"जल्दी आओ मोनी।" संदीप कुछ धीमा हुआ।

मोनी पास आ पहुंची। दोनों एक साथ आगे बढ़ने लगे।

"इतनी तेज स्कीइंग मत करो।" मोनी ने परेशान स्वर में कहा।
"वो लोग हमारे पीछे भी हो सकते...।"
"बेवकूफ। आगे धुंध है। रास्ता नजर नहीं आ रहा। किसी खाई में गिर जाओगे।" मोनी ने गुस्से से कहा।
बात संदीप की समझ में आई।
"अब वो हमें ढूंढ नहीं सकते।" मोनी ने कहा।
"क्यों?" संदीप ने सूखे स्वर में कहा।
"हर तरफ कोहरा फैला है। हम उन्हें नजर नहीं आ सकते।" मोनी बोली।
ये बात भी संदीप को जंची।
"मुझे विश्वास नहीं आ रहा मोनी।" संदीप भय भरे स्वर में बोला—"राजीव और पुनीत सच में जान गंवा बैठे हैं क्या?"
"तुमने उन्हें मरते हुए देखा है।"
संदीप की आंखें भर आईं।
"बहुत बुरा हुआ। मैं बेबी और सुधा को क्या जवाब दूंगा कि...।" संदीप का गला भर उठा।
"ये उनकी पत्नियां हैं?" मोनी ने पूछा।
"हां। कल तुमने दोनों को देखा तो था।"
"वो जाने क्या चीज थी जिसने उन्होंने दोनों को राख बना डाला।"
"बहुत खतरनाक हथियार होगा वो।"
"वो बड़ा-सा हवाई जहाज जैसा क्या था जिसमें से वो लोग निकल कर आए थे?"
"मैं कुछ भी नहीं समझ पाया।" संदीप भर्राए गले से बोला—"सब कुछ सपना लग रहा है जैसे पुनीत और राजीव अभी पास आ पहुंचेंगे। वो दोनों सच में मर गए मोनी?"
मोनी ने थके अंदाज में संदीप पर निगाह मारी।
मध्यम गति से वे दोनों कोहरे को चीरते बर्फ पर आगे बढ़े जा रहे थे।
"बोलो मोनी।" संदीप चीखा—"कहो कि वो दोनों जिंदा हैं—वो...।"
"अपने पर काबू रखो संदीप।" मोनी गम्भीर स्वर में बोली—"वो लोग हमें जरूर ढूंढ़ रहे होंगे।"
"वो डोबू जाति वाले थे?"
"मेरे खयाल में हां।"
"और वो बड़ा-सा हवाई जहाज जैसा, उसमें से निकलने वाले लोग कौन थे?"

"जितना तुम जानते हो, उतना ही मैं जानती हूं।" मोनी की आवाज में डर समाया हुआ था।

स्किंग करते-करते संदीप फफककर रो पड़ा।

मोनी के होंठ भिंच गए।

"तुम तो बहुत हिम्मत वाले हो।" मोनी बोली—"अभी हमने 'सूमा' तक वापस पहुंचना हैं। अपने को संभालो।"

"वो मेरे भाइयों की तरह थे।" संदीप रोते हुए बोला—"ये बात तुम नहीं समझ सकोगी।"

"तुम ये सोचो कि हम मौके पर भाग निकले और बच गए।" मोनी ने कहा—"उन दोनों की मौत को मैं भी सहन नहीं कर पा रही हूं। लेकिन इस वक्त हमें अपने बारे में सोचना है। शायद वो पीछे आ रहे हों।"

"हम रफ्तार से स्कीइंग करते...।"

"कोहरे की वजह से रास्ता साफ नहीं दिख रहा, ऐसा न हो कि हम किसी पहाड़ से नीचे गिर जाएं। खाई में...।"

"हम सूमा गांव की तरफ ही जा रहे हैं?" संदीप ने पूछा।

"मैं नहीं जानती।" मोनी ने पीछे निगाह मारते हुए कहा—"हम रास्ता भटक चुके हैं, पता नहीं किस दिशा में जा रहे हैं। अगर कोहरा नहीं होता तो हमें दिशा का, रास्ते का पता रहता। डोबू जाति से हम जब भागे तो पता नहीं किस तरफ को निकल आए हैं। बस ऐसे ही चलते रहो। इस तरह हम उन लोगों से अपने को बचा लेंगे।"

"ये सब क्या हो गया मोनी।" संदीप पुनः रो पड़ा।

"ऐसा मत करो संदीप। अभी हमने रास्ता भटकने की मुसीबतें झेलनी हैं। हम तो...।"

"पुनीत—ऽ-ऽ-ऽ...।" संदीप चीख उठा—"राजीव, तुम कहां हो?" इसके साथ ही उसका आगे बढ़ना रुक गया। वो दोनों हाथों से चेहरा ढांपे फफक-फफककर रो पड़ा।

मोनी रुकी और उसके करीब आ गई। संदीप का हाल देखकर उसकी आंखों में भी आंसू आ गए।

"संदीप।" मोनी ने उसकी बांह थामी।

"ये क्या हो गया मोनी। मुझे भरोसा नहीं होता कि राजीव और पुनीत मर गए हैं।" रोते हुए संदीप ने कहा।

"वो हमारी आंखों के सामने मरे हैं।" मोनी ने आंसुओं भरे स्वर में कहा—"मुझे बहुत दुख हो रहा है उनके मरने का।"

"गलती हमारी थी। हमें इतनी दूर बर्फ के पहाड़ों पर नहीं आना चाहिए

था।" संदीप ने आंसुओं भरा चेहरा उठाकर मोनी को देखा—"तुमने हमें रोका भी था, परंतु हमने तुम्हारी बात नहीं मानी। अब मैं सुधा और बेबी से क्या कहूंगा कि राजीव और पुनीत को क्या हो गया। मैं उनका सामना कैसे कर पाऊंगा। उन दोनों की मौत के बारे में सुनकर जाने वो क्या कर बैठें। भगवान तूने मुझे कैसी हालत में पहुंचा दिया। मैं जीवन भर राजीव-पुनीत की याद में तड़पता रहूंगा। मैं...।"

"संदीप होश में आओ।" मोनी ने रोते हुए, उसकी बांह पकड़कर जोरों से हिलाया—"अभी हमें 'सूमा' तक जाना है।"

संदीप का चेहरा आंसुओं से पूरी तरह भीग चुका था। वो बच्चों की तरह रो रहा था। हड्डियों को कंपा देने वाली सर्दी थी परंतु उन्हें इस सर्दी का एहसास ही न हो रहा था।

"अपने को संभालो।" मोनी ने भर्राए स्वर में कहा।

संदीप ने बांह से आंसुओं भरा चेहरा साफ करने की कोशिश की।

"हमें आगे बढ़ना चाहिए। यहां रुकना ठीक नहीं। वो लोग हमें ढूंढ़ते यहां भी आ सकते हैं।" मोनी ने बेचैनी से कहा।

"लेकिन वो हमें मारना क्यों चाहते हैं? हमने उनका क्या बिगाड़ा जो उन्होंने राजीव, पुनीत को मार डाला।"

"यहां से चलो।" मोनी पीछे कोहरे में देखती कह उठी—"वक्त बरबाद मत करो।"

संदीप ने भारी मन से पुनः स्कीइंग शुरू कर दी।

दोनों आगे बढ़ने लगे।

"अगर तुम इस तरह हिम्मत छोड़ दोगे तो मेरा क्या होगा।" मोनी बोली—"तुम्हें तो मुझे हौसला देना चाहिए कि...।"

"मैं थक गया हूं मोनी।" संदीप की आवाज में तड़प थी—"राजीव और पुनीत के बिना मैं खुद को...।"

"वो मर गए हैं। हम भी खतरे में हैं। वो खतरनाक लोग हैं कि किस आसानी से उन्होंने, उन दोनों को मार दिया।"

संदीप ने होंठ भींच लिए स्कीइंग करता वो मोनी के साथ आगे बढ़ा जा रहा था। रह-रहकर उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। सर्द हवाओं ने उसकी नाक लाल कर रखी थी। परंतु उसे किसी बात की होश नहीं थी। खयालों में सिर्फ राजीव-पुनीत, बेबी और सुधा ही नाच रहे थे। कैसा अनर्थ हो गया है। ये ही सोचे जा रहा था।

जबकि मोनी भय में घिरी रास्तों को पहचानने-समझने का यत्न कर रही थी। कोहरे ने दुश्मनों से उन्हें बचा रखा था तो वो उनका रास्ता भटकाने

में भी सहायक हो रहा था। मोनी की निगाह दूर-दूर तक नहीं जा सकती थी कोहरे के कारण और वो रास्ता नहीं समझ सकती थी। संदीप अपने पर काबू रखे हुए था। वो जानता था कि अगर उसने हिम्मत छोड़ दी तो वो 'सूमा' तक कैसे पहुंचेंगे? कहीं उन हत्यारों से उनका सामना फिर न हो जाए। उनका खयाल आते ही जिस्म में मौत से भरी सिहरन दौड़ जाती थी। जाने वो कैसा हथियार था जिससे उन्होंने पुनीत और राजीव की जान ली थी। ऐसा हथियार तो कभी सुना भी नहीं था।

मोनी ने कलाई पर बंधी घड़ी में वक्त देखा।

दोपहर का डेढ़ बज रहा था।

"संदीप।" मोनी ने कहा।

"हां।" संदीप ने भर्राए स्वर में कहा।

"तुम भी रास्तों को पहचानने की कोशिश करो।" मोनी बोली।

"मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा। मैं अपने होश में नहीं हूं।" संदीप की आंखों से पुनः आंसू बह निकले।

मोनी उसकी हालत पर रुक गई।

संदीप भी रुका। पास आकर मोनी उससे सट गई।

"मेरे प्यारे संदीप।" मोनी की आंखों में आंसू चमके—"तुम्हें मेरे लिए अपने को संभाले रखना होगा।"

"मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा।" संदीप ने आंसुओं भरे चेहरे से मोनी को अलग कर दिया।

"जब तक हम सूमा गांव तक नहीं पहुंच जाते, तब तक तो अपने को संभाले रहो।"

"संभाला हुआ है।" संदीप ने अनमने मन से कहा।

दोनों पुनः आगे बढ़ने लगे।

मोनी की निगाह हर पल रास्तों को पहचानने के प्रयत्न में लगी थी।

वक्त आगे सरका दोपहर के तीन बज गए। वे आगे बढ़ते ही जा रहे थे। मोनी के चेहरे पर चिंता दिखने लगी। परंतु एकाएक ही तेज हवाओं ने चलना शुरू कर दिया था। वहां फैला-ठहरा कोहरा, हवा के संग खिसकने लगा। धीरे-धीरे हवाओं में तेजी आने लगी। कोहरा बिखरकर गायब होने लगा।

अगले आधे घंटे में कोहरा काफी हद तक साफ हो गया। वहां से दूर-दूर के पहाड़ स्पष्ट दिखने लगे। मोनी काफी दूर दिखाई दे रहे, एक पहाड़ की नुकीली चोटी को देखकर खुशी से चीख उठी।

"संदीप। हमें रास्ता मिल गया। रास्ता मिल गया।"

"कहां?"

"वो देखो, नुकीली चोटी वाला पहाड़। आते समय हम उस पहाड़ के करीब से निकले थे। चलो हमें उस पहाड़ तक पहुंचना होगा। वहीं से मैं सही रास्ते को पकड़ सकूंगी। आते समय हम एक-डेढ़ घंटे बाद उस पहाड़ तक पहुंचे थे।" मोनी बहुत खुश हो रही थी—"इसका मतलब हम अंधेरा होने से पहले ही सूमा तक पहुंच जाएंगे—आओ।"

दोनों बीस मिनट की स्कीइंग करके, नुकीली चोटी वाले पहाड़ के नीचे पहुंचे और वहां से मोनी ने फौरन रास्ता पहचान लिया। उसने बताया कि सूमा गांव उस तरफ है। उधर चलना है। संदीप को कुछ समझ नहीं आ रहा था परंतु वो मोनी के संग चल पड़ा। दोनों तेजी से स्किंग करने लगे। संदीप के जेहन में पुनीत और राजीव घूम रहे थे। जब आए थे तो वो दोनों भी साथ थे, लेकिन अब उनके साथ नहीं थे। इस बात का खालीपन उसे झिंझोड़ रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे शरीर में जान ही न बची हो। बार-बार रोने का दिल कर रहा था। रह-रहकर आंखों से आंसू निकल रहे थे। उसके साथ वो ही मोनी थी जो उसे बहुत अच्छी लग रही थी परंतु अब मोनी उसके दिलोदिमाग से निकल चुकी थी। मन अच्छा हो तो सब कुछ अच्छा लगता है। मन खराब हो तो अच्छी चीज भी बुरी लगती है। ये ही हाल संदीप का था। वह जैसे बेजान-सा स्कीइंग कर रहा हो। सोचों में ऐसा खोया था कि दो-तीन बार वो मोनी से काफी पीछे रह गया था। एक बार तो मोनी को संदीप के लिए वापस आना पड़ा था।

"हम आधे-पौने घंटे में सूमा पहुंच जाएंगे संदीप।" मोनी राहत भरे स्वर में कह उठी।

"आधे-पौने घंटे में?" संदीप बड़बड़ाया—'तो मैं बेबी और सुधा से क्या कहूंगा। राजीव और पुनीत कहां हैं। वो दोनों तो मेरे साथ गए थे। बेबी और सुधा भी तो ये ही कहेंगी कि वो तुम्हारे साथ गए थे तो तुम्हारे साथ क्यों नहीं लौटे?' संदीप का सुधा और बेबी के साथ जोगना का चेहरा भी दिखा, तीनों रो रही थीं, तड़प रही थीं।

संदीप उसी पल बर्फ में बढ़ता रुक गया।

मोनी ने उसे रुकते देखा तो तुरंत उसके करीब पहुंची।

"मैं सब समझ रही हूं।" मोनी ने दुख भरे गम्भीर स्वर में कहा—"तुम राजीव-पुनीत की पत्नियों का सामना करने में घबरा रहे हो। सच में किसी की मौत की खबर देनी हो तो बुरा हाल हो जाता है। ऐसे वक्त में खुद को अकेले मत समझो। मैं तुम्हारे साथ हूं।"

"वो दोनों मेरे भाइयों से भी बढ़कर थे।" संदीप की आंखों से आंसू निकल गए।

"मालूम है मुझे। मैंने तुम तीनों को एक साथ देखा है।" मोनी की आंखें भर आई—"हिम्मत से काम लो। चलो, आने वाले वक्त का सामना तो करना ही है। जो हुआ वो हमें हिला देने के लिए काफी था। मैं उस दृश्य को कभी नहीं भूल सकूंगी कि कैसे वो मिनट भर में राख में बदल गए। परंतु हम वहां से जिंदा लौट आए, क्या ये कम है। इस सच्चाई को हम दोनों ही समझ सकते हैं।"

संदीप ने गीली आंखों को साफ किया।

"हिम्मत रखो।" मोनी ने गम्भीर भाव में उसका हाथ थपथपाया—"खबर देते वक्त मैं तुम्हारे साथ रहूंगी।"

दोनों फिर आगे बढ़ने लगे। संदीप का मन भारी हो रहा था। उसका मन सूमा तक जाने का नहीं कर रहा था। बेबी, सुधा और जोगना के चेहरे दिखाई दे रहे थे। कहां वो मौज-मस्ती के लिए आए थे और जान गंवा दी। आधा घंटा और बीत गया तो मोनी ने ऊंचे स्वर में कहा।

"हम सूमा के करीब आ पहुंचे हैं संदीप।" मोनी के चेहरे पर गम्भीरता थी।

संदीप ने सामने बर्फ के पहाड़ को निहारा।

"इस पहाड़ के पार होते ही सामने सूमा गांव और होटल दिखने लगेगा।" मोनी ने पुनः कहा।

संदीप कुछ न बोला।

दोनों स्कीइंग करते आगे बढ़ते जा रहे थे। पंद्रह मिनट में उस पहाड़ की साइड से वे निकले कि सामने काफी दूरी पर सूमा गांव और वो होटल दिखने लगा।

"हम पहुंच गए।" मोनी के चेहरे पर भीगी मुस्कान उभरी—"उन लोगों से हमने अपनी जान बचा ली।"

संदीप वहीं ठिठककर दूर दिखाई दे रहे होटल को देखने लगा। पुनीत और राजीव साथ में होते तो इस समय सब खुशी से चीख रहे होते कि वे वापस आ गए। परंतु अब संदीप को वापस लौटना भी भारी पड़ रहा था।

मोनी उसके पास आकर रुकी।

दोनों ने एक दूसरे को देखा।

'शूं' करता हवा में कुछ आया, जिसकी रफ्तार बहुत तेज थी। जिसे देख पाना आसान नहीं था। संदीप मोनी को देख रहा था कि एकाएक उसने उसका चेहरा उड़कर चार फुट दूर गिरते देखा। वो नहीं समझ पाया कि क्या हुआ है। मोनी का शरीर उसके सामने खड़ा था, परंतु चेहरा तीन कदमों के फासले पर जा गिरा था। दो पल बीते कि उसकी आंखें फैलने लगीं। अब उसकी समझ में आया कि मोनी की गर्दन कट चुकी है। ये—ये कैसे हुआ?

तभी उसने मोनी के शरीर को नीचे गिरते देखा।

संदीप स्तब्ध रह गया। आंखें फैलकर चौड़ी होती गईं। उसी पल उसने कांपकर आसपास देखा तो पंद्रह कदम के फासले पर बर्फ में एक व्यक्ति खड़ा देखा। उसे देखते ही संदीप के जिस्म में सिरहन दौड़ती चली गई। वो डोबू जाति के लोगों जैसा लग रहा था। उसके हाथ में लोहे की कुछ भारी चौकोर पत्ती थी और उसके देखते ही देखते उसने लोहे की पत्ती वाला हाथ ऊपर किया और एक खास अंदाज में हाथ को झटका दिया।

पत्ती उसके हाथ से निकलकर, घूमती हुई न दिखाई देने वाले अंदाज में संदीप की तरफ लपकी। संदीप बुत की तरह खड़ा रहा। कुछ समझ नहीं सका। एकाएक उसके कानों में 'शूं' की आवाज पड़ी और अगले ही पल उसकी गर्दन कटकर दूर जा गिरी।

▭ ▭

तीन-चार दिन के लम्बे सफर के बाद वे सब डोबू जाति के ठिकाने पर आ पहुंचे। उस वक्त दोपहर के बारह बज रहे थे जब वे वहां पहुंचे। पोपा (अंतरिक्ष यान) को देखकर, देवराज चौहान बच्चों की तरह खुश हो गया।

"ये ही पोपा था जो मैंने सदूर पर बनाया था। मुझे सब याद है ताशा। मैंने और जम्बरा ने कई लोगों के साथ मिलकर, साल भर से ज्यादा का वक्त लगाकर बनाया था। रातों को भी हम आराम नहीं करते थे। सबने बहुत मेहनत की थी पोपा बनाने में।"

"ये आपकी ही मेहनत का फल है देव।" ताशा, देवराज चौहान की बांह पकड़कर प्यार से कह उठी—"आपने अगर पोपा न बनाया होता तो मैं पृथ्वी ग्रह पर आकर आपको कैसे ढूंढ़ पाती।"

"पोपा को सामने देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।"

"क्यों न होगी राजा देव।" रानी ताशा मुस्कराकर बोली—"अब हम पोपा में बैठकर वापस सदूर जाएंगे।"

"हां ताशा। मैंने पोपा बनाया तो जरूर था परंतु उसकी सैर की हो, ये याद नहीं आ रहा।"

"सैर अब करेंगे देव। आओ हम पोपा में चलते हैं। पोपा को भीतर से देखकर पुरानी यादें ताजा कर लो देव।"

देवराज चौहान की नजरें पास के पहाड़ के भीतर जाते रास्ते पर गईं। वहां डोबू जाति के कई लोग खड़े उन्हें ही देख रहे थे। रानी ताशा के कुछ लोगों ने उन्हें देखा तो पास आकर आदर भरे ढंग से सिर झुकाया।

"ये हमारे ही साथी हैं देव। सदूर से आए हैं।"

देवराज चौहान ने उन्हें देखकर सिर हिलाया।

"ये राजा देव हैं। सदूर के राजा। हम इनके लिए ही पृथ्वी ग्रह पर आए थे।" रानी ताशा ने उनसे कहा।

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई राजा देव।"

"आपके बारे में बहुत सुना।" दूसरे ने कहा—"परंतु देखने का सौभाग्य अब प्राप्त हुआ है।"

"अब राजा देव हमारे साथ ही रहेंगे।" रानी ताशा बोली—"हमारे साथ ही सदूर पर चलेंगे।"

"हमारे लिए इससे बड़ी खुशी क्या होगी।"

"किलोरा कहां है?"

"पोपा के भीतर।"

"किलोरा कौन है?" देवराज चौहान ने रानी ताशा से पूछा।

"पोपा को और अन्य कामों को संभालने वाला, मेरे मुख्य कर्मचारी का नाम किलोरा है।" फिर रानी ताशा ने सामने खड़े अपने दोनों साथियों से कहा—"पोपा का दरवाजा खुलवाओ। हम भीतर जाएंगे। लम्बे सफर से थक चुके हैं।" इसके बाद रानी ताशा ने गर्दन घुमाकर बाकी सब पर निगाह मारी।

जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी और धरा हैरानी से पोपा को देख रहे थे। वो हैरान थे ये सोचकर कि उनके सामने अंतरिक्ष यान खड़ा है। धरा इस वक्त बिल्कुल सामान्य दिख रही थी।

सोमाथ एक तरफ शांत खड़ा था।

बबूसा और सोमारा पास-पास खड़े थे।

"तुम लोग डोबू जाति के ठिकाने पर, पहाड़ों के भीतर रहोगे।" रानी ताशा ने सबसे कहा।

"यहां से सदूर की तरफ चलना कब है रानी ताशा?" सोमाथ ने पूछा।

"जल्दी ही। लेकिन इस वक्त हम आराम करना चाहते हैं।" रानी ताशा मुस्कराई—"क्यों देव?"

"हां।" देवराज चौहान ने प्यार भरी निगाहों से रानी ताशा को देखा—"हम एकांत में लम्बे पल बिताएंगे।"

"रानी ताशा।" सोमाथ सामान्य स्वर में बोला—"मुझे बबूसा पर भरोसा नहीं।"

"क्या कहना चाहते हो सोमाथ?"

"मुझे शक है कि बबूसा हमारे खिलाफ कुछ करने की सोच रहा है।" सोमाथ बोला।

रानी ताशा ने बबूसा को देखा।

बबूसा मुस्करा पड़ा, परंतु सोमारा तीखे स्वर में बोली।

"सोमाथ के विचार बहुत ही गलत हैं। बबूसा के मन में ऐसा कुछ भी नहीं है।"

"सही कह रही हो सोमारा?" रानी ताशा बोली।

"हां। क्या सोमारा पर भरोसा नहीं?"

"भरोसा है।" रानी ताशा ने सिर हिलाते, सोमाथ से कहा—"सब ठीक है सोमाथ।"

"पर मुझे ठीक नहीं लग रहा।" सोमाथ बोला।

रानी ताशा, सोमाथ को देखने लगी।

"अभी मैं बबूसा पर नजर नहीं रख सकता। पोपा में जाकर मैंने अपनी बैटरी को आराम देना है।" सोमाथ ने कहा।

"बबूसा कुछ नहीं करेगा। सोमारा ने मुझे इस बात का विश्वास दिलाया है।" रानी ताशा ने कहा—"तुम हमारे साथ पोपा में चलो। यहां सब ठीक है। सोमारा मुझसे गलत बात नहीं कहेगी।"

"सोमारा, बबूसा का साथ देने को तैयार है। ये बात मैंने सोमारा के हाव-भाव से पहचानी है।"

"सोमाथ।" बबूसा मुस्कराकर बोला—"तुम्हें मेरा दोस्त बन जाना चाहिए।"

"हम कभी भी दोस्त नहीं बन सकते बबूसा। क्योंकि मैं रानी ताशा के पक्ष में काम करता हूं और तुम राजा देव के। हमारे विचारों में जमीन-आसमान का अंतर है। मैं तुम्हारे इरादों को भांपने की कोशिश कर रहा हूं।"

"बेशक राजा देव मेरे लिए पहले हैं और रानी ताशा बाद में, परंतु रानी ताशा की भी मुझे चिंता रहती है।"

"उतनी ही चिंता, जितनी कि मुझे है?" सोमाथ बोला।

"ये बात मैं तुमसे भी कह सकता हूं कि क्या तुम रानी ताशा के बराबर, राजा देव की चिंता करते हो?"

"नहीं।"

"ये ही बात मेरे साथ है कि राजा देव मेरे लिए पहले हैं।"

"परंतु मेरा ये कहना सत्य है कि तुम खामोश नहीं बैठोगे। तुम्हारा कुछ करने का इरादा है।"

सोमारा ने रानी ताशा से नाराजगी से कहा।

"सोमाथ को चुप रहने को कहो ताशा।"

"तुम मेरे साथ पोपा के भीतर चलो सोमाथ। हम वहां बात करेंगे।"

सोमाथ चुप रहा।

"रानी ताशा। मैं भी तो पोपा के भीतर आ सकता हूं।"

"अभी नहीं। अभी तुम डोबू जाति के साथ रहो। जब सदूर के लिए चलेंगे तो तब तुम आना।"

"जो हुक्म। परंतु मैं राजा देव से जानना चाहता हूं कि पोपा के भीतर आने का मुझे हक है या नहीं?"

"पूरा हक है बबूसा।" देवराज चौहान ने कहा—"तुम जब भी चाहो पोपा में आ जाना। कोई तुम्हें रोकेगा नहीं।"

"ओह देव। आपके आगे तो मेरा हुक्म बेकार हो जाता है।" रानी ताशा मुंह फुलाकर बोली।

"अब सब कुछ मेरे हवाले कर दो ताशा। तुम्हें किसी भी तरह का कष्ट उठाने की जरूरत नहीं है।" देवराज चौहान प्यार से कह उठा—"मेरे बिना, तुमने सदूर को अच्छे तरीके से संभाला होगा, लेकिन अब मेरे काम, मुझे करने दो।"

तभी पोपा का दरवाजा खुला और सीढ़ियां नीचे को खुलतीं, जमीन पर आ टिकीं। दरवाजे पर मुस्कराता हुआ किलोरा दिखा जो कि ऊंचे स्वर में कह उठा।

"रानी ताशा और राजा देव का पोपा में स्वागत है।"

"वो किलोरा है, जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था देव।" रानी ताशा कह उठी।

देवराज चौहान ने किलोरा को देखकर हाथ हिलाया।

किलोरा वहीं खड़ा, थोड़ा-सा झुका।

"आओ देव, हम पोपा में चलते हैं।"

रानी ताशा और देवराज चौहान सीढ़ियां चढ़ने लगे।

धरा की आंखों में एकाएक चमक उभरी। उसका नीचे का होंठ खास अंदाज में टेढ़ा हुआ। नजरें पोपा के प्रवेश द्वार पर थीं। अगले ही पल वो सामान्य दिखने लगी और धीमे से बड़बड़ा उठी।

'हौसला रख खुंबरी। तू भी पोपा में बैठेगी। सदूर पर वापस जाएगी, एक बार फिर वहां तेरा साम्राज्य फैलेगा। पांच सौ साल पूरे होने वाले हैं। उसके बाद तेरी ताकतें फिर से जिंदा हो जाएंगी। तेरी मेहनत सफल होगी, जो तू सदूर पर वापस जाने के लिए कर रही है।'

सोमाथ की निगाह, बबूसा पर गई।

बबूसा, सोमाथ को ही देख रहा था और नजरें मिलते ही मुस्करा पड़ा।

सोमाथ के चेहरे पर शांत भाव थे। बबूसा, सोमाथ के पास पहुंच गया।

"तेरा शक सही है सोमाथ कि मैं कुछ करने की सोच रहा हूं।" बबूसा मुस्करा रहा था।

"मेरे हाथों मरेगा तू।"

"राजा देव मेरे साथ हैं। तू मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता अब।"

"इस भूल में मत रहना। रानी ताशा के लिए तो मैं राजा देव को भी मार सकता हूं।" सोमाथ बोला।

"तेरे ये शब्द रानी ताशा को पसंद नहीं आएंगे। देखा ही है तूने कि वो राजा देव को कितना प्यार करती है।"

"मेरे होते तू अपने इरादों में सफल नहीं हो सकेगा।" सोमाथ ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा।

"मेरा इरादा क्या है—पता है तुझे?"

"नहीं जानता।"

"मैं तुझे खत्म कर देना चाहता हूं।"

सोमाथ पहली बार मुस्कराया।

"अगर तेरा ये इरादा है तो फिर मुझे कोई चिंता नहीं।" सोमाथ कह उठा।

"वो ही तो मैं कह रहा हूं कि चिंता की कोई बात नहीं है, क्योंकि मैं तुझे खत्म नहीं कर सकूंगा।"

"तू जल्दी मेरे हाथों से मरेगा।" सोमाथ ने कहा और पोपा में जाने के लिए सीढ़ियां चढ़ गया।

बबूसा उसे देखता रहा फिर बड़बड़ा उठा।

"बबूसा ने कभी हारना नहीं सीखा सोमाथ। मुझे अपना काम पूरा करना आता है।"

सोमारा पास आते कह उठी।

"क्या बातें हो रही थीं?"

"मैंने सोमाथ से कहा कि मैं उसे खत्म करने की सोच रहा हूं।" बबूसा ने सोमारा को देखा।

"ये कहकर तूने सोमाथ को सतर्क कर...।"

"बल्कि वो निश्चिंत हो गया होगा कि मैं उसे नहीं मार सकूंगा। परंतु इस जन्म में मेरी ताकत और मेरा दिमाग राजा देव जैसा है। महापंडित ने ये काम अच्छा किया मेरे साथ। सोमाथ को खत्म करने की कोई युक्ति सोचनी पड़ेगी। सोमाथ को मारे बिना मैं आगे कुछ नहीं कर सकूंगा। महापंडित को सोमाथ के निर्माण करने की सजा राजा देव से जरूर दिलवाऊंगा। महापंडित भी बेईमान होकर रानी ताशा के साथ मिला हुआ है, तभी तो अभी तक राजा देव को, रानी ताशा के दिए धोखे के बारे में याद नहीं आया।"

"भैया (महापंडित) की बात छोड़ो, यहां की सोचो। मुझे तो चिंता हो रही है।"

"किस बात की?"

"रानी ताशा अब सदूर पर जाने की तैयारी करेगी। एक बार हम सब पोपा में बैठ गए और पोपा चल पड़ा तो फिर कुछ नहीं हो सकेगा।"

बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता दिखने लगी।

"अपने बबूसा पर भरोसा रख सोमारा। कोई-न-कोई रास्ता जरूर दिखेगा हमें।"

"पोपा सबको लेकर उड़ गया तो?"

बबूसा ने सोमारा को देखा और फिर जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी की तरफ बढ़ गया।

"ये है डोबू जाति की जगह।" बबूसा पास पहुंचते हुए कह उठा।

"इन पहाड़ों के भीतर?" मोना चौधरी बोली।

"हां। ये पहाड़ भीतर से खोखले कर रखे हैं। एक-दूसरे के साथ जुड़े पहाड़ों की शृंखला दूर तक जा रही है। हम डोबू जाति वालों ने अपनी जरूरत के मुताबिक पहाड़ों को भीतर से खोखला करके रहने और कड़कती सर्दी से बचने की जगह बना ली। पहाड़ों को खोखला करने का काम जाने कब हुआ होगा, करने वालों का पूरा जीवन इस काम में लग गया होगा, परंतु ये सब मेरी आंखों के सामने नहीं हुआ। मैंने जब यहां होश संभाला तो ये जगह ऐसी ही देखी मैंने।" बबूसा ने कहा—"आओ तुम लोगों को ये सारी जगह दिखाता हूं। इस वक्त यहां रानी ताशा का कब्जा है। उसके आदमी ही डोबू जाति पर अधिकार पाए हुए हैं। परंतु अब मैंने रानी ताशा और राजा देव से बात कर ली है। वे यहां से जाते वक्त डोबू जाति को आजाद करते जाएंगे और मैंने अब डोबू जाति को समझना है कि वो किसी को अपना दोस्त न बनाएं। आओ यहां क्यों खड़े हों। भीतर चलो मेरे साथ। यहां तुम लोगों को कोई तकलीफ नहीं होगी।"

"बबूसा।" धरा घबराए से स्वर में कह उठी—"वे मुझे मार देंगे।"

"तुम नाहक ही डर रही हो धरा।" बबूसा कह उठा—"वो देखो।" बबूसा ने पहाड़ के भीतर जाने वाले रास्ते पर निगाह मारी—"डोबू जाति के कई लोग खड़े इधर ही देख रहे हैं। परंतु किसी ने तुम्हें कुछ नहीं कहा।"

धरा ने बबूसा की कलाई पकड़ते हुए कहा।

"मुझे डर लग रहा...।"

तभी सोमारा धरा का हाथ पीछे करती कह उठी।

"बबूसा को छू मत।"

लेकिन धरा का ध्यान, बबूसा पर था।

"मेरे होते तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा।" बबूसा ने समझाने वाले स्वर

ने कहा—"यहां पर रानी ताशा का अधिकार है और डोबू जाति के योद्धाओं के पास हथियार भी नहीं हैं। तुम बेखौफ होकर यहां रहोगी। डर लगे तो तब कहना। डोबू जाति वाले इस बात से बहुत खुश होंगे कि बबूसा लौट आया है। वो जानते हैं कि मैं तुम्हें बचाता रहा हूं। तुम यहां सुरक्षित हो।"

धरा ने भोलेपन से सिर हिला दिया।

"आओ, भीतर आकर डोबू जाति देखो।" बबूसा ने सब पर निगाह मारी।

"बबूसा।" जगमोहन गम्भीर स्वर में कह उठा—"तुम्हें जल्दी से कुछ करना होगा।"

उसी पल धरा ने मुंह फेर लिया और निचला होंठ टेढ़ा हुआ, चेहरे पर जहरीली मुस्कान नृत्य कर उठी। उसकी चमकती निगाह पोपा की सीढ़ियों पर जा टिकीं। तभी सीढ़ियां जमीन से उठीं और फोल्ड होती वापस दरवाजे के रूप में पोपा से जा सटीं और वहां के दरवाजे की जगह दिखनी बंद हो गई।

"जल्दी ही हम कुछ करेंगे।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"वक्त कम है बबूसा।" मोन चौधरी गम्भीर थी—"रानी ताशा अब कभी भी सदूर ग्रह की तरफ जाने को कह सकती है।"

"ये चिंता मुझे भी है।"

सोमारा भी पास आ पहुंची थी।

"तुम सोमाथ के होते कुछ नहीं कर सकते।" नगीना कह उठी।

"सही कहा। मैं हर पल सोमाथ के बारे में ही सोचता रहता हूं।" बबूसा ने सिर हिलाया—"परंतु इतनी जल्दी भी रानी ताशा वापस जाने वाली नहीं। मुझे डोबू जाति से मिल लेने दो।"

धरा शांत-सी खड़ी बातें सुन रही थी।

फिर वे सब पहाड़ के प्रवेश रास्ते की तरफ बढ़ गए। बबूसा सबसे आगे था। वो प्रवेश रास्ते पर खड़े डोबू जाति के लागों को देख रहा था। जमीन पर बर्फ की सफेदी बिखरी नजर आ रही थी। बहुत ठंडा मौसम था। जरा-जरा ठंडी हवा चल रही थी। आसमान में काले-सफेद बादलों के झुंड सरकते दिखाई दे रहे थे।

बबूसा सबको देखते पहाड़ के भीतर प्रवेश करने वाले रास्ते पर रुककर मुस्कराया।

"कैसे हो तुम लोग?" बबूसा ने पूछा।

"तुम लौट आए बबूसा?" एक ने खुशी भरे स्वर में कहा।

"हां, मैं तुम लोगों से ज्यादा दूर भी तो नहीं रह सकता।" बबूसा ने मुस्कराकर कहा।

"रानी ताशा ने हम पर कब्जा कर लिया है। वो तो हमारी दोस्त बनकर आई थी।" दूसरे ने कहा।

"फिक्र मत करो। सब ठीक हो जाएगा।" बबूसा ने सिर हिलाकर कहा—"ये लोग मेरे दोस्त हैं।" बबूसा ने सबकी तरफ इशारा किया—"सबका ध्यान रखना। तुम सब लोग मेरे पीछे आओ।"

बबूसा के साथ वे सब लोग पहाड़ के भीतर प्रवेश करते चले गए। (डोबू जाति की इस जगह के बारे में वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि पूर्व प्रकाशित दो उपन्यास—**'बबूसा', 'बबूसा और राजा देव'** में आप डोबू जाति की हर चीज को पढ़-देख चुके हैं।)

संदीप, और मोनी को मारने के लिए डोबू जाति को योद्धाओं को जो हथियार दिए गए थे, वो अब उनसे वापस लेकर उसी कमरे में रख दिए गए हैं। ऐसे में योद्धाओं के पास हथियार नहीं हैं, परंतु अगोमा को इशारे पर दो योद्धाओं ने दो-तीन हथियार अपने पास छिपाकर रख लिए हैं। इस बात से रानी ताशा के आदमी अंजान हैं। अगोमा ने ऐसा इसलिए किया कि शायद उन्हें हथियारों की जरूरत पड़ जाए। बबूसा उत्साह भरी चाल से पहाड़ के भीतर के रास्तों को पार करता जा रहा था। परंतु मन कुछ बोझिल भी था कि अब यहां ओमारू नहीं है। बोबला नहीं है। डोबू जाति के खास-खास लोगों को रानी ताशा के इशारे पर खत्म जो कर दिया गया था। ओमारू को तो स्वयं रानी ताशा की मौजूदगी में जोबिना से राख किया गया था। रास्ते में डोबू जाति के लोग खुशी से, चिल्लाकर भी बबूसा से मिल रहे थे, उसे पुकार रहे थे और रानी ताशा की शिकायत कर रहे थे कि उसने सरदार ओमारू को मार दिया है। बाकी महत्त्वपूर्ण लोगों को भी मार दिया था। बबूसा उन्हें हौसला देते जा रहा था कि अब वो आ गया है सब ठीक हो गया है। रानी ताशा उन्हें आजाद करने वाली है। साथ ही बबूसा उन्हें कहता जा रहा था कि ये सब उसके दोस्त हैं और इनका ध्यान रखा जाए। बबूसा को आया पाकर डोबू जाति के लोग खुश थे। वे बबूसा को बहुत बड़ी राहत के तौर पर ले रहे थे। वे सब तारों वाले कमरे में पहुंचे।

अगोमा वहां काम में व्यस्त दिखा। वहां स्क्रीन हर तरफ लगी थी और इस वक्त एक ही स्क्रीन रोशन थी। आहट पाकर अगोमा ने सिर घुमाया तो बबूसा को सामने पाकर हैरानी से खड़ा रह गया। कुछ कहते न बना फिर उसकी आंखों में खुशी से पानी छलक उठा। होंठ कांपे। बबूसा को देखता रहा।

बबूसा मुस्करा पड़ा।

"तुम ठीक हो अगोमा?" बबूसा ने आगे बढ़कर, अगोमा का कंधा थपथपाया।

"तुम सच में आ गए बबूसा?" अगोमा के होंठों से थरथराता स्वर निकला।
"हां अगोमा, मैं आ गया।" बबूसा ने भारी मन से कहा।
"रानी ताशा ने ओमारू को, बोबला को, सबको मार...।"
"जानता हूं। सोलाम ने मुझे बताया था।"
"ये सब क्या हो गया बबूसा?"
बबूसा पलटा और वहां खड़े डोबू जाति के लोगों से बोला।
"मेरे इन दोस्तों को ले जाओ और रहने की बढ़िया जगह दो। खाने को दो।" फिर बबूसा ने जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी और धरा से कहा—"तुम लोग इनके साथ जाओ। मैं कुछ देर बाद आता हूं।"
वो सब डोबू जाति के लोगों के साथ चले गए।
अब बिजली वाले कमरे में बबूसा और अगोमा अकेले मौजूद थे।
"तुम कैसे अचानक आ पहुंचे बबूसा?" अगोमा ने पूछा।
"मेरे साथ रानी ताशा और राजा देव भी आए हैं।"
"रानी ताशा आ गई क्या?" अगोमा के होंठों से निकला—"राजा देव मिल गए उसे?"
"हां। रानी ताशा जिस काम के लिए आई थी पृथ्वी पर, उनका वो काम पूरा हो चुका है।" बबूसा ने बताया।
"परंतु रानी ताशा ने हमारे खास लोगों की जान लेकर, हम पर अधिकार क्यों जमा लिया?"
"रानी ताशा का इरादा इस जगह को, पृथ्वी पर अपने ग्रह पर ठिकाना बनाने का था। परंतु अब सब ठीक है। मैंने रानी ताशा से बात कर ली है। वो हमारी जाति को पहले की तरह आजाद कर देने वाली है।"
"सच बबूसा?"
"हां।" बबूसा गम्भीर दिखा—"रानी ताशा पोपा में बैठकर वापस जाने वाली है।"
"ओह, परंतु उसने कहा था कि जाते वक्त वो अपने लोग यहां छोड़ जाएगी और डोबू जाति उसके अधिकार में रहेगी।"
"अब ऐसा कुछ नहीं है।" बबूसा ने कहा—"रानी ताशा के साथ सब पोपा में बैठकर चले जाएंगे।"
"वो दिन हमारे लिए खुशी का होगा।"
"परंतु मुझे परेशानी है अगोमा।" बबूसा के होंठ भिंच गए।
"क्या?"
बबूसा ने राजा देव (देवराज चौहान) से वास्ता रखती सारी बातें बताईं।

सुनकर अगोमा गम्भीर हो गया।

"तो अब तुम क्या करना चाहते हो?" अगोमा कह उठा।

"जब तक सोमाथ सलामत है, तब तक मैं राजा देव को, रानी ताशा से अलग नहीं कर सकता। राजा देव, रानी ताशा के साथ रहेंगे तो व्यस्त रहेंगे और उन्हें सदूर के जन्म की बाकी बातें याद नहीं आने वाली।"

"लेकिन तुम तो बता रहे हो कि सोमाथ पर काबू पाना आसान काम नहीं है।"

"ऐसा ही है। परंतु कुछ तो करना ही पड़ेगा।" बबूसा बोला—"हम लोगों के हथियार रानी ताशा के कब्जे में हैं?"

"हां। एक कमरे में सारे हथियार रखे हैं और दो लोग वहां हर समय पहरा देते रहते हैं।" इसके साथ ही अगोमा ने धीमे स्वर में कहा—"कल यहां बाहरी लोग आ पहुंचे थे। उन्होंने पोपा देख लिया था। उनमें से दो, एक लड़का और एक लड़की बचकर भाग निकले तो उन्हें खत्म करने के लिए हमें हथियार दिए गए थे। अब उन्हें वापस कर दिया गया है परंतु मेरे कहने पर दो-तीन हथियार हमारे लोगों ने छिपाकर रख लिए हैं।"

बबूसा के चेहरे पर सोच के भाव आ ठहरे।

"उन हथियारों को किसी पर इस्तेमाल कराना हो तो बता दो।" अगोमा ने कहा।

"मैं सोच के बताऊंगा।"

अगोमा ने सिर हिलाया।

"सोलाम की कोई खबर है?" बबूसा ने पूछा।

"वो मेरे सम्पर्क में है। मेरे यंत्र पर वो अक्सर बात करता रहता है। उसे तुम्हारे आने का इंतजार था। सोलाम कहता है कि तुमने उसे तैयार रहने को कहा था कि डोबू जाति को रानी ताशा के हाथों से आजाद कराना है। वो मुम्बई में बिखरे योद्धाओं के साथ यहां से कुछ दूर सामने वाले पहाड़ के पार डेरा जमाए हुए हैं। वो लोग वहां पर हथियार बना रहे हैं कि वक्त आने पर...।"

"अब उसकी जरूरत नहीं रही। हालात बदल गए हैं। रानी ताशा, राजा देव की बात मानकर डोबू जाति को आजाद कर देने को तैयार है। बेहतर होगा कि तुम सोलाम को वापस बुला लो।"

"यहां?"

"हां।"

"शायद वो मेरे कहने पर यहां न आए। अच्छा होगा कि तुम ही सोलाम से बात करो।"

"तुम सम्पर्क बनाओ, मैं बात करता हूं।"

अगोमा ने आगे बढ़कर लकड़ी के काउंटर पर रखा यंत्र उठाया और उसके बटनों से छेड़छाड़ करने लगा कि तभी रानी ताशा के एक आदमी ने भीतर प्रवेश किया और ठिठक कर बोला।

"तुम दोनों यहां क्या कर रहे हो?"

"तुमसे मतलब?" बबूसा ने उसे घूरा।

"इस कमरे में अगोमा के अलावा किसी और का आना मना है।" वो सख्त स्वर में बोला—"बाहर निकलो यहां से।"

"मुझे नहीं जानते?" बबूसा ने उसे घूरा।

"तुम कुछ देर पहले रानी ताशा और राजा देव के साथ यहां आए हो।"

"मतलब कि मुझे नहीं जानते।" बबूसा उसके पास जा पहुंचा—"मैं बबूसा हूं।"

"बबूसा?" वो चौंका।

"क्या जानते हो मेरे बारे में?"

"य-यहीं कि तुम—तुम सदूर के हो। हममें से हो।" उसके होंठों से निकला।

"मैं सदूर का जरूर हूं परंतु इस डोबू जाति का भी हूं। यहां अब तुम लोगों की ज्यादा नहीं चलेगी। मैं आ गया हूं। मेरे कामों में दखल देने की कोशिश मत करना। जरूरत समझो तो रानी ताशा से ये बात कह दो।"

उसने सिर हिला दिया।

"जाओ।"

वो चला गया।

अगोमा मुस्कराकर कह उठा।

"ये तुम ही कर सकते हो। तुमने जिस ढंग से इससे बात की इस तरह हम बात करेंगे तो ये हमें राख बना देंगे।"

"अब ऐसा नहीं होगा।" बबूसा सख्त स्वर में बोला—"मैं आ गया हूं।"

"तुम्हारे आने पर मुझे बहुत सहारा मिला है।"

बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

अगोमा ने यंत्र पर सम्पर्क बनाकर बबूसा को देते कहा।

"सोलाम से बात कर लो।"

बबूसा ने अगोमा से यंत्र लेकर बात की।

"सोलाम।"

"तुम ठिकाने पर पहुंच गए बबूसा?" यंत्र में से सोलाम की बारीक आवाज उभरी—"ये कैसे हो गया?"

"हम सब ही आ गए हैं। रानी ताशा, राजा देव, धरा और राजा देव के तीन साथियों के अलावा सोमारा भी...।"

"ये तो अच्छा हुआ कि तुम वहां हो। हम यहां तैयारी कर रहे हैं। हमले के लिए, तुम जब कहोगे, हम तभी...।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा अब। डोबू जाति को रानी ताशा छोड़ने जा रही है। तुम यहीं आ जाओ।"

"ये क्या कह रहे हो?"

"मैंने सही कहा है। रानी ताशा पोपा में बैठकर, वापस सदूर जाने वाली है।"

"मुझे विश्वास नहीं होता।"

"रानी ताशा और राजा देव से इस बारे में बात हो गई है। उनके जाते ही डोबू जाति आजाद होगी, पहले की तरह।"

"मुझे तो इसमें रानी ताशा की कोई चाल लगती है।" यंत्र से सोलाम की आवाज उभरी।

"इस बात के बीच राजा देव भी हैं, इसलिए रानी ताशा कोई चालाकी नहीं कर सकती।"

सोलाम की आवाज नहीं आई।

"सोलाम।" बबूसा ने पुकारा यंत्र पर।

"सुन रहा हूं परंतु तुम्हारी बात पर शंकित हूं कि रानी ताशा इतनी आसानी से कैसे पीछे हट रही है।"

"सब ठीक है। शक मत करो। मैं चाहता हूं कि तुम यहां पर पहुंच जाओ। मुझे तुम्हारी जरूरत पड़ सकती है।"

"मेरी जरूरत, वो कैसे?"

बबूसा ने यंत्र द्वारा सोलाम को यहां के हालात बताए।

"मैं चाहता हूं कि राजा देव को सदूर के जन्म की सब बातें याद आ जाएं। परंतु जब तक वो, रानी ताशा के संग है, तब तक उन्हें यादों को छू लेने की फुर्सत नहीं मिलेगी। दोनों को तभी अलग किया जा सकता है, जब सोमाथ न रहे।"

"जैसा कि तुम बता रहे हो कि सोमाथ बेहद ताकतवर है, तो उसका मुकाबला कैसे किया जा सकता है।"

"इसी बात के बारे में तो सोचना है। इससे पहले कि सदूर पर चलने की तैयारी हो जाए, हमें कुछ करना होगा। राजादेव रानी ताशा के दीवाने हो रहे हैं। उनसे किसी तरह की सहायता की उम्मीद रखना बेकार है।" बबूसा ने यंत्र पर कहा।

"ठीक है। मैं सबको लेकर आता हूं। क्या हथियारों पर अभी भी उनका कब्जा है?"

"हां। कम-से-कम रानी ताशा वक्त से पहले डोबू जाति के योद्धाओं को हथियार देने को तैयार नहीं होगी।"

"हमने यहां कुछ हथियार बना लिए हैं।"

"उन्हें छिपाकर साथ ले आना।"

"ठीक है, रात तक हम ठिकाने पर पहुंच जाएंगे।" उधर से सोलाम ने कहा।

बबूसा ने यंत्र अगोमा को दे दिए।

"मैं अपनी जाति के ठिकाने पर एक नजर डालकर देखूंगा कि यहां क्या-क्या बदलाव हुए हैं।"

"सब कुछ पहले जैसा ही है। फर्क सिर्फ ये है कि हमारे लोगों पर रानी ताशा के आदमी नजर रखते हैं।"

"जादूगरनी (होम्बी) कैसी है?"

"जादूगरनी रानी ताशा के आने के बाद कभी भी अपनी जगह से बाहर नहीं निकली। वो वहीं पर रहती है और किसी से नहीं मिलती। मैं जाता हूं उसके पास तो वो चुप रहती है। बोलती नहीं।"

"जादूगरनी ने कभी कोई खास बात कही हो?"

"मैंने उसे लम्ब वक्त से बोलते नहीं देखा।" अगोमा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं जादूगरनी से मिलूंगा। मेरा उससे मिलना बहुत जरूरी है। मुझे उसकी सहायता की जरूरत है।"

"शायद वो बात न करे।"

"मैं उसके पास जाऊंगा।" बबूसा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"मुझे बताओ कि मैं क्या करूं?"

"रात तक सोलाम आ जाएगा। उसके बाद ही कोई रणनीति बनाएंगे। मैं भी सोचना चाहता हूं इस बारे में। तुम भी सोचो कि सोमाथ को कैसे खत्म किया जा सकता है। हमारी राह की रुकावट वो ही है।" कहकर बबूसा बाहर निकला और आगे बढ़ गया। रास्ते में डोबू जाति के लोग बबूसा से खुशी से मिलते रहे और बबूसा भी उनसे दिल से मिला।

कुछ देर बाद बबूसा उस कमरे तक जा पहुंचा जहां हथियार रखे थे और दो लोग पहरे पर थे।

"मुझे जानते हो?" बबूसा ने उन दोनों से पूछा।

"कौन हो तुम?" एक ने पूछा।

"बबूसा।" बबूसा मुस्कराया—"मेरा नाम सुना है पहले कभी?"
दोनों कुछ सतर्क होते दिखे।
"तुम हममें से ही हो।" वो पुनः कह उठा।
"सही कहा।" बबूसा मुस्कराया—"मैं कुछ देर पहले ही यहां पहुंचा हूं।"
"रानी ताशा भी वापस आ गई है।" दूसरा बोला।
"हां। साथ में राजा देव भी हैं। रानी ताशा, राजा देव को पाकर खुश है। तुम दोनों डोबू जाति के हथियारों की रखवाली कर रहे हो।"
दोनों ने सहमति से सिर हिला दिया।
"मैं भीतर जाकर हथियारों को देखना चाहता हूं। हटो सामने से।" बबूसा बोला।
दोनों ने एक-दूसरे को देखा और एक कह उठा।
"तुम हममें से ही हो। भीतर जा सकते हो।" इसके साथ ही वो एक तरफ हट गया।
बबूसा आगे बढ़ा तो दूसरा कह उठा।
"मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। क्योंकि भीतर जाने की इजाजत किसी को नहीं है।"
"बेशक—मेरे साथ ही रहो।"
बबूसा के साथ वो पहरेदार भी भीतर प्रवेश कर आया। भीतर अंधेरा था। बबूसा के कहने पर उसने दीवार में पहले से फंसी मशाल जलाई। वो कमरा क्या काफी लम्बा-चौड़ा रास्ता था, आगे से बंद था। बबूसा यहां के जर्रे-जर्रे से वाकिफ था। उस जगह पर डोबू जाति के हथियारों का ढेर लगा हुआ था। लोहे की पत्तियों, खंजरों, तलवारों जैसे पतले लम्बे हथियार। और भी कई तरह के हथियार थे। जो हजारों दुश्मनों की जान लेने को तैयार थे परंतु इस वक्त बेजान पड़े थे।
"इन हथियारों की पहरेदारी क्यों कर रहे हो?" बबूसा ने पूछा।
"ताकि ये डोबू जाति के लोगों के हाथों में न जाएं।"
"इससे क्या फर्क होता है कि...।"
"रानी ताशा ने डोबू जाति पर अपना कब्जा कर रखा है। हथियार उनके हाथों में पड़े तो, वो हमें मार सकते हैं।"
बबूसा ने मशाल बुझा दी। दोनों बाहर आ गए।
"तुम दोनों जोबिना वाले हो?" बबूसा ने पूछा।
"हां।"
"जोबिना दिखाओ।" बबूसा मुस्कराया—"मैंने लम्बे समय से जोबिना को नहीं देखा।"

उसने सतर्क अंदाज में जेब से जोबिना निकालकर दिखाई।

"बबूसा कई पलों तक जोबिना को देखता रहा फिर बोला।

"आज से तीस साल पहले जोबिना का रूप दूसरा होता था।"

"जम्बरा ने इसका नया रूप निकाला है।" उसने जोबिना जेब में रख ली।

"क्या मुझे जोबिना दे सकते हो?"

"इसके लिए हमें रानी ताशा का हुक्म चाहिए।" वो बोला।

बबूसा ने कुछ नहीं कहा और आगे बढ़ गया।

वो मूर्ति वाले हाल में पहुंचा। वहां काफी लोग बैठे हुए थे। कुछ अपने काम में व्यस्त आ-जा रहे थे। हर कोई बबूसा को देखकर खुश था और उससे बात करना चाहता था।

"मुझे भी आप लोगों से मिलकर खुशी हो रही है।" बबूसा ने उनसे कहा—"मैं सबसे बातें करूंगा, परंतु पहले यहां का हाल जान लूं।"

"अब तो तुम नहीं जाओगे बबूसा?"

"पता नहीं।" कहकर बबूसा आगे बढ़ गया।

बबूसा ठिकाने के उस हिस्से में पहुंचा जहां खाना बनाया जाता था। वहां कुछ आदमी और औरतें रात के खाने की तैयारी कर रहे थे। बबूसा उन्हें पहचानकर मुस्कराया।

"कैसे हो तुम लोग?" बबूसा ने पूछा।

"हम ठीक हैं। तुम्हें फिर से यहां देखकर बहुत खुशी हो रही है।" एक औरत ने कहा—"रानी ताशा ने हमारी आजादी खत्म कर दी है।"

"सब ठीक होने वाला है। रानी ताशा यहां से जाने वाली है।"

"पता चला है कि वो अपने आदमी यहां छोड़कर जाएगी।" एक आदमी ने चिंतित स्वर में कहा।

"ऐसा कुछ नहीं होगा। सब यहां से चले जाएंगे। रानी ताशा और राजा देव से मेरी बात हो गई है।"

"राजा देव मिल गए रानी ताशा को?"

"हां।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"यहां हथियार क्यों नहीं बनाए जा रहे। वो जगह खाली पड़ी है। आग की भट्ठियां बंद हैं। क्या इस काम के लिए भी रानी ताशा ने मना किया है?"

"हां। रानी ताशा हमारे योद्धाओं को हथियार भी नहीं दे रही।"

"सब ठीक होने वाला है।" बबूसा ने कहा और पलटकर वापस चल पड़ा। उसकी निगाह हर तरफ घूम रही थी। चेहरे पर गम्भीरता और चिंता के भाव दिखाई दे रहे थे।

दो घंटे तक बबूसा ठिकाने पर ही घूमता, देखता रहा। उसके बाद उस

जगह पर पहुंचा जहां धरा, जगमोहन, मोना चौधरी, नगीना और सोमरा थे।

वो सब फर्श जैसी जगह पर कपड़ा बिछाए बैठे थे। धरा लेटी हुई थी। उन्होंने ऊपर भी गर्म कपड़ा ओढ़ रखा था। पास मे खाने के कुछ बर्तन पड़े थे। मशाल की मध्यम रोशनी वहां फैली थी।

बबूसा उनके पास आकर बैठ गया।

"कुछ सोचा बबूसा?" जगमोहन ने पूछा।

"सोच लिया जाएगा। रात को सोलाम आ रहा है।" बबूसा ने कहा।

"सोलाम कौन?"

"धरा जानती है उसे। वो डोबू जाति का ही योद्धा है और मेरे साथ है। अगोमा भी मेरे साथ है। रात को हम लोग सोचेंगे कि सोमाथ से कैसे निबटा जा सकता है।" बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी।

"हमारे पास वक्त कम है।" नगीना बोली।

"जानता हूं। हम जल्दी ही कुछ करेंगे।"

"यहां के लोगों के पास हथियार भी नहीं हैं। खाली हाथ सोमाथ का मुकाबला कैसे कर...।"

"कुछ हथियार हैं। उन्हें छिपाकर रख गया है परंतु वो रानी ताशा के लोगों के लिए नाकाफी है। मैं इस कोशिश में हूं कि मुझे जोबिना मिल जाए। जोबिना के हाथ में आ आने से, हम अपना सोचा पूरा कर देंगे।"

"यहां के लोगों के पास जोबिना है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"यहां के लोग?" बबूसा ने मोना चौधरी को देखा।

"रानी ताशा के आदमी, यहां-वहां फैले दिख रहे हैं, उनके पास जोबिना होगी?" मोना चौधरी बोली।

"हां। हथियारों वाले कमरे के बाहर खड़े दोनों आदमियों के पास जोबिना है। मैंने देखा है।"

"तुमने अभी देखी?"

"हां।"

"तो उस पर अपना अधिकार क्यों नहीं पाया?"

"जोबिना सिर्फ उन्हें ही दी जाती है जो बेहद सतर्क और फुर्तीले होते हैं। उनसे जोबिना नहीं छीनी जा सकती। ऐसी कोशिश करते ही वो जोबिना का इस्तेमाल सामने वाले पर करके उसे राख बना देंगे।" बबूसा ने कहा।

"हम काफी लोग हैं।" मोना चौधरी ने कहा—"एक साथ उन पर झपट कर...।"

"ऐसा सोचना भी मत। वो तुम लोगों से ज्यादा फुर्ती दिखा देंगे। जोबिना

का इस्तेमाल करने में सिर्फ एक पल का वक्त लगता है। तुम लोग राख हो जाओगे। ये काम आसान होता तो मैं कर चुका होता।"

"तुम्हारा मतलब रानी ताशा के किसी आदमी से भी हम जोबिना नहीं छीन सकते?" नगीना बोली।

"शायद नहीं। जोबिना वाले आदमी बेहद खास होते हैं। सदूर पर हर किसी को जोबिना नहीं दी जाती। जो कड़े इम्तिहान से निकलने में कामयाब होता है जोबिना सिर्फ उसे ही दी जाती है।" बबूसा ने बताया।

"हमारे पास वक्त कम है बबूसा। जल्दी ही कुछ न किया गया तो मुसीबतें बढ़ जाएंगी। रानी ताशा कभी भी अंतरिक्षयान ने उड़ान भर ली तो फिर हम कुछ नहीं कर सकेंगे।"

बबूसा के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान नाच उठी।

"बबूसा ने कभी हारना नहीं सीखा। मैं रानी ताशा की मर्जी नहीं चलने दूंगा।"

"जो करना है जल्दी करो।" जगमोहन ने बेचैनी से कहा।

बबूसा सिर हिलाकर उठा और बाहर निकल गया।

"बबूसा कुछ करने के लिए कोई रास्ता तलाश रहा है।" मोना चौधरी ने कहा।

"हम खतरनाक हालातों में फंस चुके हैं।" नगीना ने कहा—"बबूसा रानी ताशा और देवराज चौहान को अलग करना चाहता है, परंतु रानी ताशा देवराज चौहान का साथ किसी कीमत पर नहीं छोड़ेगी। सबसे बड़ी अड़चन सोमाथ है जो कि इन हालातों को भांप रहा है और उसके होते ये काम आसान नहीं। सोमाथ को खत्म करना असम्भव-सी बात है, जबकि अन्य लोगों के पास जोबिना जैसा खतरनाक हथियार है। हम लोगों द्वारा गड़बड़ करते ही, जोबिना का इस्तेमाल हम पर कर दिया जाएगा।"

"तो हम क्या करें ऐसे वक्त में?" जगमोहन बोला।

"कम-से-कम हम तो कुछ भी नहीं कर सकते। जो करेगा, बबूसा करेगा, परंतु उसके लिए भी राह आसान नहीं है।"

"देवराज चौहान अगर जरा भी हमारा साथ देता तो हम बहुत कुछ कर सकते थे।" मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा।

"देवराज चौहान को सदूर ग्रह के जन्म का काफी कुछ याद आ चुका है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"सदूर के जन्म की यादें उस पर भारी पड़ रही हैं। हमारा खयाल भी उसे नहीं आ रहा। वो रानी ताशा का दीवाना हुआ पड़ा है, जैसे उस पर किसी ने जादू कर रखा हो। हमारे सामने ही रानी ताशा को प्यार करने लगता है। देवराज चौहान से हम कोई आशा

नहीं रख सकते कि वो हमारी सहायता करेगा या हमारे बारे में सोचेगा। अब उसे पृथ्वी नहीं, सदूर ग्रह अच्छा लगने लगा है। ताशा उसकी जिंदगी बन गई है। हमारे साथ उसका व्यवहार ऐसा है जैसे हम दूध में पड़ी मक्खी हों।"

"बबूसा कहता है कि देवराज चौहान को, सदूर ग्रह के पहले के जन्म की कुछ यादें, याद आनी बाकी हैं। अगर वो सब कुछ याद आ गया तो वो रानी ताशा को कड़ी सजा देगा।" नगीना ने कहा।

"ये वक्त जाने कब आएगा भाभी।" जगमोहन ने झुंझलाकर कहा—"आने वाले वक्त में मुसीबतें कहीं बढ़ न जाएं।"

उनके पास ही करवट लेकर लेटी धरा एकाएक जहरीले अंदाज में मुस्करा पड़ी। उसका नीचे का होंठ टेढ़ा-सा हो गया। आंखों में चमक आ गई। कुछ पल वो इसी मुद्रा में रही फिर बड़बड़ा उठी।

'अब मैं सदूर पर वापस जाऊंगी। पांच सौ साल पूरे होने में कुछ ही दिन बचे हैं, मेरी ताकतें मेरा इंतजार कर रही है सदूर पर।'

▭ ▭

बबूसा, चबूतरे पर मौजूद देवी की लम्बी-सी मूर्ति के बगल से होता, पीछे के रास्ते पर बढ़ गया। ये रास्ता होम्बी के कमरे की तरफ जाता था। इस तरफ डोबू जाति का कोई व्यक्ति नहीं आता था। बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी। पतली-सी उस गली के आखिरी कोने पर, होम्बी के कमरे के दरवाजे जैसे रास्ते पर जा कर रुका।

"जादूगरनी।" बबूसा मध्यम स्वर में बोला—"मैं 'बबूसा' तुमसे मिलने आया हूं।"

भीतर से कोई आवाज नहीं आई।

बबूसा की निगाह जहां तक जा रही थी, वहां उसे होम्बी नहीं दिखी।

बबूसा भीतर प्रवेश कर गया। नजरें होम्बी पर जा टिकीं।

होम्बी पत्थर के तख्त जैसी जगह पर चादर बिछाए बैठी अपने लम्बे काले बालों में कंघा फिरा रही थी। उसका झुर्रियों से भरे चेहरे पर से, गालों का मांस लटकता, हौले-हौले हिल रहा था। उसके बूढ़े चेहरे पर सैकड़ों लकीरें नजर आ रही थीं। परंतु इस वक्त उसकी आंखों में चमक थी। वो बबूसा को देखने लगी थी।

होम्बी को देखते ही बबूसा मुस्कराया फिर दुखी होता कह उठा।

"मुझे सरदार ओमारू की मौत का बहुत दुख है।"

होम्बी, बबूसा को देखती रही।

"बोबला और बाकी सब महत्त्वपूर्ण लोगों को रानी ताशा ने मार दिया, जो हमारी जाति को संभालते थे।" बबूसा पुनः बोला।

"वो बात पुरानी हो गई।" होम्बी ने धीमे स्वर में कहा—"मैं जानती थी कि तू वापस आने वाला है।"

"तुमसे क्या छिपा है जादूगरनी।"

"मैं ये भी जान चुकी हूं कि तेरी वजह से डोबू जाति को रानी ताशा से मुक्ति मिलने वाली है।" होम्बी बोली।

"तुम तो सब कुछ जानती हो जादूगरनी। आने वाले वक्त का तुम्हें पहले ही एहसास हो जाता है।"

"अब तो तू खुश होगा।"

"वो कैसे जादूगरनी?"

"तेरे को तेरे राजा देव मिल गए।" होम्बी मुस्कराई।

"नहीं जादूगरनी। मैं उतना खुश नहीं, जितना कि मुझे होना चाहिए था।"

होम्बी ने कुछ नहीं कहा।

"मैं रानी ताशा को पसंद नहीं करता।"

"लेकिन तू उस औरत से, राजा देव को छुटकारा भी तो नहीं दिला सकता।"

"मैं-मैं इसी बात की कोशिश कर रहा हूं कि...।"

"वो राजा देव से सच्चा प्यार करती है।"

"परंतु उसने राजा देव को जबर्दस्त धोखा दिया था। वो वक्त राजा देव को अभी याद नहीं आया।"

"याद आ जाएगा बबूसा।"

"कब?"

"वो वक्त आने में कुछ समय बाकी है।" होम्बी ने कहा।

"रानी ताशा, राजा देव को पोपा में बिठाकर सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती है।" बबूसा परेशान हो उठा।

"वो ऐसा ही करेगी।"

"क्या वो सबको सदूर पर ले जाएगी?"

"अवश्य। ऐसा होकर रहेगा बबूसा।"

"ओह, ये तो बहुत गलत हो जाएगा।" बबूसा के होंठों से निकला।

"तू व्यर्थ ही चिंता करता है, जो होना है, वो होकर ही रहेगा।" होम्बी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तो तुमने कहा कि डोबू जाति अब आजाद होने वाली है।"

"रानी ताशा के यहां से जाते ही, डोबू जाति फिर से पहले की तरह हो जाएगी।"

"और—और हम सब भी पोपा में सदूर पर जाने वाले हैं?"

"हां। मुझे इस बात का स्पष्ट एहसास करा दिया है मेरी शक्तियों ने।"

"परंतु हम पोपा में नहीं जाना चाहते। मैं राजा देव को रानी ताशा से अलग करना चाहता हूं कि राजा देव को...।"

"आने वाला वक्त बहुत बुरा होगा तुम्हारा।" होम्बी गम्भीर थी।

"बुरा होगा?" बबूसा की निगाह होम्बी के झुर्रियों भरे चेहरे पर टिक गई—"वो कैसे?"

"इस बुरे वक्त की वजह बनेगी, वो लड़की जिसे तू डोबू जाति के योद्धाओं से बचाता रहा है।"

"धरा?" बबूसा के होंठों से निकला।

"मेरी शक्तियों ने मुझे कई बातों का एहसास दिलाया है, फिर भी मैं ज्यादा नहीं जान पाई, क्योंकि ये बातें पृथ्वी से बहुत दूर, दूसरे सदूर ग्रह से वास्ता रखती हैं। लेकिन जो पूर्वाभास हुआ है, वो ही तुम्हें बता रही...।"

"हैरानी है जादूगरनी कि धरा की वजह से मुसीबत आएगी। वो तो बहुत शरीफ लड़की है।"

"वो, वो नहीं, जो तेरे को दिख रही है।"

"क्या मतलब?"

"इस वक्त धरा के पास थोड़ी-सी ताकतें हैं। उन्हीं ताकतों के दम पर वो अपनी चालें चल रही हैं।" होम्बी ने मध्यम स्वर में कहा—"धरा का असली घर, सदूर ग्रह पर है और...।"

"क्या?" बबूसा चौंक पड़ा—"धरा सदूर ग्रह की है?"

"हां।" होम्बी ने अपना बूढ़ा चेहरा हिलाया तो उसके गालों का लटकता मांस हिलने लगा—"वो सदूर की है, पर किसी कारण उसे पांच सौ सालों के लिए सदूर से बाहर जाना था तो वो पृथ्वी पर आ गई थी। अब उसके पांच सौ साल पूरे होने जा रहे हैं और उसे वापस सदूर पर जाना था परंतु जाने का रास्ता वो भूल चुकी थी। लेकिन उसकी ताकतों ने उसे एहसास दिला दिया था कि सदूर ग्रह जाने का रास्ता उसे डोबू जाति से मिलेगा। ये ही वजह थी कि वो पहले हमारे ठिकाने पर आई थी, उसके बाद मुम्बई में उसे तुम मिल गए। उसकी ताकतें उसे एहसास कराती जा रही थीं कि उसे किसके साथ रहना है, कि तभी वो सदूर पर जा पाएगी। वो तुम्हारे साथ रहती रही और अब तुम लोगों के साथ ही यहां आ गई। वो जानती है कि वो अब सदूर पर पहुंच जाएगी।"

"लेकिन सदूर ग्रह पर, धरा है कौन?"

होम्बी कुछ पल चुप रही फिर कह उठी।

"ये बात मत पूछ बबूसा।"

"क्यों?"

"जब वक्त आएगा, तभी तुम्हारे लिए जानना ठीक होगा कि उस लड़की की असलियत क्या है।"

"तुम मुझे स्पष्ट नहीं बता रही जादूगरनी।"

"तुम्हारे भले के लिए। अगर ये बात तुम पहले जान गए तो तुम्हें जान का नुकसान हो सकता है। मैं तुम्हारा अहित नहीं देख सकती। परंतु इतना जान लो कि उस लड़की की वजह से तुम सब लोग भारी मुसीबत में पड़ने वाले हो।"

बबूसा व्याकुल हो उठा।

"कुछ तो बताओ जादूगरनी।"

"इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं बता सकती। इसी में तुम्हारा भला है। तभी तुम जिंदा रह पाओगे।"

"कौन मारेगा मुझे?"

"वो लड़की।"

"अजीब बात है, क्या उसमें इतनी ताकत है कि वो मेरी जान ले सके। वो कमजोर-सी लड़की है।"

होम्बी के चेहरे पर रहस्य से भरी मुस्कान उभरी। वो बबूसा को देखती रही।

बबूसा, होम्बी को देखता रहा। वो परेशान हो उठा था।

"तुम्हारी बातें समझकर भी मैं नहीं समझ पा रहा।" बबूसा बोला।

"आने वाला वक्त तुम्हें सब समझा देगा। तुम उस लड़की को मेरे पास ले आओ। मैंने उससे बात करनी है।"

"धरा को?" बबूसा ने अजीब-से स्वर में कहा।

होम्बी, की नजरें बबूसा के चेहरे पर रही।

"ठीक है जादूगरनी, मैं धरा को लेकर आता हूं।" कहकर बबूसा परेशान-सा बाहर निकल गया।

होम्बी के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी। वो वैसे ही बैठी रही।

दस मिनट बाद बबूसा, धरा के साथ वापस लौटा। धरा सहमी-सहमी-सी नजर आ रही थी और कई बार बबूसा से पूछ चुकी थी कि क्या बात है, उसे कहां ले जा रहे हो।

"जादूगरनी।" बबूसा पहुंचते ही बोला—"ये बहुत साधारण लड़की है। इसके बारे में तुम्हें गलती तो नहीं लगी?"

होम्बी की निगाह, धरा पर जा टिकी।"

धरा भी होम्बी को देखने लगी थी।

"तुम जाओ बबूसा। बाहर खड़े होकर बातें सुनने की गलती मत कर देना।" होम्बी कह उठी।

बबूसा ने उलझन भरी निगाहों से धरा को देखा और बाहर निकल गया।

उसी पल धरा का निचला होंठ टेड़ा हुआ और चेहरे पर तीखी मुस्कान नाच उठी।

"तू भी कुछ ताकत रखती है।" धरा कह उठी।

"जब तू पहले यहां आई तो बड़ी शराफत दिखाई।" होम्बी ने कहा—"चुपचाप भाग गई।"

"पहले मैंने जो किया, वो वैसे ही करना जरूरी था। मेरी ताकतों ने मुझे बता दिया था कि इस तरह, मैं सदूर पर वापस जा पाऊंगी।"

"पांच सौ साल के लिए तू पृथ्वी पर आई थी। तेरा वो वक्त पूरा होने जा रहा है।"

"तभी तो।" धरा हंसी—"अब वापस जाना है मुझे।"

"अगर पोपा न आता तो तू वापस कैसे जाती?"

"तब मुश्किल पड़ती, पर मुझे पता था कि सदूर पर जाने का मुझे रास्ता मिल जाएगा। ये बात तो मुझे तब ही मेरी ताकतों ने बता दी थी कि अगर मैं पृथ्वी पर जाकर रहती हूं तो पांच सौ बरस बाद, सदूर पर मैं आसानी से पहुंच जाऊंगी।"

"तभी तू बबूसा के साथ रही।"

"हां। मेरी शक्तियों ने मुझे यह भी बता दिया था कि बबूसा के साथ रहकर, मैं वापस सदूर पर पहुंच जाऊंगी।"

"नाम क्या है तेरा?"

"धरा।"

"असली नाम बता।"

"खुंबरी।" धरा मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"उस ग्रह पर तेरी हैसियत क्या है?" होम्बी की गम्भीर निगाह, धरा पर थी।

धरा हौले से हंसी।

"बता।"

"तेरे पास ताकतें हैं, तू खुद ही पता लगा ले।" धरा होंठ टेढ़ा किए मुस्कराने लगी।

"मेरे पास ताकतें नहीं, पवित्र शक्ति है। ताकतें बुरे इंसान के पास होती हैं, जैसे कि तेरे पास हैं। मुझे पवित्र शक्तियां ही आने वाले समय का

एहसास कराती हैं। पर वो जगह बहुत दूर है जहां तेरा ठिकाना है। तेरे बारे में ज्यादा पता नहीं लग रहा।"

"क्या करेगी तू मेरे बारे में ज्यादा जानकर?"

होम्बी ने उसकी आंखों में झांका।

"तेरे-मेरे रास्ते अलग-अलग हैं।" धरा बोली।

"मेरी शक्तियों ने मुझे एहसास दिलाया है कि वापस उस ग्रह पर जाकर तू मुसीबतें खड़ी करने वाली है।"

"तो तेरा क्या जाता है?" धरा का निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"उस ग्रह से मुझे कोई मतलब नहीं।" होम्बी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"पांच सौ साल।" धरा के चेहरे पर एकाएक क्रोध नाच उठा—"जानती है तू पांच सौ साल मैंने कैसे काटे हैं। एक-एक पल मेरे पर भारी गुजरता रहा और पांच सौ साल तो बहुत लम्बे होते हैं। डुमरा ने सोचा कि जैसे पांच सौ साल कभी पूरे ही नहीं होंगे। मैं सदूर पर आ ही नहीं पाऊंगी। परंतु मैंने पांच सौ सालों को बहुत सब्र के साथ जिया। आठ बार जन्म लिया धरती पर। जन्म न लेती तो क्या करती, मुझे भी तो वक्त बिताना था। हर नए जन्म के साथ सोचती कि पांच सौ साल कम होते जा रहे हैं। डुमरा को मैं कभी नहीं भूली। हर जन्म में वो मेरे को याद रहा। उस कमीने ने मुझे बर्बाद करने की पूरी चेष्टा की। पर खुंबरी को उसने ठीक से जाना नहीं। अब जाकर डुमरा को नाच नचाऊंगी।"

"इन पांच सौ सालों के बाद डुमरा सलामत होगा?"

"जरूर होगा। वो कहीं पर छिपा पड़ा होगा। उसके पास पवित्र शक्तियां हैं जो उसे जिंदा रखे हुए हैं। पर इस बार डुमरा कुछ नहीं कर पाएगा। मेरी सोई ताकतें जब जागेंगी तो बहुत ताकतवर बन चुकी होंगी। पहले से कहीं ज्यादा ताकतवर। डुमरा का तो मैं वो हाल करूंगी कि उसने सोचा भी नहीं होगा।" धरा के होंठों से गुर्राहट निकली। निचला होंठ क्रोध में टेढ़ा हो चुका था—"मेरा ही राज्य होगा सूदर में, मेरे योद्धा फिर मेरे साथ होंगे। कई टुकड़ों में बंट चुका सदूर फिर से एक हो जाएगा और मेरे योद्धा मुझे वापस मिल जाएंगे। एक बात बताऊं तुझे?" धरा ने रहस्य भरे स्वर में कहा।

"कह...।"

"ये रानी ताशा जो नाचती फिर रही है, ये यूं ही नहीं नाच रही। उस पर मेरी ताकतें काम कर रही हैं।"

"क्या मतलब?"

"रानी ताशा ने सेनापति धोमरा के साथ मिलकर, राजा देव को ग्रह से बाहर फेंका—पता है तुझे?"

"हां।"

"तब रानी ताशा के सिर पर, सदूर में मौजूद मेरी ताकतें सवार थीं।"

"ऐसा क्यों?"

"मेरी ताकतें मुझे वापस सदूर पर लाने के लिए रास्ता कब से तैयार कर रही थीं। मैं सदूर से बाहर आ गई तो क्या हुआ, परंतु मेरे काम कभी रुकते नहीं हैं। रानी ताशा ने राजा देव के साथ जो किया, वो मेरी ताकतों ने करवाया। तभी तो अब मेरे वापस सदूर पर जाने का रास्ता मुझे मिल सका।" धरा का निचला होंठ टेढ़ा हुआ पड़ा था।

"पर तेरी ताकतें तो अभी सदूर पर सोई पड़ी हैं। पांच सौ साल का श्राप अभी पूरा नहीं हुआ।" होम्बी ने कहा।

"बेशक मेरी ताकतें सोई पड़ी हैं, परंतु वो इतनी ताकतवर हैं कि रानी ताशा से अपना मनचाहा काम नींद में भी ले सकें। डुमरा जानता है कि रानी ताशा से वो काम, मेरी ताकतों ने ही करवाया है, परंतु वो कुछ नहीं कर सकता। चुपचाप उसे देखते रहना पड़ा। मेरी ताकतों से वो सीधी टक्कर नहीं ले सकता। मैं सदूर पर नहीं हूं तो डुमरा किससे मुकाबला करता। मेरी ताकतों पर सीधे प्रहार करने की शक्ति उसमें नहीं है।" धरा का निचला होंठ टेढ़ा हुआ पड़ा था।

"खुंबरी।"

"बोल।"

"मुझे इस बात का एहसास हो चुका है कि वापस सदूर पर जाकर तू बर्बादी फैलाने वाली है।"

धरा हंस पड़ी। होंठ टेढ़ा हुआ पड़ा था।

"ऐसा करना जरूरी है क्या?"

"बहुत जरूरी है।" धरा गुर्रा उठी—"डुमरा की ये हिम्मत कि पांच सौ सालों के लिए मुझे श्राप देकर, मुझे सदूर से बाहर जाने को मजबूर कर दे। उसे मेरे साथ झगड़ा नहीं लेना चाहिए था। मैं और मेरे योद्धा सदूर को जीत चुके थे। मैं सारे सदूर की रानी बन चुकी थी, परंतु उसने मेरा सारा खेल खत्म कर दिया। मैं धोखा खा गई। मुझे भी तो नहीं पता था कि वो इतना ज्यादा शक्तिशाली है। अगर पता होता तो उसका चुपके से कोई इंतजाम कर देती। यहीं पर तो मुझसे चूक हुई। ये पांच सौ सालों का वक्त पृथ्वी पर मैंने बहुत कष्टों में निकाला। अब वापस जाऊंगी तो डोमरा को सबक सिखाऊंगी। श्राप का वक्त खत्म होते ही मेरी ताकतें नींद से जगने लगेंगी। टुकड़े हो चुका सदूर ग्रह, वो सारे टुकड़े वापस सदूर से आ मिलेंगे, जिन

पर मेरे योद्धा मौजूद हैं, सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा। सदूर पर खुंबरी का हुक्म चलेगा और...।"

"जानती है कितनी बर्बादी होगी।" होम्बी बोली।

"खुंबरी ने आज तक बर्बादी ही फैलाई है। राज्य कायम करने के लिए बर्बादी जरूरी है।"

"डुमरा तेरे को रोकेगा।"

"वो इस बार मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।" धरा हंस पड़ी नीचे वाला होंठ पुनः टेढ़ा हो गया—"मैं डुमरा को बहुत बुरी मौत दूंगी। मेरे खयाल में तो वो मेरे से बचने की तैयारियां कर रहा होगा। पांच सौ साल...मैं आ रही हूं डुमरा।" वो फुंफकार उठी।

"मान जा। वैर-विरोध अपने मन से निकाल दे।"

"क्यों निकालूं।" धरा गुस्से से भर उठी—"पांच सौ सालों का बदला भी ना लूं।"

"मैं डुमरा की बात नहीं कर रही।"

"तो?"

"सदूर को जीतने की बात कर रही हूं। तेरे श्राप से मुक्त होने पर, सदूर के टुकड़े वापस सदूर से आ मिलेंगे। सदूर पहले की तरह एक विशालकाय ग्रह बन जाएगा। पर तू वहां बर्बादी फैलाएगी। लोगों की जानें लेगी और...।"

"तेरे को क्या तकलीफ है बुढ़िया।" धरा गुर्रा उठी।

होम्बी के झुर्रियों वाले चेहरे पर मुस्कान उभर आई।

"मुझे तू कुछ भी कह, मैं बुरा नहीं मानूंगी। पर मुझे चिंता है खुंबरी।"

"मेरी चिंता...और तुझे?" धरा ठहाका लगा उठी।

धरा की हंसी रुकी निचला होंठ टेढ़ा हो चुका था। वो चमक भरी निगाहों से होम्बी को देखने लगी।

"मुझे तो सबकी चिंता रहती है। मैं हूं ही ऐसी। पता हो तो सदूर की भी चिंता हो जाती है।"

"चिंता करके तू क्या करेगी?" धरा का होंठ टेढ़ा हो गया मुस्कराते हुए।

"समझा तो सकती ही हूं।"

"तू मुझे समझाएगी बुढ़िया। खुंबरी बहुत समझदार है, डुमरा से एक बार मात खा गई धोखे में, अब नहीं?"

"मुझे तेरी चिंता है।"

धरा की नजरें होम्बी पर टिक गईं।

"मेरी शक्तियां मुझे एहसास करा चुकी हैं कि तू सदूर पर जाकर जो करेगी, उसमें तेरा भला भी नहीं होने वाला।"

"तेरा मतलब क्या है? तू सोचती है कि मैं मर जाऊंगी। डुमरा फिर मुझ पर भारी पड़ेगा।"

"ये तो मैं नहीं जानती। मैं नहीं जानती कि क्या होगा। पर मैंने आने वक्त का एहसास पाया है, तेरे को दुखी देखा है।"

"खुंबरी कभी दुखी नहीं हो सकती। मैं तो बहुत खुश हूं कि पांच सौ सालों का श्राप समाप्त होने जा रहा है। मेरी ताकतें मेरा सबसे बड़ा सहारा हैं। जब सदूर के टुकड़े वापस सदूर से आ मिलेंगे तो, मेरे योद्धा फिर से मेरा सहारा बनेंगे। उसके बाद सदूर पर वो ही होगा, जो मैं चाहूंगी। खुंबरी राज्य करेगी, सदूर पर।"

"बबूसा और बाकी सब का क्या होगा?"

"परवाह नहीं, खुंबरी की नजरों में इन लोगों का कोई महत्त्व नहीं है।" धरा ने जहरीले स्वर में कहा।

"ये भूल है तेरी।"

"भूल?" धरा का निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"राजा देव सदूर का राजा है।"

"वो अब पृथ्वी का है और उसका नाम देवराज चौहान है।"

"इस तरह तो तू भी पृथ्वी की हुई। राजा देव ने तो तेरे बाद पृथ्वी पर जन्म लिया था।"

"तू बोलती बहुत है बुढ़िया।" धरा का स्वर कठोर हो गया।

"देवराज चौहान को तू जानती है कि अगर उससे किला छीनेगी तो वो चुप नहीं बैठेगा।"

"मैं उसे मार दूंगी।"

"और बबूसा को?"

"उसे भी मार दूंगी।"

होम्बी के चेहरे की मुस्कान गहरी हो गई।

"क्यों मुस्कराती है बुढ़िया।"

"तेरी राह आसान नहीं है खुंबरी।" होम्बी ने कहा—"मेरी बात सदूर पर तुझे याद जरूर आएगी।"

"तू मेरी ताकतों के भूल रही है। जब मेरी ताकतें मेरे पास होंगी तो कौन करेगा मेरा मुकाबला?"

"इसका जवाब तो तुझे सदूर पर ही मिलेगा।"

"तू मुझे धमका रही है बुढ़िया।"

"मैंने तेरे को समझाना चाहा, परंतु तू नहीं समझी। मेरी बात मानेगी तो आराम रहेगा तुझे।"

"खुंबरी को आराम ही आराम है। तू चिंता न कर।" धरा हंसी। होंठ टेढ़ा हो गया।

"महापंडित को तू भूल गई?"

धरा के चेहरे पर सख्ती उभरी। निचला होंठ एक तरफ झुक गया।

"नहीं भूली मैं। डुमरा का बेटा है महापंडित।" धरा ने शब्दों को चबाकर कहा—"डुमरा ने ही अपने बेटे को शक्तियां दी हैं कि वो विद्वान बन बैठा। परंतु महापंडित से मेरी कोई दुश्मनी नहीं। अगर वो मेरे रास्ते में आया तो देख लूंगी उसे।"

"महापंडित के पिता डुमरा का तू मुकाबला करेगी तो महापंडित चुप नहीं बैठेगा।"

"फिर तो मुझे महापंडित की भी जान लेनी होगी।" धरा गुर्रा उठी।

"महापंडित के साथ ढेर सारी शक्तियां हैं। डुमरा और महापंडित एक साथ हो जाएंगे। तब तू क्या करेगी?"

"बहुत चिंता हो रही है बुढ़िया को मेरी।" धरा हंस पड़ी।

"अपने इरादे से पीछे हट जा और सदूर पर चैन से रह। तेरी बुरी ताकतें, तेरे को भी बर्बाद कर देंगी।" होम्बी ने कहा।

"तू मुझे बहुत समझा रही है।" धरा का स्वर जहरीला हो गया—"अब बस कर, मैं तेरी बात मानने वाली नहीं।"

होम्बी उसे देखती रही। कहा कुछ नहीं।

"अब मुझे मत बुलाना।" धरा ने तीखे स्वर में कहा, निचला होंठ टेढ़ा हुआ—"तेरे से बात करना मुझे पसंद नहीं।"

जवाब में होम्बी ने कुछ नहीं कहा।

धरा पलटी और बाहर निकल गई।

'बहुत बुरा होने वाला है।' होम्बी बड़बड़ा उठी।

▭ ▭

बबूसा, देवी की मूर्ति के पीछे की तरफ, पीठ पर हाथ बांधे गम्भीर मुद्रा में टहल रहा था। मन में ढेर सारी उलझन थी कि होम्बी ने धरा को क्यों बुलाया और उनमें क्या बातें हो रही हैं। आखिर धरा, होम्बी, के लिए इतनी महत्त्वपूर्ण कैसे हो गई कि उससे अकेले में बात कर रही है। बात क्या है? होम्बी ने कहा कि धरा, सदूर पर मुसीबतें लाने वाली है। बबूसा को होम्बी की बात पर भरोसा नहीं हो रहा था, परंतु होम्बी की बात को वो हलके में नहीं ले सकता था। होम्बी को आने वाले वक्त का पूर्वाभास हो जाता है। वो कभी भी गलत बात नहीं कहती। बबूसा को याद नहीं था कि होम्बी ने कभी कुछ कहा हो और वो गलत निकला हो। इन सब बातों की वजह से बबूसा

व्याकुल हुआ जा रहा था। बार-बार उसकी निगाह होम्बी के कमरे की तरफ जाते रास्ते पर उठ जाती। उसे धरा की वापसी का इंतजार था।

तभी सोमारा उसके पास आ पहुंची।

बबूसा ने उसे देखा।

"धरा कहां है?" सोमारा ने पूछा।

"होम्बी के पास।"

"तो तू यहां क्यों है बबूसा? उसके पास क्यों नहीं है?"

"होम्बी, धरा से अकेले में बात कर रही है।"

"होम्बी डोबू जाति में क्या महत्त्व रखती है। मैंने उसके बारे में कभी सुना नहीं?" सोमारा ने कहा।

"वो जादूगरनी है और अपने आप में ही रहती है। डोबू जाति की बातों में दखल नहीं देती। आने वाले वक्त का उसे पूर्वाभास हो जाता है और जो बात जाति के भले के लिए होती है, वो पहले ही बता कर सतर्क कर देती है।"

"ओह। लेकिन धरा से जादूगरनी का क्या वास्ता?"

"ये ही तो मैं समझ नहीं पा रहा। परंतु जादूगरनी ने एक बात कहकर मुझे परेशान कर दिया।"

"क्या?"

"वो कहती है धरा की वजह से सदूर पर मुसीबतें आने वाली हैं।"

"धरा की वजह से सदूर पर मुसीबतें? ये कैसे हो सकता है?"

"जादूगरनी ने कहा और उसका कहना कभी गलत नहीं होता।" बबूसा का स्वर गम्भीर था।

"तुझे जादूगरनी से पूछना चाहिए कि ऐसा क्या होगा सदूर पर कि...।"

"जादूगरनी उतना ही बताती है, जितना बताना होता है। वो कहती है, इससे ज्यादा मुझे जानकरी हुई तो धरा मुझे मार देगी। हैरत की बात है कि जादूगरनी के मुताबिक धरा मुझे मार सकती है।"

"ये तो मैं अजीब बातें सुन रही हूं।" सोमारा ने अजीब से स्वर में कहा।

बबूसा गम्भीर-सा, चुप-सा रहा। फिर कह उठा।

"समझ में नहीं आता कि धरा और जादूगरनी इतनी देर क्या बातें कह रहे हैं।"

"तेरे को दरवाजे के बाहर रहकर उनकी बातें सुननी चाहिए थीं।"

"मैं ऐसा ही करता परंतु जादूगरनी ने मुझे ऐसा करने को मना कर दिया था।" बबूसा कह उठा।

"धरा पहले जादूगरनी से मिल चुकी है?"

"नहीं, ये उनकी पहली मुलाकात...।"

"वो आ गई।" सोमारा के होंठों से निकला।

बबूसा की निगाह घूमी तो रास्ते से धरा को इसी तरफ आते पाया। धरा के चेहरे पर मासूमियत नजर आ रही थी। भोली-भाली। जैसे कोई बात ही न हो। पास पहुंचते-पहुंचते वे मुस्कराने लगी।

"जादूगरनी ने तुमसे क्या बात की?" बबूसा उसके पास आते ही पूछ बैठा।

"वो मेरी मां की मौत का अफसोस जता रही थी। जिसे डोबू जाति के योद्धाओं ने मार दिया था।" धरा ने सामान्य स्वर में कहा।

बबूसा की आंखें सिकुड़ीं।

"बस?"

"हां इतना ही।" धरा बोली—"वो बहुत अच्छी है। ममतामयी। कहने लगी मैं उसे अपनी मां मान लूं।"

"सदूर के बारे में कुछ बात नहीं की?" बबूसा तगड़ी उलझन में था।

"ये ही कहा कि सदूर ग्रह पर तेरा मन लगेगा। वहां तेरे को अपने मिलेंगे।" धरा ने भोलेपन से कहा।

"इतना ही।"

"और भी बातें हैं, तू ही उससे पूछ ले बबूसा।" धरा ने मीठी मुस्कान के साथ कहा।

बबूसा धरा को कई पलों तक देखता रहा।

"क्या हुआ बबूसा?" धरा कह उठी।

"तू मुझसे कुछ छिपा तो नहीं रही?"

"मैं तेरे से छिपाऊंगी।" धरा ने चेहरे पर हैरानी समेट ली—"कैसी बात करता है बबूसा। चल, तेरे के उसके सामने कराती हूं।"

"इसकी जरूरत नहीं। सोमारा, तुम दोनों उसी कमरे में जाओ, मैं जादूगरनी के पास जा रहा हूं।"

"चल।" सोमारा ने धरा को देखा।

दोनों एक तरफ बढ़ गईं। धरा की निगाह हर तरफ जा रही थी। डोबू जाति के लोग अपने कार्यों में व्यस्त आ-जा रहे थे। बातें कर रहे थे। उनके बीच रानी ताशा के आदमी नजरें जमाए, सतर्कता से पहरा दे रहे थे।

"क्या कहा जादूगरनी ने?" सोमारा ने धरा से पूछा।

"बताया तो, उसने कहा सदूर पर तू जरूर जाना। वहां जाकर तेरे को अच्छा लगेगा।" धरा मुस्कराकर बोली।

"सदूर तेरे को जरूर अच्छा लगेगा।" सोमारा बोली—"पर मेरे को तो पृथ्वी ज्यादा अच्छी लगी। यहां के लोग...।"

"अब तेरे को सदूर भी ज्यादा अच्छा लगना शुरू हो जाएगा सोमारा।"
"अब क्या खास बात है?"
"क्योंकि।" धरा मुस्कराई, उसका निचला होंठ कुछ टेढ़ा-सा हुआ—"अब मैं भी सदूर पर रहूंगी।"
"ये तो कोई खास बात नहीं हुई...।"
"सदूर पर पहुंचकर तेरे को समझ आने लगेगी कि मेरा वहां पहुंच जाना ही, खास बात बन जाएगा।"
"तेरी बातें अजीब-सी हैं। तू तो ऐसे बात करती है जैसे मैं सदूर को जानती नहीं।"
"सही कहा।" धरा का निचला होंठ मुस्कराते हुए कुछ टेढ़ा हुआ—"मैं तेरे से ज्यादा सदूर को जानती हूं। वो मेरा है। मेरा वहां पर खास ठिकाना है। मेरा घर सदूर में ही है। पृथ्वी पर तो मैं वक्त बिताने आई थी।"
सोमारा ने तीखी निगाहों से धरा को देखकर कहा।
"तू तो पागलों जैसी बातें कर रही है जैसे सुदूर पर ही रहती आई हो।"
धरा मुस्कराती रही। निचला होंठ टेढ़ा ही रहा।

▭ ▭

बबूसा ने होम्बी के कमरे में प्रवेश किया और ठिठक गया।
होम्बी सोच भरी आंखों से अपने लम्बे काले बालों को हाथों से सहला रही थी। उसने नजरें घुमाकर बबूसा को देखा। बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी।
"बोल बबूसा।" होम्बी कह उठी।
"धरा से तेरा क्या वास्ता है जादूगरनी?"
"कुछ भी नहीं।"
"फिर तूने धरा से क्या बात की अकेले में?"
"वो तेरे जानने लायक नहीं।"
"क्यों?"
"अगर वो बातें तेरे को पता चल गईं तो धरा तेरी जान ले लेगी।"
बबूसा लम्बे पलों तक होम्बी को देखता रहा फिर कह उठा।
"वो मुझे नहीं मार सकती।"
"तू अभी उसकी ताकतों से अनजान है।"
"ताकतें?" बबूसा की आंखें सिकुड़ीं।
होम्बी खामोश रही।
"मुझे बता जादूगरनी, मैं सब कुछ जान लेना चहता हूं।"
"जिद मत कर बबूसा। मेरे बताते ही उसे आभास हो जाएगा और वो

तुझे इसलिए मार देगी कि सदूर पहुंचने से पहले उसका राज न खुल जाए। उसका मुकाबला करना तेरे बस का नहीं है।"

"ऐसा क्या है उसमें कि वो मेरे से ज्यादा ताकतवर है।"

होम्बी ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला फिर चुप हो गई।

"मुझे सब बता जादूगरनी।"

"तेरे को मुझ पर भरोसा नहीं रहा कि मैं सच कह रही हूं।"

"मुझे मालूम है जादूगरनी कि तेरी बात कभी भी झूठ नहीं होती।"

"तो मेरी बातों पर यकीन रख और मुझसे कुछ मत पूछ। इसी में तेरा और सबका भला है।"

"मैं तेरी बातें सुनकर बेचैन हो रहा हूं जादूगरनी।"

होम्बी खामोश रही।

"अब मुझे क्या करना चाहिए होम्बी?" कुछ पलों बाद बबूसा ने कहा।

"मैं तेरे को ज्यादा नहीं बता सकती, क्योंकि ये सदूर ग्रह की बातें हैं और जानकारी मुझे भी ज्यादा नहीं है। परंतु ये बत मन में बिठा ले कि उस लड़की की वजह से, सदूर पर तूफान उठने वाला है।"

"यकीन नहीं होता।" बबूसा ने परेशानी से कहा।

होम्बी कुछ क्षण बबूसा को देखती रही फिर मुस्करा पड़ी।

"ऐसा है तो मैं धरा को साथ नहीं ले जाता।" बबूसा ने कहा।

"अब तेरे बस में कुछ नहीं रहा। सदूर तक जाने में जो रुकावट बनेगा, उसे वो लड़की खत्म कर देगी। इतना आगे आकर वो वापस पलटने वाली नहीं। उसकी निगाहों में, उसका सदूर पर जाना बहुत जरूरी है।"

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि कभी वो सदूर ग्रह से ही पृथ्वी पर आई थी। अब तुम लोग पोपा में बैठकर सदूर जाओगे तो ये खेल भी उसकी ताकतों द्वारा है खेला गया है, इस खेल की शुरुआत तब हुई थी जब रानी ताशा ने, राजा देव को सदूर ग्रह से बाहर फेंक दिया था। वो सब कुछ इसी लड़की की ताकतों ने किया था।" होम्बी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये क्या कह रही हो जादूगरनी?" बबूसा हैरान हो गया।

होम्बी खामोश रही।

"तुम्हारा मतलब कि रानी ताशा ने अपने होशोहवास में राजा देव को ग्रह से बाहर नहीं फेंका था?" बबूसा के होंठों से निकला।

"सही समझा तू। तब रानी ताशा के सिर पर, इसी लड़की की सहायक ताकतें सवार थीं। रानी ताशा के तो पता भी नहीं था कि क्या हो रहा है। होश उसे तब आई, जब उसके सिर से, इस लड़की ताकतें हट गईं। तब

उसको पता चला कि उसने क्या कर डाला है। लेकिन वो सब तो उन ताकतों ने कराया था। इस वक्त की तैयारी इस लड़की ने ढाई सौ साल पहले ही, शुरू कर दी थी, ऐसे में न तो तू इसे पीछे हटा सकता है, न ही वो पीछे हटने वाली।"

"ले-लेकिन वो है कौन जादूगरनी? ऐसा क्यों कर रही है?" बबूसा हक्का-बक्का था।

"इस बारे में तेरे को स्पष्ट कुछ नहीं बताऊंगी, नहीं तो वे तुझे मार देगी। वो कत्लेआम मचा देगी। तेरे सब सवालों का जवाब देकर, तेरी जान जाने की वजह मैं नहीं बनना चाहती।" होम्बी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं तेरी बातें सुनकर हैरान हो रहा हूं, जादूगरनी।"

होम्बी चुप रही।

"इतना तो बता जादूगरनी कि अब मुझे क्या करना चाहिए?"

"मैं सलाह नहीं दूंगी। तेरे को अपने विवेक से काम लेना होगा। तेरे में तो समझ बहुत है बबूसा।"

बबूसा, होम्बी को देखता रहा फिर बोला।

"तो क्या उस धोखे के प्रति रानी ताशा निर्दोष है?"

"पूरी तरह। रानी ताशा तो इस बात को लेकर आज तक परेशान है कि उसने ये क्या कर डाला। वो सोच भी नहीं सकती कि कुछ ताकतों ने उससे ये काम करवाया था। इन बातों का आभास मुझे हाल ही में हुआ है।"

"परंतु मेरा फर्ज है कि राजा देव को उस वक्त की याद जरूर दिलाऊं। मैं राजा देव का सेवक हूं जादूगरनी।"

"जो तेरा विवेक कहता है वो कर। इतना जान ले कि रानी ताशा, राजा देव से सच्चा प्यार करती है।"

"मैं अपना फर्ज निभाऊंगा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"जब राजा देव के सब कुछ याद आ जाएगा, तब राजा देव से ये बात अवश्य कहूंगा कि रानी ताशा ने जब ये सब किया तो वो अपने होश में नहीं थी।"

होम्बी चुप रही।

"मैं सोमाथ को रास्ते से हटा देना चाहता हूं। क्या इस कोशिश में मुझे सफलता मिलेगी?" बबूसा ने पूछा।

होम्बी के झुर्रियों भरे चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

बबूसा, होम्बी के देखता रहा।

"जवाब दे होम्बी?"

"अब जा बबूसा। मुझे आराम करने दे।" होम्बी ने शांत स्वर में कहा।

बबूसा खामोशी के साथ बाहर निकल गया। परंतु परेशान लग रहा था

थी। होम्बी की बातें उसके दिमाग में घूम रही थीं। वो खुद को अजीब से जंजाल में फंसा महसूस कर रहा था। वो वापस उस कमरे जैसी जगह में पहुंचा जहां जगमोहन, मोना चौधरी, नगीना, धरा और सोमारा थी। धरा की निगाह बबूसा पर पड़ी तो वो मुस्कराई। निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"तुम क्या करते फिर रहे हो बबूसा?" जगमोहन ने पूछा।

"सोलाम के आने का इंतजार। रात को उसके आने पर ही विचार-विमर्श होगा।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा फिर धरा से कह उठा—"तुम मेरे पास आओ।" बबूसा उस जगह के एक कोने की तरफ बढ़ गया।

धरा उसके पास जा पहुंची।

दोनों सबसे हटकर नीचे जा बैठे। बबूसा की पैनी निगाह धरा पर थी।

तभी सोमारा भी वहां आकर बोली।

"तुम इसके साथ अकेले में क्या बात करने वाले हो बबूसा?" सोमारा बोली।

"बैठ जा सोमारा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

सोमारा भी बैठ गई।

बबूसा ने धरा को देखा। धरा के चेहरे पर टेढ़े होंठ वाली मुस्कान नाच रही थी।

"तेरी उस जादूगरनी ने तुझे कुछ नहीं बताया बबूसा।" धरा हंसकर कह उठी।

बबूसा ने धरा को गहरी निगाहों से देखा।

"क्या देखता है?" धरा ने आंखें नचाईं। निचला होंठ जरा से टेढ़ा हो गया—"कुछ समझ नहीं आया तुझे?"

"तेरे को पता है जादूगरनी ने मेरे से क्या बात की?"

"नहीं पता, पर मेरे बारे में कोई खास बात की होती तो मुझे पता चल जाता। एहसास हो जाता। तेरी जादूगरनी है समझदार। वो जानती है कि तेरे को कुछ बताया तो इसका अंजाम बहुत बुरा होगा।" धरा मुस्करा रही थी।

"तू है कौन?"

"कमाल है। मुझे नहीं पहचानता, मैं धरा हूं, तेरी दोस्त।"

"पर पहले तू ऐसी बातें नहीं करती थी।"

"जरूरत नहीं पड़ी ऐसी बातें करने की। पर अब वक्त नजदीक आता जा रहा है तो ये बातें शुरू हो गईं।"

"कैसी बातें?"

"सदूर की। मैं तो चुप थी परंतु तेरी जादूगरनी के सामने कुछ भी छिप न सका। उसे बहुत कुछ पता है।"

"पर उसने मुझे नहीं बताया।"

"बोला तो, अगर बता देती तो अंजाम बुरा होता।"

"उसने मुझे बताया कि तू सदूर की ही रहने वाली है और ढाई सौ साल पहले ही तेरी ताकतों ने तेरी वापसी का रास्ता तैयार करना शुरू कर दिया था। रानी ताशा ने राजा देव के साथ जो किया वो उससे तेरी ताकतों ने कराया।"

"तभी तो आज मुझे रास्ता मिल रहा है वापस सदूर पर जाने का। नहीं तो मैं कैसे वापस जाती?"

"क्या असलियत है तेरी?"

धरा हंसी। होंठ टेढ़ा हो गया।

"बहुत व्याकुल है मेरे बारे में जानने को?"

"क्यों न होऊंगा। बता कौन है तू और सदूर से तेरा क्या नाता है?" बबूसा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

सोमारा की निगाह धरा पर टिकी थी।

"तू चाहता है मैं तेरे को बता दूं?" धरा मुस्कराई।

"बता।"

"अभी नहीं।" धरा ने चंचल स्वर में कहा। निचला होंठ टेढ़ा था—"जब पोपा चल पड़ेगा तो रास्ते में बताऊंगी।"

"अभी क्यों नहीं?"

"नहीं तो नहीं। बाद में बताऊंगी।" धरा बोली—"अभी बताने का वक्त नहीं आया।"

"जादूगरनी कहती है कि तू सदूर पर पहुंचकर तूफान खड़ा कर देगी। मुसीबतें आ जाएंगी।"

"अच्छा।" धरा हंसी—"ऐसा कहा उसने। वैसे तेरी जादूगरनी है बहुत समझदार।"

बबूसा गम्भीर निगाहों से धरा को देखता रहा।

"ये कुछ नहीं बताएगी बबूसा। मैं इसकी आंखों में शैतानी देख रही हूं।" सोमारा बोली।

"तू सदूर की है?" बबूसा ने पूछा।

"हां—हूं। सदूर पर तो मेरी प्यारी दुनिया बसती है।" धरा ने कहा।

"फिर पृथ्वी पर कैसे आ गई?"

"आना पड़ा। मेरी ताकतों ने मेरी सहायता की। मुझे कहीं तो रहना था।" धरा गम्भीर हो गई।

"तू किन ताकतों की बात कर रही है?"

"सदूर ग्रह पर पहुंचकर तेरे को पता चल जाएगा।"

"मेरे से मिलना भी तेरी चाल थी?"

"मेरा डोबू जाति में आना, मेरी चाल का हिस्सा था। उसके बाद जो किया मेरी ताकतों ने किया। याद है मेरे पास डोबू जाति के वो पत्ते थे जो कि यहां की देवी की मूर्ति के सामने रखे थे। मैं वो पत्ते ले गई थी यहां से।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा'**)

"मेरी ताकतों ने मुझे एहसास करा दिया था तब कि उन पत्तों को ले जाने से मुझे, सदूर तक पहुंचने में सहायता मिलेगी। ऐसा ही हुआ, मैं मुम्बई पहुंची और उन पत्तों की गंध पाकर, तुमने मुझे ढूंढ़ निकाला। वो सब मेरी ताकतों का असर था। जिन्होंने मुझे तुम तक पहुंचाया और फिर मैं तुम्हारे साथ-साथ ही रही।"

"तुम मेरे लिए रहस्यमय बनती जा रही हो धरा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

धरा, बबूसा को देखती मुस्कराती रही।

"तुम मुझे कुछ भी नहीं बता रही।"

"पोपा में बैठकर बताऊंगी।"

"मैं तुम्हें अभी मार भी सकता हूं।" बबूसा ने एकाएक चुभते स्वर में कहा।

"तू कुछ नहीं कर सकता बबूसा।" धरा ने मुस्कराकर कहा—"तू मुझे नहीं मार सकता। जादूगरनी ने ये बात तेरे को नहीं बताई क्या? सदूर मेरी जगह है वहां मैं सही-सलामत पहुंच जाऊंगी। मेरी ताकतें मेरी सहायता कर रही हैं।"

बबूसा होंठ भींचकर उठा और वहां टहलने लगा। सोमारा पास पहुंचकर बोली।

"ये धरा कैसी बातें कर रही है बबूसा।"

बबूसा ने ठिठककर सोमारा से गम्भीर स्वर में कहा।

"ये धरा, वो धरा नहीं रही, जिसे मैं डोबू जाति के योद्धाओं से बचाता फिर रहा था। अब ये बहुत बदल गई है। मेरे खयल में अब इसका असली रूप सामने आने लगा है। ये कोई खतरनाक 'शय' है। अभी मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूं।"

"ये कौन हो सकती है, जो अपने को सदूर की वासी बताती है।" सोमारा के होंठ भिंच गए।

"ये ही तो मैं समझने की कोशिश कर रहा हूं।"

और अपनी जगह पर बैठी धरा दोनों को देखती मुस्कराती रही थी। निचला होंठ लटककर कुछ टेढ़ा-सा हुआ पड़ा था। उसकी आंखों में खतरनाक चमक लहरा रही थी, जैसे कह रही हो, देखना सदूर पर क्या होगा।

पोपा में प्रवेश करते ही देवराज चौहान खुशी से झूम उठा। जो चीज उसने ढाई सौ साल पहले बनाई थी और जिसका मजा नहीं ले सका था, वो सब कुछ आज फिर उसके सामने था। देवराज चौहान पोपा में भागता फिरा। सब कुछ उसे याद था कि क्या चीज—पोपा में कहां है। रानी ताशा उसके साथ थी और देवराज चौहान, रानी ताशा को पोपा में लगी चीजों के बारे में बताता जा रहा था। उसे इतना खुश पाकर रानी ताशा की आंखें छलछला उठीं। इस वक्त वो देवराज चौहान से कहीं ज्यादा खुश थी। इतनी खुश कि कभी-कभी उसे यकीन नहीं आ रहा था कि उसने राजा देव को वापस पा लिया है। पोपा में मौजूद लोग देवराज चौहान का प्रसन्नता से स्वागत कर रहे थे। वो भी खुश थे कि उन्हें राजा देव मिल गए। देवराज चौहान सबसे खुशी से मिल रहा था। रानी ताशा ने किलोरा से मुलाकात करवाते हुए कहा।

"ये किलोरा है। मेरा मुख्य सहायक और पोपा को भी ये ही चलाता है।"

"ओह किलोरा।" देवराज चौहान ने उसे गले से लगया—"पोपा, चलाने में कैसा है?"

"बहुत अच्छा है राजा देव।"

"कोई समस्या तो नहीं आती?"

"शुरू में कुछ समस्या थी परंतु जम्बरा ने उस समस्या को दूर कर दिया था।"

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"मुझे याद आ रहा है कि पोपा के कुछ लीवर अटक रहे थे उड़ान के दौरान।" देवराज चौहान के स्वर में एकाएक उत्साह भर आया था—"मैंने जम्बरा से नये लीवर तैयार करने को कहा और किले की तरफ, तुमसे मिलने चल पड़ा था।"

"ओह देव।" रानी ताशा फौरन कह उठी—"उन बातों को छोड़ो... अब की बात...।"

"ताशा। मेरी प्यारी ताशा।" देवराज चौहान एकाएक उलझन में पड़ गया—"मैं उस दिन बग्गी में बैठकर किले की तरफ चल पड़ा था। पर मुझे आगे की बात याद नहीं आ रही कि मैं तुमसे मिला कब था और...।"

रानी ताशा के चेहरे पर बेचैनी दौड़ी, वो देवराज चौहान का हाथ पकड़ कर बोली।

"मेरे देव। अब हमें खुश होना चाहिए कि हमने एक-दूसरे के 'पा' लिया।" स्वर में मिठास थी।

देवराज चौहान ने मुस्कराकर रानी ताशा को देखा।

"हां ताशा। हम मिल गए। इससे अच्छी बात और क्या होगी।"

"रानी ताशा आपको ढूंढ़ निकालने के लिए बहुत बेचैन थी राजा देव।" किलोरा कह उठा।

"मैं समझ सकता हूं।" देवराज चौहान ने रानी ताशा के खूबसूरत चेहरे को देखा।

रानी ताशा प्यार भरी निगाहों से देवराज चौहान को देख रही थी।

"मैं बहुत खुश हूं ताशा तुम्हें पाकर।"

"मेर भाग्य अच्छा है कि तुम मुझे मिल गए देव।" रानी ताशा भावुक हो उठी।

तभी किलोरा ने कहा।

"राजा देव। अभी भी पोपा पर ऐसी कई चीजें हैं, जिन्हें हम इस्तेमाल करने की स्थिति में नहीं हैं।"

"ऐसा क्या है?"

"आइए मैं आपको दिखाता हूं।" किलोरा ने आगे बढ़ते हुए कहा।

रानी ताशा और देवराज चौहान उसके पीछे चल पड़े।

"तुमने पोपा बनाकर कितना अच्छा किया देव।" रानी ताशा हाथ थामे, चलते हुए कह उठी।

"तुम्हारे लिए तो बनाया था ताशा कि हम दोनों पोपा में बैठकर बादलों के पार की सैर किया करेंगे। किसी ग्रह पर और भी लोग रहते हैं हम उनसे मिलेंगे। अपने ग्रह पर बुलाएंगे उन्हें। क्या जम्बरा ने ऐसा कुछ किया?"

"जम्बरा ने ऐसा करने को कहा तो था लेकिन मैंने इंकार कर दिया।

"क्यों?"

"क्योंकि तब तुम मेरे पास नहीं थे देव। तुम्हारे बिना मेरा मन कहीं भी नहीं लगा। परंतु जम्बरा अपने कामों में लगा रहा। उसने अपने जैसे वैज्ञानिक और भी तैयार कर लिए। उसने रोशनी के बक्से बनाए। उसने वाहन बनाए। और भी चीजों का निर्माण वो और उसके साथी करते रहे। आज सदूर का रूप पूरी तरह बदल चुका है। जम्बरा ईमानदार और काबिल था, इसी कारण महापंडित उसका जन्म बार-बार कराता रहा। जम्बरा ने सदूर को संभालने में मेरा बहुत साथ दिया। इस वक्त सदूर को उसी के हवाले करके, पृथ्वी पर आई थी।"

"जम्बरा ने मुझे याद किया?"

"बहुत याद किया। वो कहता था कि अगर राजा देव यहां होते तो अब तक जाने क्या-क्या चीजें बना चुके होते। वो कहता है मैं इतना नहीं सोच सकता निर्माण के बारे में, जितना राजा देव सोच लेते थे। पोपा बनाने के

बारे में भी आप ही ने सोचा देव और जम्बरा शुरू-शुरू में तो अपकी सोच से सहमत नहीं था। लेकिन वो अक्सर कहता है कि राजा देव की वजह से ही पोपा तैयार हो सका। जे रोशनी के डिब्बे जम्बरा ने बनाए, उसके बारे में भी जम्बरा कहता है कि ये सब राजा देव की सोचों का ही नतीजा है।" रानी ताशा ने कहा।

"हां। मैं जम्बरा को रोशनी के डिब्बे बनाने के बारे में बताया करता था। मैं मशालों के प्रकाश से छुटकारा पाना चाहता था। मैं दूसरी तरह की रोशनी का निर्माण करना चाहता था।" देवराज चौहान ने कहा।

"अब तो आप सदूर को और भी शानदार बना देंगे।"

"अब ऐसा क्या हो गया जो...।"

"पृथ्वी ग्रह आपका बहुत देखा भाला है। ऐसी बहुत-सी चीजें पृथ्वी पर होंगी, जो सदूर पर नहीं हैं। आप उन चीजों का निर्माण करेंगे तो सदूर कितना शानदार होता चला जाएगा।" रानी ताशा ने खुशी से कहा।

"हां। ताशा। मैं अपने सदूर को और भी अच्छा बना दूंगा।"

दोनों किलोरा के पीछे चलते जा रहे थे।

किलोरा इस वक्त सुरंग जैसी राहदारी में आगे बढ़ा जा रहा था। जल्दी ही वे खत्म हो गईं और वे पोपा के पीछे वाले खुले हिस्से में ज़ा पहुंचे। यहां कमरे भी बने हुए थे और काफी खुली जगह थी। किलोरा दीवार पास जाकर रुका। वहां पर चार फुट चौड़ा और आठ फुट ऊंचा दरवाजा नजर आ रहा था। उसके पास ही दीवार पर पीले रंगों के बारह बटन लगे थे। देवरज चौहान की निगाह उन बटनों पर जा टिकी। होंठ सिकुड़ गए।

"राजा देव। ये दरवाजा हम आज तक नहीं खोल सके।" किलोरा कह उठा।

"बबूसा इस दरवाजे को खोलना जानता है। मैंने उसे बताया था कि किन बटनों को क्रमवार, कितनी बार दबाने पर ये दरवाजा खुलेगा।" देवराज चौहान ने रानी ताशा को देखा—"बबूसा से नहीं पूछा ताशा?"

"पूछा था। वे मेरे से नाराज है, शायद इसीलिए उसने कहा था कि उसे इस बारे में पता नहीं है।" रानी ताशा बोली।

"कई बातें जम्बरा को नहीं बता सका था, क्योंकि तब हम सब व्यस्त चल रहे थे। जब मैं किले की तरफ रवाना हुआ था तो जम्बरा तब भी पोपा के निर्माण के कामों में व्यस्त था। वो उसके हिस्से के काम थे। लेकिन बबूसा पोपा के निर्माण में बराबर मेरे साथ रहा और मैं उसे सब कुछ बताता रहा था।" कहने के साथ ही देवराज चौहन आगे बढ़ा और पीले बटनों के पास पहुंच कर उंगली से उन बटनों को तेजी से दबाने लगा। कई बटन एक बार दबाया तो कोई दो-तीन बार।

इस काम से फुर्सत पाकर देवराज चौहान हटा ही था कि एकाएक दरवाजे में हलचल पैदा हुई और देखते ही देखते बाहर की तरफ खुलने लगा। इसके साथ ही उस मोटे दरवाजे से सीढ़ियां निकलीं और नीचे की तरफ फैलती चली गईं। दरवाजा पूरा खुल गया और सीढ़ियां जमीन पर जा लगीं।

सामने बर्फ का पहाड़ दिखा। किलोरा और रानी ताशा मुस्करा पड़ीं।

किलोरा ने फौरन आगे पहुंचकर बाहर झांका।

ठंडी हवा का झोंका पोपा के भीतर प्रवेश कर आया।

"तो ये दरवाजा भी बाहर जाने का रास्ता है।" किलोरा कह उठा।

"हां। पोपा से बाहर निकलने के दो रास्ते हैं आगे भी पीछे भी।" देवराज चौहान बोला।

"हमें ये बात पता नहीं थी।" रानी ताशा ने मुस्कराकर कहा।

"राजा देव।" किलोरा पलटकर बोला—"इस दरवाजे के बटनों के बारे में मुझे समझा दीजिए।"

"अब मैं तुम लोगों के साथ ही हूं।" देवराज चौहान ने कहा—"सब बता दूंगा।" उसके बाद देवराज चौहान ने उन पीले बटनों के पुनः कई बार दबाया तो दरवाजे की सीढ़ियां दरवाजे में सिमट आईं और दरवाजा बंद होता चला गया।

"ऐसी और भी दो-तीन बातें हैं जो आप ही हल कर सकते...।"

"किलोरा।" रानी ताशा कह उठी—"हम लम्बे सफर से आए हैं, राजा देव को आराम करना है।"

"ठीक है रानी ताशा।" किलोरा ने कहा—"मैं राजा देव से फिर बात कर लूंगा।"

किलोरा चला गया।

"हम कमरे में चलें देव?"

"पहले मैं सारा पोपा देखना चाहूंगा।"

"जरूर देव। मैं भी तुम्हारे साथ हूं।"

देवराज चौहान, रानी ताशा के साथ पोपा का पूरा चक्कर लगाने लगा। सब कुछ देखकर देवराज चौहान खुश हो रहा था। दोनों ने एक-दूसरे का हाथ थाम रखा था। पोपा को देखते देवराज चौहान उत्साह से भरा था।

"अपने देव के साथ पोपा में टहलते मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।" रानी ताशा कह उठी।

"मुझे भी ताशा। तुम नहीं समझ सकतीं, पोपा बनाना मेरा सपना था।" देवराज चौहान खुशी से कह उठा—"परंतु अभी तक मैंने इसकी सैर नहीं की कि बादलों में ये कैसी उड़ान भरता है।"

"बहुत अच्छी उड़ान भरता है देव। जिस रफ्तार से ये बादलों के पार जाता है, उस रफ्तार का पीछा, नजरें भी नहीं कर सकतीं। अद्भुत चीज है ये। आपने बहुत शानदार बनाया है पोपा को।" रानी ताशा खुशी से कह उठी।

घंटा भर देवराज चौहान पोपा को ही भीतर से देखता रहा।

"तुम जानती हो ताशा।" देवराज चौहान ने पोपा देखने के बाद कहा—"मैंने पोपा को छः हिस्सों में बांटकर बनाया है। उड़ान के दौरान अगर पोपा के किसी हिस्से में खराबी आ जाती है और वो खराबी ठीक नहीं हो पाती और पोपा को उससे खतरा पैदा हो जाता है तो चालक कक्ष में बैठे-बैठे, वहां के सिस्टम से पोपा के खराब हिस्से को अलग करके फेंका जा सकता है।"

"जम्बरा ने ये बात बता रखी है परंतु उसका कहना है कि उसे उस सिस्टम की जानकारी नहीं है। राजा देव ने उस सिस्टम का निर्माण किया था, परंतु उन्हें बताने का वक्त नहीं मिला।" रानी ताशा ने कहा।

"हां। मैंने जम्बरा को उस दिन बुलाया था, उस सिस्टम के बारे में बताने को, परंतु वो अपने हिस्से के कामों को करने में इतना व्यस्त था कि उसे आने में वक्त लग गया, जबकि तब मैं किले की तरफ रवाना होने वाला था। तब मैंने उससे कहा था कि किले से वापस आकर बताऊंगा।" देवराज चौहान कह उठा।

रानी ताशा, देवराज चौहान से आ सटी।

देवराज चौहान ने प्यार भरे अंदाज में रानी ताशा को बांहों के घेरे में ले लिया।

"मेरी ताशा।" देवराज चौहान की आवाज कांप उठी।

"मेरे देव।" रानी ताशा ने देवराज चौहान की छाती को चूमा—"कमरे में आराम करते हैं।"

"पहले मैं महापंडित और जम्बरा से बात करना चाहता हूं।"

"आओ। वो खुश हो जाएंगे राजा देव से बात करके।"

रानी ताशा और राजा देव पोपा के भीतर के रास्तों को तय करके पांच मिनट बाद वे उस हाल में जा पहुंचे, जहां एक तरफ बने काउंटर पर स्क्रीन लगी थी और सामने ढेरों बटन लगे थे। वहां दीवार के साथ रखी कुर्सियों पर रानी ताशा के पांच आदमी बातें कर रहे थे और उन्हें आया पाकर, फौरन उठ खड़े हुए थे।

"महापंडित से सम्पर्क बनाओ।" रानी ताशा ने एक से कहा।

"ये काम मैं खुद कर लूंगा।" आगे बढ़ते देवराज चौहान ने कहा।

देवराज चौहान बटनों-स्विच और लीवरों में व्यस्त हो गया। हैडफोन

कानों पर लगा लिया था। रानी ताशा पास ही रही। लम्बी कोशिश के बाद भी महापंडित से सम्पर्क नहीं हो सका।

"महापंडित के यंत्रों में कोई समस्या है।" देवराज चौहान बोला—"उससे सम्पर्क नहीं हो पा रहा।"

"महापंडित के यंत्रों में कई बार ऐसी समस्याएं आ जाती हैं।" रानी ताशा बोली।

देवराज चौहान ने जम्बरा से सम्पर्क बनाया तो, तुरंत बात हो गई।

"जम्बरा बात कर रहा है।" उधर से आवाज आई।

देवराज चौहान के चेहरे पर मुस्कान फैल गई। जम्बरा की आवाज उसने पहचान ली थी।

"जम्बरा, तुम कैसे हो जम्बरा?" देवराज चौहान की आवाज कांप उठी।

"कौन—राजा देव तो नहीं बोल रहे?" जम्बरा की आवाज में खुशी के भाव थे।

"हां जम्बरा, मैं राजा देव हूं। मैंने तुम्हारी आवाज पहचान ली है।" देवराज चौहान प्रसन्नता से कह उठा।

"ओह राजा देव, मैं कितना खुशनसीब हूं कि मैं आपसे फिर बात कर रहा हूं। आप कैसे हैं राजा देव। जैसे पहले दिखते थे, क्या अब भी वैसे दिखते हैं। मैं आपको पहचान लूंगा न?" जम्बरा के स्वर में कम्पन भरा था।

"हम जल्दी मिलेंगे जम्बरा। मैं वापस सदूर पर आने वाला हूं।"

"सच राजा देव। मैं आपको बता नहीं सकता कि मुझे कितनी खुशी हो रही है आपसे बात करके। मैं तो सोच रहा था कि शायद रानी ताशा आपको तलाश न कर सके। अब तक आप पृथ्वी ग्रह पर रहते रहे हैं?"

"हां जम्बरा...।"

"पृथ्वी ग्रह कैसा है?"

"बहुत ही शानदार। बहुत ही बढ़िया।" देवराज चौहान मुस्कराकर बोला—"तुम्हारी सोच से कहीं ज्यादा अच्छा। मुझे पता लगा है कि रोशनी के डिब्बे बना लिए हैं तुमने। अब रोशनी के लिए मशालें इस्तेमाल नहीं होतीं?"

"हां राजा देव। बिजली का छोटा-सा बक्सा हर घर में लगा है। वो ही रोशनी देते हैं। किले पर भी ऐसा ही है। सदूर अब पहले जैसा नहीं रहा। यहां पर बग्गी की जगह छोटे-छोटे वाहन चलते हैं। दो लोग उसमें बैठ सकते हैं। मैंने आपके लिए भी एक ऐसा वाहन बनाया है, जिसमें छः लोग बैठ सकते हैं। मैंने एक उड़ने वाले वाहन का निर्माण भी किया है। परंतु वो सदूर के लोगों के लिए नहीं बनाया। अगर उड़ने वाला वाहन सबके पास होगा तो वो हवा में ही एक-दूसरे से टकराकर नीचे गिर कर मर सकते हैं। अब

आप आ रहे हैं तो इसका फैसला आप ही कीजिएगा। सदूर के रास्ते पक्के और शानदार बना दिए गए हैं। यहां अब धातु की तरह सिक्के चलते हैं। मैंने सिक्कों के लिए एक नई तरह के पदार्थ की ईजाद की है। आप सदूर को पहचान ही नहीं पाएंगे राजा देव।" उत्साह में भरी थी जम्बरा की आवाज।

देवराज चौहान के चेहरे पर मुस्कान थी।

"तुमने सदूर के लिए बहुत मेहनत की है जम्बरा।" देवराज चौहान ने कहा।

"राजा देव आप यहां होते तो जाने किस-किस, कैसी चीजों का निर्माण कर देते। मैंने तो कुछ भी नहीं किया।" जम्बरा ने तेज स्वर में कहा—"क्या पृथ्वी पर भी ऐसी चीजें हैं?"

"बहुत। पृथ्वी हमारे सदूर से बहुत ज्यादा आगे है।"

"फिर तो आप सदूर पर आकर कई नई चीजों का निर्माण कर देंगे जो पृथ्वी पर आपने देखी हैं।"

"तुम्हारी सहायता के बिना मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा जम्बरा।"

"मैं तो हर वक्त आपकी सेवा में मौजूद हूं। मुझे अभी भी यकीन नहीं आ रहा कि रानी ताशा ने आपको ढूंढ़ निकाला है।"

"हम जल्दी मिलेंगे जम्बरा।"

"पृथ्वी से पोपा में कब रवाना हो रहे हैं?"

"बहुत जल्दी। अब यहां कोई काम नहीं बचा।"

"मैं आपके आने की खुशी में किले को रोशनी से सजा दूंगा राजा देव।"

"शुक्रिया। महापंडित से सम्पर्क नहीं हो पा रहा?" देवराज चौहान ने पूछा।

"उसकी तारों में कुछ समस्या आ रही है। वो उन्हें ठीक कर रहा है। अब तो महापंडित ने बहुत बड़ी बिल्डिंग का निर्माण कर लिया है। वो उसी में रहता है। मैं आपके लिए नया किला बनाना चाहता था, परंतु रानी ताशा ने इंकार कर दिया कि वो उसी किले में रहेंगी, जहां वो रहती रही हैं। लेकिन आप जरूर चाहेंगे कि नए किले का निर्माण हो जो कि पहले किले से कहीं ज्यादा लाजवाब होगा।" जम्बरा बहुत ज्यादा उत्साह में था।

"हां जम्बरा। हम बहुत शानदार किला बनाएंगे।" देवराज चौहान ने मुस्कराकर कहा।

पास खड़ी रानी ताशा के चेहरे पर मीठी मुस्कान तैर गई।

बातें समाप्त करके देवराज चौहान ने हैडफोन उतारकर रखा।

"मुझे कितना अच्छा लग रहा है देव कि तुम मेरे करीब हो।" रानी ताशा की आंखें भर आईं—"जम्बरा ने बहुत कहा कि नया किला बनाया जाए, परंतु पुराने किले में तुम्हारी यादें थीं देव। जिनके सहारे मैं जी रही थी। मैं

उन्हें अपने से दूर नहीं करना चाहती थी। अब तुम आ गए हो तो, जो अच्छा लगे वो करो। मुझे तो बस तुम्हारा साथ चाहिए।"

देवराज चौहान ने रानी ताशा का हाथ थाम लिया। प्यार भरी निगाहों से उसे देखा।

"मुझे भी तो तुम्हारा साथ चाहिए ताशा। तुम्हारे बिना मैं सांसें भी नहीं लेना चाहूंगा।"

"अब हमारा वक्त बहुत अच्छा निकलेगा देव।"

"हां, बहुत अच्छा होगा आने वाला वक्त।"

तभी हम्बस ने वहां प्रवेश किया और पास आकर बोला।

"राजा देव, आपके वापस आ जाने से मुझे बहुत खुशी हुई।"

देवराज चौहान ने हम्बस को देखते हुए कहा।

"मैंने तुम्हें पहचाना नहीं?"

"देव।" रानी ताशा कह उठी—"ये हम्बस है। किलोरा के बाद, पोपा का महत्त्वपूर्ण आदमी।"

देवराज चौहान ने, हम्बस को गले लगाया।

फिर हम्बस ने रानी ताशा से कहा।

"किलोरा कह रहा था कि मुझे कुछ साथियों के साथ डोबू जाति में छोड़कर पोपा चला जाए और हम डोबू जाति को चलाएंगे।"

"पहले ऐसा ही सोचा था हम्बस।" रानी ताशा ने कहा—"परंतु अब विचार बदल गया है। सदूर पर पहुंचकर राजा देव इतने व्यस्त हो जाएंगे कि शायद हम दोबारा पृथ्वी पर न आ सकें। आएं तो जाने कब आएं। ऐसे में राजा देव ने फैसला लिया है कि हम सब ही वापस सदूर चले जाएंगे। यहां कोई नहीं रहेगा।"

"अगर कभी दोबारा हमें पृथ्वी पर आना हुआ तो पोपा कहां पर उतरेगा। हम कहां पर रहेंगे?" हम्बस बोला।

रानी ताशा ने देवराज चौहान को देखा।

"आप इस बात का जवाब दीजिए राजा देव।" रानी ताशा ने कहा।

"पोपा यहीं डोबू जाति में उतरेगा।" देवराज चौहान बोला।

"परंतु डोबू जाति वाले एतराज कर सकते हैं। क्योंकि हमने यहां कई महत्त्वपूर्ण लोगों की जान ली है।"

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव उभरे फिर कह उठा।

"इस समस्या का हल निकल जाएगा। मैं बबूसा से बात करूंगा।"

"तो ये बात पक्की है कि हममें से यहां कोई नहीं रहेगा।" रानी ताशा बोली।

देवराज चौहान ने सहमति से सिर हिला दिया।

"ये बात आप इसलिए कह रहे हैं कि क्योंकि बबूसा नहीं चाहता डोबू जाति बंधक रहे हमारी।"

"डोबू जाति को कोई तकलीफ देना गलत होगा। उन्हें बंधक बना लेना, धोखा देने जैसा है। वो तुम्हारे दोस्त रहे हैं। अब तक जो हो गया, वो तभी ठीक होगा जब हम डोबू जाति को आजाद कर दें।" देवराज चौहान ने कहा—"वैसे भी सदूर पहुंचने के बाद हमें इतना वक्त ही नहीं मिलेगा कि हम पलटकर पृथ्वी की तरफ देख सकें। मुझे सदूर में ऐसी बहुत चीजों का निर्माण करना है जो पृथ्वी पर है पर सदूर पर नहीं है। हम सब ही यहां से सदूर जाएंगे ताशा।"

"सुन लिया हम्बस।"

"जी रानी ताशा। कब चलेंगे हम यहां से?"

रानी ताशा ने देवराज चौहान को देखा।

"जल्दी ही यहां से चल देंगे हम्बस।" देवराज चौहान ने कहा—"यहां अब हमें कोई काम नहीं रहा।"

हम्बस चला गया।

रानी ताशा ने मधुर मुस्कान से देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान मुस्कराया। नजरों में प्यार भरा था।

"कमरे में चलकर आराम करते हैं। मैं आपका साथ पाने को बेचैन हूं।" रानी ताशा का स्वर लरज-सा रहा था।

"आओ ताशा।" देवराज चौहान ने ताशा का हाथ थामा—"अब मैं तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दूंगा।" इसके साथ ही देवराज चौहान उसकी नीली आंखों में, उसके चेहरे की खूबसूरती को टकटकी बांधे देखने लगा।

"इस तरह देखकर फिर मुझे तंग करने लगे हो देव।" रानी ताशा ने शरारत से कहा—"अब बस भी करो।"

देवराज चौहान के होंठों पर मधुर मुस्कान नाच उठी।

▭ ▭

बबूसा कमरे में नहीं था।

धरा कुछ अलग बैठी थी।

सोमारा एक तरफ दीवार से टेक लगाए अकेले ही आंखें बंद किए बैठी थी कि मोना चौधरी जगमोहन और नगीना के पास से उठी और सोमारा के पास जा बैठी। सोमारा ने आंखें खोलीं।

"क्या बात है?" मोना चौधरी की निगाह सोमारा पर थी।

सोमारा ने मोना चौधरी को देखा। कहा कुछ नहीं।

"मुझे बताओ क्या बात है?" मोना चौधरी ने पुनः कहा।

"मैं समझ नहीं पाई कि तुम क्या कह रही हो?" सोमारा बोली।

"बबूसा को अभी मैंने परेशान देखा था।" मोना चौधरी ने कुछ दूर बैठी धरा पर नजर मारी—"जब तुम दोनों धरा से बातें कर रहे थे। मुझे बताओ क्या हो रहा है?"

सोमारा चुप रही।

"धरा अभी कहां गई थी?"

"जादूगरनी के पास।"

"कौन जादूगरनी?"

"डोबू जाति की है वो। सब उसे जादूगरनी कहते हैं। नाम उसका होम्बी है। आने वाले वक्त का उसे पहले ही आभास हो जाता है। उसने बबूसा से कहकर धरा को अपने पास बुलाया था।"

"उसे भला धरा से क्या काम?"

"मुझे क्या पता।" सोमारा ने बेमन से कहा।

"अब तो पता चल गया होगा कि उसने धरा से क्या बातें कीं?" मोना चौधरी ने कहा।

"नहीं पता। जादूगरनी ने बबूसा को बाहर जाने को कह दिया था।"

"ठीक है, पर तुम और बबूसा क्यों परेशान लग रहे हो?"

"मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहती।"

"मुझे बताओ शायद मैं कुछ बता सकूं, जिन बातों में तुम लोग उलझे हो।"

"मेरे से तुम कुछ भी नहीं जान सकोगी।" सोमारा ने स्पष्ट कहा।

"तो कौन बताएगा मुझे?"

"धरा से पूछ लो, पर वो कुछ भी बताने वाली नहीं।" सोमारा का स्वर शांत था।

"ऐसी क्या बात है जो तुम बताना नहीं चाहतीं और धरा भी बताने वाली नहीं।" मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े।

सोमारा ने कुछ नहीं कहा।

मोना चौधरी उठी और धरा की तरफ बढ़ गई।

धरा की निगाह मोना चौधरी पर थी। वो मुस्कराई, निचला होंठ टेढ़ा हो गया। मोना चौधरी के पास आते ही वो सामान्य दिखने लगी। उसके पास बैठती मोना चौधरी कह उठी।

"बबूसा और सोमारा से तुम्हारी क्या बात हुई थी धरा?"

"क्यों?" धरा मुस्करा पड़ी—"सोमारा ने नहीं बताया?"

"तभी तो तुमसे पूछ रही हूं।"

धरा हौले से हंसी फिर कह उठी।

"कोई बात नहीं है।"

"बात तो जरूर है। बबूसा और सोमारा गम्भीर दिख रहे हैं। बबूसा ज्यादा परेशान था। पर तुम सामान्य हो।"

"तो तू जानना चाहती है कि बबूसा और सोमारा क्यों परेशान है।" धरा मुस्कराई। निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"हां।"

"अभी नहीं बताऊंगी।" धरा बोली—"जब सदूर पर पहुंच जाऊंगी, तब बताऊंगी।"

"तब क्यों—अभी क्यों नहीं?"

"वो सदूर वो वास्ता रखती बात है न, इसलिए...।" धरा सहज स्वर में बोली।

"तू मुझे टाल रही है।"

"नहीं मोना चौधरी। मैं तो तेरे को स्पष्ट बता रही हूं कि कब बताऊंगी।"

मोना चौधरी कुछ पल धरा को देखती रही फिर बोली।

"तू यहां क्यों बैठी है। हमारे साथ वहां बैठ।"

"मुझे अकेला रहना ही अच्छा लगता है। जब जरूरत थी तो तुम लोगों के साथ थी।"

"तुम्हारी बातें अजीब-सी होने लगी हैं धरा।"

धरा मुस्कराई। मोना चौधरी को देखती रही। निचला होंठ थोड़ा-सा टेढ़ा हो गया था। मोना चौधरी ने गर्दन घुमाकर सोमारा को देखा, वो इधर ही देख रही थी। मोना चौधरी उठी और जगमोहन, नगीना की तरफ बढ़ गई। दोनों की निगाह पहले से ही मोना चौधरी पर थी। वो जब पास बैठी तो नगीना ने पूछा।

"क्या हुआ?"

"धरा, सोमारा और बबूसा में कोई बात हुई है।" मोना चौधरी बोली—"उस बात के बाद सोमारा और बबूसा परेशान हो गए हैं। मैंने सोमारा से जानना चाहा कि क्या बात है तो उसने कुछ नहीं बताया। धरा कहती है कि सदूर पर पहुंचकर बताऊंगी कि क्या बात है। कुछ अजीब-सा चल रहा है।"

नगीना और जगमोहन की निगाह धरा की तरफ उठी।

"धरा बेहद शांत-सी बैठी थी।

"धरा हमसे दूर क्यों बैठी है?" एकाएक जगमोहन ने कहा।

"वो कहती है मुझे अकेला रहना अच्छा लगता है।" मोना चौधरी ने बताया।

"वो ऐसा कैसे कह सकती है।" जगमोहन कहते हुए उठा और धरा के पास जा पहुंचा—"तुम अकेले क्यों बैठी हो?"

"मेरी मर्जी।" धरा ने सिर हिलाया।

"मोना चौधरी कहती है कि कोई बात है, पर तुम बता नहीं रहीं। बबूसा, सोमारा से क्या बात हुई तुम्हारी?"

"वो अभी बताने वाली बात नहीं है।"

"क्यों?"

"बबूसा और सोमारा से पूछ लो, मेरे से ही क्यों पूछ रहे हो।"

"तुम मुझे बदली-बदली सी लग रही हो।"

"अच्छा।" धरा के मुस्कराते ही नीचे वाला होंठ टेढ़ा हो गया।

जगमोहन ने गहरी निगाहों से उसे देखा। फिर कहा।

"पहले तो तुम बहुत प्यार से पेश आती थी। यहां आते ही तुम्हें क्या हो गया?"

"पहले।" धरा हौले-से हंसी—"मुझे अपना मतलब निकालना था। शराफत दिखानी जरूरी थी।"

"मैं तुम्हारी बात नहीं समझा।"

"अब मतलब निकल गया। मेरा रास्ता साफ हो गया।"

"कैसा रास्ता?"

"सदूर पर जाने का। वो ही रास्ता बनाने को तो मैं तुम सबके साथ जुड़ी हुई थी।"

"तुम तो सदूर ग्रह पर जाना ही नहीं चाहती थी। वो तो हमारे कहने पर जाने को तैयार हुई हो और...।"

"सब दिखावा था। बोला तो मैं अपना रास्ता तैयार कर रही थी जो कि हो गया।"

"मैं।" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं—"तुम्हारी बातें नहीं समझ पा रहा।"

"वो तो तभी समझेगा जब मैं सीधी बात कहूंगी।" धरा मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा-सा दिखने लगा।

"तो सीधी बात कह...।"

"अभी नहीं। सदूर पर पहुंचने के बाद। अभी मेरा चुप रहना ही बेहतर है।"

"ऐसी बातें करके तुम अपने को रहस्यमय बना रही हो।"

"अभी तुम कुछ नहीं समझोगे। इस बारे में सदूर पर पहुंच कर बात करेंगे।"

"तुम सदूर पर क्यों जाना चाहती हो?"

"अपने घर कौन नहीं जाना चाहता। वहां मेरा घर है। मेरा सब कुछ है। वहां तो मैं जरूर जाऊंगी।" कहते हुए धरा गर्दन हिलाने लगी—"मुझे अकेला छोड़ दे। बहुत ताने-बाने बुनने हैं मैंने और वक्त कम है मेरे पास।"

उलझन में फंसा जगमोहन वहां से हटकर सोमारा के पास पहुंचा।

"धरा कैसी अजीब-सी बात कह रही है।"

"क्या कहा?"

"कहती है सदूर पर मेरा घर है। मेरा सब कुछ है।"

"उसकी बातों की परवाह मत करो।" सोमारा बात टालते हुए बोली—"वो इसी तरह की बहकी-बहकी बातें कर रही है।"

▭ ▭

रानी ताशा और देवराज चौहान के चेहरे पर मस्ती के भाव दिख रहे थे। वो पोपा की पहली मंजिल पर, पोपा के बीचोबीच स्थित, ऐसे कमरे में थे जिसे रानी ताशा इस्तेमाल करती थी। बाहर शाम का अंधेरा फैलने लगा था। कड़ाके की सर्दी थी परंतु पोपा के भीतर का मौसम सामान्य था। वे जबसे इस कमरे में आए थे तभी से वे एक-दूसरे में गुम, प्यार के पलों में खोए हुए थे। अब वे फुर्सत में थे। एक-दूसरे का साथ पा लेने की वजह से वे खुश थे। उनकी बातें ही खत्म न हो पा रही थीं। एक-दूसरे को देखते रहने के बावजूद भी उनके दिल न भर रहे थे। वे आंखें खोले ऐसे सपनों में खोए हुए थे कि जिनका कोई नाम नहीं था। प्यार के ये पल सब पर आते हैं सब पर ऐसा वक्त आता है, परंतु इन दोनों की दुनिया एक-दूसरे में बसी थी। दोनों का प्यार पंख लगाकर, लम्बी उड़ान पर था।

"ताशा।" देवराज चौहान ने रानी ताशा का हाथ चूमते हुए कहा—"तुम अब मेरे पास ही रहना।"

"मेरे देव।" रानी ताशा ने प्यार में डूबे स्वर में कहा—"अब मैं तुम्हें कभी भी अकेला नहीं छोड़ने वाली।"

"मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

"मैं भी कहां तुम्हारे बिना जी सकूंगी। तुमसे बिछुड़कर मेरा जो हाल हुआ, वो तो मैं ही जानती हूं देव। तुम तो पृथ्वी पर जन्म लेने लगे। सदूर को भूल गए, परंतु मैं तो सदूर पर जन्म ले रही थी। मुझे तो सब याद था। मैं तो तुम्हें कभी नहीं भूली। तुम्हारी याद हर पल सताती रही मुझे। मैंने बहुत कष्ट उठाकर वो समय बिताया है। अब तुम्हें किसी भी हाल में नजरों से दूर नहीं होने दूंगी। तुम्हारे बिना अब मैं पागल हो जाऊंगी देव।"

"ऐसा नहीं होगा ताशा। मैं हमेशा तुम्हारे पास रहूंगा।"

"हम इसी तरह एक-दूसरे को प्यार करेंगे देव। बेपनाह मुहब्बत।"

"हां ताशा।" देवराज चौहान का स्वर कांप उठा—"हम संग-संग जिएंगे।"

"सदूर पर हमारा पहले जैसा वक्त लौट आएगा। हम...।"

"मैं सदूर पर भव्य किला बनवाऊंगा ताशा। बहुत ही शानदार। बहुत ही बड़ा। हम वहां रहा करेंगे।"

"तुम जहां कहोगे, वहीं रहूंगी। जहां तुम खुश, वहीं मैं खुश रहूंगी।" ताशा की आंखें भर आईं।

"तुम कितनी अच्छी हो ताशा।"

"मुझसे अच्छे तो आप हैं। मैं तो आपके सामने कुछ भी नहीं। जब आप सदूर पर नहीं थे तो वीराने जैसा लगता था सारा सदूर। किले की दीवारें मुझे जैसे खा जाना चाहती हों। कहीं भी मन नहीं लगता था। तुम्हारे बिना मेरा वक्त नर्क की तरह बीता है। जाने कैसे हर जन्म में जिंदा रही मैं। सिर्फ तुम्हें याद करती रही।"

"वो बुरे दिन बीत चुके हैं ताशा।"

"हां। अब तो आप मेरे पास हैं, वो बुरे दिन चले गए।"

"मेरी प्यारी ताशा।" देवराज चौहान ने पुनः ताशा का हाथ चूमा।

"देव।" रानी ताशा बोली—"अब हमें यहां से सदूर की तरफ चल देना चाहिए। यहां हमारा काम ही क्या?"

"हां। ताशा। सदूर हमारा इंतजार कर रहा है। वहां हम दोनों का खुशहाल जीवन है। वहां...।"

तभी पास रखे ताशा के यंत्र से आवाजें उठने लगीं।

रानी ताशा ने यंत्र उठाकर बात की, उस तरफ किलोरा था।

"रानी ताशा।" किलोरा की आवाज कानों में पड़ी—"बबूसा, पोपा में आना चाहता है। मैंने इंकार किया, परंतु वो कहता है कि राजा देव ने उसे पोपा में आने की इजाजत दे रखी है। क्या उसे आने दूं?"

रानी ताशा ने देवराज चौहान से कहा।

"बबूसा, पोपा में आना चाहता है।"

"उसे आने दो ताशा।"

"किलोरा। बबूसा को पोपा में आने दो।" कहकर रानी ताशा ने यंत्र को बंद करके रखा और बोली—"आपने बबूसा को सिर पर चढ़ा रखा है। पोपा में उसे काम ही क्या है।"

"बबूसा को मेरे से ज्यादा कोई नहीं जानता। वो मेरे लिए हमेशा ही

महत्त्वपूर्ण रहा है।" देवराज चौहान बोला—"उसे मेरी चिंता रहती है। वो हमेशा ही मेरे करीब रहने की चेष्टा में रहता है।"

"लेकिन बबूसा ने आपको मेरे पास नहीं आने दिया था। रुकावटें डालता रहा।" ताशा नाराजगी से कह उठी।

"उसकी सोच के मुताबिक वो जरूरी था, तभी तो उसने ऐसा किया होगा।"

▭ ▭

बबूसा ने पोपा के भीतर प्रवेश किया, किलोरा ने पोपा का प्रवेश द्वार बंद कर दिया।

"तुम कौन हो?" बबूसा ने किलोरा से पूछा।

"किलोरा नाम है मेरा और पोपा पर मेरा नियंत्रण है।" किलोरा ने कहा।

"पोपा को चलाता कौन है?"

"ये काम भी मैं करता हूं।"

बबूसा ने सिर हिलाया और सामने जाते रास्ते पर बढ़ गया।

किलोरा उसके पीछे आने लगा तो ये देखकर बबूसा ठिठका और पलटकर बोला।

"तुम मेरे साथ क्यों चल रहे हो?"

"तुम्हें रास्ता दिखाने की जरूरत पड़ेगी।" किलोरा ने कहा।

"पोपा के चालक हो और तुम्हें ये किसी ने नहीं बताया कि राजा देव ने जब पोपा का निर्माण किया तो मैं उनके साथ रहा था। पोपा को जितना बेहतर मैं जानता हूं उतना तुम भी नहीं जानते।" बबूसा ने कहा।

"परंतु मुझे तुम्हारे साथ रहना है।"

"क्यों?"

"सोमाथ ने कहा था कि बबूसा जब पोपा पर आए तो उस पर नजर रखी जाए।"

"सोमाथ कहां है?"

"वो आराम कर रहा है।"

"कहां?"

"अपने कमरे में।"

"परंतु उसे तो आराम की जरूरत ही नहीं पड़ती।"

"वो अपनी बैट्री चार्ज कर रहा है।" किलोरा बोला।

बबूसा मुस्कराया।

"तुम्हें पता है कि सोमाथ आधा पागल है।"

"वो हमारी तरह दिखता है। हमारी तरह सोचता है। वो बहुत समझदार है।"

"मेरी नजरों में वो बेवकूफ है।"

किलोरा चुप रहा।

"सोमाथ के शरीर में किस जगह बैट्री लगी है?" बबूसा ने पूछा।

"मैं नहीं जानता।"

"ठीक है। पर मैं नहीं चाहता कि कोई मेरे पीछे-पीछे आए। क्या इस बारे में राजा देव से बात करूं?"

"तुम पोपा में क्या करने आए हो?"

"जरूरी नहीं कि तुम्हारी बात का जवाब दूं। यहां पर मेरी हैसियत तुमसे बड़ी है। फिर भी बता देता हूं कि महापंडित से बात करने आया हूं।"

"चलो। मैं तुम्हें वहां तक पहुंचा दूं जहां से बात की जाती है।"

"परंतु मैंने अकेले में बात करनी है। तब मेरे पास कोई न रहे।"

"मैं चला जाऊंगा।"

दोनों आगे बढ़ गए।

"राजा देव कहां हैं?"

"ऊपर, बीच वाले कमरे में।"

"हां, वो कमरा, राजा देव ने अपने और रानी ताशा के लिए ही बनवाया था।" बबूसा कह उठा।

किलोरा, बबूसा को लेकर उस छोटे-से गोल कमरे में पहुंचा, जहां स्क्रीन लगी थी। बटनों और लीवरों से भरा बोर्ड दिख रहा था। उस वक्त वहां दीवार के साथ सटी कुर्सियों पर दो व्यक्ति बैठे थे।

"ये ठीक है।" बबूसा बोला—"मैं इन यंत्रों को इस्तेमाल जानता हूं। तुम जाओ और इन दोनों को भी ले जाओ।"

किलोरा उन दोनों के साथ जाने लगा तो बबूसा बोला।

"क्या तुम सोमाथ की बात हमेशा मानते हो?"

किलोरा, बबूसा को देखता रहा।

"उसकी बातों पर ध्यान मत दिया करो। उसका दिमाग ठीक काम नहीं करता।" बबूसा मुस्करा पड़ा और फिर यंत्रों पर व्यस्त हो गया। हैडफोन जैसी चीज कानों में लगा ली। वो बटनों और लीवरों से खेलने लगा। सामने लगी स्क्रीन रोशन हो उठी थी। इस वक्त बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी।

किलोरा और वो दोनों व्यक्ति वहां से जा चुके थे।

दस मिनट की चेष्टा के बाद ही महापंडित से सम्पर्क बन सका। एकाएक सामने की स्क्रीन पर महापंडित का चेहरा दिखा। पहले कुछ धुंधला था फिर चेहरा स्पष्ट होता चला गया।

"कैसे हो महापंडित?" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।
"अच्छा हूं।" महापंडित कुछ उलझन में दिख रहा था।
"हम सब सदूर पर वापस आ रहे हैं।"
"जान चुका हूं मैं।"
"राजा देव ने बताया?"
"राजा देव से मेरी बात नहीं हुई। मेरी मशीनों ने मुझे बता दिया था।"
"मैं तुम्हें सजा दिलवाऊंगा राजा देव से।"
महापंडित की तरफ से आवाज नहीं आई।
"तुमने रानी ताशा का खूब साथ दिया। राजा देव को सदूर वाले जन्म की पूरी याद नहीं आने दी। उससे पहले ही तुमने राजा देव को रानी ताशा तक पहुंचा दिया। तुम नहीं जानते कि तुमने कितना गलत किया।"
"मैंने कुछ नहीं किया।"
"तुमने किया महापंडित। मैं तुम्हें राजा देव से सजा दिलवाकर रहूंगा।" बबूसा गुस्से में आ गया।
"सजा की मुझे चिंता नहीं है। मैंने कुछ नहीं किया। मैं चाहता तो रानी ताशा को तुरंत राजा देव तक पहुंचा सकता था परंतु मैंने चाहा कि राजा देव को उस जन्म की याद आ जाए। मैं भी तुम्हारी तरह ही सोच रहा था।"
"तुम मुझसे चालाकी से बात करने लगे हो।"
"मैं तुमसे स्पष्ट बात कर रहा हूं। तुम...।"
"अब राजा देव, रानी ताशा से मिल चुके हैं और राजा देव को याद नहीं कि रानी ताशा से वो कैसा धोखा खा चुके हैं।"
"राजा देव को सब कुछ आ जाता अगर उस दिन सुबह राजा देव, तुम्हारे पास से न निकले होते।"
"तब मैं राजा देव पर नजर रखे हुए था परंतु तुमने चालाकी की, मेरे सिर पर नींद सवार करा दी। मैं सो गया और उधर तुमने राजा देव को जगा दिया कि वो निकल जाएं।" बबूसा ने सख्त में कहा—"तुमने मेरे खिलाफ सोमाथ का निर्माण कर दिया कि सोमाथ मुझे मार सके। क्या नहीं किया तुमने?"
"मैंने जो भी करना चाहा, वो नहीं हो सका बबूसा।"
"क्या मतलब?"
"तुम जो भी कह रहे हो, वो मैंने नहीं किया। मैं न तो रानी ताशा के खिलाफ हूं न ही राजा देव के और तुम्हारे खिलाफ तो हो ही नहीं सकता। मैं भी चाहता था कि राजा देव को सब कुछ याद आ जाए। इसी इंतजार में था कि वो सब होता चला गया, जो कि मैं चाहता ही नहीं था। तुम नहीं जानते कि मैं कितना परेशान हूं।"

"हैरानी है कि महापंडित परेशान है।"

"राजा देव की किसी बात की चिंता न करो। उन्हें सदूर पर बिताया जन्म पूरी तरह याद आ जाएगा। जब भी ये वक्त सामने आएगा तो तुम भी देखोगे। मैं इन बातों की वजह से चिंता में नहीं हूं।"

"तो?"

"मुझे उस लड़की को लेकर चिंता है जिसे तुम लोग पोपा में बिठाकर सदूर पर ला रहे हो।"

"धरा?" बबूसा के होंठों से निकला।

"मैं उसका नाम नहीं जान पाया। परंतु मेरी मशीनों ने मुझे स्पष्ट संकेत दे दिए हैं कि उसके सदूर पर आते ही सदूर नई तरह की मुसीबतों में घिर जाएगा। उसे अपने साथ मत लाओ।" महापंडित की आवाज कानों में पड़ी।

बबूसा फौरन कुछ न कह सका।

"मेरी मशीनों ने मुझे बताया कि राजा देव और रानी ताशा को मिलाने में उसी लड़की का हाथ है। वो कुछ ताकतें रखती है। उसी की ताकतों की कोशिश का नतीजा है कि राजा देव, रानी ताशा के पास पहुंच गए।"

"उसने ऐसा क्यों किया?" बबूसा के होंठों से निकला।

"वो चाहती थी कि रानी ताशा और राजा देव मिल जाएं ताकि उसे सदूर पर पहुंचने का मौका मिले।"

"वो सदूर पर क्यों जाना चाहती है महापंडित?"

"अभी ये बात मेरी मशीनें नहीं बता पाईं। परंतु मशीनों ने संकेत दे दिए हैं कि सदूर पर पहुंचकर, उस लड़की की ताकतें बढ़ जाएंगी। जिन पर काबू पाना कठिन हो जाएगा। मैं इस बारे में चिंतित हूं।"

"और क्या बताया तुम्हारी मशीनों ने?"

"मशीनें इस काम पर लगी हैं, लेकिन मुझे उनसे कोई जवाब नहीं मिल पा रहा। पता नहीं वो लड़की कौन है।"

"मेरी उससे बात हुई।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या?"

"जादूगरनी से भी उस बारे में बातें हुईं। परंतु वो मुझे कुछ भी बताने को तैयार नहीं।"

"मुझे बताओ वो बातें।"

"धरा मेरे लिए रहस्य बन गई है महापंडित। मैं उसे सीधी-सीधी लड़की समझता था। परंतु उसका जो रूप मेरे सामने आया है, वो हैरान कर देने वाला है। मैं भी उसे लेकर बहुत चिंतित हूं।"

"अगर तुम्हारे पास बताने को कुछ है तो मुझे बताओ बबूसा। वो बातें

मैं मशीनों को बताऊंगा तो उन्हें सहायता मिलेगी अपना काम करने को। वो जल्दी किसी नतीजे पर पहुंच जाएंगी।" महापंडित की आवाज कानों में पड़ी—"मुझे तो हैरानी है कि मशीनें मुझे उस लड़की के बारे में बताने में इतनी देर लगा रही है।"

"धरा कहती है कि वो सदूर की है और अब वापस सदूर जा रही है।" बबूसा बोला।

"उसकी बात पर मुझे हैरानी हुई।"

"वो कहती है कि डोबू जाति इसलिए गई थी कि उसकी ताकतों ने उसे बता दिया था कि डोबू जाति जाने पर ही, सदूर जाने का उसका रास्ता खुलेगा और ऐसा हुआ भी। मैं उसे मिला और...।"

"वो सब मुझे पता है।"

"जादूगरनी कहती है कि अगर मैंने तुझे धरा के बारे में बता दिया तो इसका पता उसे चल जाएगा और वो मेरी जान ले लेगी कि मैं कहीं दूसरों के सामने ये बात वक्त से पहले न खोल दूं। जादूगरनी ने मुझे बताया कि ढाई सौ साल पहले धरा की ताकतों ने सदूर वापसी का रास्ता तलाशना शुरू कर दिया था। रानी ताशा ने उस जन्म में राजा देव के साथ जो धोखा किया, वो सब धरा की ताकतों ने ही, रानी ताशा से करवाया था।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ओह, ये तो बहुत बड़ी बात बताई बबूसा।" महापंडित की आवाज कानों में पड़ी।

"मैंने इस बारे में धरा से बात की तो उसने कहा तभी अब उसे सदूर जाने का रास्ता मिल रहा है।"

"तो वो ये खेल सैकड़ों बरस से खेल रही है कि वापस सदूर पहुंच सके।"

"हां।"

"तुमने उससे पूछा कि वो कौन है?"

"पूछा। पर उसका कहना है कि जब पोपा उसे लेकर चल देगा तो तब अपने बारे में बताएगी।"

"जरूर इसमें कोई खास बात है।"

"महापंडित उसके पास कैसी ताकतें हैं?"

"मेरे पास अभी इन बातों का कोई जवाब नहीं है।"

"वो शैतान की तरह लगती है कभी-कभी, तो कभी मासूम दिखती है।" बबूसा ने होंठ भींचकर कहा—"पर मुझे आभास होने लगा है कि बात जरूर कुछ है। होम्बी गलत बात कभी नहीं कहेगी और तुमने भी कहा कि वो लड़की मुसीबतें खड़ी करेगी।"

"सदूर किसी तरह से मुसीबत में न पड़े, इसके लिए तुम कोशिश कर सकते हो बबूसा।"

"कैसी कोशिश?"

"उसे सदूर पर मत आने दो। पृथ्वी ग्रह पर छोड़ दो उसे।"

बबूसा के होंठ भिंच गए।

"क्या सोचने लगे?"

"शायद ये सम्भव नहीं होगा महापंडित।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"धरा ढाई सौ सालों से सदूर पर जाने की तैयारी कर रही है और अब वक्त आया तो, क्या वो रुक पाएगी, जबकि जादूगरनी ने उसके पास ताकतें होने का भी जिक्र किया है।"

"ये सोचना तुम्हारा काम है।"

"मैं—मैं इस बारे में जादूगरनी से बात करूंगा।" बबूसा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"जादूगरनी से उस लड़की के बारे में कुछ और जानने की चेष्टा भी करना।" महापंडित ने उधर से कहा।

"मुझसे इस बारे में कुछ हो सका तो मैं जरूर करूंगा।"

"राजा देव कैसे हैं?"

"बेहतर। पहले की तरह ही हैं।"

"मेरी उनसे बात हो सकती है?"

"वो रानी ताशा के साथ कक्ष में हैं। जैसा कि धरा ने कहा कि ढाई सौ साल पहले सदूर पर रानी ताशा ने राजा देव के साथ जो किया, वो धरा की ताकतों के प्रभाव में किया, वो ताकतें रानी ताशा से ये सब करा रही थीं। ऐसे में राजा देव को वो सब याद आया तो वो रानी ताशा को कठोर से कठोर सजा देंगे। वो एक न सुनेंगे कि तब रानी ताशा, धरा की ताकतों के प्रभाव में थी। ये तो फिर रानी ताशा के साथ नाइंसाफी हो जाएगी महापंडित।"

"राजा देव के साथ भी तो नाइंसाफी हुई है।"

"परंतु रानी ताशा का क्या कसूर, वो तो धरा की ताकतों के कब्जे में थी। सच में ये मामला बहुत गम्भीर है। तुम ठीक कहते हो कि धरा अब कई तरह की नई मुसीबतें खड़ी करेगी सदूर पर पहुंचकर।"

"मुसीबतों से भी ज्यादा। मेरी मशीनें इस बारे में संकेत देती जा रही हैं।"

बबूसा के चेहरे पर चिंता दिखने लगी।

"तुम कुछ करो बबूसा। उसे सदूर पर मत पहुंचने दो।" महापंडित ने उधर से कहा।

"इसका फैसला तो जादूगरनी से बात करके ही होगा कि मैं कुछ कर सकता हूं या नहीं।"

दोनों की बातचीत खत्म हो गई।

बबूसा वहां से बाहर निकलकर वापस बढ़ा। चेहरे पर सोचें थीं। कुछ आगे जाने पर किलोरा मिला।

"तुम्हारा कमरा तैयार कर दिया है बबूसा।" किलोरा ने कहा—"आराम कर सकते हो।"

"कमरा तैयार ही रखो। इस वक्त मैंने पोपा से बाहर जाना है।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।

"मैंने तो सोचा था कि रात पोपा में ही बिताओगे।" किलोरा ने सामान्य स्वर में कहा—"आओ।" फिर वो उस तरफ बढ़ गया, जिस ओर पोपा से बाहर जाने का दरवाजा था।

"सदूर पर जाना कब तय हुआ है।" बबूसा ने पूछा।

"अभी इस बारे में मुझसे कुछ नहीं कहा गया।"

किलोरा ने पोपा का दरवाजा खोला। सामने सीढ़ियां बिछ गई थीं।

बबूसा बाहर निकलता चला गया। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। चारों तरफ बर्फ फैली थी। इस अंधेरे में भी वह सफेदी के रूप में चमक रही थी। परंतु बबूसा अपनी ही सोचों में खोया हुआ था।

▭ ▭

बबूसा ने होम्बी की चमक भरी बूढ़ी आंखों में झांका।

होम्बी के होंठों के बीच मध्यम-सी मुस्कान उभरी और लुप्त हो गई।

"जादूगरनी, मैं परेशान हूं।"

"परेशानी तो अभी तेरी शुरू होनी है बबूसा।" होम्बी धीमे स्वर में कह उठी।

"धरा के बारे में मुझे कुछ बता जादूगरनी।"

"जरूर बताती, अगर वो अपनी ताकतों का इस्तेमाल डोबू जाति पर करना चाहती। परंतु हमारी जाति उससे सुरक्षित है।"

मशालों के प्रकाश में दोनों के चेहरे सिंदूरी से हुए चमक रहे थे।

"पर धरा सदूर पर तो मुसीबतें खड़ी करेगी।"

"सदूर से मेरा कोई वास्ता नहीं।" जादूगरनी ने स्पष्ट कहा।

"पर मेरा तो वास्ता है।"

"उससे मुझे कोई मतलब नहीं।"

"ऐसा मत कहो जादूगरनी। इस जन्म में मैंने डोबू जाति की सेवा की है। मैंने हमेशा यहां के लोगों का भला चाहा है।"

"तो बदले में डोबू जाति ने तुझे पनाह भी दी बबूसा। जबकि तू सदूर से आया था।"

"मुझे रास्ता दिखा जादूगरनी। मुझे परेशानी से निकाल दे।"

"तू परेशानी से नहीं निकल सकेगा। आने वाला वक्त तेरा बुरा हाल कर देगा।" होम्बी कह उठी।

"तो मैं क्या करूं?"

"तू अब डोबू जाति से चला जाएगा बबूसा। तेरे सवालों का जवाब अब तुझे सदूर ग्रह पर ही मिलेगा।"

"पर मैं फिर वापस आऊंगा और...।"

"तू फिर कभी वापस नहीं आ सकेगा। तू सदूर पर ही रहेगा। तेरी किस्मत की लकीरें ये ही कह रही हैं।"

बबूसा, होम्बी को एकटक देखने लगा।

"सच होम्बी, मैं कभी भी वापस नहीं आऊंगा?" बबूसा बेचैन-सा कह उठा।

होम्बी ने इंकार में सिर हिला दिया।

"यहां की याद मुझे सताती रहेगी जादूगरनी।"

"वहां के हालात तुझे सांस ही नहीं लेने देंगे कि तू डोबू जाति को याद कर सके।"

"सदूर की रवानगी कब होगी?"

"कल।"

"ओह। मेरी एक समस्या हल कर जादूगरनी। धरा की वजह से सदूर पर परेशानियां आ सकती हैं। मैं धरा को यहीं छोड़ जाना चाहती हूं।"

"वो ऐसा नहीं होने देगी।" होम्बी ने शांत स्वर में कहा।

"नहीं होने देगी? वो कैसे मुझे रोक सकती है। मैं उसके हाथ-पांव बांधकर डोबू जाति के योद्धाओं के हवाले कर दूंगा कि पोपा के जाने के बाद उसे आजाद कर दें। ये तो बहुत आसान काम है।" बबूसा ने कहा।

"तू अभी तक उसे समझ नहीं पाया।"

"बता जादूगरनी, ताकि मैं उसे समझ सकूं।"

"वक्त आने पर तू समझेगा उसे कि वो क्या है। तू उसके खिलाफ कुछ करने की कोशिश करेगा तो हार जाएगा। उसकी ताकतें उसके साथ हैं। वो उसके रास्ते में आने वाली हर परेशानी को दूर कर देंगी। तूने कुछ करने की चेष्टा की तो भुगतेगा।"

"वो इतनी ताकतवर है।"

होम्बी ने सिर हिला दिया।

बबूसा खामोशी से होम्बी को देखता रहा।

"क्या तूने भविष्य की झलक पाई कि धरा सदूर पर जा रही है?" बबूसा ने पूछा।

"हां। वो सदूर पर बिना किसी परेशानी के पहुंच जाएगी।"

"ओह, फिर तो मेरा कुछ भी करना, सोचना बेकार होगा। क्या मैं धरा पर किसी तरह काबू नहीं पा सकता?"

"मुझे इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं, क्योंकि अब डोबू जाति सुरक्षित है। अब जा, मैं और नहीं बोलूंगी।"

बबूसा होम्बी से मिलकर वहां पहुंचा, जहां जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी, सोमारा और धरा थीं। धरा सबसे अलग बैठी थी और चमक भरी नजरों से बबूसा को ही देख रही थी।

"बबूसा।" सोमारा ने कहा—"अगोमा तेरे को दो बार पूछने आ चुका है। वो कहता है सोलाम आ गया है।"

बबूसा ने सिर हिलाया और धरा की तरफ बढ़ गया।

उसे अपनी तरफ आते पाकर धरा मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा-सा हो गया।

"तू मेरी परेशानी का कारण बनी हुई है धरा।"

"होम्बी तो तेरे को बचा रही है, कुछ न बताकर। क्यों, तू मुझे यहीं छोड़ जाने की सोच रहा है।" धरा हंसी।

बबूसा के चेहरे पर हैरानी उभरी।

"त—तेरे को कैसे पता चला?"

"मेरी ताकतों ने मुझे बताया।" धरा के चेहरे पर शैतानी चमक नाच उठी।

बबूसा धरा को देखता रह गया।

"मुझसे पंगा मत ले। वरना मुंह की खाएगा। मैं तब तक ही चुप हूं जब तक सदूर पर नहीं पहुंच जाती। अगर तू मुझे छेड़ेगा तो मैं तुझे छोड़ने वाली नहीं। होम्बी की बात मान और चुपचाप बैठ जा।"

बबूसा ने होंठ भींच लिए। धरा को देखता रहा।

"तूने सच में मुझे परेशान कर दिया है, जाने तू कौन है।" बबूसा ने कहा और पलटकर बाहर जाने वाले रास्ते की तरफ बढ़ गया। पीछे से धरा की छोटी-सी हंसी कानों में पड़ी।

तभी जगमोहन ने बबूसा को पुकारा।

बबूसा ने ठिठककर जगमोहन को देखा।

"धरा के साथ तुम्हारी क्या बातचीत चल रही है?"

"तुम्हारे जानने लायक बात नहीं है। सोलाम आ गया है मैं अगोमा के पास जा रहा हूं। हम सब मिलकर कुछ सोचेंगे। बातें अब वो नहीं रहीं, जो पहले थीं, पर मैं सोमाथ को सबक सिखाना चाहता हूं।" कहते हुए बबूसा बाहर निकल गया। जबसे बबूसा को ये बात पता चली थी कि धरा की ताकतों ने ढाई सौ साल पहले सदूर ग्रह पर रानी ताशा द्वारा, राजा देव को सदूर से बाहर फिंकवाया था कि, आज जैसे हालात आएं और धरा को वापस सदूर जाने का मौका मिल सके, तो बबूसा के मन में रानी ताशा के प्रति बुरे विचार छंटने लगे थे। ऐसी स्थिति में रानी ताशा को वो दोषी नहीं मान सकता था। रानी ताशा के पश्चाताप को वो हमेशा दिखावा मानता रहा, परंतु अब उसे एहसास हो रहा था कि ताकतों ने जब उसे आजाद किया और रानी ताशा को जब होश आया तो उसे कितना दुख पहुंचा होगा कि राजा देव के साथ उसने क्या किया। हालातों के करवट लेते ही बबूसा की परेशानी बढ़ने लगी थी, परंतु सोमाथ के बारे में बबूसा के विचार नर्म नहीं थे। महापंडित ने सोमाथ का निर्माण, उसके मुकाबले पर खड़ा करने को किया था। सोमाथ ने उसे मारने का प्रयत्न भी किया था। ऐसे में बबूसा सोमाथ को सबक सिखाकर दिखा देना चाहता था कि महापंडित का निर्माण अधूरा है।"

अगोमा बिजली वाले कमरे में नहीं मिला।

बबूसा अगोमा की तलाश करने लगा।

हर तरफ मशालों की रोशनी फैली थी। बबूसा को एक आदमी से पता चला कि सोलाम तीस योद्धाओं के साथ लौटा है और इस वक्त सब खाना खा रहे हैं तो बबूसा वहां पहुंचा, जहां खाना खाया जाता था। वहां सोलाम, अगोमा और सब योद्धा खाना खा रहे थे। बबूसा उन सबसे मिला। खाने के बाद अगोमा, सोलाम, जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी और सोमारा के साथ बबूसा की संयुक्त बातचीत हुई। मुद्दा था सोमाथ को खत्म करने का।

लम्बे वक्त तक बात होती रही।

अंत में बात यहां खत्म हुई कि योद्धाओं के पास जो घातक हथियार हैं, मौका पाते ही उन घातक हथियारों से सोमाथ की गर्दन काटकर, उसे मार दिया जाएगा।

उसके बाद सब कमरे में पहुंचे। धरा को खाना खाते पाया।

बबूसा धरा के पास पहुंचा और वहीं बैठता बोला।

"तुम्हारे पास ताकतें हैं?"

"थोड़ी-सी।" धरा ने खाना खाते कहा—"पर सदूर पर पहुंचते ही, मुझे मेरी ताकतें ढूंढ़ लेंगीं।"

"तो तुम ताकतवर हो।"

"बहुत।"

"तब तो तुम मेरा काम कर सकती हो। मेरी कुछ परेशानी दूर कर दोगी।" बबूसा ने कहा।

"बड़े प्यार से बोल रहे हो। कोई काम फंस गया लगता है।"

"तुम मेरे लिए सोमाथ को खत्म कर दो।"

धरा कुछ पल चुप रही फिर खाना खाते कह उठी।

"ये नहीं हो सकेगा।"

"क्यों?"

"मेरी ताकतें इंसानों पर काम करती हैं। सोमाथ इंसान नहीं है। वो तारों, मशीनों का बना हुआ है। मैं उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। पर मैं इंसानों को नहीं छोड़ती।" कहते-कहते धरा अजीब-से अंदाज में मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"तुम तो बड़ी कमजोर हो।" बबूसा ने आंखें सिकोड़ी।

धरा हंस पड़ी।

"गलतफहमी में मत रहना। सदूर पर पहुंच तो तमाशा दिखाऊंगी तुझे?"

"क्या करेगी? तू सदूर पर?"

"अभी क्यों पूछता है। तब देखना तू मेरी ताकत। सदूर पर इंसान बसते हैं बिजली के बने सोमाथ जैसे लोग नहीं कि जिन पर मेरी ताकतों का असर नहीं होगा। वहां तो सब कुछ मेरे लिए तैयार पड़ा है। मेरे वहां पहुंचने और वक्त पूरा होने की देर है कि हर तरफ मेरे नाम का डंका बजेगा। जानता है मेरा नाम क्या है?"

"धरा।" बबूसा के होंठों से निकल।

"ये ते मेरा पृथ्वी का नाम है। सदूर पर मेरा नाम दूसरा है। सब जानते हैं मेरे नाम को।" धरा का निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"क्या नाम है?"

"अभी नहीं बताऊंगी। वक्त पूरा होने से पहले मैंने अपना नाम बताया तो सदूर पर पहुंचते-पहुंचते मैं मुसीबत में पड़ जाऊंगी। मेरी ताकतों ने इस बारे में मुझे पहले ही सचेत कर दिया था कि अपना नाम न बताऊं।" धरा ने सिर हिलाकर कहा।

"अपनी ताकतें दिखा मुझे?"

धरा ने बबूसा की आंखों में झांका फिर आंखें नचाकर धीमे स्वर में, टेढ़े होंठ से कह उठी।

"सदूर पर तू मेरे साथ चल ही रहा है। वहां तू मेरी ताकतों का नाच देखना।"

"तेरे बारे में मुझे राजा देव से बात करनी होगी।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"नहीं कर पाएगा तू?" धरा अपने खास अंदाज में मुस्कराई—"मेरी ताकतें तेरे दिमाग से ये बात निकाल देंगी। तू भूल जाएगा कि तूने राजा देव को कुछ बताना है।"

"मैं राजा देव को तेरे बारे में बता के रहूंगा।"

धरा मुस्कराई। निचला होंठ लटकने लगा। वो शैतान की तरह दिखी।

तभी मोना चौधरी पास आती कह उठी।

"क्या बातें हो रही हैं तुम दोनों में?"

उसी पल बबूसा उठते हुए बोला।

"ये मुझसे सदूर ग्रह के बारे में बातें पूछ रही थी। चलो खाना खा लें। मुझे तो भूख लग रही है।"

▭ ▭

रात चैन से बीती। नीचे बिछाने को गर्म कपड़े और ओढ़ने को कम्बल उन्हें दे दिया गया था। उन्हें जरा भी सर्दी नहीं लगी और वो गहरी नींद में रहे। बबूसा और सोमारा एक तरफ पास-पास ही सोए थे जबकि धरा उन सबसे अलग होकर सोई थी। मोना चौधरी, नगीना, जगमोहन बातें करते-करते जाने कब सो गए थे। उन लोगों ने ये तो तय कर ही लिया था कि डोबू जाति के दो योद्धा मौका पाते ही सोमाथ पर हथियारों से हमला करेंगे और उसकी गर्दन काट देंगे। आसान तरीका था ये सोमाथ को खत्म करने का। बबूसा सोमाथ से छुटकारा पा लेना चाहता था ताकि आने वाले वक्त में वो बिना किसी परेशानी के काम कर सके। अब उसे नई चिंता यानी कि धरा की चिंता होने लगी थी कि वो कौन है और सदूर पर जाकर वो क्या करना चाहती है। उसके पास कैसी ताकतें हैं? धरा के बारे में होम्बी ने भी सतर्क किया और महापंडित ने भी। ये बबूसा के लिए चिंता का विषय था कि धरा जब सदूर पर पहुंचेगी तो तब क्या होगा। उसने मन-ही-मन ये विचार पक्का कर लिया था कि राजा देव को धरा के बारे में खबर देगा। ताकि राजा देव इस बारे में जो ठीक समझें वो कर सकें। वो अन्यों को भी धरा के बारे में बताना चाहता था। परंतु उसे लग रहा था कि अभी उन्हें कुछ बताना ठीक नहीं। धरा के बदले रूप के बारे में सुनकर वो व्यर्थ में परेशान हो जाएंगे। रात सोमारा जब पास ही लेटी थी तो सोने से पहले उसने धरा के बारे में बात छेड़ी थी।

"बबूसा, मुझे सोमाथ की इतनी चिंता नहीं है, जितनी कि धरा की है। वो जाने क्या इरादा रखती है।"

"उसकी बातों से लगता है कि वो कुछ खास है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"जब वो हमसे बातें करती है तो शैतान जैसी लगने लगती है। उसका निचला होंठ जब टेढ़ा होता है तब वो पूरी शैतान लगती है। तुम ऐसा कुछ करो कि हमारे साथ सदूर पर न जा सके।"

"मैंने सोचा था ऐसा, परंतु जादूगरनी ने मना कर दिया कि ऐसा सोचूं भी नहीं। धरा को पता चल जाएगा और वो अपनी ताकतों का मेरे पर इस्तेमाल कर देगी। जब मैं ये बात करके धरा के पास आया तो वह मेरे मन के विचार जानती थी।"

"समझ में नहीं आता कि सदूर पर क्या होगा?"

"मैं कल राजा देव से धरा के बारे में बात करूंगा।"

"सदूर कब जाने वाले हैं हम?"

"होम्बी ने तो कहा है कि कल हम सदूर की तरफ रवाना हो जाएंगे।" बबूसा बोला।

"और तो क्या धरा भी हमारे साथ जाएगी?"

"होम्बी का कहना है कि धरा सदूर पर पहुंच जाएगी।"

"तुम्हें जादूगरनी की बातों का पूरा भरोसा है?"

"पूरा भरोसा है। वो जो कहती है वो सच होता है।" बबूसा ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"ते हम कल सदूर रवाना हो जाएंगे।"

"हां सोमारा।"

"धरा हमारे साथ होगी। जादूगरनी ने ये नहीं बताया कि सदूर पर धरा का क्या रूप सामने आएगा?"

"वो नहीं बता रही। कहती है मुझे ये बात पता चलेगी तो धरा को एहसास हो जाएगा और वो मुझे मार देगी।"

"क्यों मारेगी?"

"इसलिए कि मैं उसकी 'पोल' वक्त से पहले न खोल दूं।"

"मुझे विश्वास नहीं होता। धरा तुझे कैसे मार सकती है बबूसा। वो तेरा मुकाबला नहीं कर सकेगी।"

"अपनी ताकतों के सहारे वो मुझे मारेगी।"

"जादूगरनी ने ऐसा कहा?"

"उसने इशारों-इशारों में ऐसा ही कहा। मैं जादूगरनी की बात को हवा में नहीं उड़ा सकता।"

"मैंने तो सोचा था कि राजा देव मिल गए, तुम मिल गए, बाकी बातें

जैसे-तैसे हल हो जाएंगी। लेकिन धरा ने तो मेरी नींद ही उड़ा दी है। तुम सुबह राजा देव और रानी ताशा को धरा के बारे में बताना कि क्या हो रहा है।" सोमारा ने कहा।

"जरूर बताऊंगा। बहुत कुछ है मेरे पास बताने को। धरा की ताकतों ने ही ढाई सौ साल पहले सदूर पर, रानी ताशा पर अपना कब्जा किया था और राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवा दिया था। तब जो कुछ भी हुआ रानी ताशा ने नहीं किया था, धरा की ताकतों ने, रानी ताशा को माध्यम बनाकर किया था ताकि आगे ऐसी-ऐसी घटनाएं हों और धरा जब सदूर पर आना चाहे तो उसे रास्ता तैयार मिले। स्पष्ट है कि धरा की सहायक ताकतें ढाई सौ बरस से खामोशी से काम कर रही थीं। धरा के हक में काम कर रही थीं। ये एक बेचैन कर देने वाली बात है।"

"फिर तो रानी ताशा निर्दोष है।" सोमारा बोली।

"हां। रानी ताशा निर्दोष है। मैं रानी ताशा के वियोग को ड्रामा समझता रहा जबकि रानी ताशा स्वयं परेशान थी कि उसके हाथों से ये क्या हो गया। राजा देव को कैसा धोखा दे दिया। वो अभी तक नहीं जानती कि वो सब धरा की ताकतों का खेल था।"

"तुम ये बात रानी ताशा और राजा देव को जरूर बताना।"

"समस्या खड़ी हो सकती है सोमारा।"

"कैसी समस्या?"

"राजा देव को सदूर के उस जन्म की याद आने पर, वो आसानी से धरा की ताकतों वाली बात पर विश्वास नहीं करेंगे। राजा देव ये ही सोचेंगे कि रानी ताशा ने उन्हें धोखा दिया और वो उसे सजा देना चाहेंगे। ऐसे मौके पर राजा देव को समझाना बेहद कठिन होगा। उन पर जब क्रोध सवार होता है तो वो किसी की नहीं सुनते।"

"तुम्हारी बात तो मानेंगे।"

"शायद इतनी नहीं, जितनी कि वो सामान्य हालत में मानते हैं।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"फिर क्या होगा बबूसा। धरा की शक्तियों के किए कसूर की सजा रानी ताशा भुगतेगी?"

बबूसा चुप रहा।

"ये तो गलत होगा। रानी ताशा, पहले ही राजा देव के दूर हो जाने की वजह से सजा पा चुकी है। जब वो वियोग में परेशान होती थी तो मैं भी यही सोचती थी कि गलती, रानी ताशा की तो है। परंतु अब जो

हालात सामने आ रहे हैं, वो तो कुछ और ही कहते हैं। रानी ताशा तो, राजा देव को धोखा देने के मामले में मासूम है। निर्दोष है।"

"मैं ठीक करने की चेष्टा करूंगा सब कुछ।" बबूसा व्याकुल था।

"तुम रानी ताशा को, राजा देव के क्रोध से बचा लोगे?"

"बचाना ही होगा। मुझे कोई रास्ता सोचना होगा सोमारा।"

"एक बात अभी मन में आई है।"

"क्या?"

"भैया (महापंडित) से कहकर राजा देव के मस्तिष्क का वो हिस्सा ही साफ करवा दें, जहां उस जन्म की यादें मौजूद हैं। इस तरह राजा देव को वो धोखे वाली बात याद नहीं आएगी और सब ठीक तरह से चलता रहेगा।"

"मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा।"

"क्यों?"

"मैं राजा देव का सेवक हूं और इस तरह का धोखा मैं राजा देव के साथ नहीं कर सकता। ये बात मेरी सीमा से बाहर है और ऐसा कोई करने की चेष्टा भी करेगा तो मैं होने नहीं दूंगा।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा—"मैं दूसरी तरह से राजा देव को समझाने की चेष्टा करूंगा। परंतु अभी तो मुझे धरा की चिंता है।"

"तुम सुबह होते ही राजा देव और रानी ताशा को धरा के बदले रूप के बारे में बता देना।"

"ऐसा ही करूंगा मैं।"

उसी पल कुछ दूर कम्बल ओढ़े सोई धरा ने चेहरे से कम्बल हटाया और मुस्कराकर बबूसा और धरा की तरफ देखने लगी। मशाल की रोशनी में उसका निचला होंठ कुछ टेढ़ा हो गया और वो शैतान की तरह दिखने लगी।

"अभी तो मैं तुझे कुछ भी नहीं बताने दूंगी बबूसा। मैं नहीं चाहती कि सदूर पर पहुंचने में मुझे कोई अड़चन आए।"

▭ ▭

सुबह धुंध भरा मौसम था। मध्यम ठंडी हवा के झोंके चल रहे थे। सर्दी इतनी जबर्दस्त थी कि दो कदम चलना भी मुहाल हो रहा था। गर्म कपड़े भी ज्यादा साथ न दे रहे थे। पहाड़ के बाहर शायद ही कोई ऐसा नजर आ रहा था जिसे आवश्यक काम के लिए बाहर आना पड़ा था। हर तरफ मौजूद बर्फ की वजह से, तीखी ठंडक जैसे शरीर को चीरती भीतर तक घुसी जा रही थी। दिन का उजाला फैले कुछ वक्त बीत चुका था। तभी पोपा का दरवाजा खुला और फिर सीढ़ियां खुलती जमीन से आ लगीं। दरवाजे पर किलोरा दिखा जो कि एक तरफ हट गया फिर सोमाथ नीचे उतरता दिखा। जो कि

हमेशा की तरह चुस्त नजर आ रहा था। सीढ़ियां उतरकर सामने पहाड़ के मुहाने की तरफ बढ़ गया। सीढ़ियां वापस सिमटती चली गईं और दरवाजा बंद हो गया। इस बुरी सर्दी का असर सोमाथ पर जरा भी नहीं था। सोमाथ पहाड़ के भीतर प्रवेश कर गया। लोग काम करते दिख रहे थे। रानी ताशा के दो आदमी भी दिखे, जो पहरे के तौर पर वहां टहल रहे थे। सोमाथ आराम से कदम उठाता आगे बढ़ता चला गया। पहाड़ के भीतर की जगह गर्म थी। बहुत कम सर्दी थी भीतर। सोमाथ अभी मूर्ति वाले हॉल में पहुंचा ही था कि उसके कानों को शूं की आवाज सुनाई दी। उस आवाज की वजह जानने के लिए सोमाथ ने गर्दन घुमानी चाही कि तभी लोहे की कुछ भारी चकौर पत्ती, उसकी गर्दन काटती चली गई। सोमाथ के कदम वहीं रुक गए। परंतु पत्ती पूरी गर्दन न काट सकी और 'टक' की आवाज के साथ वो थम गई। उसी पल सोमाथ की आंखें जैसे उलट गई हों। अब आंखों की जगह वहां सिर्फ सफेद परत दिखने लगी और वो भयानक दिखने लगा।

"ये क्या हो गया?"

"किसने किया?"

डोबू बस्ती वालों की आवाजें सुनाई देने लगीं।

सब कुछ फासला रखकर वहां इकट्ठे होने लगे।

रानी ताशा के वे आदमी भी आ गए, जो डोबू बस्ती के लोगों पर नजर रखे हुए थे।

"ओह, ये किसने कर दिया?"

"हमने तो इनसे हथियार ले लिए थे।" दूसरा बोला।

"सोमाथ।" पहले वाले ने पुकारा—"तुम ठीक हो कि नहीं?"

परंतु सोमाथ तो जैसे अपने में व्यस्त था। उसका शरीर इधर-उधर डोल रहा था हौले-हौले। लेकिन गिरने वाली कोई बात नहीं दिख रही थी। लोगों की आवाजें अभी भी उठ रही थीं। उस भीड़ में अगोमा और सोलाम भी आ खड़े हुए थे। दोनों की नजरें मिलीं। जहां एक ही सवाल था कि गर्दन पूरी क्यों नहीं कटी? तभी सोमाथ का हाथ उठा और गर्दन में फंसी लोहे की पत्ती को खींचने लगा। देखते-ही-देखते वो गर्दन से आजाद होकर सोमाथ के हाथों में दिखी। उसने उसे नीचे फेंक दिया। फिर दोनों हाथों से सिर को थामा और गर्दन को पहले की तरह सैट बिठाने लगा। दो मिनट की मेहनत के बाद उसने गर्दन को वापस, ठीक से सैट किया और सिर पर हाथ से दबाव बढ़ाकर उसे रोके रखा। धीरे-धीरे वक्त बीतने लगा।

वहां खड़े सब लोग हैरत से सोमाथ को देख रहे थे। वो नहीं जानते थे कि ये तारों और धातु का बना इंसान है। वो हैरान थे कि गर्दन से खून

नहीं निकला। वो हैरान थे कि आधी से ज्यादा गर्दन कट जाने के बाद भी वो शांत खड़ा अपने हाथों से काम ले रहा है। उनके चेहरे उनकी हैरत को दर्शा रहे थे।

"ये क्या कर रहा है?" अगोमा ने दबे स्वर में सोलाम से पूछा।

"मैं नहीं जानता।" सोलाम ने शब्दों को चबाते हुए कहा—"इसकी गर्दन कटकर अलग क्यों नहीं हुई?"

"शायद हथियर फेंकने की रफ्तार कम होगी।"

"तो दूसरा हथियार क्यों नहीं फेंका गया।"

कई मिनट बीत गए।

सोमाथ एक हाथ गर्दन पर रखे, दूसरे से सिर दबाए स्थिर खड़ा रहा।

धीरे-धीरे सोमाथ की उल्टी आंखें जैसे वापस होने लगीं।

इस पूरी प्रक्रिया को दस मिनट लगे और सोमाथ की आंखें पहले की तरह स्वस्थ दिखने लगीं। उसने सिर और गर्दन से हाथ हटा लिया और मुस्कराकर हर तरफ देखने लगा।

गर्दन पहले की तरह सामान्य हो चुकी थी।

"क्या हुआ सोमाथ?" रानी ताशा का एक आदमी पास आकर बोला—"तुम पर जानलेवा वार किया गया।"

"हां।"

"किसने?"

"इन्हीं में से किसी ने। ये पता लगाना कठिन है कि किसने ऐसा किया।" सोमाथ की निगाह अगोमा पर जा टिकी। वो आगे बढ़ा और अगोमा के पास पहुंचकर बोला—"तुम्हें पता होगा कि किसने मुझे मारने की चेष्टा की।"

"मुझे नहीं पता। मैं तो बिजली वाले कमरे में व्यस्त था कि शोर सुनकर इधर आ गया।" अगोमा कह उठा।

"कोई बात नहीं। जिसने भी ऐसा किया है, उसे कहना कि दोबारा कोशिश करे।"

"तु-तुम्हारी तो गर्दन कट गई थी।" सोलाम अजीब-से स्वर में कह उठा।

"तो?"

"फिर ठीक कैसे हो गई?"

सोमाथ ने अगोमा से पूछा।

"बबूसा कहां है?"

"उधर कमरे में।" अगोमा ने आगे की तरफ इशारा किया।

"मुझे वहां ले चलो।"

अगोमा, सोमाथ को उस कमरे के बाहर छोड़ गया, जहां बबूसा था।

सोमाथ ने भीतर प्रवेश किया और ठिठककर सबको देखा। चेहरे पर मुस्कान थी। बबूसा की निगाह सोमाथ के चेहरे पर टिक गई। धरा कम्बल ओढ़े लेटी थी कि सोमाथ के भीतर प्रवेश करते ही उसने कम्बल में से थोड़ा-सा मुंह बाहर निकाला और चमक भरी निगाहों से सोमाथ को देखने लगी थी। जगमोहन, नगीना और मोना चौधरी की नजरें मिलीं।

सोमाथ, बबूसा के पास पहुंचकर बोला।

"मैं जानता था कि तुम मुझे खत्म करने की कोशिश जरूर करोगे।"

"मैंने तो ऐसा कुछ नहीं किया।" बबूसा कह उठा।

"अभी मेरी गर्दन काटने की कोशिश की गई।"

"पर तुम्हारी गर्दन तो ठीक है।"

"तुम जानते हो कि मेरे शरीर के भीतर, महापंडित ने ऐसा सिस्टम रखा है कि टूट-फूट की फौरन रिपेयर हो जाती है।" सोमाथ ने शांत स्वर में कहा—"तुम जरूर सफल हो गए होते अगर मेरा गला कटने को लेकर, महापंडित ने गले में 'रोक' न रखी होती।"

"तुम तो मुझसे ऐसे कह रहे हो जैसे पूरा भरोसा हो कि ये काम मेरे इशारे पर हुआ है।"

"तुम्हारे ही इशारे पर हुआ है हमला।"

"यकीन कैसे है तुम्हें?" बबूसा उठ खड़ा हुआ।

"क्योंकि अभी तक रानी ताशा के किसी आदमी पर हमला नहीं किया गया। सिर्फ मेरे पर ही हमला हुआ। मुझे यकीन दिलाने के लिए ये ही बात बहुत है कि ये काम तुम्हारा है।" सोमाथ का स्वर सामान्य था।

"जो भी हो तुम मुझे कुछ नहीं कह सकते।" बबूसा बोला।

"क्यों?"

"राजा देव नहीं चाहते कि बबूसा का बुरा हो।"

"इसका ये मतलब तो नहीं कि तुम मुझ पर हमला कराने लगो।" सोमाथ का स्वर सख्त हुआ।

"तुम्हें वहम है। मैंने ऐसा कुछ नहीं कराया।"

"मैं जानता हूं तुम इतने में ही बस नहीं करोगे। तुम अपनी कोशिश जारी रखोगे।"

बबूसा और सोमाथ की नजरें मिलीं।

"मैं तुम्हें पसंद नहीं करता सोमाथ।" बबूसा ने कठोर स्वर में कहा।

"मैं भी तुम्हें पसंद नहीं करता।" सोमाथ ने शांत स्वर में कहा—"ये मत सोचते रहना कि राजा देव तुम्हारी मौत नहीं देखना चाहते तो मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा। मैं राजा देव का हुक्म नहीं मानता।"

"तुम भी अपनी कोशिश कर लेना।"

"मारे जाओगे। तुम मेरा मुकाबला नहीं कर सकते। मेरे रास्ते में आना तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा। मैं ये बात भी जानता हूं कि रानी ताशा और राजा देव का मिल जाना तुम्हें रास नहीं आ रहा। परंतु मैं तुम्हें आखिरी बार सतर्क कर रहा हूं कि मेरे से मुकाबला करने की मत सोचो, वरना तुम्हारे मर जाने का राजा देव को दुख होगा।"

"मैं तुम्हें छोड़ने वाला नहीं।"

सोमाथ ने सिर हिलाया और बबूसा को देखते पलटकर बाहर निकल गया।

"तो ये बच गया।" नगीना कह उठी।

"हां।" बबूसा बोला—"परंतु ये...।"

तभी सोलाम ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"हमारे योद्धा ने हथियार फेंककर सोमाथ की गर्दन काटने की भरपूर चेष्टा की, आधी से ज्यादा कट गई, परंतु...।"

"उसके गले में कोई 'रोक' लगी है। जिस वजह से उसकी गर्दन नहीं कट सकती।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये बात तुमने पहले क्यों नहीं बताई बबूसा?"

"मैं भी नहीं जानता था।"

"अब हमें कुछ नया सोचना होगा कि सोमाथ को खत्म किया जा सके।" मोना चौधरी ने कहा।

"मुझे तो ये काम आसान नहीं लगता।" जगमोहन के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

"तुम इस बारे में कुछ सोचकर मुझे बताओ सोलाम।" बबूसा ने सख्त स्वर में कहा।

सोलाम बाहर निकल गया।

बबूसा की निगाह धरा की तरफ उठी।

कम्बल से झांकते धरा के चेहरे को देखा। दोनों की आंखें मिलीं। धरा मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा दिखने लगा। बबूसा के होंठ भिंच गए। वो बाहर निकलता चला गया। बबूसा ने दृढ़ इरादा कर लिया था कि रानी ताशा और राजा देव को, धरा के बारे में सब कुछ बता देना है कि उसका असली रूप कुछ और है।

बबूसा के जाते ही धरा ने हाथ के इशारे से सोमारा को पास बुलाया।

"क्या है?" पास पहुंचकर सोमारा बोली।

"बैठ तो...।" धरा ने फर्श पर हाथ मारकर कहा।

सोमारा बैठ गई।

"कहां गया है बबूसा?"

"यहीं है, जाना कहां है।" सोमारा तीखे स्वर में कह उठी।

"वो पोपा में गया है। राजा देव और रानी ताशा को मेरे बारे में बताने।" धरा मुस्कराई। होंठ टेढ़ा हो गया।

"तो? मुझे क्यों बता...।"

"बबूसा किसी को कुछ नहीं बता सकेगा।" धरा के चेहरे पर शैतानी भाव नजर आने लगे।

"वो बताएगा तुम्हारे बारे में।"

"मेरी ताकतें उसे रोक देंगी।"

"बबूसा को रोकना आसान नहीं...।"

"नादान। मेरी ताकतों को तू नहीं जानती। वो बबूसा को चकराकर रख देंगी।"

"क्या मतलब है तेरा?" सोमारा की आंखें सिकुड़ीं।

"समझकर भी नासमझ बन रही है। सब कुछ तो बता दिया तुझे।"

"तेरी ताकतें हैं कहां?"

"मेरे आसपास। तुम सब के करीब। सब सुनती हैं वो और मेरी बेहतरी के लिए काम करती हैं। वो मुझे हर हाल में सदूर पहुंचा देना चाहती हैं। वो मेरे रास्ते में कोई रुकावट नहीं आने देंगी।"

"मैं तेरी ताकतों को देखना चाहती हूं।"

"वक्त पूरा होने ही वाला है। उसके बाद तू मेरी ताकतों की मौजूदगी का एहसास पा सकेगी।"

"किस वक्त की बात कर रही है तू।"

"सदूर पहुंचकर तुझे सब बता दूंगी। तब तो मेरे बारे में सब जान जाएंगे।" धरा मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"तेरी ताकतें तेरे पास हैं तो सब कुछ बताने में डरती क्यों है तू?"

"मेरी ताकतों ने बताया है कि सदूर पहुंचने तक मुझे चुप रहना है। मैंने तो तेरे को ये कहने के लिए बुलाया था कि बबूसा किसी को भी मेरे बारे में बता नहीं पाएगा। ये तो उस जादूगरनी ने बबूसा के सामने मेरी ताकतों वाली बात खोल दी, नहीं तो मैं पहले की तरह सामान्य ढंग से, सदूर तक भी पहुंच जाती।"

"महापंडित को भी पता है कि तेरा सदूर पर आना ठीक नहीं।" सोमारा कह उठी।

धरा हंसी। निचला होंठ टेढ़ा हो गया। वो शैतान की तरह दिखने लगी।

"महापंडित की बात मत कर।"

"क्यों?"

"वो अपनी शक्तियों का इस्तेमाल मेरे पर नहीं कर सकेगा। वो मेरा मुकाबला नहीं कर सकता।"

"महापंडित का मुकाबला तू नहीं कर सकेगी।"

"महापंडित मेरे सामने फुस्स है।" धरा ने हवा में हाथ लहराया—"वो बेबस हो जाएगा।"

"तू जानती है महापंडित को?"

"मैं उसे बहुत ज्यादा जानती हूं। पर वो मुझे ठीक से नहीं जानता। अब जान लेगा।"

"तू आधी-अधूरी बातें करती है। साफ बात क्यों नहीं करती?"

"वो भी करूंगी। सदूर तो पहुंच लेने दे।" धरा हंसी।

सोमारा धरा को देखती रही, फिर कह उठी।

"तू अपने को बहुत समझ रही है। पता नहीं कौन है तू, पर सदूर पर तेरी एक न चलेगी।" कहते हुए सोमारा उठ गई—"वहां अब राजा देव भी है। तूने कुछ किया तो तेरे को ग्रह से बाहर फेंक देंगे।"

धरा हंस पड़ी। सोमारा वापस अपनी जगह पर जा बैठी। उखड़ी निगाहों से धरा को देखा। उसी पल नगीना और मोना चौधरी उठीं और सोमारा के पास पहुंचकर, उसके पास बैठ गईं।

सोमारा ने दोनों को देखा।

"क्या बात है सोमारा? नगीना बोली—"धरा के साथ तुम्हारी और बबूसा की कुछ खास बातें हो रही हैं कल से।"

"हां।" सोमारा गम्भीर हो उठी—"बात ही कुछ ऐसी है।"

"मुझे बता क्या बात है?"

सोमारा ने धरा की तरफ देखा।

धरा इधर ही देख रही थी। नजरें मिलते ही वो मुस्कराई तो निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"धरा वैसी नहीं है, जैसी तुम लोग उसे जानते हो—वो...।" एकाएक सोमारा की बात बदलती चली गई—"वो बहुत अच्छी है, वो कहती है देवराज चौहान, नगीना का पति है, रानी ताशा का उस पर कोई हक नहीं है। नगीना के साथ नाइंसाफी हो रही...।"

और उधर कम्बल ओढ़े, चेहरा बाहर रखे धरा के चेहरे की मुस्कान शैतानी हो उठी थी। निचला होंठ टेढ़ा होकर मुस्कान का साथ दे रहा था। उसकी नजरें सोमारा के कहते होंठों पर टिक चुकी थीं।

बबूसा ने रानी ताशा के आदमी से कहा।

"किलोरा से कहो, बबूसा पोपा में आना चाहता है।"

उस व्यक्ति के हाथ में दबे यंत्र से सम्पर्क बनाकर ये बात किलोरा से कही।

"किलोरा, दरवाजा खोल रहा है तुम्हारे लिए।" उस व्यक्ति ने यंत्र बंद करते हुए कहा—"सोमाथ पर जानलेवा हमला किसने किया था?"

"मैंने नहीं देखा।" बबूसा मुस्करा पड़ा।

"उसका आधे से ज्यादा गला कट गया था। वो दिल दहला देने वाला नजारा था।"

बबूसा ने कुछ नहीं कहा और बाहर की तरफ बढ़ गया।

बाहर निकलते ही सर्दी का तीव्र एहसास हुआ। शरीर पर गर्म कपड़े भी नहीं पहन रखे थे। वो जब से डोबू जाति में वापस आया था, तभी से धरा के नए हालातों में उलझ गया था। एक मिनट भी चैन का नहीं मिला था। उसने सामने खड़े पोपा पर निगाह मारी। पोपा पर बर्फ पड़ी हुई थी। ओस की बूंदें लकीरें बनाती, पोपा से नीचे की तरफ आई पड़ी थीं। बबूसा हर तरफ नजरें घुमा रहा था परंतु उसका पूरा ध्यान धरा के खयालों पर था। धरा के बारे में होम्बी ज्यादा बताने से कतरा रही थी, शायद उसे चुप रहने में ही भला दिख रहा था। वो जानता था कि होम्बी जो करेगी, उसके फायदे के लिए करेगी। इधर धरा कह रही थी कि सदूर पर पहुंचने के बाद ही वो अपने बारे में कुछ कहेगी। परंतु बबूसा का पूरा विश्वास था कि आने वाले वक्त में धरा उनके लिए कोई मुसीबत खड़ी करेगी। महापंडित भी धरा के बारे में बता चुका है कि वो लड़की सदूर पर पहुंचकर कुछ अच्छा नहीं करने वाली। वो सदूर की ही है और अब वापस आ रही है। महापंडित से उसकी कल बात हुई थी। शायद अब तक महापंडित को धरा के बारे में कुछ नया मालूम हो गया हो। उससे फिर बात करनी चाहिए।

तभी पोपा का दरवाजा खुला और किलोरा वहां खड़ा दिखा। किलोरा ने बबूसा को देखा। आस-पास देखा कि उसी पल सीढ़ियां खुलती नजर आईं और जमीन से आकर लग गईं।

बबूसा सीढ़ियां चढ़कर, पोपा के भीतर जा पहुंचा।

"कैसे हो किलोरा?"

"ठीक हूं।" किलोरा पास ही लगे बटनों को दबाता कह उठा।

"अब तो मेरे आने पर तुम्हें दरवाजा खोलने के लिए किसी से इजाजत नहीं लेनी पड़ती।" बबूसा मुस्कराया।

उसी पल सीढ़ियां सिमट आईं और दरवाजा बंद होता चला गया।
किलोरा पलटा और गहरी निगाहों से बबूसा को देखता कह उठा।
"सोमाथ पर तुमने हमला कराया?"
"ओह, तो खबर यहां तक आ गई। तुमसे किसने कहा कि मैंने हमला कराया?"
"सोमाथ ने, वो यहीं है।"
"तुम्हें पूरा भरोसा है कि सोमाथ का दिमाग सही है? मुझे तो वो ठीक नहीं लगता।"
"वो पूरी तरह ठीक है।" किलोरा बोला—"उससे मत उलझो। तुम उसका मुकाबला नहीं कर सकते। वो तुम्हें मार देगा।"
"वो मुझे मारने की कोशिश कर चुका है। रानी ताशा वहां न पहुंच जाती तो, वो मुझे मार ही देता।"
"तब भी सोमाथ से उलझने का इरादा रखते हो।"
"हां।"
"वो तुम पर भारी पड़ेगा और तुम्हारी जान ले लेगा।" किलोरा के चेहरे पर गम्भीरता थी।
"सोमाथ ने बचकाना हरकत की जो तुमसे मेरी शिकायत लगाई।" बबूसा मुस्करा पड़ा।
"उसने मुझसे नहीं रानी ताशा से कहा था और रानी ताशा ने ये बात राजा देव से कही, जब वो चालाक कक्ष में मौजूद थे और मैं भी पास में ही था।" किलोरा ने बात स्पष्ट करते हुए कहा।
"हूं।" बबूसा ने सिर हिलाया—"तुम सोमाथ की तरफ हो या मेरी?"
"किसी की भी तरफ नहीं। किसी से उलझने या किसी की साइड लेना मेरा काम नहीं है।"
"राजा देव कहां हैं?"
"चालक कक्ष में।"
"मैं अभी राजा देव के पास जाऊंगा, परंतु मुझे महापंडित से बात करनी है।" कहने के साथ ही बबूसा आगे बढ़ गया—'मैं सोमाथ को छोड़ने वाला नहीं। वरना वो अक्सर मेरे रास्ते में आता रहेगा। उसे सबक सिखाना जरूरी है।' बबूसा बड़बड़ा उठा।
बबूसा स्क्रीन वाले गोल कमरे में पहुंचा। वहां कोई भी मौजूद नहीं था। बबूसा ने हैडफोन जैसा यंत्र कानों पर लगाया और बटनों-लीवरों से छेड़-छाड़ करने लगा। स्क्रीन रोशन हो उठी। वो महापंडित से सम्पर्क बनाने की चेष्टा

में था और लगातार कोशिश करते रहने के बाद, पंद्रह मिनट लगे सम्पर्क बनने में। स्क्रीन पर महापंडित का चेहरा दिखने लगा।

"मैं कब से तुम्हारे साथ सम्पर्क बनाने की चेष्टा में था।" बबूसा बोला।

"मैं दूर था। मेरी मशीन ने मुझे पुकार-पुकार कर बुलाया। आने में वक्त लग गया। लड़की के बारे में नया कुछ?"

"तुमने कहा था कि धरा को साथ न लाऊं, ऐसी कुछ कोशिश करूं। परंतु जादूगरनी कहती है कि मैं ऐसा कुछ भी न करूं, वरना वो मुझे नुकसान पहुंचा देगी।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ऐसा ही कुछ मेरी मशीनों ने मुझे संकेत दिया है कि वो लड़की सदूर पर पहुंच जाएगी।"

"मतलब कि उसे रोका नहीं जा सकता।"

"व्यर्थ होगा उसे रोकना।"

"तुम्हें धरा के बारे में मशीनों ने कोई नई जानकारी दी?" बबूसा ने कहा।

"मशीनें कोशिश में लगी हैं। वो खुद तकलीफ में हैं। क्योंकि इस बारे में कोई जानकारी नहीं पा रहीं कि वो लड़की कौन है, परंतु एक मशीन का कहना है कि जब वो लड़की सदूर पर पहुंचेगी तो तभी उसके बारे में जानकारी मिलनी शुरू होगी।"

"तुम्हारी मशीनें इस तरह असफल क्यों हो रही हैं महापंडित?"

"मशीनों का कहना है कि वो अपने प्रश्न के जवाब के करीब पहुंचने को होती हैं तो जाने कौन उन्हें आगे बढ़ने से रोक देता है। उनका कहना है कि कुछ ताकतें उनका रास्ता रोक रही हैं।"

"धरा कहती है कि उसके पास ताकतें हैं। सदूर पर भी उसकी ताकतें मौजूद हैं।"

"वो मुझे सच कहती लग रही है बबूसा।"

"तो तुम धरा से हार मानने वाले हो। उसकी ताकतें अपना काम पूरा कर रही हैं परंतु तुम्हारी मशीनें सफल नहीं हो रहीं।"

"वो लड़की जरूर कोई खास है।"

"खास से मतलब?"

"ताकतवर।"

"वो सदूर पहुंच सके, इसके बारे में सदूर पर मौजूद उसकी ताकतों ने अपना काम शुरू कर दिया था। रानी ताशा के हाथों राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवा दिया था। ताकि जब राजा देव की वापसी हो तो वो भी सदूर पर पहुंच सके। और तुम्हारी मशीनें एक छोटी-सी बात का जवाब नहीं पा सकीं कि धरा की हकीकत क्या है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं खुद नहीं समझ पा रहा कि ये सब क्यों हो रहा है। मेरे साथ मेरी मशीनें इस बात को जानने की कोशिश में बराबर लगी हुई हैं कि उस लड़की की असलियत क्या है। इस बारे में मालूम होते ही मैं तुम्हें बताऊंगा बबूसा।"

महापंडित से बात करके बबूसा उस कमरे से निकला और पोपा के रास्तों पर आगे बढ़ गया। चेहरे पर गम्भीरता व्याकुलता की छाप थी। रह-रहकर उसके होंठ सख्ती से भिंच जाते थे। रास्ते में दो-तीन लोग मिले। वो खुश होकर बबूसा से मिले, परंतु बबूसा सिर हिलाकर आगे बढ़ता, चालक कक्ष की तरफ बढ़ता रहा। पोपा का जर्रा-जर्रा उसका पहचाना हुआ था। पोपा बनाते समय पूरे वक्त वो राजा देव (देवराज चौहान) और जम्बरा के साथ था। पोपा को तैयार करने में उसने भी बराबर का हाथ लगाया था। यहां के रास्ते, यहां की ऐसी कोई चीज नहीं थी, जिसे उसको पता न हो। पोपा उसके घर की तरह था, जिसका कि रहने वालों को सब पता होता है। बबूसा के दिमाग में इस वक्त खलबली मची हुई थी। उसकी नजरों में इस वक्त सबसे जरूरी काम, राजा देव को धरा के बारे में बताना था। उसे पूरा भरोसा था कि राजा देव अवश्य धरा का कोई इंतजाम करेंगे। धरा से छुटकारा मिल जाएगा। ऐसी बातों का हल निकालने में राजा देव का दिमाग बहुत काम करता था। एकाएक बबूसा मुस्करा पड़ा, ये सोचकर कि सदूर पर वो फिर राजा देव के साथ जीवन व्यतीत करेगा। राजा देव की सेवा में लग जाएगा। सब कुछ अच्छे से चलने लगेगा। तभी उसके खयाल धरा की तरफ मुड़ गए कि इस वक्त तो इस समस्या का हल निकालना है। बार-बार उसे धरा के टेढ़े होंठ वाली मुस्कान याद आ रही थी।

'कभी-कभी तो वो बहुत खतरनाक लगती है।' बबूसा बड़बड़ा उठा—'पहले वो कितनी मासूम लगा करती थी। तब मुझे क्या पता था कि मेरे साथ रहकर, वो अपना ही कोई खेल, खेल रही है।'

बबूसा अपनी ही सोचों में उलझा गैलरी के रास्ते को तय करके बांई तरफ मुड़ता गया। वो परेशान भी लग रहा था और तनाव में भी था। सोमाथ से ज्यादा उसे, धरा की समस्या दिख रही थी। राजा देव को इस बारे में बताना जरूरी हो गया था। राजा देव ही धरा के बारे में कोई रास्ता निकालेंगे। ये रास्ता खत्म होते ही आगे चार सीढ़ियां आई जिन्हें चढ़कर वो सीधे वाले रास्ते में आगे बढ़ गया है। दाएं-बाएं और तिरछी तरफ भी एक रास्ता पा रहा था। रास्तें में यदा-कदा कोई दिख जाता है, परंतु इधर का रास्ता सुनसान जैसा ही लगता था। क्योंकि इस तरफ पोपा का पिछला हिस्सा था और सामान्य लोगों का इस तरफ आना कम ही होता था। चुप्पी का वातावरण हर तरफ व्याप्त था।

आगे के मोड़ से मुड़ते ही बबूसा रुकता चला गया।
सामने से सोमाथ आ रहा था। सोमाथ भी करीब आकर ठिठक गया।
बबूसा शांत भाव में मुस्कराया और कह उठा।
"तो तुम मेरी शिकायत लगा रहे हो रानी ताशा से। बच्चे जैसी बात है ये।"
"मैं अपने लिए रास्ता तैयार कर रहा हूं।" सोमाथ सामान्य स्वर में बोला।
"कैसा रास्ता?"
"तुम्हें खत्म करने का। सबसे कहना जरूरी है कि तुमने मुझे मारने की चेष्टा की, ताकि जब मैं तुम्हें मारूं तो मैं सच्चा लगूं। मैंने कह दिया है कि अगर तुमने दोबारा ऐसा किया तो मैं तुम्हें मार दूंगा।"
"रानी ताशा से कहा?"
"राजा देव से भी कहा है।"
"राजा देव ने तुम्हारी बात पसंद नहीं की होगी।"
"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। राजा देव मुझे संयम बरतने और तुम्हें समझाने को कह रहे थे। सोमाथ बोला।
"तो तुम अपने को मुझसे ज्यादा ताकतवर समझते हो।"
"मैं हूं।"
"ये भूल है तुम्हारी।" बबूसा मुस्करा रहा था—"मैं तुम्हें खत्म करने वाला हूं।"
"नहीं कर सकते।"
"बहुत जल्द तुम्हारी बात का जवाब मिल जाएगा। मैं तुम्हारे लिए एक चक्रव्यूह की तैयारी कर रहा हूं मन ही मन। मुझे पूरा यकीन है कि तुम उस चक्रव्यूह से नहीं बच सकते। अपने को बचा सको तो बचा लेना।"
"मुझे मारने में तुम कभी भी सफल नहीं हो सकते।" सोमाथ का स्वर शांत था।
"ये तो आने वाला वक्त बताएगा।"
"तुम मुझे इसलिए मारना चहते हो कि उस दिन मैं तुम्हें मारने जा रहा था।" सोमाथ मुस्करा पड़ा।
बबूसा कुछ पल सोमाथ को देखता रहा फिर कह उठा।
"गलती महापंडित की है कि उसने तुम्हें अथाह ताकत दे दी और मेरा जन्म कराते समय, मुझमें राजा देव के सारे गुण डाल दिए। राजा देव की ताकत राजा देव का दिमाग, सब कुछ उन जैसा ही है। राजा देव में ये खासियत रही है कि वो कभी भी हार नहीं मानते। तो मैं कैसे तुमसे हार मान सकता हूं। मुझसे झगड़ा लेकर तुमने गलत कर दिया।"

"तुम्हें इस बात का जरा भी डर नहीं कि तुम मारे जाओगे मेरे हाथों।"

"तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकोगे। क्योंकि मेरे चक्रव्यूह को तुम भेद नहीं सकोगे। फंसकर रह जाओगे।" बबूसा ने सिर हिलाकर कहा—"अगर तुम बच गए तो मैं हार मान लूंगा।"

सोमाथ शांत निगाहों से, बबूसा को देखने के बाद बोला।

"बहुत भरोसा है अपने चक्रव्यूह पर, जो मुझे पहले ही बता दिया कि तुम क्या करने जा रहे हो।" सोमाथ ने कहा।

"आने वाले वक्त में देखना कि क्या होता है। मैं तुम्हारे लिए ही हर वक्त सोचता रहता हूं।" बबूसा ने कहा और सोमाथ की बगल से होते हुए आगे बढ़ गया। चेहरे पर शांत भाव थे। पलटकर एक बार भी सोमाथ को नहीं देखा।

वो रास्ता पार होते ही आगे संकरी गली जैसा रास्ता आ गया कि जहां से एक बार में एक ही इंसान आगे जा सकता था, यानी कि कतार के रूप में आगे बढ़ा जा सकता था वहां से। वो करीब बारह कदम का रास्ता था जिसे पार करते ही बबूसा पोपा के पीछे वाली जगह पर पहुंच गया, जो कि कुछ खुली जगह थी। करीब पंद्रह लोग वहां बैठ सकते थे। बबूसा ठिठका और उसकी गम्भीर निगाह हर तरफ घूमने लगी। सब कुछ उसका जाना-पहचाना था। छत धातु की बनी हुई थी। धातु में ही डिजाइन जैसा डाल रखा था। दीवारें कहीं प्लेन थीं तो कहीं जरूरत के हिसाब से सामान लगाया हुआ था, जैसे कि खाने बने हुए थे। उन पर ढक्कन लगा था एक तरफ बाशबेशिन जैसा कुछ लगा था और उस पर टूटी के आकार का कुछ था और वहां से पानी भी आता था। बबूसा जानता था कि पोपा के ऊपरी, बाहरी खोल में पानी भरा हुआ है। ऊपर खोल के नीचे धातु की एक और परत थी, दो परतों के बीच पानी भरने की जगह थी, इससे पोपा सफर के दौरान सूर्य की गर्मी से भी बचा रहता था और पानी की जरूरत भी पूरी हो जाती थी।

बबूसा उन खानों को खोलकर देखने लगा।

एक आधा को छोड़कर वो खाली थे। स्पष्ट था कि पोपा का ये हिस्सा कम इस्तेमाल होता था। बबूसा की निगाह साइड में खुलने वाले पोपा के दरवाजे पर जा टिकी। वो बंद था और पास में पीले बटनों वाली प्लेट लगी थी। आगे बढ़कर बबूसा उन पीले बटनों को खास क्रमवार के हिसाब से दबाने लगा।

दबाने के चंद सेकंडों के बाद दरवाजा हिला और फिर बाहरी तरफ खुलता चला गया। ठंडी हवा का तीव्र झोंका भीतर आया। बाहर बर्फ की बिछी सफेद चादर दिखने लगी। बबूसा सोच भरी निगाहों से बाहर देखने लगा, तभी खुले दरवाजे के भीतर सीढ़ियां निकलीं और खुलती हुई जमीन से आ लगीं।

बबूसा ने पलटकर पोपा के भीतर निगाह मारी।

खानों को जोड़ती रॉडों पर उसकी निगाह जा टिकी। आगे बढ़कर उसने रॉडों को हाथ से पकड़कर चैक किया, वो बेहद मजबूती से लगी हुई थीं।

'इस बार कड़ा मुकाबला होगा सोमाथ।' बबूसा बड़बड़ा उठा।

फिर बबूसा वापस खुले दरवाजे पर ठिठका कि ठिठक कर रह गया।

खुली सीढ़ियों के पास सोमाथ खड़ा ऊपर ही देख रहा था।

दोनों की नजरें मिलीं, बबूसा बरबस ही मुस्करा पड़ा।

"ये क्या कर रहे हो?" सोमाथ ने पूछा।

"तुम मुझसे नहीं पूछ सकते कि मैं क्या कर रहा हूं।" बबूसा हौले-से हंस पड़ा।

सोमाथ उसे देखता रहा फिर बोला।

"इस रास्ते को मैंने पहली बार देखा है।"

"तुम पोपा को जानते ही कितना हो। महापंडित ने पोपा के बारे में जो जानकारी तुम में भर दी, वो ही तुम जानते हो और महापंडित भी पोपा को ज्यादा नहीं जानता। मैं तो राजा देव और जम्बरा के साथ, पोपा के निर्माण में लगा रहा था। हम तीनों से ज्यादा पोपा को और कोई नहीं जान सकता।" बबूसा ने कहा।

"तुम मुझे क्या बताना चाहते हो, ये कहकर।"

"कुछ नहीं बताना चाहता।" बबूसा ने कहा और नम्बरों वाली प्लेट के बटनों को दबाने लगा।

"तुम्हारी ये हरकतें अजीब-सी हैं।" बाहर खड़ा सोमाथ बोला—"तुम...।"

तभी बाहर फैली सीढ़ियां दरवाजे में आ सिमटीं और दरवाजा बंद होने लगा।

बबूसा और सोमाथ एक-दूसरे को देखते रहे कि दरवाजा बंद हो गया। बाहर से आती ठंडी हवा थम गई। बबूसा कई पलों तक बंद दरवाजे को देखता रहा। फिर रहस्य से भरी मुस्कान चहरे पर नाच उठी।

▭ ▭

बबूसा चालक कक्ष में पहुंचा जो कि पोपा के आगे की तरफ था। चालक कक्ष का नजारा ऐसा था जैसे कि उस जगह पर किसी ने ढेर सारा बिजली का सामान डालकर उसे जोरों से हिला दिया हो। हर तरफ तारें, स्विच, नॉब, पचासों लीवर, सुर्ख रंग का डैशबोर्ड और उस पर बहुत संख्या में स्विच। कुछ ऐसे लीवर भी थे जो कि स्टेयरिंग की तरह गोल-गोल घुमाए जा सकते थे। सामने ऐसे कांच जैसे प्लास्टिक की विण्ड स्क्रीन थीं कि कुछ टकरा जाने

की स्थिति में वो टूटें न। इस तरफ दो कुर्सियां थीं, जो कि फर्श के साथ फिट थीं। ऐसी और भी ढेरों चीजें थीं जिन्हें बता पाना कठिन है। बांई तरफ की दीवार में ढक्कन वाले छोटे-छोटे खाने बने हुए थे, जिन पर नम्बर प्लेट लगी थी। छत पर विण्ड स्क्रीन जैसा शीशा लगा था, जो कि मध्यम साइज की खिड़की जैसा था और वहां से भी बाहर देखा जा सकता था। ये दस फुट चौड़ा और दस फुट लम्बा कमरा था। डैशबोर्ड के एक तरफ छोटी-छोटी कई स्क्रीनें लगी थीं जो कि पोपा की यात्रा के वक्त पोपा के बाहर, हर दिशा का नजारा दिखाती थीं। इस वक्त चालक कक्ष में देवराज चौहान मौजूद था, जो कि नीचे झुका डैशबोर्ड के नीचे की तारों में उलझा हुआ था कि आहट पाकर सिर घुमाया तो बबूसा को देखा।

"आं-हां राजा देव, आपको पोपा के चालक कक्ष में देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।" बबूसा खुशी से कह उठा।

देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ और मुस्कराया।

"हम सबकी मेहनत सफल हुई बबूसा। पोपा बना लिया हमने।" देवराज चौहान ने कहा।

"आपने और जम्बरा ने बहुत मेहनत की थी।"

"तुमने और सौ से ज्यादा लोगों ने पोपा बनाने में बहुत ज्यादा सहयोग दिया था।"

"पोपा बनाना आपका सपना था राजा देव। मैं बहुत खुश था जब आपने कहा था कि पोपा तैयार हो गया। उस रात आपने इसी चालक कक्ष में बैठकर कारू (शराब) पी थी। बहुत ज्यादा कारू पी ली थी। आप और भी पीना चाहते थे, परंतु मैंने कारू का बर्तन आपसे लेकर उस खाने में बंद कर दिया था।" बबूसा ने एक बंद खाने की तरफ इशारा किया।

"मुझे याद नहीं।" देवराज चौहान मुस्कराया।

बबूसा के मुस्कान भरे चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"ये सारे खाने के लॉक्स आपने सैट किए थे मेरी मौजूदगी में। इन्हें खोलने का क्रम जम्बरा को बता दिया था?"

"जम्बरा तब दूसरे कामों में व्यस्त था। तो मैंने सोचाकि उसे अगली मुलाकात में बता दूंगा। तुम तो ये खबर देने किले की तरफ रवाना हो चुके थे कि कल मैं किले पर पहुंच रहा हूं। अगले दिन मैं भी रवाना हो गया था।"

बबूसा का चेहरे पर दुख के भाव उभरे। उसे वो वक्त याद आ गया था।

"बबूसा—क्या हुआ?"

"कुछ नहीं राजा देव।" बबूसा ने तुरंत सिर हिलाया—"तो आपने इन बक्सों को खोलने के बारे में किसी को नहीं बताया फिर तो आज भी वो

वाला कारू का बर्तन इसी बक्से में होगा।" कहने के साथ ही बबूसा आगे बढ़ा और एक बंद बक्से के पास ठिठककर वहां लगी बटनों की प्लेट के, बटनों को क्रमवार दबाने लगा।

दबाकर हटा तो, हाथ से बक्से का पल्ला खोल दिया।

वो मात्र दो फुट गहरा था। और उसमें पड़ा कुछ दिखा। बबूसा ने हाथ से उसे पकड़ा और बाहर निकाला। चमक रही थी बबूसा की आंखें। वो बर्तन जग की तरह खुले मुंह वाला था और अब खराब हो चुका था। बदरंग हो चुका था। उसका बुरा हाल, देखते ही बनता था।

देवराज चौहान एकाएक ठहाका मारकर हंस पड़ा।

"ये—ये वो ही बर्तन है राजा देव।" बबूसा की आवाज कांप रही थी—"वो ही बर्तन है, जब पोपा बन जाने की खुशी में आप इस बर्तन में भरकर कारू पी रहे थे। तब का रखा अब बर्तन को बाहर निकाला है।"

"मुझे कुछ-कुछ उस वक्त की याद आ रही है बबूसा।" देवराज चौहान हंसते हुए कह उठा।

"वो ही बर्तन है ये।"

देवराज चौहान हंसता हुआ कुर्सी पर जा बैठा।

बबूसा ने मुस्कराकर बर्तन को एक तरफ रखते हुए कहा।

"बीते वक्त की कुछ यादें कितनी अच्छी होती हैं राजा देव।"

"हां। बहुत अच्छा लगता है पुरानी बातों को याद करके।"

बबूसा देवराज चौहान को गम्भीर निगाहों से देखने लगा।

"मुझे लगता है पोपा का निर्माण करना जैसे कल की बात है। चालक कक्ष की एक-एक चीज याद है मुझे। मैंने ही इस कक्ष को तैयार किया था। यहां तब भी याद है कि कौन-सी तार को कहां जोड़ा था मैंने।"

"आपने ही सब कुछ बनाया है तो क्यों याद नहीं होगा।"

"आज मैं बहुत खुश हूं बबूसा। मैंने सोचा है कि मैं ही पोपा को चलाकर, सदूर तक ले जाऊंगा।"

"इससे अच्छी और क्या बात होगी।"

"मैं जल्द से जल्द सदूर पर पहुंचकर देखना चाहता हूं कि अब मेरा सदूर कैसा है।"

कुछ चुप रहकर बबूसा बोला।

"मुझे आपसे शिकायत है राजा देव।"

देवराज चौहान बबूसा को देखने लगा।

"मैंने आपको कितना रोका कि अभी आप रानी ताशा से न मिलें, परंतु आपने मेरी एक न मानी।"

"क्यों न मिलता ताशा से।" देवराज चौहान बोला—"मैं ताशा से दूर नहीं रह सकता।"

"मैं चाहता था कि आपको सब याद आ जाए कि रानी ताशा ने आपको कैसा धोखा दिया, कैसे आपको सदूर ग्रह से बाहर फेंका...।"

"ताशा मुझे क्यों ग्रह से बाहर फेंकने लगी। वो तो मुझ पर जान देती है।"

बबूसा कुछ चुप रहकर कह उठा।

"मेरे खयाल में तब रानी ताशा स्वयं धोखे में थीं। वो खुद नहीं जानती थीं कि उनके द्वारा क्या हो रहा है।"

"क्या मतलब?"

"मुझे पता लगा है कि आपको सदूर से बाहर फेंकने का काम, रानी ताशा ने अपने होशोहवास में नहीं किया था। मैं आपको कुछ नई बातें बताना चाहता हूं, वो ही बताने मैं आपके पास आया हूं।" बबूसा गम्भीर हो गया—"धरा को तो आप जानते ही हैं, पर वो...वो...।" बबूसा थम-सा गया—फिर मुस्कराकर कह उठा—"वो बता रही थी कि राजा देव सदूर पर पहुंचकर बहुत खुश होंगे। रानी ताशा के साथ बहुत अच्छा जीवन बिताएंगे।"

देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

जबकि बबूसा के चेहरे पर बेचैनी नाच उठी।

"धरा बहुत खराब...।" बबूसा ने पुनः कहा, परंतु उसके होंठों से जैसे जबरन निकला—"धरा को सदूर पर साथ ले जाना बहुत अच्छी बात रहेगी। वो भी सदूर को देखकर खुश होगी राजा देव।"

"वो हमारे साथ ही तो चल रही है।" देवराज चौहान मुस्कराकर बोला।

"ये मुझे क्या हो रहा है।" बबूसा के होंठों से निकला—"मैं आपको कुछ और बताना चाह रहा हूं ये कैसी बातें मेरे मुंह से निकल रही हैं, मैं धरा की असलियत...धरा का व्यवहार सबके साथ बहुत अच्छा है...मैं—मैं अभी बात नहीं कर सकता राजा देव। पता नहीं मुझे क्या हो रहा है। ये भी धरा की ही चाल...धरा के साथ मैं और सोमारा रात देर तक बातें करते रहे और और...ओह।" बबूसा ने अपना माथा पकड़ लिया।

"तुम्हें कुछ आराम कर लेना चाहिए बबूसा।" देवराज चौहान ने कहा—"थक गए लगते हो।"

"ये सब उसकी ताकतें...मैं धरा को पूरा सदूर घुमाऊंगा राजा देव।"

"हां, बग्गी पर उसे...।"

"अब तो सदूर पर वाहन चलते हैं राजा देव।" बबूसा परेशान स्वर में बोला—"सच में मैं थका हुआ हूं मुझे कुछ देर आरम करना होगा। मैं—मैं जा रहा हूं राजा देव।"

"तुम्हें मालूम है कि आज हम सदूर की तरफ पोपा में रवाना हो जाएंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"ओह मुझे नहीं पता था।"

"चलने की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं, कुछ ही घंटों में हम पृथ्वी ग्रह छोड़ देंगे।"

"फिर तो मुझे भी चलने की तैयारी कर लेनी होगी।"

"सोमारा से मिलकर कैसा लगा?" देवराज चौहान मुस्कराया।

"बहुत अच्छा राजा देव। हम सदूर पर पहुंचकर शादी कर लेंगे।"

"तुम सोमाथ के लिए अपन मन में क्रोध रखे हुए हो।" देवराज चौहान बोला।

"ये मेरा और सोमाथ का मामला है राजा देव।" बबूसा का स्वर सख्त हो गया।

"वो तुमसे ज्यादा ताकतवर है बबूसा। उस पर हमला न ही करो तो अच्छा है।"

"आप इस मामले में न पड़ें राजा देव। मैं उसे संभाल लूंगा।"

देवराज चौहान ने गहरी नजरों से बबूसा को देखा।

"तुम मेरी बात नहीं मान रहे।"

"मैं सोमाथ को जीतकर दिखाऊंगा राजा देव।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"अगर तुमने अब सोमाथ पर हमला किया तो वो तुम्हें मार देगा। उसने स्पष्ट कहा है।" देवराज चौहान बोला—"और मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता। तुम्हारे बिना सदूर पर मेरा काम कैसे चलेगा?"

"सोमाथ मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकेगा। उसे खत्म करने के लिए मैंने जो चक्रव्यूह तैयार किया है, उसका मुकाबला वो नहीं कर सकेगा और धोखे में मारा जाएगा। क्या आपको मुझ पर भरोसा नहीं राजा देव?"

"भरोसा है। पर मैं नहीं चाहता कि तुम खतरे में पड़ो।" देवराज चौहान गम्भीर था।

"मैं वो सीधा-साधा बबूसा नहीं राजा देव। इस बार महापंडित ने मेरा जन्म कराते समय मुझ में आप जैसी ताकत और आप जैसे दिमाग के गुण डाल दिए थे। ऐसे में आपको मेरी चिंता नहीं करनी चाहिए। मैं बहुत कुछ संभाल सकता हूं। डोबू जाति का सबसे तेज योद्धा हूं मैं। ऐसे में मैं बहुत सोच-समझकर सोमाथ के खिलाफ अपने चक्रव्यूह को तैयार कर रहा हूं।"

देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता ठहरी रही।

उसी पल दरवाजे पर आहट उभरी और किलोरा ने भीतर प्रवेश किया।

दोनों की नजरें किलोरा पर गईं। उसी पल देवराज चौहान, बबूसा से कह उठा।

"तुम कितने भी बेहतर सही, पर मुझे तुम्हारी चिंता रहेगी।"

"मैं चलने की तैयारी कर लूं राजा देव।" बबूसा मुस्कराया—"पोपा के चलते ही मैं आपकी सेवा में हाजिर हो जाऊंगा।" बबूसा इजाजत लेकर बाहर निकला और आगे बढ़ता बड़बड़ा उठा—'ये मुझे क्या हो गया था। मैं जब भी धरा की असलियत राजा देव को बताने लगता तो मेरे मुंह से मेरे मनचाहे शब्द क्यों नहीं निकल रहे थे। जरूर ये सब धरा की ताकतें ही मेरे मुंह से निकलवा रही थीं और उन बातों से मुझे रोक रही थीं, जो मैं कहना चाहता था। धरा ने कहा भी तो था कि मेरी ताकतें मुझे कुछ भी बताने नहीं देंगी। ये सब शैतानी धरा की ही है।"

▭ ▭

बबूसा पहाड़ के भीतर उस कमरे में पहुंचा, जहां वो सब मौजूद थे। सबसे पहले उसकी निगाह धरा की तरफ गई, जो कि सबसे अलग-थलग कम्बल ओढ़े बैठी थी। नजरें मिलते ही धरा मुस्कराई तो उसका नीचे का होंठ टेढ़ा हो गया। बबूसा का चेहरा सख्त हो उठा। वो सीधा धरा के पास पहुंचकर नीचे बैठा कि धरा ने हंसकर कहा।

"राजा देव को बता आया मेरे बारे में?"

"तूने मुझे बताने क्यों नहीं दिया। जब भी कहना चाहा तो मुंह से दूसरे ही शब्द निकले।" बबूसा का स्वर तीखा था।

धरा हंस पड़ी।

"हंसती क्यों है?"

"मैंने तेरे को कहा तो था कि तू राजा देव को बता नहीं सकेगा कुछ। मैं नहीं बताने दूंगी।"

"तो तेरी ताकतों ने मुझे कहने से रोका?"

"हां। मैं न चाहूं तो तू मेरी अनचाही बात कैसे किसी को बता पाएगा।" धरा ने आंखें नचाईं।

"अपनी ताकतें दिखा मुझे?"

"सदूर पर दिखाऊंगी। वैसे भी यहां मेरे पास दो-तीन ही ताकतें हैं।" धरा ने गहरी सांस ली—"पर सदूर पर मुझे किसी चीज की कमी नहीं होगी। वहां तो वही होगा जो मैं चाहूंगी। मुझे वहां पहुंचने तो दे। तू देवराज चौहान को सब कुछ बता देता तो मेरे को सदूर पर पहुंचने में समस्या आ सकती थी। मैंने ऐसा होने ही नहीं दिया।"

"तू है कौन?"

"मैंने तेरे को बताया था कि धरा हूं मैं।"

"तेरा असली नाम?"

"दोबारा पूछ रहा है ये ही बात।" खुंबरी मुस्कराई, निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"मेरा असली नाम तो तू तभी जान पाएगा। जब सदूर पर पहुंचेगा तू। उससे पहले मैं अपने बारे में कुछ नहीं बताने वाली।"

"बताने से क्या होगा?"

"मैं पहचानी जाऊंगी। मेरा नाम तो तूफान खड़ा कर देगा, बहुत वक्त बीत गया मुझे सदूर से निकले, परंतु जानने वाले तो अभी भी मेरा नाम जानते हैं। मेरी असलियत जानते हैं। जबकि मैं नहीं चाहती कि सदूर पर पहुंचने से पहले मुझे कोई परेशानी हो।"

"तूने मेरा दिमाग खराब कर रखा है धरा।" बबूसा झल्ला उठा।

"सदूर पर पहुंचकर तू मुझे नए नाम से जानेगा। वो ही, मेरा पुराना नाम।" धरा ने आंखें नचाकर कहा।

"तू शैतान जैसी है।"

"सच कहा, मैं ऐसी ही हूं।"

"मैं तुझे साथ नहीं ले जाना चाहता।" बबूसा ने दांत भींचकर कहा।

"तू कुछ नहीं कर सकेगा। मेरी ताकतें मेरे बारे में, तेरे को किसी से कहने नहीं देंगी। मैं सदूर पर जरूर पहुंचूंगी।"

"मैं तेरी हरकतों से हैरान-परेशान हो गया हूं।"

"अभी से—अभी तो मैंने कुछ किया भी नहीं। मेरा रंग तूने देखा ही कहां है। सदूर पहुंच और मेरा रंग देख ले।"

"हम आज ही सदूर के लिए चल रहे हैं।"

"जानती हूं। मेरी ताकतों ने मुझे इस बात का एहसास करा दिया है।"

बबूसा उसी पल वहां से उठा और पलटकर सबसे कह उठा।

"हम आज पोपा में बैठकर सदूर के लिए चल देंगे।"

"सच बबूसा।" सोमारा खुशी से कहते उठी और पास आ पहुंची।

जगमोहन, नगीना और मोना चौधरी की नजरें मिलीं।

"तैयारी करो सोमारा। मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें कुछ काम बताता हूं।" बबूसा बोला।

तभी जगमोहन कह उठा।

"सोमाथ का कुछ हुआ?"

"उसका भी जरूर कुछ होगा।" बबूसा कड़वे स्वर में कह उठा—"जब तक उसकी जान नहीं लूंगा, मुझे चैन नहीं मिलेगा।"

"जान?" मोना चौधरी बोली—"पर वो तो रोबॉट है, हमारी तरह इंसान नहीं, उसमें जान कैसे आ गई?"

"उसे खत्म कर देने में ही सब कुछ आ जाता है।" कहने के साथ ही बबूसा, सोमारा के साथ बाहर निकल गया।

जगमोहन ने वहीं बैठे धरा से कहा।

"आज हम सदूर की तरफ चल देंगे धरा।"

"मुझे अच्छा लगेगा।" धरा ने शांत स्वर में कहा।

"तुम्हें डर तो नहीं लग रहा।"

"डर कैसा? अपने घर जाते किसी को डर लगता है क्या?" धरा ने मासूम स्वर में कहा।

"घर? सदूर ग्रह तुम्हारा घर कैसे हो गया?"

"अगर सदूर मुझे पसंद आ गया तो मैं अपनी दुनिया वहीं बसा लूंगी।"

"तुमने सोमारा से कहा कि नगीना के साथ नाइंसाफी हो रही है। देवराज चौहान उसका पति है, जिसे कि रानी ताशा...।"

"सही तो कहा है।" धरा बोली—"देवराज चौहान पर मैं रानी ताशा का हक नहीं मानती। पर मैं कर भी क्या सकती हूं। कह ही सकती हूं। रानी ताशा और सोमाथ का मुकाबला तो मैं कर नहीं सकती।"

तभी मोना चौधरी कठोर स्वर में कह उठी।

"बेला, हमें कुछ करना होगा। हम इस तरह चुपचाप क्यों बैठे हैं।"

"हम कुछ भी कर सकने की स्थिति में नहीं हैं।" जगमोहन बोला।

"क्यों नहीं हैं, हम तो...।"

"मोना चौधरी।" जगमोहन ने शब्दों को चबाकर कहा—"तुम बेहतर जानती हो कि हम रानी ताशा का मुकाबला नहीं कर सकते। करें तो सोमाथ आगे आ जाएगा। रानी ताशा के और लोग भी हैं जो...।"

"पर हम कब तक चुप बैठे रहेंगे। देवराज चौहान को तो न बेला की परवाह है, न तुम्हारी, वो रानी ताशा में इस कदर डूबा हुआ है कि शायद उसे हमारा खयाल ही नहीं आ रहा होगा। मुझे नहीं पता था कि वो इतना कमीना है कि एक औरत की खातिर वो बेला को और तुम्हें भूल जाएगा।" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

"तुम देवराज चौहान की स्थिति को गलत समझ रही हो।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस वक्त सदूर ग्रह के जन्म में वो रंग चुका है। तब रानी ताशा के साथ उसे बेहद प्यार था और अब वो उसे मिल गई और ताशा की याद भी आ गई उसे। तब वो उस ग्रह का राजा हुआ करता था। इस वक्त उसके मस्तिष्क में सदूर ग्रह की चीजे हैं। ये जन्म धुंधला पड़ गया

लगता है शायद। वरना वो नगीना भाभी और मुझे नहीं भूल सकता था। उसे तो सिर्फ रानी ताशा ही नजर आ रही है।"

"ऐसा है तो हम क्यों सदूर ग्रह जाने को तैयार हो रहे हैं।" मोना चौधरी ने तीखे स्वर में कहा।

"दो बातें हैं जिनकी वजह से हम सदूर ग्रह पर जाने को तैयार हैं। एक तो बबूसा का सहारा है हमें। बबूसा सोमाथ को खत्म कर देना चाहता है और वो रानी ताशा के भी खिलाफ है। ऐसे में हम बबूसा के साथ रहकर आने वाले वक्त का इंतजार कर सकते हैं कि शायद भविष्य में देवराज चौहान ठीक हो जाए। सदूर और रानी ताशा का असर उस पर से कम हो जाए। हम देवराज चौहान को आसानी से नहीं अलग कर सकते।" जगमोहन की आंखें भर आईं—"मैंने अपना सारा जीवन ही देवराज चौहान के साथ बिताया है। एक तरह से मेरी जिंदगी ही उसके साथ शुरू हुई थी तो अब उसे अलग होते कैसे देख सकता हूं। उसने तो कह दिया है कि सारा पैसा मैं और भाभी बांट लें परंतु पैसे के हमने क्या करना है। बहुत देख लिया। मैं देवराज चौहान को इस तरह नहीं छोड़ सकता। अगर आगे जाकर भी सब कुछ ऐसा ही रहा और देवराज चौहान रानी ताशा के साथ खुश रहा तो मैं तब वापस पलटूंगा। मन में ये चैन तो रहेगा कि देवराज चौहान जहां है खुश है।"

"तब हम सदूर ग्रह से वापस कैसे आएंगे?" मोना चौधरी ने कहा।

"कोई रास्ता निकल आएगा।" जगमोहन मुस्कराया—"नहीं तो सदूर पर ही रह लेंगे।"

मोना चौधरी ने नगीना से कहा।

"तुम क्या चाहती हो बेला?"

"मैं देवराज चौहान को हंसी-खुशी बसते देखना चाहती हूं, बेशक वो जहां भी, जिसके साथ भी रहे।" नगीना ने शांत स्वर में कहा—"मैं जगमोहन की बातों से पूरी तरह सहमत हूं कि जब हमें तसल्ली हो जाएगी तो हम सदूर से चल देंगे। इतनी आसानी से उन्हें छोड़ भी नहीं सकती मैं। जरूरत पड़ी तो सदूर ग्रह पर ही मैं बाकी का जीवन बिता देने को तैयार हूं।"

मोना चौधरी, एकटक-सी नगीना को देखती रही।

"मिन्नो।" नगीना ने कहा—"मेरी मान तो तू वापस चली जा...।"

"तुझे इस तरह छोड़कर।"

"जगमोहन है न मेरे साथ। ये मेरा ध्यान रखेगा।" नगीना मुस्करा पड़ी।

मोना चौधरी ने जगमोहन को देखा फिर दृढ़ स्वर में कह उठी।

"नहीं बेला, इन हालातों में मैं तुझे अकेला नहीं छोड़ सकती। अभी मुझे तेरे साथ ही रहना होगा।"

नगीना ने कुछ नहीं कहा।

कुछ कदमों की दूरी पर बैठी धरा चमकती निगाहों से इन्हें देख रही थी।

"हमें बबूसा पर भरोसा रखना होगा।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"हम सब उसके साथ हैं, एक वो ही है जो सोमाथ से टकरा सकता है। सोमाथ नहीं रहेगा तो हमारे लिए हालात बेहतर हो जाएंगे।"

▭ ▭

बबूसा, सोमारा के साथ उस कमरे से निकलकर, आगे बढ़ने लगा। डोबू जाति के लोग आ-जा रहे थे सामान्य-सा रोज की तरह का शोर उठ रहा था। कहीं-कहीं रानी ताशा के आदमी भी खड़े दिख जाते थे।

"तुम मुझे कहां ले जा रहे हो बबूसा।" सोमारा कह उठा।

"आज हम वापस सदूर चल रहे हैं सोमारा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये तो खुशी की बात है, पर तुम परेशान क्यों हो रहे हो?" सोमारा बोली।

"मैं धरा की वजह से परेशान हूं, मैं सोमाथ की वजह से परेशान हूं। मेरी परेशानियां खत्म होने की अपेक्षा बढ़ती ही जा रही हैं। अभी मेरे से ज्यादा बात मत करो। जो मेरे दिमाग में काम बाकी है, वो मुझे कर लेने दो। सोमाथ को खत्म करने के लिए मुझे कुछ सामान की जरूरत है। वो सामान मैं अगोमा को बताऊंगा और तुम अपनी देख-रेख में उसे पोपा के भीतर, तुमने पोपा का पीछे वाला हिस्सा देखा है। जहां एक बंद दरवाजा लगा है?" बबूसा ने पूछा।

"देखा है।"

"सारे सामान को वहां पर पहुंचा देना। यहां जो रानी ताशा के आदमी हैं, उनसे कहकर भीतर रखवा देना।"

"हां, ठीक है।"

बबूसा, सोमारा के साथ बिजली वाले कमरे में पहुंचा तो अगोमा नहीं मिला। कुछ ढूंढ़ने पर अगोमा मिला तो बबूसा उसे एक तरफ ले जाकर बोला।

"आज पोपा सदूर पर जा रहा है अगोमा।"

"ओह, तुम भी जा रहे हो?"

"हां।"

"तुम्हारे चले जाने का मुझे दुख होगा।" अगोमा गम्भीर स्वर में कह उठा।

"मैं फिर आऊंगा अगोमा।" बबूसा ने मुस्कराने की चेष्टा की।

अगोमा चुप रहा।

"मुझे कुछ सामान चाहिए। वो इकट्ठा करके, उसे सोमारा को दे देना।"

"कैसा सामान?"

"एक मोटा रस्सा। मोटा और मजबूत। कम-से-कम वो पच्चीस फुट लम्बा हो।"

"ऐसे कोई रस्से पड़े हैं।"

"तुम खुद चुनना मजबूत रस्से को। अगर वो मजबूत न हुआ तो मेरी जान चली जाएगी।" बबूसा ने कहा।

"वो मजबूत होगा।" अगोमा ने दृढ़ स्वर में कहा—"जो, मैं तुम्हें दूंगा।"

"साथ में मुझे हथियार चाहिए। कुल्हाड़ा-हथौड़ा और हमारे खास सारे हथियार। बहुत ज्यादा नहीं चाहिए, परंतु कम भी न हों। कुल्हाड़ा और हथौड़ा आठ-आठ-दस-दस की संख्या में हों।"

"पर हमारे हथियारों पर तो पहरा है।" अगोमा बोला।

"मुझे बहुत जरूरत पड़ेगी पोपा के भीतर, आने वाले वक्त में। इसके बिना मेरा काम नहीं चलेगा।"

"सोलाम से पता करता हूं। वो और उसके योद्धाओं के पास हथियार होंगे। उन्होंने हथियार बनाए थे बाहर।"

"तलवारें हैं?" बबूसा ने पूछा।

"मेरे पास ज्यादा हथियार नहीं हैं। योद्धाओं ने जो छिपा रखे होंगे, वो ही उनसे निकलवा सकता हूं।"

"मैं जो कहना चाहता हूं वो तुम समझ गए हो। सोमारा तुम्हारे पास है। सब इंतजाम करके इसे दो। ये उन्हें पोपा में ले जाएगी। ये काम जल्दी से जल्दी करो। राजा देव कभी भी चलने के लिए कह सकते हैं।"

"रानी ताशा के आदमी हथियारों को देखकर, उन्हें जब्त कर लेंगे।" अगोमा बोला।

"वो ऐसा नहीं कर सकेंगे। वक्त आने पर इस बारे में मैं राजा देव से बात कर लूंगा।"

अगोमा ने सिर हिलाया और सोमारा को देखकर कहा।

"तुम मेरे साथ आओ।"

अगोमा और सोमारा चले गए।

परंतु बबूसा की नजर सोमाथ पर टिक गई थी जो कि कुछ पहले ही वहां पहुंचा था और अब अगोमा और सोमारा को एक साथ जाते देख रहा था फिर उसने बबूसा की तरफ नजर घुमाई।

नजरें मिलीं।

बबूसा कहर भरे अंदाज में मुस्कराया और पलटकर वहां से आगे बढ़ गया। वो मूर्ति वाले हॉल में जा पहुंचा और मूर्ति के पीछे वाले उस रास्ते पर

बढ़ गया, जो होम्बी के कमरे तक जाता था। बबूसा होम्बी के कमरे में पहुंचा तो होम्बी को आंखें बंद किए, तख्त जैसे पत्थर पर लेटे पाया। उसकी आंखें बंद थीं। बालों को उसने हाथ में पकड़ रखा था।

"जादूगरनी।" बबूसा ने धीमे स्वर में पुकारा।

"आ गया मुझे दुख देने।"

"मैं तुम्हें दुख दे सकता हूं जादूगरनी? मैं तो तुम्हारा बच्चा हूं।" बबूसा की आंखें भर आईं।

"हमेशा के लिए आज तू यहां से जा रहा है और कहता है दुख नहीं दे रहा।" होम्बी ने आंखें खोलीं। उसी मुद्रा में में उसे देखा—"हजार साल से ऊपर हो गए मुझे। तब से जिंदा हूं और लोगों को बिछड़ते ही देखा है मैंने। सब मेरे से दूर चले जाते हैं। लम्बी उम्र सजा की तरह है। मैंने हमेशा ही जाति के लोगों को अपने बच्चों की तरह चाहा है, पर कोई मेरा साथ ज्यादा देर तक नहीं दे सकता और बिछड़ जाता है, आज तेरी बारी भी आ गई, मुझसे दूर चले जाने की।"

बबूसा की आंखों में आंसू चमक उठे।

"मेरा जाना जरूरी है जादूगरनी। बहुत काम पूरे करने हैं मुझे। नहीं तो मैं...।"

"रोक नहीं रही तुझे। मैंने कब कहा तेरे को, रुकने को। तेरा चले जाना ही ठीक है। सदूर का है तू, डोबू जाति का तो नहीं।"

"ऐसा कहकर मेरा दिल मत तोड़। मैं डोबू जाति का ही हूं। तुम्हारा ही हूं।" बबूसा की आंखों में आंसू निकलकर गालों पर आ गए।

होम्बी, बबूसा को देखती रही कुछ पल फिर उठ बैठी। चेहरे का झुर्रियों वाला मांस हिलने लगा।

"आने वाले वक्त की मैंने छाया देखी। तेरे को खतरे में देखा। पोपा जा रहा है और तू पोपा के बाहर, रस्सा थामे लटक रहा है और सोमाथ पोपा के दरवाजे पर खड़ा दिख रहा है।" होम्बी गम्भीर स्वर में कह उठी।

बबूसा चौंका फिर संभलते हुए कह उठा।

"ऐसा नहीं हो सकता जादूगरनी।"

"ऐसा होगा। मैंने देख लिया है। क्या कर रहा है तू?"

बबूसा ने होंठ भींच लिए।

होम्बी उसे देखती रही।

"मैं—मैं सोमाथ को खत्म करने वाला हूं।" बबूसा ने कहा—"मैं—मैं पोपा के बाहर कैसे हो सकता हूं और सोमाथ तब पोपा में कैसे हो सकता है। फिर देखो, जादूगरनी शायद कुछ नया दिखे जो कि...।"

"भविष्य मुझे जो दिखा मैंने बता दिया। अब सोमाथ तुम्हें खत्म करता है या तुम सोमाथ को, ये मैं नहीं जानती।"

"क्या मैं सफल नहीं हो सकूंगा।"

"तेरा जो भविष्य दिखा मुझे, बता दिया। तेरी सदूर तक की यात्रा आसान नहीं रहने वाली।"

"कुछ और बता जादूगरनी।"

"नहीं जानती। जो आभास हुआ मुझे, वो बता दिया। जैसा करेगा, वैसा ही पाएगा।"

बबूसा के होंठ भिंच गए।

"मैं अपने इरादे से पीछे हटने वाला नहीं।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा—"सोमाथ को मजा चखाकर रहूंगा।"

होम्बी के बूढ़े चेहरे पर मुस्कान फैल गई। वो बोली।

"तो अब तू जा रहा है बबूसा। हमेशा-हमेशा के लिए।"

बबूसा ने गम्भीरता से सिर हिलाया।

होम्बी ने कंघी उठाई और बबूसा की तरफ बढ़ाकर बोली।

"ले।" वो अपने काले बाल पीछे की तरफ करती कह उठी—"बालों में फेर दे।"

बबूसा ने फौरन कंघा उठाया और होम्बी के पीछे पहुंचकर बालों में फेरने लगा।

"उस लड़की से बचकर रहना।" होम्बी बोली।

"धरा की बात कर रही हो जादूगरनी?"

"वो ही।"

"वो खतरनाक है, कभी-कभी तो वो शैतान लगती है।" बबूसा बोला।

"वो सच में शैतान है। उसका मुकाबला करने की सोचना भी मत।"

"क्या मेरे सामने धरा से मुकाबले करने का वक्त आएगा?"

"आएगा और तू उसका मुकाबला करेगा भी, पर ऐसा मत करना। तू उससे जीत नहीं पाएगा और वो तेरी जान ले लेगी। तेरे को नाच दिखा देगी। उससे बचकर रहना।" होम्बी ने मध्यम स्वर में कहा।

"पर वो है कौन?"

"ये बात मैं तेरे को नहीं बताऊंगी।"

"तू इस बात का जवाब जानती है जादूगरनी?"

"हां।"

"वो सदूर पर पहुंचकर क्या करने वाली है?" बबूसा ने पूछा।

"कोई अपने घर जाकर क्या करता है। तू सदूर पर पहुंचकर क्या करेगा?"

"पहले की तरह अपने काम देखूंगा।"
"तो वो लड़की भी पहले की तरह सदूर पर पहुंचकर अपने काम देखेगी।"
"अपने काम? कौन-से काम?"
"ये तेरे को सदूर पर ही पता चलेगा। वहां तू उसकी ही शक्ल वाली, एक और लड़की को भी देखेगा।"
"उसकी शक्ल वाली?" बबूसा की आंखें सिकुड़ीं।
"हां, उसकी शक्ल वाली, एक और लड़की। वो इस लड़की का असली रूप होगी। वो ही तो है असली, जो कि सैकड़ों बरसों से गहरी नींद में है। वो उठेगी और इस लड़की के साथ मिलकर, तहलका मचा देगी। वो अपने अधूरे इरादों को पूरा करने में लग जाएगी। परंतु उसकी राह भी आसान नहीं होगी। वो भी आ जाएगा।"
"वो कौन—जादूगरनी?"
होम्बी चुप हो गई।
"बता जादूगरनी, तू किसके आने की बात कर रही हो?"
"नहीं बता सकती उसके बारे में।"
"क्यों?"
"लड़की को अच्छा नहीं लगेगा मेरा कुछ बताना।"
"तुम्हें धरा से डर है जादूगरनी?"
"मुझे क्या डर होगा।" जादूगरनी मुस्कराई—"मुझे किसी भी चीज से डर नहीं लगता, क्योंकि मैंने बहुत लम्बी जिंदगी बिताई है। बहुत कुछ देखा है मैंने। पहले कभी डरा करती थी, अब किसी भी बात से डर नहीं लगता।"
"तो फिर मुझे बता दे।"
"तू सदूर पर पहुंचने से पहले सब कुछ जान गया तो, वो तेरे को नुकसान पहुंचा देगी। वो नहीं चाहती कि तू ये बातें किसी और को बता दे। उसे परेशानियों का सामना करना पड़े।"
"जादूगरनी मैंने राजा देव को धरा के बारे में बताना चाहा तो मेरी जुबान से कुछ और शब्द ही निकलने लगे।"
"उस लड़की की ताकतों ने तेरे को कहने से रोका।"
"ये तो मेरे लिए चिंता वाली बात हो गई।"
"तू उस लड़की पर से ध्यान हटा ले, वो बहुत ताकतवर है। सदूर पर पहुंचकर वो फिर अपने रंग में रंग जाएगी। उसकी ताकतें ऊर्जा हासिल कर लेंगी। टुकड़े-टुकड़े हुआ सदूर फिर वापस आ मिलेगा और...क्या है।" एकाएक होम्बी ने अपने दोनों हाथ हवा में लहराए—"तू मेरी बातों के बीच क्यों आ रही है?"

कंघा करता बबूसा थम गया।
"कौन बीच में आ रहा है होम्बी?" बबूसा बोला।
"चली जा यहां से।" होम्बी फिर से हाथ हिलाकर बोली।
तभी एक लरजती, मध्यम-सी आवाज वहां गूंजी।
"तू मेरी बातें क्यों करती है?"
"तेरे को क्या, मैं जो भी करूं।" होम्बी ने हवा में पुनः हाथ लहराया।
"मेरे से झगड़ा करेगी।"
"तू मेरा क्या बिगाड़ेगी। इस जमीन पर तेरे पास ताकतें नहीं हैं। जिस जमीन पर जा रही है, वहां रौब दिखाना।"
"तेरे को मेरा जरा भी डर नहीं।"
होम्बी हंस पड़ी। बोली।
"तेरे पास ऐसा है ही क्या जिससे मैं डरूं। मैं नहीं परवाह करती तेरी।"
"मेरे बारे में बबूसा को कुछ मत बता।"
"बताना होता तो पहले ही बता देती, परंतु बबूसा के भले के लिए ही उसे नहीं बता रही। तू मेरी बातों में दखल मत दे, नहीं तो मैं बता दूंगी कि तू कौन है और बबूसा, महापंडित को बता देगा और तू वक्त से पहले पहचानी जाएगी।"
"तू बुरी है।"
"अपने को देख।" होम्बी ने शांत स्वर में कहा—"बुरी तो तू है। मैं तेरे को अच्छी तरह जान चुकी हूं।"
फिर वो आवाज नहीं आई।
"कंघा फेर बालों में, रुक क्यों गया बबूसा?" होम्बी बोली।
"ये—ये किसकी आवाज थी जादूगरनी?"
"उसी लड़की की। वो अपनी ताकतों के माध्यम से, मेरे से बात कर रही थी।" होम्बी ने गम्भीर स्वर में कहा—"वो चाहती है कि मैं तेरे से, उसकी कोई भी बात न करूं और ये ही ठीक होगा बबूसा। उसे क्रोध आ गया तो तेरा नुकसान कर देगी।"
"मैं तो उसके बारे में तेरे से जानना चाहता था।"
"मैं बताने वाली नहीं।"
"क्या महापंडित जानता है कि धरा कौन है?"
"लड़की का नाम सुनेगा तो फौरन सब कुछ समझ जाएगा वो। नाम ही तो लड़की की पहचान है।"

"तो नाम मुझे बता...।"

"जब वक्त आएगा, तेरे को पता चल जाएगा। ये मत सोच कि मैं बता दूंगी। मुझे तो तू यात्रा के दौरान ही मुसीबत में पड़ा दिख रहा है। तेरे को सोमाथ से झगड़ा नहीं लेना चाहिए।"

"वो देखना मेरा काम है जादूगरनी।"

"तू हमेशा ही जिद्दी रहा है। जो मन में आ जाए, वो करके ही रहता है, पर इस बार तेरे लिए बहुत खतरे हैं।"

बबूसा का चेहरा सख्त हो गया।

"ला कंघा दे।"

बबूसा ने होम्बी को कंघा दिया और सामने आ गया।

होम्बी ने सामान्य नजरों से बबूसा को देखकर कहा।

"जा अब तू। खुश रह।"

"तेरे से दूर जाकर मुझे बहुत दुख होगा।"

"कुछ नहीं होगा। तेरे को मेरी याद ही नहीं आएगी, क्योंकि तू उलझने जा रहा है हालातों से। तेरे को जादूगरनी की याद ही नहीं आएगी। अपना खयाल रखना मेरे बच्चे। आगे की राह आसान नहीं है।"

"मैं सोमाथ को नहीं खत्म कर पाऊंगा?"

"नहीं जानती। पता होता तो जरूर बता देती।" होम्बी ने शांत मुस्कान से कहा।

"मैं सदूर पर पहुंचूंगा?"

"अब बात को घुमाकर पूछ रहा है। जिंदा रहा तो तभी सदूर पर पहुंचेगा। सोमाथ को लेकर यात्रा के दौरान, तू क्या करने की सोच रहा है मेरे को पता चल गया है। बच गया तो सदूर पर पहुंच जाएगा। नहीं तो नहीं पहुंचेगा। पर एक बात मैं तेरे को बता दूं कि आने वाले वक्त में सोमाथ को मैंने सदूर पर देखा है।"

"ओह, तो इसका मतलब सोमाथ को मैं खत्म नहीं कर सकूंगा। वो मुझे मार देने में कामयाब रहेगा।" बबूसा गम्भीर और व्याकुल दिखने लगा—"लेकिन जादूगरनी, मैं अपने इरादे से हटने वाला नहीं। मैं सोमाथ को...।"

"जा बबूसा।" होम्बी कह उठी—"तेरा जाने का वक्त करीब आता जा रहा है।"

बबूसा ने होम्बी को देखा।

होम्बी, गम्भीर नजरों से बबूसा को देखे जा रही थी।

बबूसा बाहर निकल गया।

शाम के चार बज रहे थे। सूर्य का सुबह से ही पता नहीं था। कड़कती सर्दी हर तरफ फैली थी और कोहरे का झुंड तैरता आता और आगे सरक जाता। हर तरफ बर्फ की सफेदी की चादी बिछी नजर आ रही थी। पहाड़ों की लम्बी शृंखला बर्फ की चादर से ढकी हुई थी। रुक-रुककर चल रही हवा की सर्द लहरें, शरीर को कंपा रही थीं। हर तरफ, मौसम की सर्द और वीरान खामोशी ठहरी दिखाई दे रही थी, परंतु डोबू जाति में इस बुरे सर्द मौसम से दूर गहमा-गहमी थी। डोबू जाति के लोग पहाड़ से बाहर निकले खड़े थे। शायद सब ही बाहर थे क्योंकि पोपा वहां से जा रहा था। वे रानी ताशा के हाथों आजाद हो चुके थे। पोपा को जाते देखने के लिए सब पहाड़ से बाहर निकल आए थे। उनके चेहरे पर खुशी नजर आ रही थी तो पोपा के चले जाने की उत्सुकता भी। वे सब पहाड़ के साथ-साथ सटे होने के अंदाज में मौजूद थे तो कुछ काफी दूरी पर खुले में मौजूद थे। देर से वहां पर ये ही आलम था। सब पोपा के भीतर जा चुके थे। कब के दरवाजे बंद हो चुके थे और पोपा के चालू इंजन की मध्यम-सी आवाज कानों में पड़ रही थी।

एकाएक पोपा कांपता-सा दिखा। कई पलों तक कांपता-सा तेज आवाज करता रहा फिर तेजी से ऊपर उठा और दाएं-बाएं को झुका, फिर ऊपर उठने लगा।

सबकी हैरत भरी निगाहें पोपा पर टिकी थीं। उनके देखते ही देखते, पोपा जिन धातु की टांगों पर खड़ा था, वो पोपा के भीतर ही कहीं लुप्त होती चली गई। इसके साथ ही पोपा आसमान की तरफ उठता चला गया। डोबू जाति के लोगों की सांसें थम गईं जैसे पोपा को देखते हुए। तभी पोपा आसमान में छाए बादलों में गुम होता चला गया। ये सब मात्र एक-डेढ़ मिनट में ही हो गया था।

देवराज चौहान के चेहरे पर मुस्कान थी। उसकी निगाह सामने लगे मीटर की थरथराती सूई पर लगी थी। कभी-कभी नजरें उन छोटी-छोटी स्क्रीनों की तरफ उठ जाती, जहां पोपा के बाहर का, हर तरफ का दृश्य देखा जा सकता था। एक स्क्रीन पर पूरे पोपा की तस्वीर नजर आ रही थी, परंतु धुंध-कोहरे की वजह से वो तस्वीर स्पष्ट नहीं थी। पास में किलोरा मौजूद था। दोनों चालक कक्ष की कुर्सियों पर बैठे थे और कुर्सी पर खुद को एक ऐसी बैल्ट जैसी चीज से बांध रखा था, जो कि पेट पर से चौड़ी होकर गुजर रही थी।

"आप कुछ भी नहीं भूले राजा देव।" किलोरा मुस्कराकर बोला—"सब याद है आपको।"

देवराज चौहान ने मुस्कराकर सामने के शीशे के पार देखा। जहां बादलों का जाल ही नजर आ रहा था। फिर ऊंचाई मापने वाले मीटर को देखा और कहा।

"हम पृथ्वी की सीमा से बाहर निकलकर, आकाशगंगा में पहुंचने वाले हैं।" देवराज चौहान बोला।

"तो रफ्तार तेज कर दीजिए। ताकि झटकों का असर पोपा पर कम हो।" किलोरा ने कहा।

देवराज चौहान ने रफ्तार तेज कर दी।

मिनट भर बीता कि पोपा सूखे पत्ते की भांति कांप उठा। कई तीव्र झटके लगे। अगर वो कुर्सी पर बैल्ट में फंसे न होते तो जरूर नीचे लुढ़क गए होते। बीस सैकंड ये ही आलम रहा और फिर तूफान गुजर जाने वाली स्थिति आ गई। सब कुछ शांत होता चला गया। सामने की स्क्रीन के बाहर धूप भरा मौसम दिखने लगा। वे आकाशगंगा में प्रवेश कर गए थे पृथ्वी के घेरे से निकलकर। छोटी स्क्रीनों पर पोपा के हर तरफ का स्पष्ट नजारा दिख रहा था। पोपा तेज रफ्तार के साथ एक दिशा में बढ़ा जा रहा था।

"हमारी उड़ान सफल रही राजा देव।" किलोरा ने मुस्कराकर कहा।

"पोपा को संभालकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मेरा सपना था पोपा की सैर करते, आकाश गंगा में घूमना।" देवराज चौहान की आवाज में उत्साह भरा था—"चालक कक्ष में दो चेयर क्यों हैं, जिन पर हम बैठे हैं।"

"बताइए राजा देव।"

"एक मैने अपने लिए रखी और दूसरी ताशा के लिए। मैं ताशा के संग आकाश गंगा में घूमना चाहता था।"

"कितना अच्छा सोचा था आपने।"

देवराज चौहान ने मीटर को देखते पोपा की दिशा निर्धारित करके कहा।

"दिशा का मुझे ज्यादा ज्ञान नहीं है। एक बार देख लो कि मैंने सही दिशा चुनी है कि नहीं?"

किलोरा ने देखा मीटर को।

फिर कुछ लीवरों को आगे-पीछे करके सैट करने लगा। निगाह मीटर पर थी। इसके साथ ही पोपा की दिशा बदलती चली गई। कुछ पल के लिए वो पोपा के मुड़ने पर टेढ़े हो गए थे। फिर पोपा सीधा होता चला गया।

"दिशा मैंने सैट कर दी।" किलोरा बोला—"अब हमें इसी दिशा की तरफ जाना है। कुछ दिन के बाद हमें दिशा बदलनी होगी। कुल दस दिन का सफर है और अभी पोपा की रफ्तार भी बढ़ानी है।"

देवराज चौहान विंड शील्ड के बाहर देखता कह उठा।

"दस दिन का सफर है। हम रात या अंधेरा नहीं देख पाएंगे। क्योंकि आकाश गंगा में सूर्य हमेशा चमकता रहता है। रात होना तो, ग्रह का हिस्सा होता है कि जिस हिस्से पर सूर्य की रोशनी पड़ती रहे, वो हिस्सा दिन और जिधर सूर्य की रोशनी न पड़े उसे रात हो जाना कहते हैं। ये सब बातें कितनी अच्छी लगती हैं, जब हम आकाश गंगा में पोपा में बैठे घूम रहे हों। ये एक नई दुनिया की बातें बन जाती हैं।"

"आकाश गंगा में घूमने के खतरे भी बहुत हैं राजा देव।" किलोरा मुस्कराया।

"वो कैसे?"

"कुछ दिन बाद ऐसा रास्ता आएगा जहां बड़े-बड़े पत्थर आकाश गंगा में तैर रहे हैं। वो हमारे रास्ते में आते हैं अगर वो पोपा से टकरा गए तो पोपा को नुकसान हो सकता है। वो पत्थर वहीं तैरते रहते हैं। ऐसे में मैं सैंसर ऑन करके अलार्म लगा दूंगा कि जब उन पत्थरों वाला रास्ता आने वाला होगा तो अलार्म बज उठेगा। तब मैं रास्ता बदल दूंगा पोपा का और कई घंटों बाद पोपा को घुमाकर, वापस रास्ते पर ले आऊंगा जब पत्थर निकल चुके होंगे।"

"ये अलार्म और सैंसर वाला सिस्टम तो मैंने नहीं बनाया था।" देवराज चौहान सोच भरे स्वर में बोला।

"ये जम्बरा ने बाद में तैयार किया था।" किलोरा ने कहा—"जम्बरा कई बार पोपा की सैर कर चुका है और रास्ते में उसे इस तरह की परेशानी का सामना करना पड़ा तो उसने ये सिस्टम बनाया।"

"हूं। ये अच्छा किया जम्बरा ने। पोपा की उड़ान पर ही, ऐसी बातें समझ में आती हैं।" देवराज चौहान ने कहा—"और क्या-क्या नया किया जम्बरा ने पोपा में?"

"मैं कैसे बता सकता हूं राजा देव। क्योंकि मुझे क्या पता आपने क्या-क्या लगाया था पोपा में।" किलोरा मुस्कराया।

देवराज चौहान ने सिर हिला दिया।

"आकाश गंगा में आठ दिन का सफर करने के बाद एक जगह धुएं की बनी गहरी, काली सुरंग नजर आती है। वो सुरंग भी इधर-उधर डोलती रहती है। वो काफी लम्बी है और उसके दोनों तरफ उसका मुंह है, मतलब कि धुएं की उस सुरंग के भीतर प्रवेश किया जा सकता है जबकि भीतर कुछ भी नजर नहीं आता।"

"पता किया वो सुरंग किस चीज की है?"

"जम्बरा ने उस सुरंग से बचकर रहने को कहा है, पर उसने पता नहीं किया कि वो क्या चीज है।" किलोरा बोला।

"वो सदूर की तरफ तो नहीं बढ़ती?"

"नहीं राजा देव, वो आकाश गंगा में ही तैरती रहती है।"

"वो सुरंग कितनी मोटी है?" देवराज चौहान ने सोच भरे स्वर में कहा।

"काफी मोटी है। सुरंग के मुंह में एक साथ पांच-सात पोपा प्रवेश कर सकते हैं।"

"आकाश गंगा रहस्यों से भरी पड़ी है।" देवराज चौहान कह उठा।

"ऐसा ही है। एक जगह गैस के सतरंगी छल्ले घूमते नजर आते हैं जो कि काफी बड़े-बड़े हैं। जम्बरा का कहना है कि उन छल्लों से बचकर रह जाए। जम्बरा ये भी कहता है कि उन छल्लों में ऐसी गैस है, जो कि पत्थर को भी पिघला दे। वो काफी ढेर सारे छल्ले हैं, मोटे और बड़े-बड़े। जम्बरा ने पोपा की उड़ान के दौरान कुछ पत्थरों को छल्लों में फंसते देखा और उन्हें पानी की तरह पिघलते और बूंदों के रूप में नीचे गिरते देखा था।"

देवराज चौहान ने गम्भीरता से सिर हिलाकर कहा।

"ऐसे गैसों से भरे छल्ले सदूर से आ टकराए तो सदूर को भारी नुकसान हो सकता है।"

"परंतु वो कभी भी सदूर की दिशा में भटकते हुए नहीं आए। वो आकाश गंगा में ही मंडराते रहते हैं। जम्बरा अक्सर पोपा पर सवार होकर कई बार उन छल्लों की स्थिति देखने के लिए जाता रहता है।" किलोरा ने बताया।

"सदूर से कितनी दूर हैं वो छल्ले?"

"काफी दूर हैं। उन तक पहुंचने के लिए तेज रफ्तार पोपा का दो दिन का सफर करना पड़ता है।"

"फिर तो हमारा सदूर उनसे काफी दूर है। वो सदूर तक आसानी से नहीं पहुंचने वाले।" देवराज चौहान बोला।

"इसी तरह एक बहुत बड़ा सफेद सितारों जैसा झुंड आकाश गंगा में तैरता नजर आ जाता है। जैसे लाखों सितारे एक ही जगह इकट्ठे हो गए हों। वो अपने आप में गोल-गोल घूमता रहता है। देखने में अद्भुत है। जम्बरा कई बार उनके पास तक जा चुका है परंतु सितारों के झुंड का रहस्य नहीं समझ सका कि वो क्या हो सकता है।"

"सदूर से सितारों का झुंड कितनी दूर है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"पोपा से एक दिन का सफर है।"

"सदूर पर पहुंचकर, मैं इन चीजों के बारे में बात करूंगा।" देवराज चौहान ने पेट और कुर्सी पर बंधी बैल्ट खोलते हुए कहा।

"आकाश गंगा में और भी बहुत अजीब-सी चीजें हैं जो हमारी समझ में नहीं आ रहीं।"

देवराज चौहान कुर्सी से उठते हुए बोला।

"जम्बरा के साथ उन चीजों को देखने जाऊंगा, उसके बाद ही उनके बारे में कोई विचार कायम हो सकेगा। अब तुम पोपा को संभालो। मैं अपने कमरे में जा रहा हूं।"

"जरूरी नहीं कि पोपा के चालक कक्ष में कोई मौजूद हो। दिशा निर्धारित करके हम चालक कक्ष को अकेला छोड़ सकते हैं।"

"मैंने ऐसा सिस्टम तो नहीं बनाया था।" देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े।

"ये सिस्टम जम्बरा के बाद मैंने तैयार किया, जब उसने पोपा की उड़ान के दौरान, जरूरत महसूस की।"

देवराज चौहान मुस्कराया और चालक कक्ष से बाहर निकलकर आगे बढ़ गया। कुछ रास्तों को पार करने के बाद वो एक कमरे में पहुंचा जहां रानी ताशा के सारे आदमी, कमरे की दीवारों में फिक्स कर रखी, बैल्टों में जकड़े खड़े थे। कुल बीस-बाईस संख्या थी उनकी।

"बैल्टों को बांधने की जरूरत नहीं रही।" देवराज चौहान बोला—"और जाकर सबसे ये बात कह दो कि वो अब पोपा में घूम-फिर सकते हैं। अपने कार्य कर सकते हैं।"

▭ ▭

धरा एक छोटे-से केबिन में, फर्श के साथ फिक्स कुर्सी पर बैठी थी। बैल्ट बांध रखी थी। सामने एक सिंगल बैड बिछा हुआ था। उसके पास ही अटैच बाथरूम का दरवाजा था। रह-रहकर धरा मुस्कराने लगती थी। उसका निचला होंठ टेढ़ा हो जाता और आंखों में चमक भर आती थी। कभी-कभी वो सिर को दाएं-बाएं हिलाने लगती थी। जब पोपा हिलना शुरू हुआ, उसमें कम्पन्न उभरा तो वो हंस पड़ी थी। बच्चों की तरह खुश होकर कह उठी।

"लगता है पोपा चल पड़ा है खुंबरी। तेरा काम बन गया।"

कई बार पोपा हिला तो कई बार स्थिर हुआ।

"पता नहीं, चला भी है या वहीं का वहीं खड़ा है।" धरा ने बेचैनी से कहा—"यहां खिड़की भी तो नहीं कि बाहर देख सकूं।"

फिर जब पोपा जोरों से थरथराया और बाद में टेढ़ा होकर सीधा हुआ तो धरा कह उठी।

"ये पोपा की सैर भी अजीब है। कुछ पता ही नहीं चल रहा। कभी हिलता है तो कभी खड़ा हो जाता है। पर तू क्यों चिंता करती है खुंबरी। तेरी ताकतों ने कहा तो है कि तू सदूर पर जा पहुंचेगी।"

कुछ देर और बीत गई।

"मैं कब तक इस तरह बंधी बैठी रहूंगी। ये तो खुंबरी के लिए सजा ही हो गई।"

फिर वो वक्त भी आया जब रानी ताशा का आदमी दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश हुआ।

धरा सामान्य दिखने लगी।

"सब ठीक है।" वो बोला—"पोपा आसमान में पहुंच गया है।"

"मैं—मैं कुर्सी से उठ सकती हूं?" धरा बोली।

"हां।"

धरा उसी पल बैल्ट खोलते कह उठी।

"पोपा आसमान में पहुंच गया है?"

"उससे भी ऊपर, पृथ्वी ग्रह से बाहर निकल चुका है।" वो जाने को हुआ।

"लेकिन पोपा की मंजिल कहां है?"

"तुम नहीं जानती। हम वापस अपने सदूर ग्रह जा रहे हैं।" वो बोला।

"अपने सदूर ग्रह?" धरा मुस्कराई, निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"कब तक पहुंच जाएंगे सदूर ग्रह?"

"दस दिन लगेंगे।"

"दस दिन, बस। मैंने तो सैकड़ों बरसों का इंतजार किया है। दस दिन तो चुटकी में बीत जाएंगे।" धरा खुशी से कह उठी।

वो आदमी बाहर निकल गया।

धरा के चेहरे पर तेज चमक फैल गई। निचला होंठ टेढ़ा हुआ। वो हल्का-सा ठहाका लगा उठी।

"चल खुंबरी सदूर पर। बहुत मजा आएगा वहां। श्राप का वक्त भी खत्म होता जा रहा है। तेरी ताकतें फिर से जीवित हो जाएंगी। पांच सौ साल बाद सदूर पर जाना कैसा लगेगा। बहुत अच्छा लगेगा। मेरा वक्त वापस लौट आएगा। लेकिन उससे पहले मुझे बहुत काम करने होंगे। मेरी ताकतों को ऊर्जा मिलती रहे, इसके लिए बर्तन में पानी भरकर मंत्र पढ़ना है। फिर बर्तन को सुरक्षित रखना है और इस बात का भी ध्यान रखना है कि बर्तन का पानी सूखे नहीं। उसमें मंत्र वाला पानी डालते रहना होगा। अभी तो तूने भी वहां पर जीवित होना है। पांच सौ साल बाद भी तू वैसी ही सुंदर दिखेगी या नहीं? कहीं तेरा हाल खराब तो नहीं हो गया होगा। दोलाम ने तो कहा था कि बढ़िया रसायनों का इस्तेमाल करेगा। शरीर में जरा भी अंतर नहीं पड़ेगा पांच सौ सालों में। मुझे तो अपनी वो ही सुंदरता चाहिए। अगर मेरी

सुंदरता में जरा भी फर्क पड़ा तो दोलाम को बहुत भयानक सजा दूंगी।। वो खुंबरी ही क्या, जो सुंदर न हो। मेरी फौज के आधे लोग तो मेरी सुंदरता से प्रभावित होकर ही, मेरा साथ दे रहे थे। ये तो मेरा घातक हथियार है, सुंदर होना। वाह खुंबरी वाह, तेरा भी जवाब नहीं। पर डुमरा जरूर कुछ करेगा। वो चुप बैठने वाला नहीं। क्या पता उसे भनक लग गई हो कि खुंबरी वापस आ रही है। वो कहीं छिपा बैठा होगा, पर उसकी शक्तियां उसे सब खबरें दे रही होंगी। अब मैं पहले वाली गलती नहीं करूंगी, वैसे भी मेरी ताकतें जब ऊर्जा पाएंगी तो वो बहुत ही ज्यादा ताकतवर हो जाएंगी। डुमरा को तो खुंबरी मसल कर रख देगी इस बार।" धरा की आंखों और चेहरे पर बहुत ही खतरनाक चमक लहरा रही थी। निचला होंठ टेढ़ा हो चुका था।

▭ ▭

देवराज चौहान ने पोपा की ऊपरी मंजिल के उस कमरे में प्रवेश किया तो मुस्करा पड़ा। रानी ताशा कुर्सी पर बैल्ट बांधे बैठी थी। वो भी मोहक अंदाज में मुस्करा पड़ी।

"ताशा।" देवराज चौहान आगे बढ़ा और रानी ताशा की बैल्ट खोल दी।

रानी ताशा उठी और देवराज चौहान से लिपट गई।

"मेरे देव।"

"ताशा।" देवराज चौहान ने उसे बांहों में भींच लिया।

"पोपा तुमने चलाया देव?" रानी ताशा उसकी छाती पर चूमते कह उठी।

"हां ताशा। बहुत मजा आया पोपा चलाने में।"

"ओह मेरे देव, तुम नहीं जानते मुझे कितनी खुशी हो रही है।" रानी ताशा का स्वर थरथरा उठा—"मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा कि मैं अपने देव के साथ वापस सदूर पर जा रही हूं, तुम्हें इस बात का भरोसा है न देव?"

"हां ताशा। मुझे पूरा भरोसा है कि हम एक साथ वापस सदूर पर जा रहे हैं।" देवराज चौहान, ताशा को बांहों में दबाए हुए था।

रानी ताशा ने सिर उठाकर देवराज चौहान को देखा।

रानी ताशा की आंखें गीली थीं।

"ये क्या ताशा तुम्हारी आंखों में आंसू?"

"खुशी के आंसू। अपने देव को वापस पा लेने के आंसू हैं। हम—हम उसी जंगल में, उसी पेड़ के नीचे जाकर बैठेंगे।"

"हां ताशा। तुम्हारी गोद में मेरा सिर होगा और तुम मेरे बाल सहला रही होओगी। कितना सुखद आनंद का वक्त होगा वो।"

"मैंने बहुत दुख देखे हैं।"

देवराज चौहान ने ताशा के गाल चूमे।

"जानते हो देव, मेरे लिए सबसे बड़ा दुख क्या था।"

"क्या?"

"तुम्हारा साथ छूट जाना। मैं तो पागल हो गई थी तुम्हारे बिना। उस किले में मेरा दम घुटता था। किले के हर रास्ते पर, हर मोड़ पर मैं तुम्हें ढूंढ़ा करती थी। चलते समय मुझे ऐसा लगा करता था जैसे तुम आने वाले मोड़ से अचानक प्रकट हो जाओगे और दौड़कर मुझे बांहों में भर लोगे। तुम्हें देखने को, मैं तरसा करती थी।" रानी ताशा की आंखों में आंसू आ गए—"तुम्हें तो याद भी नहीं कि हम कैसे, किस वजह से जुदा हुए थे।"

"जुदाई की बातें मत करो।"

"मैं तुम्हें जरूर बताऊंगी देव। मेरे दिल का बोझ हल्का हो जाएगा। पहले मैं सोचती थी कि तुम्हें नहीं बताऊंगी। महापंडित से कहकर तुम्हारे दिमाग का वो हिस्सा साफ करा दूंगी जहां सदूर के उस जन्म की वो बुरी घटना दर्ज है। पर मैं तुम्हारे साथ धोखा नहीं कर सकती देव। मैं तुम्हें प्यार करती हूं। तुम्हें दिल से चाहती हूं। तुम्हें बताऊंगी कि हम कैसे जुदा हो गए थे। सब मेरा ही कसूर था। मेरी ही गलती थी। पता नहीं वो सब मेरे से कैसे हो गया। मैं—मैं कुछ भी नहीं समझ पाई।"

"तुम मुझे मिल गईं ताशा और कुछ भी नहीं चाहिए मुझे।"

"पर मैं अपने दिल का बोझ जरूर हल्का करूंगी, उस मनहूस शाम की बात बताकर। किले में तुम्हारी गोद में सिर रखकर सब कुछ कह दूंगी। बुरा लगे तो उसी पल अपनी ताशा का गला दबा देना और...।"

"ऐसा मत कहो।" देवराज चौहान के होंठों से निकला—"बुरे शब्द मत बोलो।"

दोनों एक-दूसरे को जकड़े खड़े रहे।

"देव। पोपा को और तेज चलाओ, मैं जल्द-से-जल्द सदूर पर पहुंचकर खुशियां मनाना चाहती हूं।"

"पोपा अपनी रफ्तार पर ही जा रहा है ताशा।" देवराज चौहान ने प्यार भरे स्वर में कहा।

"पृथ्वी पर तुमने कभी भी मुझे याद नहीं किया?"

"मुझे तुम्हारा खयाल भी नहीं था तो याद कैसे करता। मैं तो सदूर के उस जन्म को ही भूल बैठा था। ये तो तुम पृथ्वी पर आईं तो मुझे सदूर की याद आनी शुरू हुई। जब तुम्हारी याद आई तो मैं रुक नहीं सका, तुम्हारे पास आने को।"

रानी ताशा सिर उठाकर नीली आंखों से देवराज चौहान को देखने लगी।

देवराज चौहान ने उसे देखकर, उसके सिर पर हाथ फेरा।

"तुम कितने अच्छे हो देव।"

"मुझसे ज्यादा अच्छी तुम हो।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"झूठे। तुम ज्यादा अच्छे हो।" ताशा प्यार में नाराजगी दिखाकर बोली।

देवराज चौहान खिलखिलाकर हंस पड़ा फिर टकटकी बांधकर ताशा को देखने लगा।

"तुम फिर मुझे इस तरह देखकर तंग करने लगे।" ताशा ने मुंह फुलाया फिर खुद ही हंस पड़ी अगले ही पल आंखों में आंसू चमक उठे—"मुझे डर लगने लगा है कि कहीं तुम फिर से, मेरे से दूर न हो जाओ।"

"अब ऐसा कभी नहीं होगा ताशा।" देवराज चौहान ने रानी ताशा को सख्ती से अपनी बांहों में भींच लिया।

▭ ▭

जहां धरा का केबिन था, उसी कतार में, वैसे ही केबिन बने हुए थे। उन्हीं केबिनों में जगमोहन, मोना चौधरी, नगीना और रानी ताशा के अन्य आदमी थे। हर केबिन में एक व्यक्ति था। बबूसा और सोमारा को पोपा के नीचे वाले हिस्से में एक कमरा दिया गया था, परंतु बबूसा ने अपने लिए एक केबिन भी रख लिया था। इस वक्त बबूसा और सोमारा फर्श पर फिक्स कुर्सियों पर, बैल्ट बांधे बैठे थे। अभी-अभी पोपा में जबर्दस्त कम्पन्न हुआ था।

"सदूर पर जाते तू खुश है न बबूसा।" सोमारा मुस्कराकर कह उठी।

बबूसा ने गर्दन घुमाकर सोमारा को देखा फिर मुस्कराकर बोला।

"तेरा साथ मिल गया तो खुश क्यों नहीं रहूंगा।" परंतु स्वर में गम्भीरता थी।

"तू खुश नहीं लगता। सोमाथ या धरा की चिंता है न?" सोमारा बोली।

बबूसा ने सिर हिला दिया।

"तू बोल, मैं क्या करूं, तेरे लिए तो अपनी जान भी दे दूंगी।" सोमारा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"मैं अब सोमाथ को रास्ते से हटाऊंगा।"

"कुछ सोचा है?"

"हां। बहुत कुछ सोचा है।" बबूसा के होंठ भिंच गए—"बताऊंगा। मैंने दो बातें सोच रखी हैं, पहले तो एक बात पर काम किया जाएगा। अगर वो मामला सफल न रहा तो फिर अपने 'चक्रव्यूह' पर काम करूंगा।"

"क्या है तेरा चक्रव्यूह?" सोमारा ने पूछा।

"अभी चक्रव्यूह के बारे में नहीं बताऊंगा। पहले जो बात मैंने सोच रखी है, उस पर सब काम करेंगे।"

"सब?"

"हां, वो सबका ही काम है। तुम-मैं, जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी, सब एक साथ ही इस कम को करेंगे।"

"क्या है तेरे मन में?"

"सबका साथ होगा तो बताऊंगा।" बबूसा बोला—"अगोमा से सारा सामान मिल गया था?"

"हां। उसने दो तरह के रस्से दिए हैं। दोनों ही मजबूत हैं। एक तो नायलोन का रस्सा है दूसरा दूसरी तरह का।"

"और हथियार?"

"वो भी दिए हैं एक बोरे में भरकर। सब कुछ मैंने तुम्हारे कहने के मुताबिक पोपा के पीछे वाले हिस्से में, जहां पोपा का बंद दरवाजा है, वहां रखवा दिए हैं। मैंने बोरे के भीतर झांककर नहीं देखा कि क्या दिया है अगोमा ने।"

"वो मैं अभी जाकर देखूंगा।"

"रस्सों का क्या करेगा?" सोमारा ने पूछा।

बबूसा मुस्करा पड़ा फिर गम्भीर होता कह उठा।

"मैं जो खेल खेलूंगा वो मौत का खेल होगा। मेरा चक्रव्यूह है ही ऐसा। परंतु अंजाम का कुछ पता नहीं कि बाद में मैं जिंदा रहता हूं या सोमाथ। जादूगरनी ने मुझे पहले ही सतर्क कर दिया है।"

"क्या सतर्क?" सोमारा के माथे पर बल पड़े।

"यही कि जो मैं करूंगा, उसका अंजाम कुछ भी हो सकता है।" बबूसा ने धीमे स्वर में कहा—"परंतु मैं अपने चक्रव्यूह को अंजाम जरूर दूंगा। सोमाथ मुझे पसंद नहीं। उसे मैं खत्म करने की पूरी चेष्टा करूंगा, वो...।"

तभी दरवाजा खुला और रानी ताशा के आदमी ने भीतर प्रवेश करते कहा।

"पोपा पृथ्वी ग्रह से बाहर निकल आया है और अपने रास्ते पर है।" कहने के साथ ही उसने दोनों ही बैल्टें खोलीं और बाहर निकल गया।

सोमारा उठते हुए मुस्कराकर बोली।

"अब हम सदूर पहुंच जाएंगे।"

बबूसा भी कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ और गम्भीर स्वर में कह उठा।

"ये यात्रा ज्यादा सुखद नहीं रहने वाली।"

"तू ऐसा क्यों कहता है बबूसा?"

"क्योंकि आने वाले वक्त का मुझे आभास है। चल अगोमा के दिए हथियार देख लें।"

दोनों कमरे से बाहर निकले और आगे बढ़ गए।

पोपा अब बिल्कुल शांत था लगता ही नहीं था कि वो बेहद तेज रफ्तार से सदूर ग्रह की तरफ बढ़ रहा है। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वे सामान्य फर्श पर चल रहे हों।

"पोपा पर सफर करना कितना अच्छा लगता है।" सोमारा बोली।

"मैं पहली बार होशोहवास में पोपा का सफर कर रहा हूं।" बबूसा ने मुस्कराकर सोमारा को देखा—"राजा देव को जब ग्रह के बाहर फेंक दिया गया था तो पोपा मुझे कभी अच्छा नहीं लगा। जम्बरा ने कई बार सैर पर जाने को कहा, पर मैं नहीं गया।"

"जानती हूं मैं।"

"जम्बरा भी राजा देव के बिना उदास था, परंतु उसने अपने काम कभी नहीं छोड़े थे।"

"तभी तो भैया (महापंडित) हर बार उसका नया जन्म कराते रहे। उसके दिमाग में पिछले जन्म की यादें ताजा रखीं।"

"हां सोमारा। महापंडित हर काम अच्छा करता है, परंतु सोमाथ का निर्माण करके उसने गलत किया।"

"क्या पता इसके पीछे भी भैया की कोई सोच हो।"

"महापंडित सोमाथ के हाथों मुझे खत्म कराने का इरादा रखता है, क्योंकि मैं हर जन्म में उसकी बहन से शादी कर लेता हूं। जबकि वो मुझे पसंद नहीं करता। सोमाथ का निर्माण महापंडित ने मेरे लिए किया है।"

"मुझे ऐसा नहीं लगता।" सोमारा गम्भीर स्वर में बोली।

"क्या मतलब?"

"ये ठीक है कि भैया तुम्हें ज्यादा पसंद नहीं करते, परंतु उन्होंने हमारे मिलने में, किसी जन्म में अड़चन नहीं डाली। इस बार भी भैया ने रानी ताशा से कहा कि मुझे अपने साथ ले जाए पृथ्वी पर। वहां बबूसा भी मिलेगा। भैया चाहते तो हमारा नया जन्म कराते, हमारे मस्तिष्क से एक-दूसरे की याद मिटा देते। परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया।"

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"यही कि भैया हमारे खिलाफ नहीं हैं। उन्होंने सोमाथ इसलिए नहीं बनाया कि वो तुम्हें मार दे।" सोमारा ने धीमे स्वर में कहा।

"परंतु सोमाथ मुझे मारने वाला था। तब तुम पास ही थीं।"

"वो संयोग भी हो सकता है।"

"जो भी हो, मैं सोमाथ को सबक सिखाकर रहूंगा।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"पहले तो तुम ऐसे नहीं होते थे बबूसा।"

"तब मेरे में राजा देव जैसी ताकत और उन जैसा दिमाग नहीं था। परंतु इस बार महापंडित ने ये दोनों चीजें मुझमें डाली हैं। मैं बहुत हद तक अब वैसे ही सोचता हूं जैसे राजा देव सोचा करते थे।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"राजा देव अपने दुश्मन को कभी नहीं छोड़ते थे। हारना उन्हें पसंद नहीं था, अब वो ही हाल मेरा है। सोमाथ मुझे मारने वाला था। और मैं ये बात भूल नहीं सकता। मुझे हिसाब बराबर करना ही होगा।"

"तुमने सोचा है बबूसा कि सोमाथ हमारी तरह का इंसान नहीं है। वो भैया के निर्माण का हिस्सा है।"

"तभी तो वो आसानी से काबू में नहीं आ रहा।" बबूसा के होंठ भिंच गए।

"मतलब कि तुम सोमाथ के मामले में पीछे नहीं हटने वाले?"

"कभी नहीं।"

"अगर सोमाथ ने तुम्हें मार दिया तो मुझे ये जन्म तुम्हारे बिना बिताना पड़ेगा।" सोमारा गम्भीर हो गई।

"तुम उस स्थिति में किसी से शादी कर लेना।"

"क्यों कर लूं। मैं तेरे से ही शादी करूंगी, तू नहीं होगा तो नहीं करूंगी। अगले जन्म का इंतजार करूंगी।" सोमारा कह उठी।

कुछ चुप रहकर बबूसा बोला।

"अगर मुझे जोबिना मिल जाए तो मैं सोमाथ को चंद पलों में राख बना दूं।"

बातें करते दोनों आगे बढ़े जा रहे थे। मोड़ मुड़ते जा रहे थे।

"तू कोशिश कर सोमारा कि किसी तरीके जोबिना हासिल कर सको। तुम तो रानी ताशा के करीब रहती हो। जोबिना पाए लोगों से किसी तरह जोबिना हासिल कर...।"

"तुम जोबिना वाले लोगों को ठीक से नहीं जानते। वो जोबिना किसी तरह भी हाथ से नहीं निकलने देते।" सोमारा ने इंकार में सिर हिलाते हुए कहा—"जोबिना चलाने वाले, इस बारे में बहुत पक्के होते...।"

तभी सामने के मोड़ से, एक आदमी मुड़कर इधर को आया।

बबूसा ने उसे पहचाना कि ये उन दो में से एक था जो डोबू जाति में, हथियारों वाली जगह पर पहरा देते खड़े रहते थे। बबूसा मुस्कराकर बोला।

"तुम वो ही हो न, जिसने मुझे जोबिना दिखाई थी।"

"हां।" वो रुकता हुआ कह उठ।

"अब फिर मुझे जोबिना दिखाओ।"

"क्यों?"

"यूं ही, मैं देखना चाहता हूं। मुझे जोबिना बहुत अच्छी लगती है।" बबूसा पुनः मुस्कराया, जबकि वो इरादा पक्का कर चुका था कि जैसे भी हो, वो इससे जोबिना हासिल करके, सोमाथ को तुरंत राख बना देगा।

"अब मेरे पास जोबिना नहीं है। रानी ताशा सबसे जोबिना ले चुकी है।"

"ऐसा क्यों?"

"जोबिना हमें तभी दी जाती है, जब मुसीबत भरा वक्त हो। नहीं तो जोबिना रानी ताशा के पास ही रहती है।"

"ये बात मुझे नहीं पता था। रानी ताशा जोबिना कहां रखती है?"

"अपने कमरे में।" उस व्यक्ति ने कहा और आगे बढ़ गया।

बबूसा के चेहरे पर सोच के भाव दिखने लगे। उसने सोमारा से कहा।

"तुम जानती हो, रानी ताशा जोबिना कहां रखती है?"

"रानी ताशा के कमरे में एक धातु के बॉक्स दीवार में फिट है। उसमें रखी जाती है जोबिना।" सोमारा ने बताया।

"वो बॉक्स खुलता कैसे है?"

"बॉक्स पर बटनों वाली प्लेट लगी है। उन्हीं बटनों को दबाकर, उसे...।"

"ऐसा बॉक्स उस कमरे में पहले नहीं होता था।" बबूसा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"जम्बरा ने बाद में बनाया होगा।"

"ये सम्भव है। क्या तुम उस बॉक्स को खोल सकती हो?" बबूसा ने पूछा।

"उसे खोलने के लिए कई बटनों को क्रमवार दबाया जाता है। मैं उन बटनों का क्रम नहीं जानती।"

बबूसा वहीं पर, सोच-भरे अंदाज में ठिठका रहा।

"तुम राजा देव से कहकर जोबिना क्यों नहीं ले लेते?" सोमारा बोली।

"राजा देव मुझे कभी भी जोबिना नहीं देंगे।" बबूसा अजीब-सी मुस्कान से कह उठा—"क्योंकि वो मेरा इरादा जानते हैं कि मैं सोमाथ को खत्म करना चाहता हूं। मेरे इस इरादे में राजा देव मेरा साथ नहीं देंगे। आओ चलें सोमारा।"

दोनों आगे बढ़ गए।

"मेरे खयाल में तो तुम्हें धरा के बारे में जरूर चिंतित होना चाहिए।" सोमारा ने कहा—"वो सदूर पहुंचकर जाने क्या करने का इरादा रखती है। वो कौन है, जिसने अपनी ताकतों के दम पर, रानी ताशा के हाथों, राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवा दिया था, क्योंकि धरा को वापस सदूर पर आने का अपना रास्ता तैयार करना था।"

"मैं धरा के बारे में सोमाथ से ज्यादा चिंतित हूं सोमारा। परंतु धरा पर मेरा 'बस' नहीं है। वो सही कहती है कि उसके पास ताकतें हैं। मैंने राजा देव को धरा के बारे में बताना चाहा तो मेरे मुंह से वो नहीं निकला जो मैं कहना चाहता था, वो निकला जो मैंने सोचा भी नहीं था। धरा ने मुझे पहले ही कह दिया था, कि उसकी ताकतें मुझे कुछ भी नहीं बताने देंगी।"

"ओह, ऐसा तो मेरे साथ भी हुआ था।" सोमारा फौरन कह उठी—"जब मैंने नगीना-मोना चौधरी को धरा के बारे में बताना चाहा तो मेरे मुंह से भी अनचाहे शब्द निकले थे। बाद में मैंने धरा को देखा तो वो व्यंग भरी निगाहों से मुझे देख रही थी।"

"धरा बहुत खतरनाक है। मुस्कराते हुए जब उसका होंठ टेढ़ा होता है तो वो क्रूर-सी लगती है।"

"मुझे तो वो कई बार खतरनाक लगी। तू जब उसे डोबू जाति से बचाता फिर रहा था, तब तुझे उसके बारे में कुछ एहसास नहीं हुआ।"

"नहीं। शायद मैं तब उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाया होऊंगा। परंतु एक बात मुझे जरूर याद आती है कि जब डोबू जाति वाले धरा को मारने के लिए उसके पीछे थे तो तब धरा, सोलाम की पकड़ में आ गई थी। (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **'बबूसा'**) डोबू जाति का कोई भी योद्धा अपने शिकार को हाथ आने पर नहीं छोड़ता। परंतु तब सोलाम ने धरा को छोड़ दिया। मुझे पूरा यकीन है कि तब धरा की ताकतों ने सोलाम पर काबू पा लिया होगा, उन ताकतों ने ही सोलाम का दिमाग घुमा दिया होगा। उसके बाद सोलाम मेरे साथ भी सहयोग करने लगा और मुझे एक बार बचाया भी। क्योंकि धरा सदूर पर वापस पहुंचना चाहती थी और ये काम मेरे बिना मुमकिन नहीं था। मेरे साथ रहकर ही, वो आने वाले वक्त में सदूर पर जा सकती थी। अब मुझे समझ में आता है कि धरा क्यों मेरी सहायता करती रही राजा देव की तलाश में, क्यों वो सबसे कहती रही कि बबूसा सही कहता है। इस बात का दूसरों को भरोसा दिलाती रही! धरा की ताकतों को आने वाले वक्त का पूरी तरह पता था कि क्या होने वाला है, उसी तरह से धरा मेरे साथ रहकर काम करती रही, मेरा विश्वास जीता कि मैं उसे अपने साथ रखूं। मैं जरा भी नहीं पहचान पाया कि उसकी मंशा क्या...।" कहते-कहते बबूसा ठिठक गया।

एक खुले रास्ते पर सामने से उसने रानी ताशा को आते देख लिया था।

सोमारा भी रुकते हुए कह उठी।

"जबसे राजा देव मिले हैं, तब से रानी ताशा की सुंदरता में निखार आ गया है।"

परंतु बबूसा की मुस्कराती निगाह, पास आ चुकी रानी ताशा पर थी।

"बधाई हो रानी ताशा।" बबूसा बोला—"हम सदूर पर लौट रहे हैं।"

"क्या पता तुम सदूर पर न पहुंच पाओ।" रानी ताशा ने शांत स्वर में कहा।

"ऐसा क्यों रानी ताशा?" बबूसा मुस्करा रहा था।

रानी ताशा ने सोमारा से कहा।

"बबूसा से मिलकर तू खुश है न?"

"बहुत ताशा।" सोमारा ने कहा।

"तो इसे समझा कि सोमाथ से दुश्मनी न ले। एक बार तो मेरे कहने पर सोमाथ रुक गया था, पर अब नहीं रुकेगा।"

"लगता है सोमाथ ने आपसे शिकायत लगा दी है।"

"तुमने उसका गला काटने की कोशिश की, डोबू जाति में।"

"वो मेरी भूल थी।"

"तो तुम्हें समझ आ गई कि तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।"

"क्योंकि मुझे नहीं पता था कि महापंडित ने दूर की सोचकर, सोमाथ के गले में ऐसी कोई रोक लगा रखी है कि अगर कोई उसका गला काटना चाहे तो उसे कामयाबी न मिले।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा—"अगर मुझे पहले ये बात मालूम होती तो मैं उसका गला काटने की नहीं सोचता। कोई और ही कदम उठाता।"

रानी ताशा ने कठोर निगाहों से बबूसा को घूरा।

"तुम बहुत बदतमीज हो गए हो बबूसा।" रानी ताशा की आवाज में बेहद ज्यादा सख्ती थी।

"मैंने आपकी शान में कोई गलत बात नहीं की।"

"तुम्हें सोमाथ से दूर रहना चाहिए।"

बबूसा जवाब में मुस्कराता रह।

"सोमाथ कहता है कि तुम अवश्य दोबारा उस पर हमला करोगे।" रानी ताशा ने कहा।

"वो ठीक कहता है।"

"सोमाथ का कहना है कि तुमने डोबू जाति के हथियार पोपा में रखवाए हैं। उनका इस्तेमाल तुम सोमाथ पर जरूर करोगे।"

"डोबू जाति के हथियार तो मैंने याद के तौर पर अपने साथ लिए हैं कि शायद दोबारा पृथ्वी पर जाना न हो सके। कुछ यादें वहां की साथ ले जाऊं। सोमाथ को उन हथियारों से डरना नहीं चाहिए।" बबूसा बोला।

"तुम जानते हो कि सोमाथ कभी नहीं डरता। महापंडित ने डर उसमें डाली ही नहीं। पर अभी भी वक्त है बबूसा, तुम संभल जाओ और सोमाथ

की तरफ से मुंह फेर लो। वरना जो भी होगा, वो तुम्हारे हक में अच्छा नहीं होगा।"

"मेरी चिंता करने का शुक्रिया रानी ताशा।"

"तो तुम नहीं मानोगे।" रानी ताशा का चेहरा कठोर हो गया।

बबूसा खामोश रहा।

"सोमारा।" रानी ताशा ने गुस्से में कहा—"तुम बबूसा को समझा सको तो समझा लेना। पर इतना जान लो कि अगर सोमाथ पर अब हमला किया गया तो वो जवाब में बबूसा को खत्म करने की चेष्टा करेगा।"

"मैं बबूसा को समझा लूंगी ताशा।"

"रानी ताशा कहो सोमारा। ताशा कहना तुम्हें शोभा नहीं देता।" बबूसा कह उठा।

"मैं तो रानी ताशा ही कहती रही परंतु इनका कहना है कि मैं इन्हें ताशा कहकर ही बुलाऊं।" सोमारा बोली।

"सोमारा मेरी सहेली, मेरी बहन जैसी है।" रानी ताशा ने कहा और आगे बढ़ने को हुई।

"रानी ताशा।" बबूसा ने फौरन कहा—"मुझे आपसे बात करनी है। कुछ कहना है।"

रानी ताशा ने ठिठककर बबूसा को देखा।

बबूसा ने सोमारा से कहा।

"तुम वहीं जाओ, जहां हम जा रहे थे। मैं अभी तुम्हारे पास, वहीं पर आता हूं।"

सोमारा ने सिर हिलाया और वहां से चली गई।

रानी ताशा की निगाह बबूसा पर थी।

"रानी ताशा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"आपने राजा देव को ग्रह से बाहर फेंका था, भूली तो नहीं होंगी, ये बात।"

रानी ताशा के होंठ भिंच गए।

"मैं आपको दुख देने के लिए ये बात नहीं कर...।"

"मैं जानती हूं कि तुम मेरे देव को ये बात याद दिलाने की चेष्टा में हो कि...।"

"अवश्य। मैं ऐसा ही करने की सोच रहा था।" बबूसा ने कहा—"ये बात मेरे रुकने से भी रुकने वाली नहीं, राजा देव को अब ये बात याद आनी ही है। अगर वो, आपसे न मिल गए होते तो अब तक ये बात याद आ गई होती।"

"बबूसा।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा—"तब मैंने राजा देव

के साथ उस जन्म में जो किया था, उसका मुझे आज भी बहुत दुख है। तुम नहीं समझोगे कि कितने पश्चाताप में...।"

"मैं जानता हूं।"

"क्या?" रानी ताशा के माथे पर बल पड़े।

"आपको वास्तव में राजा देव को ग्रह से बाहर फेंके जाने का दुख था।"

"तुम्हें कैसे पता, तुमने तो कभी मेरे दुख को नहीं समझा। मुझे ही दोषी मानते रहे और...।"

"तब मैं हकीकत से वाकिफ नहीं था।"

"कैसी हकीकत?"

"आप समझती हैं कि आपके इशारे पर धोमरा ने राजा देव को सैनिकों के साथ मिलकर ग्रह से बाहर फेंका था?"

"ये...।" रानी ताशा की आवाज कांपी। आंखों में आंसू चमके—"ये ही तो हुआ था।"

"बेशक ये ही हुआ था, परंतु ये होना सच नहीं था। इस सच के पीछे असलियत छिपा...।"

"तुम क्या कहना चाहते हो। तुम क्या...?"

"मैं आपको वो सच बता रहा हूं जो आप नहीं जानतीं। मैं चाहता हूं कि आपके दिल से बोझ उतर जाए, राजा देव को सदूर से बाहर फेंकने का। मुझे कुछ पहले ही पता चला है कि आपने जो किया, बेशक वो आपने किया था, परंतु उसमें आपकी सहमति शामिल नहीं थी। उस वक्त आपके सिर पर, अंजानी ताकतें सवार थीं, उन ताकतों ने आपको प्रभाव में लेकर आपसे ये काम कराया था और जब वो ताकतें आपके सिर से हट गईं तो आप पश्चाताप में रहने लगीं कि ये आपने क्या कर डाला। आपको हमेशा ये ही लगता रहा कि आपने राजा देव को ग्रह से बाहर फेंका है, जबकि हकीकत वो थी, जो मैंने आपको बताई।"

रानी ताशा की आंखों में आंसू बह निकले।

"तुम्हें कैसे पता कि ये काम मेरे से अंजानी ताकतों ने कराया था?" स्वर भर्रा उठा था।

"उन ताकतों के मालिक ने मुझे ये बात बताई।"

"ताकतों का मालिक? कौन है ताकतों का मालिक?"

"इस वक्त वो पोपा में सवार है।"

"कौन?"

"उसकी ताकतें अभी भी काम कर रही हैं।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैंने उसके बारे में राजा देव का बताने की चेष्टा की थी परंतु उन

ताकतों ने मेरे मुंह से कोई बात निकलने नहीं दी। इसी तरह अब मैं आपको उसका नाम बताने की चेष्टा करूंगा तो नहीं बता सकूंगा। वो ताकतें जैसे मेरे पहरे पर मेरे साथ मौजूद रह रही हैं।"

रानी ताशा अपना आंसुओं भरा चेहरा साफ करती कह उठी।

"ये बात कहकर तुमने मेरे सिर से बोझ उतार दिया। परंतु मैं नहीं जानती कि तुमने सच कहा है या झूठ—मैं...।"

"मैंने हर बात सच कही है।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला—"मैं राजा देव का सेवक हूं। अगर आपको निर्दोष होने की बात कहूंगा तो वो गलत नहीं होगी। परंतु मुझे कुछ और ही चिंता सता रही है।"

"वो क्या बबूसा?"

"राजा देव को जब ये याद आएगा कि आपके आदेश पर उन्हें ग्रह से बाहर फेंका था। तब आप पास ही मौजूद खड़ी, ठहाके लगा रही थीं तो राजा देव का क्रोध रुकने का नाम नहीं लेगा। तब राजा देव को संभालना कठिन होगा।"

"महापंडित से कहकर राजा देव के दिमाग का वो हिस्सा ही मिटा दिया जाए, जहां ये यादें दर्ज हैं।" रानी ताशा कह उठी।

"नहीं। ये मैं कभी नहीं होने दूंगा।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"क्यों? इस तरह सब ठीक हो जाएगा।"

"मैं राजा देव के साथ इस तरह का धोखा नहीं कर सकता। मैं उनका सेवक हूं और इस काम में कभी शामिल नहीं होऊंगा। न ही इस काम को होने दूंगा। परंतु ऐसा वक्त आने पर राजा देव को आपके हक में समझाने की चेष्टा जरूर करूंगा।"

रानी ताशा की आंखें अभी भी गीली थीं।

"आज तुमने मुझे बोझ से मुक्त कर दिया बबूसा।" रानी ताशा ने आभार भरे स्वर में कहा।

बबूसा चुप रहा।

"मुझे उन ताकतों के बारे में बताओ।"

"अभी मैं चाहकर भी नहीं बता पाऊंगा। मेरे मुंह से उसका नाम भी नहीं निकलेगा। परंतु सदूर तक पहुंचने पर, सब कुछ सामने आ जाएगा।" बबूसा गम्भीर था—"सदूर पर अब जाने कैसा वक्त आने वाला है।"

"ऐसा क्या होने वाला है?" रानी ताशा की आंखें सिकुड़ीं—"आखिर तुम किसकी बात कर रहे हो?"

"उसका नाम मेरे मुंह से नहीं निकलता।"

"तुम कहो तो, अगर वो पोपा में है तो हम उस पर काबू पा सकते...।"

"हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। जादूगरनी ने ऐसा ही कहा था।"

"उसका नाम बताओ।" रानी ताशा का चेहरा एकाएक सख्त होने लगा।

"धरा।" बबूसा ने नाम बताना चाहा तो उसके मुंह से निकलता चला गया—"मुझे धरा के पास जाना है, बहुत जरूरी काम याद आ गया है। मैं आपसे फिर बात करूंगा रानी ताशा।" कहने के साथ ही बबूसा आगे बढ़ता चला गया।

रानी ताशा वहीं खड़ी, उलझन भरी निगाहों से, बबूसा को जाते देखती रही।

बबूसा तेजी से आगे बढ़ते एक मोड़ पर ठिठका और गहरी-गहरी सांसें लेने लगा। उसने रानी ताशा को धरा के बारे में बताने की कोशिश की थी, परंतु पहले की ही तरह, कहना कुछ चाहा और मुंह से जबरन कुछ और ही निकल गया। वो जानता था कि इसके पीछे धरा की ताकतें हैं। धरा की ताकतें उस पर नजर रखे हुए हैं कि वो किसी को धरा के बारे में न बता दे। ये संकट भरी स्थिति थी बबूसा के लिए। वो अपनी मनचाही बात न कर पा रहा था अजीब-सी झल्लाहट बबूसा पर सवार हो गई थी। चेहरे पर सख्ती उभरी और तेजी से वो आगे बढ़ गया। कई रास्तों को पार करने के बाद वो धरा के केबिन के सामने पहुंचा और दरवाजा धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

सामने ही धरा बैड पर आल्थी-पाल्थी मारें बैठी, मुस्कराती हुई दरवाजे को ही देख रही थी। दोनों की नजरें मिलीं और धरा हौले से खिलखिला उठी। फिर चेहरे पर बराबर मुस्कान ठहरी रही, निचला होंठ टेढ़ा हो गया था।

"तू मेरा पीछा क्यों नहीं छोड़ती?" बबूसा दांत पीसकर बोला।

"पीछा छोड़ दूं, ताकि तू सबको बता दे मेरी बातें और मुझे समस्या आ जाए।" धरा कह उठी।

"क्या समस्या आएगी तुझे?"

"देव और ताशा तो पोपा को वापस पृथ्वी पर ले जाएंगे और मेरे को बाहर निकाल देंगे। तब...।"

"तेरी ताकतें क्या ऐसा होने देंगी?"

"वो बाद की बात है। झगड़ा तो खड़ा हो जाएगा। अब आराम से बैठी हूं, तब आराम से कैसे बैठ पाऊंगी। मेरी ताकतें सबका सत्यानाश कर देंगी, पर पोपा को चलाने के लिए भी तो कोई चाहिए। मैं सदूर पर कैसे पहुंचूंगी। फिर तेरे को पता है कि तू देव को कुछ नहीं बता पाया तो ताशा को कैसे बता सकता है। मैं तुझे कुछ भी नहीं बताने दूंगी।"

"तू आखिर चाहती क्या है?"

धरा हंसी। जहरीली मुस्कान।
"तू जो भी है बहुत खतरनाक है।" बबूसा दांत पीसकर तेजी से आगे बढ़ा।
दो कदम ही बढ़ा होगा कि फौरन पलटा और दरवाजे पर जा खड़ा हुआ।
धरा पुनः हंसी और बोली।
"मेरा गला दबाने आ रहा था। देखा, मेरी ताकतों ने तुझे वापस धकेल दिया।" धरा बोली।
"तेरे को सब कुछ कैसे पता चल जाता है?" बबूसा हारे स्वर में कह उठा।
"मेरी ताकतें मुझे बता देती हैं।" धरा मुस्करा रही थी। निचला होंठ टेढ़ा हो गया।
"इतनी जल्दी तेरे को बता देती हैं?"
"मेरी ताकतों के दिमाग के साथ, मेरा दिमाग जुड़ा हुआ है। फौरन संदेश मेरे पास पहुंच जाता है।"
"तू मेरा पीछा कब छोड़ेगी?"
"सदूर पर पहुंचकर।" धरा ने कहा—"तब मुझे तेरे से क्या वास्ता।"
"तू है कौन?" बबूसा गम्भीर हो गया।
"सदूर पर पहुंचकर तेरे को पता चल जाएगा।"
"तूने कहा था कि जब पोपा सदूर की तरफ चल पड़ेगा। तो तू अपने बारे में बताएगी।"
"तेरे को याद है कि मैंने ऐसा कहा था।"
"हां, कहा था।"
"पर मैंने ये भी तो कहा था कि सदूर पर पहुंचकर तुझे अपने बारे में बताऊंगी।"
"अपना नाम बता दे।"
"मेरा नाम ही तो मेरी पहचान है। नाम बताया तो मेरी पहचान खुद-ब-खुद ही खुल जाएगी।"
"मेरे लिए तू पहेली बन चुकी है।"
"सदूर पर पहुंचते ही पहेली हल हो जाएगी। तेरे को, तेरी हर बात का जवाब मिल जाएगा।"
बबूसा, धरा को देखता रहा फिर गम्भीर स्वर में बोला।
"याद है तेरे को सोलाम ने पकड़ लिया था, परंतु मारा नहीं...।"
"मारता कैसे।" धरा हंसी—"मेरी सहायक ताकतें उसके सिर पर सवार हो गईं। उन्होंने सोलाम के दिमाग में डाल दिया कि बबूसा मुझे पसंद

करता है, तभी तो डोबू जाति के योद्धाओं से मुझे बचा रहा है। सोलाम तेरी इज्जत बहुत करता है। जब ये बात उसके दिमाग में डाली गई तो उसने मुझे छोड़ दिया।"

"मतलब कि तेरी ताकतें सोलाम की जान नहीं ले सकती थीं।" बबूसा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"मैंने तेरे को पहले भी कहा है कि पृथ्वी पर मेरी ताकतों की संख्या दो-तीन ही है। मेरी असल ताकतें तो सदूर पर रहती हैं। फिर किसी की जान लेने से मेरा काम संवरता नहीं, क्योंकि मेरा लक्ष्य तो सदूर पर वापस पहुंचना है। मेरे सदूर तक पहुंचने के रास्ते में जो रुकावटें आ रही हैं, मेरी ताकतें उन रुकावटों को दूर कर रही हैं। उनका काम मुझे सही अवस्था में सदूर पर पहुंचाना है और मैं पहुंच भी जाऊंगी मेरे प्यारे बबूसा।" धरा हंस पड़ी। निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"सदूर पर पहुंचकर तू क्या करेगी?" बबूसा ने पूछा।

"वो ही काम, जो पहले कर रही थी और अधूरा रह गया था।" धरा बराबर मुस्करा रही थी।

"कैसा काम?"

"अभी तू कुछ नहीं जान सकेगा, मेरे मुंह से, कितनी भी कोशिश कर ले।"

"महापंडित को तेरे बारे में पता है।" बबूसा कह उठा।

"अच्छा।" धरा व्यंग से मुस्कराई—"क्या पता है?"

"यही कि तू सदूर पर पहुंचकर मुसीबतें खड़ी करने वाली है।"

"महापंडित को कुछ नहीं पता। वो तो तभी से खुद ही परेशान है, जब रानी ताशा ने राजा देव को सदूर ग्रह से बाहर फेंका था।"

"क्या मतलब?" बबूसा के माथे पर बल दिखने लगी।

"महापंडित की मशीनों ने उसे तभी बता दिया था कि राजा देव को ग्रह से बाहर फेंकने में रानी ताशा की कोई गलती नहीं है। रानी ताशा निर्दोष है। इससे ज्यादा मशीनें कुछ नहीं बता सकीं। तभी से महापंडित इस उलझन में फंसा हुआ है कि रानी ताशा कैसे निर्दोष हो सकती हैं। जबकि वो जानता है कि मशीनें भी झूठ नहीं बोलतीं। महापंडित को मेरे बारे में आभास जरूर हो गया है, परंतु वो मेरी हकीकत से अंजान है अभी। सदूर पर मौजूद मेरी ताकतों ने उसे इससे ज्यादा कुछ पता ही नहीं लगने दिया। ये भी न पता लगता, परंतु अब मेरी ताकतें कमजोर हो रही हैं। उनकी ऊर्जा खत्म हो रही है।"

"ऊर्जा?"

"हां। मेरी ताकतें भी तो तभी काम करेंगी, जब उन्हें ऊर्जा मिलेगी। मैं सदूर पर पहुंचकर उन्हें ऊर्जा दूंगी, मुझे सारे काम ठीक से संभालने हैं। सब कुछ फिर से शुरू करना होगा। बहुत भटक ली मैं।" धरा गम्भीर हो उठी।

"तुम्हारी ताकतों को ऊर्जा कैसे मिलती है?"

धरा, बबूसा को देखती रही फिर कह उठी।

"ये मेरे भीतर की बात है। रहस्य की बात है। तेरे को क्यों बताऊं?"

"तो सदूर पर पहुंचकर तेरे बारे में सबको पता चल जाएगा।"

"हां, तब कोई पर्दा नहीं होगा।" धरा मुस्कराई, निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"तब तेरे को किसी का डर नहीं होगा?"

"तब मैं क्यों डरूंगी। लोग मुझसे डरेंगे। तू अभी मेरे बारे में जानता ही क्या है बबूसा।" धरा हंस पड़ी।

"राजा देव के सामने तेरी एक चाल नहीं चलेगी सदूर पर।"

"राजा देव।" धरा मुस्कराई, निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"तुम्हारा राजा देव तो सदूर पर मेरे सामने मच्छर की तरह होगा, जिसे मसलने का भी मन नहीं करता। ऐसे मामूली लोगों से मैं कोई वास्ता नहीं रखती। मजा तो उसे चखाना है, जिसने धोखे से मुझ पर वार किया और मुझे एक खास समय तक के लिए सदूर छोड़कर जाना पड़ा था।"

"किसकी बात कर रही हो?"

"और बातें मत कर मुझसे। मैं अभी अपने बारे में तेरे को कुछ नहीं बताना चाहती।" धरा ने तीखे स्वर में कहा।

बबूसा खड़ा, धरा को देखता रहा।

"जा अब। मैं कोई बात नहीं करूंगी।"

बबूसा गम्भीरता में डूबा, वहां से बाहर निकल आया। उसे एहसास हो चुका था कि आने वाला वक्त बहुत खराब होगा। धरा की सलामती कई नई मुसीबतें पैदा करने वाली है। अब वो सोचने लगा कि अगर सोमाथ के साथ धरा भी खत्म हो जाए तो सब कुछ सामान्य हो जाएगा। कोई तनाव बाकी न रहेगा।

परंतु ये होगा कैसे?

अब जबकि वो गुस्से में धरा का गला दबाने के लिए आगे बढ़ा कि तभी उसके दिमाग में विचार आया कि ऐसा नहीं करना है और वो वापस दरवाजे के पास जा पहुंचा। बबूसा जानता था कि ये बात धरा की ताकत ने ही उसके दिमाग में डाली होगी। उसकी ताकतें हमेशा ही उसकी रक्षा करने को तैयार रहती थीं। उसे पूरी सुरक्षा दे रही थीं। ऐसे में उसे खत्म कर पाना

भी आसन काम नहीं था। उसकी ताकतें, उसके बारे में किसी को बताने भी नहीं दे रही थीं। उसे मार देना भी सम्भव नहीं हो रहा था।

जोबिना?

हां, इन सब बातों का हल एकमात्र जोबिना था। अगर जोबिना उसके हाथ लग जाती है तो धरा को खत्म करना कठिन नहीं होगा। इससे पहले कि धरा की ताकतें हरकत में आएं, जोबिना से धरा को राख बनाया जा सकता है। सोमाथ से भी दो पलों में निबटा जा सकता है। परंतु जोबिना हासिल कैसे हो? जोबिना ऐसा खतरनाक हथियार था कि रानी ताशा स्वयं उस पर अधिकार रखती थी। अपने पास रखती थी। जोबिना के गलत हाथों में पड़ जाने का मतलब बहुत खतरनाक हो सकता था।

बबूसा ठिठक गया।

सोचें चेहरे पर उभरीं नजर आ रही थीं। वो कशमकश में दिखा।

फिर आगे बढ़ा और मोड़ों को पार करता बढ़ता चला गया। रास्ते में एक-दो रानी ताशा के आदमी भी मिले। बबूसा सीढ़ियां चढ़कर ऊपर की मंजिल पर पहुंचा और सावधानी से आगे बढ़ने लगा। चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी। बबूसा फैसला कर चुका था कि जोबिना हासिल कर सके। उसके लिए रानी ताशा और राजा देव के कमरे में जाना जरूरी था। जोबिना वहीं पर एक बंद बॉक्स में रखी हुई थी। सोमारा ने ये ही बताया था। उस बक्से को खोलने की दिक्कत अवश्य थी कि उसे खोलने के लिए, बटनों के क्रम को नहीं जानता था। लेकिन उसने कोशिश करने की ठान ली थी। अहम बात तो ये थी कि रानी ताशा के कमरे की क्या स्थिति होगी। रानी ताशा कुछ देर पहले उसे पोपा के नीचे वाले हिस्से में मिली थीं। वो पोपा का चक्कर लगाने के लिए निकली होंगी। परंतु राजा देव तो भीतर ही होंगे?

जो भी हो बबूसा रानी ताशा के कमरे के दरवाजे के बाहर पहुंचकर ठिठका। कमरे का दरवाजा था। उसने हैंडिल पकड़कर भीतर धकेला तो दरवाजा खुलता चला गया।

बबूसा ने गर्दन आगे करके भीतर झांका।

पंद्रह फुट चौड़ा, पंद्रह फुट लम्बा कमरा था। एक तरफ आठ फुट के घेरे में शानदार बेड था। कमरे में टेबल, दो कुर्सियां और जरूरत का अन्य सामान मौजूद था। परंतु देवराज चौहान नहीं दिखा। चंद पल ऐसे ही बीत गए फिर बबूसा ने दबे पांव भीतर प्रवेश किया और दरवाजा आहिस्ता से बंद किया।

तभी आवाजें सुनकर बबूसा सतर्क हुआ।

जिधर बाथरूम था। आवाजें उधर से आई थीं।

बबूसा दबे पांव आगे बढ़ा और बाथरूम के दरवाजे के बाहर खड़े होकर

भीतर आहटें लीं तो फौरन ही उसे एहसास हो गया कि राजा देव नहा रहे हैं। बबूसा वहां से हटा और कमरे में नजरें दौड़ाने लगा। जल्दी ही उसकी निगाह दीवार के एक हिस्से पर जा टिकी। वहां बक्से का छोटा-सा दरवाजा नजर आ रहा था उसके पास ही बटन वाली प्लेट लगी थी। वो बक्सा दीवार के भीतर फिट हुआ था। बबूसा उसके पास जा पहुंचा। इन बटनों में कैसा क्रम डालकर लॉक खोला जाता है इस बात का एहसास था बबूसा को तो वो उसी तरह के क्रम डालकर बक्से का दरवाजा खेलने की चेष्टा करने लगा। वो जानता था कि वक्त कम है। राजा देव कभी भी बाथरूम से बाहर आ सकते हैं।

बबूसा की उंगलियां बहुत तेजी से बार-बार बटनों को नया क्रम दे रही थीं।

छः-सात मिनट बाद एक खास क्रम पर 'क्लिक' की आवाज कानों में पड़ी।

बबूसा का दिल धड़क उठा।

उसने बक्से के दरवाजे का हैंडिल पकड़कर बाहर को खींचा तो दरवाजा खुलता चला गया।

बबूसा का चेहरा खुशी से चमक उठा। उसने बक्से के भीतर झांका। जहां दो-तीन खाने बने हुए थे। एक खाने में कई सारी जोबिना (हथियार) रखी दिखी। बबूसा ने फौरन एक जोबिना बाहर निकाली और उसे चैक किया। वो सम्पूर्ण थी, उसमें सब सामान लगा हुआ था। बबूसा बक्से का दरवाजा बंद करने लगा कि ठिठक गया।

फौरन घूमकर पीछे की तरफ देखा।

देवराज चौहान बाथरूम के दरवाजे पर खड़ा उसे ही देख रहा था। वो नहाकर आया था और अंडरवियर में था। धीरे-धीरे वो अपने गीले बालों पर हाथ फेर रहा था।

दोनों की नजरें मिलीं।

बबूसा का चेहरा फक्क पड़ गया।

एकाएक देवराज चौहान मुस्कराया और आगे बढ़ता कह उठा।

"क्या कर रहे हो बबूसा?"

"चोरी कर रहा था राजा देव।" बबूसा अपने पर काबू पाता कह उठा।

"जोबिना चुरा रहे थे?"

"हां राजा देव। मांगने पर तो कोई देता नहीं, जरूरत थी इसलिए चोरी कर लेने की सोची।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मुझसे कहा होता।"

"आप भी नहीं देते।" बबूसा बोला।
देवराज चौहान पास आकर ठिठक गया।
"सोमाथ को मारने के लिए तुम्हें जोबिना चाहिए।" देवराज चौहान बोला।
"सोमाथ के साथ एक और समस्या है। जोबिना के बिना मेरा काम नहीं बनेगा।"
"मैंने तुम्हें सोमाथ से दूर रहने को कहा था।"
"ये सम्भव नहीं राजा देव। कुछ काम तो ऐसे हैं जो मुझे करने ही हैं। उनकी जरूरत मैं समझता हूं।" बबूसा गम्भीर हो गया।
"मुझे चोरी, हेराफेरी, धोखेबाजी से सख्त नफरत है। तुम्हें मेरे साथ ऐसा नहीं करना चाहिए।" देवराज चौहान बोला।
"पर मैं तो रानी ताशा के अधीन चीज की चोरी कर रहा हूं।"
"अब मैं आ गया हूं तो हर चीज मेरे अधीन है। जोबिना वापस रख दो बबूसा।" देवराज चौहान का स्वर शांत था।
"जो हुक्म राजा देव। लेकिन मुझे इसकी सख्त जरूरत है।"
"वापस रखो।"
बबूसा ने जोबिना वापस बॉक्स में रख दी।
"अब तो तुम्हारे पास जोबिना नहीं है?" देवराज चौहान ने पूछा।
"नहीं राजा देव। तलाशी ले लीजिए।"
"मुझे तुम पर भरोसा है। बॉक्स बंद करो।"
बबूसा ने बॉक्स का छल्ला बंद किया तो 'क्लिक' की आवाज उभरी।
"तुम्हारी आदतें बहुत बिगड़ गई हैं बबूसा।" देवराज चौहान ने सामान्य स्वर में कहा।
"राजा देव, मेरा हर काम आपके लिए होता है। सदूर के भले के लिए होता है।" बबूसा ने धीमे स्वर में कहा।
"परंतु तुम तो सोमाथ को मारने के लिए जोबिना चुरा रहे थे।"
"मैं वो ही कर रहा हूं जो मैंने जरूरी समझा।"
"सोमाथ से मुकाबला करना है तो करो, परंतु इस काम के लिए तुम्हें जोबिना नहीं मिलेगी।" देवराज चौहान मुस्कराया।
"मैं जोबिना के बिना भी सोमाथ का मुकाबला कर लूंगा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"जोबिना तो मैं धरा...धरा को दिखाना चाहता था। वो कह रही थी कि मैं जोबिना देखना चाहती हूं।"
देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।
"ये दूसरी बार है कि तुम मेरे सामने धरा की बात कर रहे हो। तुम धरा को ज्यादा महत्त्व दे रहे हो।"

बबूसा मन ही मन झल्ला उठा।

वो तो देवराज चौहान से कहने जा रहा था कि जोबिना तो मैं धरा पर इस्तेमाल करना चाहता हूं परंतु धरा की ताकतों ने फिर उसके शब्दों को किसी और तरफ मोड़ दिया था। बबूसा के चेहरे पर उखड़ापन उभरा।

"क्या हुआ?" देवराज चौहान ने उसके चेहरे पर आए भावों को देखकर पूछा।

"कुछ नहीं राजा देव। मैं कहना कुछ चाहता हूं और मुंह से कुछ और निकल रहा है।" बबूसा लम्बी सांस लेकर बोला।

"जाकर आराम करो। मुझे तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं लग रही। कारू के घूंट ले लो।"

बबूसा ने कुछ नहीं कहा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

"दोबारा जोबिना को हासिल करने की कोशिश मत करना।"

"जो हुक्म राजा देव।" बबूसा ने कहा और बाहर निकल गया। मन में एक ही सोच चल रही थी कि जोबिना हाथ लग गई थी। अगर राजा देव कुछ पल और देरी से आते तो जोबिना लेकर कमरे से बाहर निकल गया होता।

बबूसा पोपा के रास्तों को पार करके आगे बढ़ता गया। चेहरे पर झल्लाहट सवार थी। जब सीढ़ियों के पास पहुंचा तो दूसरी तरफ देखा। उधर पोपा का चालक कक्ष था। बबूसा चालक कक्ष में जा पहुंचा। वहां किलोरा कुर्सी पर बैठा विण्ड शील्ड से बाहर का नजारा देख रहा था। आकाश गंगा बहुत ही सुंदर नजर आ रही थी और पोपा बाहर तेज रफ्तार से खिलौने की भांति, स्क्रीनों पर भागता दिख रहा था।

किलोरा बबूसा को देखते ही बोला।

"आओ बबूसा। तुम पोपा को उड़ाने-चलाने के बारे में जानते हो?"

"हां। मैं जानता हूं ये कैसे चलाया जाता है। इसे तैयार करने में मैं राजा देव और जम्बरा के साथ था।"

"मुझे बहुत अच्छा लगता है पोपा चलाना। आओ कुर्सी पर बैठो।" किलोरा ने कहा।

"मैं बाद में आऊंगा। अभी व्यस्त हूं। क्या तुम्हारे पास जोबिना है?"

"जोबिना? नहीं, रानी ताशा ने सबसे जोबिना वापस ले ली है, पर तुम्हें क्यों चाहिए?" किलोरा ने पूछा।

"ऐसे ही पूछ रहा था।" बबूसा ने कहा और चालक कक्ष से बाहर निकल गया।

बबूसा, पोपा के पिछले हिस्से में पहुंचा, जहां सोमारा उसके इंतजार में फर्श पर बैठी थी।

"देर लगा दी आने में, ऐसी क्या बात कर रहे थे रानी ताशा से?" सोमारा उसे देखते ही कह उठी।

बबूसा ने सब कुछ बताया और उसके पास फर्श पर ही जा बैठा।

"ओह, तुमने जोबिना पा ली थी।" सोमारा के होंठों से निकला।

"अगर राजा देव को बाथरूम से निकलने में कुछ पलों की देरी हो जाती तो मैं जोबिना लेकर निकल चुका होता। तब सोमाथ और धरा को पलों के भीतर जलाकर खाक कर देता।" बबूसा अफसोस भरे स्वर में कह उठा।

"तुम राजा देव को समझाते कि धरा को खत्म करने के लिए, जोबिना जरूरी है।"

"कैसे कहता? धरा की ताकतें हर समय मेरे आसपास ही रहती हैं। वो मुझे कुछ भी कहने नहीं देतीं। कहने की कोशिश करता हूं तो मुंह से कुछ का कुछ निकलता है। वो ताकतें मेरे मुंह से निकलने वाली बात को घुमा देती हैं। धरा बहुत शैतान है, कहती है उसकी ताकतों के साथ उसका मस्तिष्क जुड़ा हुआ है। उसे सब कुछ क्षणों में मालूम हो जाता है। मैं किसी को हकीकत बताने के काबिल नहीं हूं। धरा कहती है उसका नाम ही उसकी पहचान है। जब उसका नाम जानेंगे तो उसके बारे में जान जाएंगे।"

"तो क्या धरा उसका नाम नहीं है?"

"वो तो पृथ्वी का नाम है। वो सदूर के नाम के बारे में बात करती है। जादूगरनी ने बताया था कि दो-दो, यानी कि एक शक्ल वाली दो धरा होंगी सदूर पर।"

"ये कैसे हो सकता है।"

"मुझे भी कुछ समझ नहीं आ रहा।"

सोमारा के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

"अब तुम क्या कहने वाले हो?" सोमारा कह उठी।

"अब?" बबूसा की निगाह एक तरफ पड़े रस्सों की तरफ गई। एक पीले रंग का कुछ मोटा नायलोन का रस्सा था और दूसरा सामान्य रस्सा था और डेढ़ इंच मोटा था। वो उठकर पास पहुंचा और रस्सों को टटोलकर देखने लगा। उसकी लम्बाई चैक किया फिर तसल्ली भरे स्वर में कह उठा—"मुझे ऐसे ही रस्से चाहिए थे।"

सोमारा पास आ पहुंची।

"तुम इन रस्सों का क्या करोगे?"

बबूसा के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान उभरी।

"ये मोटा रस्सा मेरे सोचे 'चक्रव्यूह' में अहम काम करेंगे। सोमाथ को खत्म करने में मोटा रस्सा मेरी भरपूर सहायता करेगा।"

"मैं समझी नहीं, जरा खुलकर बताओ।"

"बताऊंगा। परंतु अपना चक्रव्यूह बिछाने से पहले मै सोमाथ को खत्म करने की एक खास कोशिश करने वाला हूं। ऐसे में हो सकता है कि चक्रव्यूह को बिछाने की जरूरत ही न पड़े।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला—"तुम उन सबको बुला लाओ।"

"जगमोहन, नगीना और मोना चौधरी को?"

"हां।" बबूसा हथियारों से भरा बोरा खोलता कह उठा।

"उन्हें यहां लाना ठीक रहेगा?"

"हां। ये जगह तो सबसे बढ़िया है हमारे काम के लिए।"

सोमारा बाहर निकल गई।

बबूसा बोरी से हथियारों को निकालकर, बाहर रखने लगा। हथियारों में तलवारें थीं, खंजर थे, लम्बे फल वाले घातक चाकू थे, चौकोर पत्ती वाले हथियार थे, कुल्हाड़ी थी छोटी-छोटी, छोटे किंतु दमदार हथौड़े थे। काफी मात्रा में हथियार थे जिन्हें देखकर बबूसा ने संतुष्टि भरे ढंग से सिर हिलाया। चेहरे पर सख्ती आ गई थी।

कुछ ही देर में सोमारा, नगीना, मोना चौधरी और जगमोहन के साथ लौटी।

वे सब फर्श पर बैठे। सबके चेहरों पर गम्भीरता थी, बबूसा बोला।

"मैं सोमाथ पर वार करने की सोच रहा हूं। तुम सबकी सहायता चाहिए।"

"क्या करने वाले हो तुम?" जगमोहन ने पूछा।

"उस दिन सोमाथ की गर्दन काटने का प्रयास किया गया परंतु महापंडित ने उसकी गर्दन में रोक लगा रखी थी कि अगर कोई उसकी गर्दन काटना चाहे तो कट न सके। महापंडित ने बहुत सोच-समझकर बबूसा का निर्माण किया है। परंतु महापंडित इतना भी समझदार नहीं कि हम कुछ न कर सकें।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस बार हम सफल रहेंगे, परंतु असफल भी रहे तो चिंता की बात नहीं, क्योंकि मैंने सोमाथ के लिए जबर्दस्त चक्रव्यूह रचने की तैयारी कर ली है।"

"कैसा चक्रव्यूह?" नगीना ने पूछा।

"जरूरत पड़ने पर मैं तुम सबको बताऊंगा, परंतु पहले सोमाथ को बेकार करने की जो कोशिश मन में है, वो करके देख लें।"

"क्या करना चाहते हो तुम?" मोना चौधरी ने पूछा।

"हम सोमाथ की टांग काटेंगे।"

"टांग?"

"हां। पैर से कुछ ऊपर से, सोमाथ की टांग काटी जाएगी।" बबूसा दांत भींचकर कह उठा—"टांग अलग करके हम अपने साथ ले आएंगे कि कटी टांग फिर न जुड़ सके। टांग कट जाने की स्थिति में, सोमाथ बेकार हो जाएगा। तब वो मुकाबला करने के काबिल ही नहीं रहेगा और ये हमारी, उस पर जीत होगी।"

"लेकिन ये काम आसान नहीं है।" नगीना बोली।

"कैसे?"

"सोमाथ अपनी टांग कैसे कटने देगा—वो तो बहुत सतर्क रहता...।"

"हम सब मिलकर कोशिश करेंगे।" बबूसा ने कहा—"सोमाथ इस वक्त नीचे वाले हिस्से में अपने कमरे में है। हम सब हथियारों के साथ वहां जाएंगे और सोमाथ को वक्त दिए बिना उस पर झपट पड़ेंगे। एकाएक ऐसा हो जाने से सोमाथ उलझ जाएगा, लम्बे क्षणों के लिए। उसी दौरान मैं कुल्हाड़ी से सोमाथ की टांग काट दूंगा। सब कुछ हमें बहुत तेजी से करना होगा कि सोमाथ को अपने को बचाने का वक्त न मिल सके।"

"मुझे ये काम आसान नहीं लगता।" जगमोहन कह उठा।

"कोई भी काम मुश्किल नहीं होता, अगर काम को मेहनत और लगन से किया जाए।" बबूसा ने कहा।

"तब तक सोमाथ हम लोगों की गर्दनें तोड़ देगा। उसमें बहुत ताकत है।" मोना चौधरी बोली।

"थोड़ा-सा तो खतरा उठाना ही होगा। ये छोटा-सा परंतु जबर्दस्त हमला होगा सोमाथ पर। अगर हमने ठीक से काम किया तो सोमाथ को हम हमेशा के लिए बेकार कर सकते हैं। टांग कट जाने की स्थिति में वो हारा हुआ माना जाएगा।"

सबकी निगाह बबूसा पर थी।

"इस काम में खतरा तो बहुत है बबूसा।" सोमारा कह उठी।

"सोमाथ रोबॉट है। असली इंसान नहीं है।" नगीना कह उठी।

बबूसा ने नगीना को देखा।

"बैटरी से चलता होगा।"

"बैटरी लगी है।" बबूसा ने कहा।

"तो हमें उस बैटरी को बेकार कर देना चाहिए। इससे वो बेजान हो जाएगा।" नगीना बोली।

"तुम्हारा कहना कुछ हद तक सही है।" बबूसा ने सोच भरे स्वर में कहा—"परंतु इसमें दो बातें परेशानी पैदा कर रही हैं, एक तो ये कि हम नहीं जानते सोमाथ के शरीर के किस हिस्से में बैटरी लगी है। देखने में वो

हर तरफ से फिट दिखता है और इस बात का आभास ही नहीं होता कि बैटरी उसके शरीर के किस हिस्से में फिट है। दूसरी बात ये कि अगर हम बैटरी के बारे में जान लेते हैं और किसी तरह उस बैटरी को उसके शरीर से अलग कर देते हैं तो कुछ देर के लिए सोमाथ बोजान जरूर हो जाएगा परंतु रानी ताशा फौरन नई बैटरी सोमाथ को लगा देगी और वो फिर हमारे सामने होगा।"

"रानी ताशा के पास बैटरी होगी?" नगीना ने कहा।

"जरूर होगी।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा—"सोमाथ के लिए एक से ज्यादा बैटरी पोपा में मौजूद होंगी।"

"फिर तो बैटरी वाला आइडिया बेकार है।" जगमोहन कह उठा।

"सोमाथ के शरीर का कोई हिस्सा जरूर नाजुक होगा, जहां वार करने से उसे भारी नुकसान हो। परंतु हम उस जगह के बारे में अंजान हैं।" मोना चौधरी कह उठी—"ये बात कहीं से पता भी नहीं चल सकती।"

"इन बातों में नहीं उलझना है हमें।" बबूसा बोला—"सोमाथ के बारे मे मैंने जो सोचा है, उस पर ही काम कर लेना बेहतर होगा। शायद हमें कामयाबी मिल जाए और सोमाथ बेकार हो जाए।"

▭ ▭

जगमोहन के हाथ में लम्बे फल वाला चाकू था। नगीना ने दोधारी खंजर थाम रखा था। मोना चौधरी के हाथ में छोटा परंतु भारी हथौड़ा था। सोमारा के हाथ में तलवार थी और बबूसा ने कुल्हाड़ा थाम रखा था। सबके चेहरों पर कठोरता नाच रही थी। वो पोपा की नीचे की मंजिल के रास्तों को तय करते सोमाथ के कमरे की तरफ बढ़े जा रहे थे। ये अच्छा ही रहा कि रास्ते में उन्हें कोई नहीं मिला था। देर तक वे सोमाथ पर हमला करने की योजना को तैयार करते रहे थे। इनके इरादे दृढ़ थे। वो जानते थे कि सोमाथ के हाथों किसी-न-किसी की जान भी जा सकती थी।

वे पांचों सोमाथ के कमरे के सामने पहुंचे, नगीना ने दरवाजा खोला और सब एक साथ ही भीतर प्रवेश करते चले गए। सोमाथ कमरे में टहल रहा था कि सबको हथियारों के साथ भीतर आया पाकर चौंका। परंतु आगे कुछ भी न सोच सका। जगमोहन, सोमारा, नगीना और मोना चौधरी हथियारों के साथ उस पर झपट पड़े।

नगीना खंजर थामे उछली और सोमाथ की छाती से जा टकराई। एक हाथ सोमाथ की गर्दन में डाला और हाथ दबे खंजर का वार उसकी छाती पर किया। खंजर सोमाथ की छाती में जा धंसा। तब तक जगमोहन लम्बे फल वाले चाकू को सोमाथ की कमर में धंसा चुका था। मोना चौधरी ने

फुर्ती से हथौड़ा सोमाथ के सिर पर मारा तो सोमारा ने तलवार का भरपूर वार उसकी बांह पर इस तरह किया, जैसे बांह काट देना चाहती हो। परंतु 'टक' की आवाज के साथ तलवार बांह के आंधी भीतर पहुंचकर रुक गई। परंतु इन वारों को करके वे रुके नहीं, एक के बाद एक बार-बार सोमाथ के शरीर पर वार करने लगे। जगमोहन चाकू को बार-बार सोमाथ के शरीर के भीतर-बाहर कर रहा था। इसी तरह नगीना खंजर को बार-बार उसकी छाती और पेट में धंसा रही थी। मोना चौधरी कभी सिर पर तो कभी कंधों पर हथौड़े बरसा रही थी। सोमारा तलवारों के वार कर रही थी। सब कुछ तेजी से जारी था।

"पागल हो तुम लोग।" सोमाथ के होंठों से निकला।

तभी बबूसा ने कुल्हाड़ी का जबर्दस्त वार सोमाथ की पिंडली पर किया।

आधी पिंडली कटने के बाद, कुल्हाड़ी 'टक' की आवाज के साथ थम गई।

बबूसा ने फिर जबर्दस्त वार किया।

दोबारा भी कुल्हाड़ी पिंडली को पूरा न काट सकी। 'टक' की आवाज उभरी और कुल्हाड़ी रुक गई। बबूसा ने एक साथ कई वार कर डाले। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। कुल्हाड़ी हर बार आगे बढ़ने से रुक जाती। बबूसा के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी। वो गुर्राहट भरे स्वर में कह उठा।

"कोई फायदा नहीं। इसकी टांगों में भी रोक लगी है कि टांग कट न सके।"

"इसकी बांह में भी ऐसा ही है।" सोमारा गुस्से से कह उठी—"बांह नहीं कट रही।"

वार करते सब थम गए।

सोमाथ का शरीर जगह-जगह से उधड़ा लग रहा था। जिस्म में चाकू, खंजर, तलवारों के वारों की वजह से छेद नजर आ रहे थे। हथौड़े की चोट पड़ने की वजह से सिर पिचक गया था। दो मिनट में ही वो बुरे हाल में दिखने लगा था। जबकि सोमाथ की आंखें खुली थीं और वो सबको हरकत करते देख रहा था। नगीना का गला उसने पकड़ना चाहा तो नगीना ने फौरन उसकी छाती से एक तरफ छलांग लगा दी।

कई जगह से सोमाथ की स्किन छिलके की भांति लटक रही थी।

"तुम सफल नहीं हो सके बबूसा।" जगमोहन सोमाथ पर लम्बे चाकू से वार करता कह उठा।

"इसके शरीर में अंगों पर हर जगह रोक लगी है कि कोई भी हिस्सा कट कर अलग न हो।" बबूसा के चेहरे पर क्रोध नाच रहा था—"हम असफल रहे, जो करने की सोचा था। चलो यहां से।"

फिर वो सब देखते ही देखते हथियारों के साथ बाहर निकलते चले गए।

सोमाथ अपनी जगह पर स्थिर खड़ा था। बुरी हालत लग रही थी उसकी। पूरा शरीर टूट-फूट चुका था। उसने गर्दन घुमाकर अपनी छाती और पेट का हाल देखा। बांहें देखीं। तलवार से कट चुका स्किन का लम्बा-सा हिस्सा बांह से नीचे की तरफ लटक रहा था। फिर उसने बांह उठाकर पिचके सिर पर फेरा। एक तरफ से कनपटी भी पिचकी-सी नजर आ रही थी। उसके बाद उसकी निगाह पिंडली पर गई, जहां कुल्हाड़ी के वार हुए थे। पिंडली को हर तरफ से काटने की चेष्टा की गई थी, परंतु पिंडली के भीतर लगी रोक की वजह से पिंडली नहीं कट पाई थी।

"ये तो बबूसा ने बहुत गलत किया।" सोमाथ बोला—"सबको अपने साथ मिला लिया। मैं जानता था वो मुझ पर वार जरूर करेगा। बबूसा ने पक्की योजना बनाकर मुझे मार डालना चाहा, परंतु सोमाथ पर इन बातों का, इन वारों का कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन ऐसा करके बबूसा ने खुद को मुसीबत में डाल लिया है। सोमारा भी बबूसा के साथ मिल गई।" एकाएक सोमाथ के टूटे-फूटे चेहरे पर शांत-सी मुस्कान उभरी फिर आगे बढ़कर, वहां बिछे बेड पर पीठ के बल लेट गया।

आंखें खुली थीं। वो छत को देख रहा था।

वक्त बीतने लगा।

धीरे-धीरे उसका कटा-फटा, पिचका शरीर ठीक होने लगा। शरीर में बने छेद भरने लगे। पिचका सिर बेहद मध्यम रफ्तार से पुनः गोल होता जा रहा था। पिंडली दुरुस्त होने लगी।

इन सबको बीस मिनट लगे और वो पूरी तरह ठीक हो गया।

सोमाथ बेड से उठा। बांह की मांस रूपी झिल्ली लटक रही थी, जिसे कि उसने दूसरे हाथ से पुनः उस जगह पर रख दिया, जहां से कटकर वो लटक रही थी तो मिनट भर में वो भी ठीक हो गई।

अब सोमाथ पहले की तरह सामान्य था।

वो मुस्कराया। बेहद शांत मुस्कान। आगे बढ़कर उसने एक तरफ पड़ा यंत्र उठाया और उससे छेड़छाड़ करके रानी ताशा से सम्बंध बनाया और बात की।

"कहो सोमाथ?" यंत्र से रानी ताशा की आवाज निकलकर सोमाथ के कानों में पड़ी।

"बबूसा ने सोमारा, जगमोहन, नगीना और मोना चौधरी के साथ मिलकर मुझ पर हमला किया, मेरे कमरे में।"

"ओह! पूरी बात बताओ।"

सोमाथ ने सारा वर्णन बता देने के बाद कहा।

"आपका हुक्म था कि ऐसा कुछ हो तो मैंने उन्हें कुछ नहीं कहना है।"

"शुक्रिया सोमाथ कि तुमने मेरी बात याद रखी।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"लेकिन रानी ताशा ये हर बार तो नहीं होगा। बबूसा अभी फिर मुझ पर हमला करेगा। वो रुकने वाला नहीं है। मैं चाहता हूं कि आपकी तरफ से हमला का जवाब देने की मुझे इजाजत मिल जाए।"

"बबूसा ने जो किया, गलत किया।" रानी ताशा कठोर स्वर में यंत्र से उभरा—"आखिरी बार उसे समझाने की चेष्टा की जाएगी। तुम अब से आजाद हो कि अगर वो लोग तुम पर फिर हमला करें तो उन्हें मार सकते हो।"

"मैं यही सुनना चाहता था रानी ताशा।" कहते हुए सोमाथ के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

▭ ▭

रानी ताशा ने यंत्र बंद करके एक तरफ रखा।

देवराज चौहान प्रश्नभरी नजरों से रानी ताशा को देख रहा था।

"देव, बबूसा ने सोमाथ पर हमला किया था उसे खत्म करने के लिए।" रानी ताशा ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"इस हमले में बबूसा के साथ जगमोहन, नगीना, सोमारा और मोना चौधरी थे।"

देवराज चौहान ने हौले-से सिर हिलाया।

"सोमारा भी बबूसा के साथ मिल गई है, जबकि मैंने सोचा था कि वो उसे समझाएगी।"

"ये गलत हो रहा है।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला।

"सोमाथ से मैंने कह रखा था कि ऐसा वक्त आए तो तुमने किसी को नुकसान नहीं पहुंचाना है। परंतु मैं सोमाथ को ज्यादा देर तक रोके नहीं रख सकती। वो अपनी मर्जी करने के लिए भी आजाद है। दो बार बबूसा, सोमाथ पर जानलेवा हमला कर चुका है। मैंने सोमाथ को इजाजत दे दी है कि अब ऐसा हो तो वो जवाबी कार्यवाही कर सकता है।"

"सोमाथ तो उन सबको मार देगा!" देवराज चौहान गम्भीर था।

"सोमाथ कहता है कि बबूसा रुकने वाला नहीं। वो फिर हमला करेगा।" रानी ताशा ने कहा।

"ये सब रुकना चाहिए ताशा।"

"मेरे देव। सोमाथ अब तक मेरे कहने पर रुका हुआ था, पर अब नहीं रुकेगा।"

"मैं नहीं चाहता कि उन सबको अपनी जान गंवानी पड़े।" देवराज चौहान ने कहा—"हमें उन सबको समझाना चाहिए।"

"मैं बबूसा को समझा चुकी हूं परंतु वो नहीं माना।" रानी ताशा ने कहा।

"वो सोमाथ को मारने की जिद कर रहा है।" देवराज चौहान बोला—"मैंने भी उसे समझाया था।"

"महापंडित ने बबूसा का जन्म कराते समय उसमें आपकी आदतें, आपकी ताकत डाली है। वो जिद तो करेगा ही। अपनी धुन का पक्का है, परंतु वो सोमाथ को जीत नहीं सकता, वो खुद भी मरेगा और अन्यों के मरने की भी वजह बनेगा।"

देवराज चौहान उठता हुआ बोला।

"हमें उन सबको सख्ती से समझाना चाहिए।"

"कोई फायदा नहीं होगा देव।" रानी ताशा गम्भीर स्वर में बोली—"बबूसा मानने वाला नहीं।"

"मेरे साथ चलो ताशा। जैसे भी हो उन्हें समझाना ही पड़ेगा।" देवराज चौहान गम्भीर दिख रहा था।

▭ ▭

"हम असफल रहे।" बबूसा क्रोध में सुलगता, दांत भींचकर कह उठा—"कितनी अच्छी तरह हमने सोमाथ को जा घेरा था। सब ठीक रहा। हम जो करना चाहते थे, वो ही किया, परंतु असफलता ही मिली हमें।"

इस समय वे सब पोपा के पीछे वाले हिस्से में, उसी जगह पर मैजूद थे। बबूसा कमर पर हाथ बांधे क्रोध में टहल रहा था। बाकी सब पोपा के फर्श पर बैठे थे। सब चिंतित दिख रहे थे।

"हमारी कोशिश में कोई कमी नहीं थी।" मोना चौधरी कह उठी।

"लेकिन फायदा तो कुछ न हुआ।" जगमोहन बोला।

"मैंने हथौड़े मार-मारकर उसका सिर पिचका दिया था। पर उसे कोई फर्क नहीं पड़ा।" मोना चौधरी ने पुनः कहा—"पता नहीं उसे कैसे बनाया गया है। कैसे वो अपने टूट-फूट चुके शरीर की फौरन रिपेयर कर लेता है।"

"महापंडित ने सोमाथ का जबर्दस्त बनाया है। सारा कमाल तो महापंडित का है, सोमाथ का नहीं।" बबूसा दांत भींचे कह उठा—"महापंडित जैसा गुणवान व्यक्ति मैंने दूसरा नहीं देखा।"

"इस वक्त बात ये नहीं है कि हम असफल रहे।" नगीना बोली—"बात

ये है कि सोमाथ ने अब तक खुद को ठीक कर लिया होगा और हमसे बदला लेने के लिए वो कभी भी यहां आ सकता है।"

सबकी नजरें मिलीं।

"हमारे लिए सोमाथ नाम का खतरा बढ़ता ही जा रहा है। हमारी कोशिशें असफल हो रही हैं।" सोमारा ने कहा—"मेरे खयाल में हमने सोमाथ पर हमला करके अपने लिए खतरा बढ़ा लिया है।"

सब गम्भीर थे।

बबूसा गुस्से में था।

"ये बात सही है कि अब सोमाथ हमें नहीं छोड़ेगा।" जगमोहन बोला।

"और हम किसी भी प्रकार से उसका मुकाबला नहीं कर सकते।" मोना चौधरी ने कहा।

"तुम उसकी टांगें क्यों नहीं काट पाए बबूसा?" नगीना ने पूछा।

"वहां भी रोक लगी थी। मेरी कुल्हाड़ी पिंडली के बीच में जाकर अटक जाती थी। उसकी गर्दन में भी रोक लगी है। इसका मतलब उसके शरीर के हर हिस्से में ऐसी रोक है, उसे काट नहीं सकते।"

"तुम ठीक कहते हो।" सोमारा बोली—"मेरी तलवार उसकी आधी बांह काटकर रुक जाती थी। कुछ ऐसी आवाज-सी आती थी जैसे कि तलवार सख्त चीज से टकरा रही हो।"

"अब हमें सोमाथ से अपना बचाव कैसे करना चाहिए?"

"हम सोमाथ से बचाव नहीं कर सकते भाभी।" जगमोहन ने होंठ भींचकर कहा—"उसका मुकाबला नहीं कर सकते।"

"बचाव के लिए कुछ तो सोचना ही पड़ेगा।"

"बबूसा ही कुछ बताएगा।" मोना चौधरी ने बबूसा को देखा।

टहलते-टहलते बबूसा रुका और सबको देखा। बोला।

"मेरे होते चिंता मत करो। सोमाथ का मुकाबला मैं करूंगा। मेरे मरने के बाद ही खतरा तुम पर आएगा।"

"मरने की बात मत कर।" सोमारा कह उठी।

बबूसा के चेहरे पर सख्ती नाच रही थी।

"अब मैं अपना चक्रव्यूह बिछाऊंगा।"

"कैसा चक्रव्यूह?"

"बबूसा का चक्रव्यूह।" बबूसा के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान नाच उठी—"माना कि महापंडित गुणी इंसान है। उसने सोमाथ का इस तरह से निर्माण किया है कि उसे जीता नहीं जा सकता, परंतु इस जन्म में मेरे में भी राजा देव का दिमाग डाला है महापंडित ने। राजा देव का दिमाग जरूरत

पड़ने पर रास्ता निकाल ही लेता है। मैं अपने चक्रव्यूह पर सैकड़ों बार सोच चुका हूं और वो इतना बेहतरीन है कि सोमाथ उस चक्रव्यूह में फंसकर छटपटा उठेगा और मारा जायेगा।"

सबकी नजरें मिलीं।

बबूसा की आंखों में जहरीली मुस्कान नाच रही थी।

"हमें भी बता बबूसा, चक्रव्यूह के बारे में।" सोमारा कह उठी।

"हां, अब बताने का वक्त आ गया...।"

उसी पल कदमों की आहटें गूंजी।

बबूसा के शब्द मुंह में ही रह गए।

"सोमाथ आ गया।" कहते हुए नगीना उसी पल उछलकर खड़ी हो गई।

बाकी सबने भी उठने में देर न लगाई।

बबूसा का जिस्म तन गया।

तभी सामने के रास्ते से देवराज चौहान और रानी ताशा ने भीतर प्रवेश किया। सबको इस तरह खड़े पाकर दोनों ठिठक से गए। नजरें मिलती रहीं। पल आगे सरकने लगे।

"तो तुम लोगों ने सोचा, सोमाथ आ गया।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में कह उठा।

बबूसा ने फौरन अपने को शांत कर लिया था।

जबकि देवराज चौहान को देखकर नगीना की आंखों में शिकायत के भाव आ गए थे।

"कैसे हो जगमोहन?" देवराज चौहान ने पूछा।

"अच्छा हूं।"

"तुम भी ठीक हो नगीना?"

"जी।" नगीना ने केवल इतना ही कहा।

तभी रानी ताशा, सोमारा से कह उठी।

"क्यों सोमारा? तू तो कहती थी कि बबूसा को समझाएगी। पर तुम तो बबूसा का ही साथ देने लगी।"

सोमारा, रानी ताशा को खामोशी से देखती रही।

"बबूसा।" रानी ताशा बोली—"तुम लोग अभी तक इसलिए सलामत हो कि मैंने सोमाथ से कह रखा था कि अगर बबूसा गलत हरकत करे तो तुम कुछ मत कहना। सोमथ ने मेरी बात पूरी तरह मानी, वरना अब तक तुम लोग जिंदा न रहते। परंतु अब सोमाथ से मुझे कहना ही पड़ा कि अगर अब बबूसा या बाकी लोग, उसे नुकसान पहुंचाने की चेष्टा करें तो वो भी आजाद है, कुछ भी करने को।"

बबूसा शांत भाव से मुस्करा पड़ा।

"अब सावधान रहना सोमाथ को नुकसान पहुंचाने से पहले, सोमाथ तुम सबको उस स्थिति में मार देगा।"

"मैं जानता हूं रानी ताशा कि आपको हम सबकी बहुत चिंता है।" बबूसा ने सामान्य स्वर में कहा।

"तुम अभी भी मेरी बात को गम्भीरता से नहीं ले रहे।" रानी ताशा तीखे स्वर में कह उठी।

"आप गलत समझ रही हैं मुझे। मैं जानता हूं कि आपने जो कहा है सही कहा है।"

"समझदारी इसी में है कि तुममें से कोई भी सोमाथ पर हमला करके, अपनी मौत को न बुलाए।"

किसी ने जवाब नहीं दिया।

"सोमाथ ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है बबूसा?" रानी ताशा पुनः बोली।

"उसने मेरी जान लेने की कोशिश की थी।" पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'बबूसा खतरे में'।

"वो मेरे हुक्म का पालन कर रहा था। मैंने उसे कहा था कि बबूसा जब सामने आए तो वो उसे मार दे।"

बबूसा शांत रहा।

तभी देवराज चौहान बबूसा के पास पहुंचकर बोला।

"मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता बबूसा।"

"जी राजा देव।" बबूसा इस वक्त् बेहद शांत था।

"सोमाथ के पीछे मत पड़ो। वरना इस बार वो तुममें से किसी को नहीं छोड़ेगा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"ताशा, सोमाथ से कह चुकी है कि अगर अब उस पर हमला हो तो वो जो चाहे, जवाब में कर सकता है। सोमाथ को ऐसी इजाजत न देना भी गलत बात थी। उसके पास भी हमले का जवाब देने की इजाजत होनी चाहिए। तुम दो बार उस पर हमला कर चुके हो।"

"दोनों ही बार सफल नहीं हो सके राजा देव।" बबूसा मुस्कराया।

"सोमाथ का मुकाबला नहीं किया जा सकता। महापंडित ने उसे बनाया ही इस तरह से है।"

"राजा देव, आप ही कहा करते थे कि कोई भी काम कठिन नहीं होता। मेहनत, लगन और धैर्य की जरूरत होती है, काम करने के लिए।"

देवराज चौहान ने बबूसा को गहरी निगाहों से देखा।

बबूसा दूसरी तरफ देखने लगा।

"तो तुम अभी भी सोमाथ से टकराने का इरादा रखते हो बबूसा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

बबूसा खामोश रहा।

"अगर मैं तुम्हें हुक्म दूं कि तुम सोमाथ की तरफ देखोगे भी नहीं तो...।"

"आपका हुक्म सिर-आंखों पर राजा देव। बबूसा तो आंखें बंद करके आपके हुक्म का पालन करता रहा है और करता भी रहेगा। परंतु सोमाथ के मामले में आप मुझे हुक्म देकर, मुझ पर जुल्म नहीं करेंगे। ये सोमाथ का और मेरा मामला है।"

"राजा देव।" रानी ताशा सख्त स्वर में बोली—"ये अब पहले वाला बबूसा नहीं रहा।"

"मैं तुम्हारी जान बचाना चाहता हूं बबूसा।"

"मैं जानता हूं कि बबूसा को राजा देव की सेवा के लिए जिंदा रहना है और बबूसा जिंदा रहेगा भी।"

देवराज चौहान ने गहरी निगाहों से बबूसा को देखा।

बबूसा ने आंखें नहीं मिलाईं और मुंह फेर लिया।

"ठीक है बबूसा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं तुम्हें हुक्म नहीं दूंगा।"

"मैं जानता हूं आपका दिल बहुत बड़ा है।" बबूसा मुस्करा पड़ा—"आप गलत हुक्म देकर बबूसा का दिल नहीं दुखाएंगे।"

देवराज चौहान गम्भीर नजर आ रहा था।

"ये क्या राजा देव। हम तो बबूसा को रोकने आए थे।" रानी ताशा कह उठी—"आप इसे सख्ती से हुक्म दें कि...।"

"मैं, बबूसा को ऐसा कोई हुक्म नहीं दूंगा ताशा, जिससे कि बबूसा को तकलीफ हो।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा फिर नगीना, जगमोहन और मोना चौधरी को देखकर कहा—"तुम तीनों अपना खयाल रखना। जरूरी नहीं कि बबूसा की बात मानकर तुम लोग अपने को खतरे में डाल दो। जो भी करो, सोच-समझकर करो। सोमाथ को अब कुछ भी करने की छूट मिल चुकी है।" इसके साथ ही देवराज चौहान ने सोमारा को देखकर कहा—"हो सके तो बबूसा को समझाने की कोशिश करो।"

बबूसा, मुस्कराहट के साथ देवराज चौहान को देख रहा था।

देवराज चौहान ने बबूसा को देखा तो बरबस ही, वो भी मुस्करा पड़ा।

"बबूसा हमेशा ही आपका बेहतरीन सेवक रहेगा राजा देव।" बबूसा ने आदर भरे स्वर में कहा।

"पर मैंने तुम्हें हमेशा दोस्त समझा है।" देवराज चौहान ने हाथ से बबूसा का कंधा थपथपाया।

"राजा देव।" रानी ताशा अजीब-से स्वर में कह उठी—"बबूसा को रोकने की अपेक्षा आप तो उसे बढ़ावा दे रहे हैं।"

"मैं ऐसा हुक्म नहीं देना चाहता कि जिसे पूरा करने के लिए बबूसा को कशमकश से गुजरना पड़े। बबूसा की इच्छा है, सोमाथ से टकराने की तो, ऐसी ही सही। बबूसा जो चाहता है, बेशक वो ही करे।"

"परंतु राजा देव।" रानी ताशा के होंठों से निकला—"सोमाथ इन सबको मार देगा।"

देवराज चौहान ने भरपूर निगाहों से बबूसा को देखा और कह उठा।

"बबूसा बच्चा नहीं है, जो भी...।"

तभी दौड़ते कदमों की आवाज से सबका ध्यान भंग हुआ।

"राजा देव—राजा देव—आप यहां हैं क्या?" इसके साथ ही हम्बस ने घबराए अंदाज में भीतर प्रवेश किया।

"क्या हुआ?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"किलोरा आपको बुला रहा है। चालक कक्ष में खतरे का सिगनल बजे जा रहा है।" हम्बस ने बदहवास हाल में कहा।

▭ ▭

"राजा देव।" किलोरा बदहवास-सा कह उठा—"मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा। मैं यहां बैठा था कि अचानक ही खतरे का सिग्नल बजने लगा। स्क्रीनों पर पोपा के आस-पास के दृश्य देखे तो सब ठीक पाया, मैंने सिग्नल बंद कर दिया कि कुछ पलों बाद वो फिर बजने लगा। तब मुझे पोपा से दूर कुछ छोटे-छोटे काले धब्बे दिखे स्क्रीन पर। मैं नहीं समझ पाया कि वो धब्बे क्या हैं परंतु मैंने उन धब्बों से बचने के लिए पोपा की दिशा बदल दी, लेकिन खतरे का सिग्नल फिर भी बंद नहीं हुआ। मैंने कई दिशाएं बदलीं परंतु हालात वो ही रहे। सिग्नल बराबर बज रहा है। स्क्रीन पर वो धब्बे अब स्पष्ट हो चुके हैं, वो चट्टानों के बड़े-बड़े पत्थर हैं जो कि आकाश गंगा में भटक रहे हैं। लगता है आकाश गंगा में वो पत्थर काफी बड़े इलाके में फैले हैं, तभी तो दिशा के बदलने पर भी खतरे का सिग्नल बंद नहीं हो रहा। पोपा अगले दस मिनट में उन पत्थरों से टकरा जाएगा। हमारे पास वक्त कम है राजा देव। फौरन ही कुछ करना होगा।" किलोरा घबराया हुआ था।

देवराज चौहान पास की कुर्सी पर बैठ चुका था।

इस वक्त कमरे में उनके अलावा, रानी ताशा, बबूसा और हम्बस थे।

देवराज चौहान के स्क्रीन पर नजर मारी, जहां पत्थर के टुकड़े आकाश गंगा में भटकते नजर आ रहे थे।

देवराज चौहान ने पोपा को बांई तरफ मोड़ा। नजरें स्क्रीन पर ही रहीं।

कमरे में खतरे के सिग्नल की बींप-बींप बज रही थी।

पोपा मुड़कर दूसरी दिशा पकड़ चुका था लेकिन स्क्रीन पर पत्थर बराबर नजर आ रहे थे। बींप-बींप की आवाज चालक कक्ष में बराबर गूंज रही थीं। दो मिनट बीत गए, दिशा बदले परंतु कोई फर्क नहीं दिखा। तब देवराज चैहान ने बांई तरफ की दिशा कर ली। नजरें स्क्रीन पर जा टिकीं।

"मैं सब कुछ करके देख चुका हूं राजा देव। ये पत्थर लगता है, आकाश गंगा के बहुत बड़े हिस्से में फैले हुए हैं।"

स्क्रीन पर पत्थर बराबर नजर आते रहे। बींप-बींप की आवाज बराबर वहां गूंज रही थी।

कोई फर्क न पड़ने पर देवराज चौहान पोपा की ऊंचाई बढ़ाता चला गया।

तब भी अगले दो मिनटों में कोई फर्क नहीं पड़ा तो होंठ भींचे देवरज चौहान पोपा को नीचे की तरफ ले जाने लगा। ऐसा करते ही पोपा का अगला हिस्सा नीचे की तरफ झुक गया था। देवराज चौहान और भी रफ्तार बढ़ा चुका था। पोपा ने तूफानी गति पकड़ ली थी।

"हमारे पास तीन-चार मिनट का ही वक्त है राजा देव।" किलोरा बोला—"वो पत्थर काफी बड़े लग रहे...।"

उसी पल चालक कक्ष में उभरती बींप-बींप की आवाजें थम गईं।

स्क्रीन पर नजर आने वाले पत्थर धुंधले पड़ने लगे।

देवराज चौहान के चेहरे पर राहत के भाव उभरे। दस मिनट तक वो पोपा को उसी दिशा में लेता गया और स्क्रीन पर से पत्थरों के निशान गायब हो चुके थे।

किलोरा का चेहरा मुस्कान से भरने लगा था।

"मैंने—मैंने पोपा को नीचे की तरफ नहीं किया था।" किलोरा कह उठा।

दस मिनट बाद देवराज चौहान ने पोपा को सीधा किया और किलोरा से बोला।

"सब ठीक है अब। पोपा को इसी दिशा में बढ़ाते रहो और बीस मिनट बाद, इसे वापस अपनी दिशा में ले आना। तब इस बात का ध्यान रखना कि स्क्रीन पर पत्थरों के धब्बे न दिखें। मेरे खयाल में तब तक हम पत्थरों से दूर आ चुके होंगे, परंतु तुम सतर्कता से पोपा को वापस अपनी दिशा में लेना किलोरा।"

"जी राजा देव।"

सब ठीक पाकर बबूसा चालक कक्ष से निकला और आगे बढ़ गया। अब फिर उसके मस्तिष्क में सोमाथ घूमने लगा था। धरा घूमने लगी थी। वो जानता था कि धरा से मुकाबला नहीं किया जा सकता, उसकी ताकतों ने उसे सुरक्षित रखा हुआ था, ऐसे में उसका ध्यान सोमाथ पर केंद्रित हो गया। दिल और दिमाग में दृढ़ इरादा किए बैठा था कि सोमाथ को खत्म करके रहना है और अब वो अपना चक्रव्यूह बिछाएगा सोमाथ के गिर्द और...एकाएक बबूसा की सोचें थम गईं। नजरें धरा पर जा टिकीं, जो कि इस वक्त अपने केबिन का दरवाजा खोले खड़ी थी। दोनों की नजरें मिलीं तो धरा मुस्कराई, उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया। बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता उभरी, वो धरा की तरफ बढ़ गया।

धरा उसी अंदाज में मुस्कराते हुए पलटी और वापस केबिन में चली गई। दरवाजा खुला रहा। बबूसा जब दरवाजे पर पहुंचा तो धरा को आलथी-पालथी मारकर, बेड पर बैठे देखा।

बबूसा दरवाजे पर ही रुक गया था।

धरा उसे देखकर हंसी और निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"क्यों?" धरा ने आंखें नचाईं—"जोबिना हाथ आकर भी निकल गई। मुझे मारना चाहता था जोबिना से?"

"नहीं।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा—"सोमाथ को मारना है।"

"तू कहता है तो तेरी बात को सच मान लेती हूं। क्योंकि मेरी ताकतें किसी के मन का हाल तो जान नहीं सकतीं, वैसे तू इतना शरीफ नहीं लगता कि जोबिना तेरे पास हो और तू मुझे मारने की न सोचे।"

"ये तेरा वहम है। मैंने ऐसा नहीं सोचा।"

"तकलीफ तो तेरे को बहुत हो रही होगी कि तू मेरे बारे में देवराज चौहान या ताशा को नहीं बता पा रहा।" धरा बच्चों की तरह खुश होती मुस्कराई तो पुनः होंठ टेढ़ा हुआ—"तकलीफ हो रही है न?"

"सच में।" बबूसा ने स्वीकारा।

"तेरे को एक और मजेदार बात बताऊं, उसे सुनकर तेरे तोते उड़ जाएंगे।" धरा ने चंचलता से आंखें नचाईं।

"तोते?"

"हां! तोते उड़ाऊं तेरे?" धरा ने शरारत भरे स्वर में कहा। आंखों में शैतानी चमक तैर रही थी।

"कह दे।"

"वो तेरे को याद है न जब रानी ताशा का देवराज चौहान को फोन आता था तो देवराज चौहान होश गंवा बैठता था और ताशा-ताशा कहकर उसके

पास जाने को उतावला हो जाता था। देवराज चौहान तड़पता था रानी ताशा के पास जाने के लिए। भागता था रानी ताशा से मिलने के लिए...भूल तो नहीं होगा तू?"

"क्यों भूलूंगा। सब याद है, पर तू कहना क्या चाहती है?" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।

"वो सारा असर मेरी ताकतें ही देवराज चौहान पर डालती थीं कि वो ऐसा करे।"

"क्यों?" बबूसा के होंठों से निकला।

"क्योंकि मैं चाहती थी कि देवराज चौहान जल्द-से-जल्द रानी ताशा से मिल जाए और वापस सदूर पर जाने का मेरा रास्ता खुल जाए। देवराज चौहान ताशा के पास पहुंच जाना चाहता था, ये सब मेरी ताकतें ही तो देवराज चौहान से करा रही थीं और मेरी ताकतों ने ही देवराज चौहान को, रानी ताशा तक पहुंचाया था।"

"ओह।" बबूसा के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे—"ये सब तूने किया?"

"हां। मैंने अपनी ताकतों से कराया, ताकि देवराज चौहान और ताशा मिलें और फिर सदूर पर जाने का प्रोग्राम बनाएं और मेरे को भी साथ ले चलें। वो ही हो रहा है न?" धरा ने आंखें नचाईं।

बबूसा, गम्भीर निगाहों से धरा को देखता कह उठा।

"बहुत गलत किया तूने।"

"मैं ऐसे काम ही करती हूं। अब तेरा असली तोता उड़ाने जा रही हूं, उड़ाऊं क्या?" धरा ने आंखें नचाईं।

"असली तोता?" बबूसा के होंठों से निकला। उसकी आंखें सिकुड़ीं।

"उड़ाऊं के, रहने दूं?"

"उड़ा...।" बबूसा एकाएक सतर्क-सा दिखने लगा, जैसे बम फटने वाला हो।

"देवराज चौहान को रानी ताशा से कोई प्यार-व्यार नहीं है। न ही वो रानी ताशा का दीवाना है।" धरा हाथ नचाते, जहरीली मुस्कान के साथ कह उठी—"देवराज चौहान को तो मेरी ताकतों ने, रानी ताशा का दीवाना बना रखा है।"

"क्या?" बबूसा का मुंह हैरत से खुला रह गया।

"उड़ गया न तोता?" धरा हंस पड़ी। निचला होंठ टेढ़ा दिखने लगा।

"ये—ये तुमने—ऐसा क्यों किया?" बबूसा के होंठों से निकला।

"ऐसा न करती ते क्या करती, करना पड़ा। मेरी ताकतों ने मुझे पहले

ही बता दिया था कि देवराज चौहान, अपनी पत्नी नगीना का साथ नहीं छोड़ने वाला। सब कुछ याद आने पर भी वो रानी ताशा को स्वीकार नहीं करेगा कि इस जन्म में उसकी पत्नी नगीना है और रानी ताशा की बातें तो उसी जन्म में खत्म हो गई थीं। मतलब कि देवराज चौहान और रानी ताशा आपस में नहीं मिलते, जबकि रानी ताशा का इरादा दृढ़ था कि वो राजा देव को सदूर पर वापस लेकर ही जाएगी। ऐसे में कई तरह के झगड़े उठ जाते और मैं कैसे सदूर पर जाती। मेरा वापस सदूर पर पहुंचना बहुत जरूरी है। तब मैंने अपनी ताकतों को हुक्म दिया कि वो देवराज चौहान को रानी ताशा का दीवाना बना दें, ताकि वे सुख-शांति से सदूर पहुंच जाएं। और ऐसा ही किया मेरी ताकतों ने। देख ले, पोपा अब सदूर की तरफ उड़ा जा रहा है।"

बबूसा ठगा-सा धरा को देखने लगा। मस्तिष्क में तूफान खड़ा हो गया था।

धरा उसे देखते मुस्करा रही थी। निचला होंठ टेढ़ा हो गया था।

"ये तूने बहुत गलत किया।"

"बोला तो, मैं ऐसे काम ही करती हूं।" धरा ने आंखें नचाईं—"मुझे किसी बात से कुछ भी वास्ता नहीं। मेरा मकसद तो वापस सदूर पर पहुंचना है, इसी वास्ते मैंने ये सब किया। मेरी ताकतें, मेरी इच्छा जरूर पूरी करती हैं। देवराज चौहान इस वक्त अपने 'बस' में नहीं है। मेरी ताकतों के बस में है। मेरी ताकतें उसे नचा रही हैं और वो ताशा-ताशा करता फिर रहा है। रानी ताशा भी बहुत खुश है कि उसे देव वापस मिल गया है, पर ऐसा होने वाला नहीं।"

"क्या मतलब?" बबूसा के माथे पर बल पड़े।

"सदूर पर पहुंचकर मेरी ताकतें देवराज चौहान को आजाद कर देंगी। ऐसा होते ही देवराज चौहान रानी ताशा का साथ छोड़कर, नगीना के पास पहुंच जाएगा और रानी ताशा को ये बात कैसे पसंद आएगी कि राजा देव सदूर में ही किसी और औरत के साथ रहे। आगे तू समझ ही सकता है कि रानी ताशा किस हद तक जा सकती है।" धरा हंस पड़ी।

बबूसा की हालत अजीब-सी होने लगी। आने वाला वक्त जैसे उसकी आंखों के सामने नाचने लगा। वो धरा को देख रहा था जो कि मुस्कराए जा रही थी। निचला होंठ टेढ़ा हुआ पड़ा था।

"क्या हुआ बबूसा?" धरा ने पुनः आंखें नचाईं।

"अ-अगर ऐसा हुआ तो रानी ताशा सदूर पर तूफान खड़ा कर देंगी। वो राजा देव को दिल से चाहती हैं।"

"पर देवराज चौहान तो रानी ताशा के नहीं चाहता। इस समय मेरी

ताकतों ने देवराज चौहान का दिमाग पलटा हुआ है और वो रानी ताशा को चाह रहा है। मेरी ताकतें देवराज चौहान के सिर से हटीं नहीं कि देवराज चौहान ने रानी ताशा को छोड़ देना है।"

"ओह। ये तो तुमने बहुत बड़ा अनर्थ कर डाला।" बबूसा का सिर घूमने लगा।

"मैंने अनर्थ का वक्त आगे सरकाया है।" धरा ने शांत मुस्कान के साथ कहा—"ये झगड़ा पृथ्वी पर ही खड़ा हो जाना था, पर मेरी ताकतों ने देवराज चौहान का दिमाग घुमाकर, झगड़े का समय आगे सरका दिया कि जब तक मैं सदूर पर नहीं पहुंच जाती, तब तक सब शांत रहें, उसके बाद जो भी होता रहे, मेरी बला से। देवराज चौहान तब तक ही रानी ताशा का दीवाना है जब तक पोपा सदूर पर नहीं पहुंच जाता, उसके बाद मेरी ताकतें देवराज चौहान के मस्तिष्क के आजाद कर देंगी। तब जो भी देवराज चौहान के मन में आए, वो ही करे। मुझे क्या, मैं तो सदूर पर वापस पहुंच गई न।"

"तूने तो मेरे लिए एक नई मुसीबत खड़ी कर दी।" बबूसा चिंतित स्वर में कह उठा।

"सदूर पर तो पहुंच लेने दे मुझे, तब देखना मेरे रंग।" धरा की मुस्कान के साथ निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"अभी तूने मेरा रूप देखा ही कहां है, मैं अभी पृथ्वी वाली धरा के रूप में हूं।"

"तेरा रूप अलग है कोई?"

"मेरा असली रूप अलग है, पर धरा जैसी ही हूं मैं। धरा, मेरे असली रूप का ही रूप है।" धरा हंस पड़ी—"कितना मजा आ रहा है मुझे। मैं सदूर पर वापस जा रही हूं सैकड़ों बरसों के बाद। खुशी से मैं पागल हो रही हूं। मेरी ताकतें मेरा इंतजार कर रही हैं कि मैं उनके लिए ऊर्जा का जल्द-से-जल्द इंतजाम करूं और वो फिर से जवान हो जाएं।"

"अब तू अपने बारे में बता दे।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।

"थोड़ा इंतजार कर। मुझे सदूर पर पहुंच लेने दे। तू क्या सब जान जाएंगे कि मैं वापस आ गई हूं। एक बार फिर मैं सदूर पर छा जाऊंगी। मेरी हुकूमत फिर से कायम हो जाएगी। हर तरफ मेरा ही नाम होगा।" मुस्कराते हुए धरा का निचला होंठ टेढ़ा हो गया। वो शैतान जैसी दिखने लगी—"सच में तेरी मुसीबतें तो बढ़ती जा रही हैं बबूसा। पहले तू देवराज चौहान और रानी ताशा को मेरी बातें नहीं बता पा रहा था अब तू चाहेगा कि ये बात जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी को बताए, पर मेरी ताकतें तुझे ऐसा नहीं करने देंगी। ये भी तू जानता ही है, पर सोमारा से बात करके तू अपना

दिल हल्का कर सकता है, सोमारा भी तेरी तरह, मेरी ताकतों के काबू में है।" हंस पड़ी धरा।

बबूसा गम्भीर निगाहों से, धरा को हंसते देखता रहा।

"जा, मेरी बातों से अब तेरा दिल लगा रहेगा।" हंसी रोककर धरा ने कहा, चेहरे पर शैतानी चमक थी—"तेरी नींद तो हराम हो गई बबूसा। क्या करूं, मैं हूं ही ऐसी, किसी को चैन से रहने ही नहीं देती। ये ही तो मेरी खासियत है।"

बबूसा ने धरा को देखा फिर पलटकर बाहर निकलता चला गया।

"वाह खुंबरी। तूने तो पृथ्वी से ही अपना खेल खेलना शुरू कर दिया था। सदूर पर तो तू कमाल कर देगी। वो तो तेरा घर है, वहां तेरी ताकतें बढ़ जाएंगी। इस बार डुमरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा तेरा।" धरा अपने से ही बातें करने लगी—"डुमरा को तो ऐसा सबक सिखाऊंगी कि श्राप देना भूल जाएगा। मुझे श्राप देकर पांच सौ सालों के लिए, सदूर से बाहर रहने को मजबूर कर दिया था। धोखे से उसने मुझे अपने चंगुल में फांस लिया था, मैं उसकी बातों के जाल में फंस गई थी, पर अब—अब तो खुंबरी डुमरा को नाच नचाएगी पांच सौ सालों का गिन-गिनकर बदला लूंगी डुमरा से।" धरा एकाएक गुर्रा उठी, चेहरा सुलगता दिखने लगा। आंखों में शैतानी चमक भर आई थी और निचला होंठ टेढ़ा हो गया था—"मैं आ रही हूं डुमरा। खुंबरी आ रही है वापस।"

बबूसा, धरा के केबिन से निकलकर, पोपा के पीछे वाले हिस्से की तरफ बढ़ गया। धरा की बातों ने उसके मस्तिष्क में हलचल मचा दी थी। राजा देव अपनी मर्जी से रानी ताशा के दीवाने नहीं हुए, बल्कि धरा की ताकतों ने राजा देव का दिमाग घुमाकर, उन्हें रानी ताशा का दीवाना बना रखा है और सदूर पर पहुंचते ही राजा देव के मस्तिष्क से धरा की ताकतें हट जाएंगी और राजा देव को जैसे होश आ जाएगा। वो रानी ताशा से दूर हो जाएंगे? वो अपनी पृथ्वी वाली पत्नी नगीना के पास चले जाएंगे। ये बात रानी ताशा कभी भी बर्दाश्त नहीं करेगी। वो राजा देव से सच्चा प्यार करती है और राजा देव को पाने के लिए कुछ भी कर सकती है। बबूसा को समझ नहीं आ रहा था कि सदूर पर पहुंचकर क्या-क्या होने वाला है। धरा जाने कौन है उसकी बातें खतरे का संकेत दे रही हैं और अब नई बात सामने आई है ताकतें हट जाएंगी। क्योंकि ताकतों का असली मकसद तो धरा को सदूर पर पहुंचना है। बबूसा सोमारा को सब कुछ बताना चाहता था। बहुत बेचैन हो रहा था। वो नए हालातों के बारे में सुनकर। धरा ने बहुत बड़ी गड़बड़ कर दी थी। जब रानी ताशा को पता चलेगा कि राजा देव उसे प्यार नहीं करते

तो रानी ताशा जाने क्या कर...। तभी चलते-चलते एक मोड़ पर बबूसा किसी से टकरा गया तो फौरन अपनी सोचों से बाहर निकला तो देखा कि वो सोमाथ से टकराया है।

सामने सोमाथ खड़ा उसे शांत निगाहों से देख रहा था।

सोमाथ को देखते ही बबूसा के मस्तिष्क से धरा निकल गई। बातें निकल गईं। बबूसा का चेहरा कठोरता से भरता चला गया। आंखों में खतरनाक भाव मचल उठे।

"पता चला है कि रानी ताशा ने तुझे छूट दे दी है कि अब अगर हम तुम पर हमला करें तो तू बेशक हमें मार दे।" बबूसा कह उठा।

"हां।" सोमाथ बेहद शांत था।

"इस बार मेरे हाथों से बच के दिखाना सोमाथ।" बबूसा गुर्रा उठा—"मैं तेरे को इतना मौका ही नहीं दूंगा कि तू हम पर वार कर सके।" कहने के साथ ही बबूसा आगे बढ़ता चला गया।

सोमाथ ने गर्दन घुमाई और शांत निगाहों से बबूसा को जाते देखता रहा, फिर बड़बड़ा उठा।

'ये मेरे हाथों से जरूर मरेगा।'

▭ ▭ ▭

राजा पॉकेट बुक्स
की तरफ से
अनिल मोहन
के देवराज चौहान सीरीज के 'बबूसा' शृंखला के उपन्यासों पर
1,00,000
रुपयों से अधिक की बम्पर ईनामी प्रतियोगिता!!
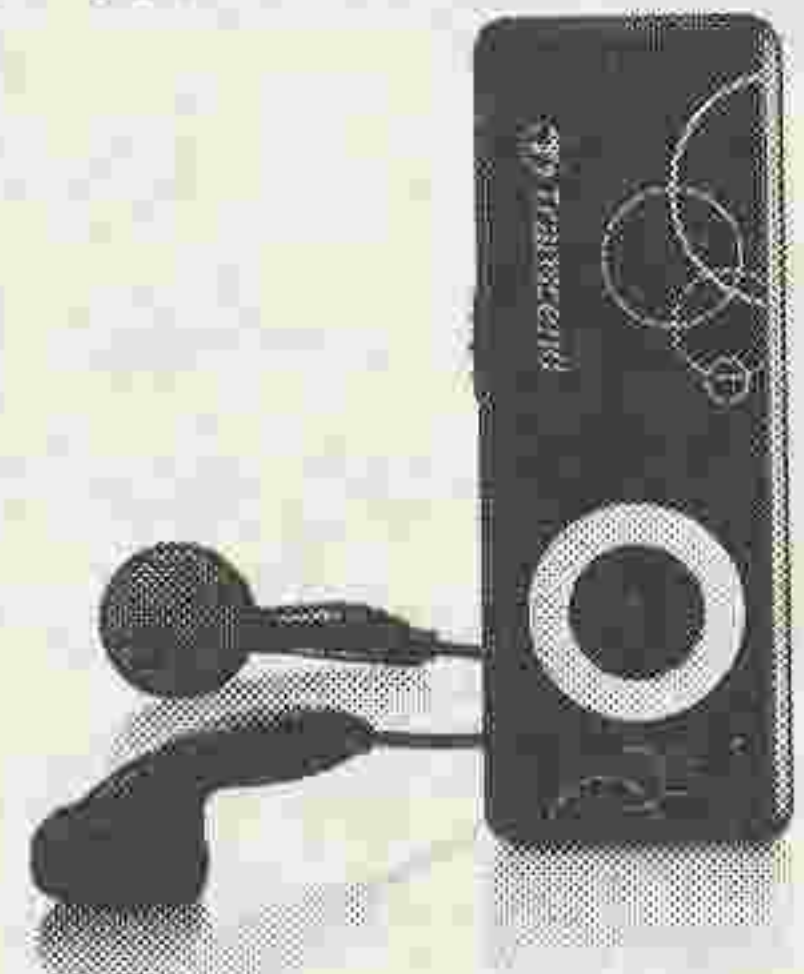
पहला ईनाम :	1 लेपटॉप (डैल 1540)
दूसरा ईनाम :	पांच विजेताओं को सेमसंग गैलक्सी मोबाइल (Galaxy-Y)
तृतीय ईनाम :	10 विजेताओं को एम.पी. 3 प्लेयर (ट्रान्सेंड MP300 4 GB)
चतुर्थ ईनाम :	300 विजेताओं को (12" × 18") अनिल मोहन का हस्ताक्षरयुक्त पोस्टर।

इस ईनामी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आपको क्या करना है, ये बात आप फिर जान लें। इस शृंखला का पहला भाग था **'बबूसा'** उसके बाद क्रमशः—**'बबूसा और राजा देव'** तथा **'बबूसा खतरे में'** प्रकाशित हो चुके हैं, अगर अब भी आप इन्हें नहीं पढ़ पाए हैं तो आज ही खरीदें। इनके बिना न तो आपको कहानी का मजा आएगा और न ही आप इस प्रतियोगिता में भाग ले पाएंगे। अब इस शृंखला का चौथा उपन्यास प्रस्तुत है—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** देवराज चौहान के पूर्व से भी पूर्व जन्म की कहानी अब एक नए मोड़ पर आ खड़ी हुई है। पाठकों के दिलों की धड़कनें थम-सी गई हैं कि अब कौन-सा रंग सामने आएगा। इस शृंखला का आगामी उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'** है। जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं कि प्रत्येक उपन्यास से दस प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें

छः का सही होना अनिवार्य है। स्पष्ट है कि सही जवाब कई पाठकों के होंगे। ऐसे में हम राजा पॉकेट बुक्स के स्टाफ के सामने विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में सही जवाब वाले पाठकों के नामों के कूपन 'सील्ड बॉक्स' में डालकर उनमें से 'लक्की ड्रॉ' सिस्टम से विजेताओं के नाम के कूपन निकालेंगे। पहले कूपन पर जिस भाग्यशाली पाठक का नाम होगा, वही पहला भाग्यशाली विजेता घोषित किया जाएगा। इसी प्रकार दूसरे और तीसरे विजेता चुने जाएंगे। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय ईनाम आपके चहेते लेखक अनिल मोहन द्वारा वितरित किए जाएंगे।

'राजा पॉकेट बुक्स' का वादा है कि देवराज चौहान सीरीज के **'बबूसा'** उपन्यासों की शृंखला के समाप्त होने पर 60 दिन के भीतर विजेता पाठकों के नामों की घोषणा कर दी जाएगी और अगले 30 दिन में ईनाम वितरित कर दिए जाएंगे। इस प्रतियोगिता में जो भी पाठक हिस्सा लेंगे, उनके नाम-पते, अनिल मोहन के **'बबूसा'** शृंखला के अंतिम उपन्यास के बाद के नए उपन्यास में प्रकाशित किए जाएंगे। प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए संक्षिप्त नियमावली इस प्रकार है—

प्रतियोगिता के नियम

1. जो भी पाठक हमें कूपन भेजेंगे वे ओरिजनल कॉपी होनी चाहिए। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकृत नहीं की जाएगी।
2. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले पाठकों से विशेष निवेदन है कि वे अपने नाम का कूपन केवल एक ही बार भेजेंगे, एक ही नाम-पते के कई कूपन भेजने पर निर्णायक कमेटी कूपन को निरस्त कर सकती है।
3. प्रत्येक स्थिति में निर्णायक मंडल का निर्णय मान्य होगा।

देवराज चौहान, रानी ताशा के प्यार में दीवाना हुआ पड़ा था। रानी ताशा, राजा देव (देवराज चौहान) को लेकर, पोपा (अंतरिक्ष यान) में बैठकर वापस चल पड़ी सदूर ग्रह की ओर, साथ में थे बबूसा, मोना चौधरी, नगीना, जगमोहन बबूसा अपना चक्रव्यूह रच चुका था और सबको मुनासिब वक्त और मौके की तलाश थी जबकि सोमाथ को जैसे बबूसा के चक्रव्यूह की महक आ गई थी और वो पूरी तरह सावधान हो चुका था।

बबूसा का चक्रव्यूह

1,00,000 की ईनामी प्रतियोगिता के साथ शुरू हो चुकी शृंखला की पांचवी कड़ी!

बबूसा और सोमाथ

मार्च 2013 से सर्वत्र उपलब्ध

ISBN 978-93-802-7898-8
9 789380 278988
Price : ₹ 60
A.H.W. TIGER SERIES